कांष्टेबिलवृत्तान्त

वा

पुलिसवृत्तान्तमाला

का

दूसरा भाग।

जिसे

[illegible]रतजीवन सम्पादक बाबू [illegible]

[illegible]र्मा ने सर्वसाधारण के उपकाराथ

सरल भाषा में अनुवाद कर

[illegible] ग किया।

[illegible] हुई

सन् [illegible] १ ई०।

प्रथम बार १०० [illegible] मूल्य ।।।)

Kasmir

पुलिसवृत्तान्तमाला।

दूसरा भाग।

अर्थात्

एक कान्ष्टेबल का बयान।

(जो सन् १८६१ ई० के पुलिस ऐक्ट नं० ५ के मुताबिक भरती हुआ था)

बरसों तक सर्कार बहादुर की खिदमत में लगातार मेहनत करने के बाद मेरी ख़्वाहिश हुई कि एक मर्तबः मैं अपने वतन को हो आऊँ याने उस छोटे से गाँव को भी देख आऊँ जहा पहिले पहिल मैंने इस दुनियाँ में पैर रक्खा था। मैं लड़कपन ही में घर से चला आया था और अब मुझे बार बार यही ख़्वाहिश होती थी कि ज़रा देखूं तो सही कि अब वहा की क्या हालत है। पुराने ज़माने में सफ़र करना भी जान को एक आफ़तही थी और आम सड़कों पर वह सुभीता और आराम हर्गिज़ न था जो अब सर्कार बहादुर की इनायत से रेल वगैरह के सबब से है। मासिवाय इसके अब रुखसत के कवायद बनिस्बत पेश्तर के याने जब वे सन १८६१ में बनाये गये थे, बहुत सहलीस और आसान हैं। उन दिनों में रुखसत का पानाही एक खुशकिस्मती समझी जाती थी, छुट्टी की कुछ तनख़्वा

नहीं मिलती थी मगर अब तो कांष्टेब्लों को रुखसत पाने पर २) माहवार मिलता है और जो रकम चार या छ महीने में कटकर जमा हो जाती है उससे मकान आने जाने के रेल भाड़े वगैरहं में बहुत मदद पहुंचती है। ख़ैर चार महीने की छुट्टी लेकर मैं अपने गाँव को गया और वहां पहुंचने पर मुझे मालूम हुआ कि मेरे वालिद ने किसी रूई के सौदागर के यहां ज़िलेदार की नौकरी कर ली है। इन सौदागर साहब ने वहां एक बंगला और कई एक बहुत बड़े २ गुदाम बना लिये थे और गांव के करीब ही अपनी मेम साहबा और बाबा लोगों के साथ रहते थे। एक रोज़ होशिया पिलपिली साहब बहादुर ने मुझ से कहा कि तुम अपने उन तजरुबों को जो तुमने महकमै पुलिस में हासिल किये है बयान करो। ये साहब बहुत रहमदिल और नेकखसलत अंगरेज थे और गांव के दिहाती लोग उन्हें होशियार पिलपिली साहब कह के पुकारा करते थे। पहिले तो मैं कुछ अन्देशे में हुआ और मेरी तबीयत न चाही कि मैं साहब की इस्तदुआ कबूल करूं मगर चूंकि जब मुझे मालूम हुआ कि मेरे ज़ईफ़ वालिद की भी ख़्वाहिश उसे सुनने की है कि उनके अजीज़ फर्ज़न्द ने दुनियां में क्या क्या तजरुबे हासिल किये तो मुझे कुछ एतकाद जमा और हिम्मत भी हुई; सो बुज़दिली

और हयादारी को रुखसत कर मैंने अपने वालिद माजिद के मेहरबान आका से अपनी ख्वाहिश इन अलफ़ाज़ में ज़ाहिर की—

मैंने कहा—"साहब बहादुर, आप मेरे मा बाप हैं और जैसी मेहरबानी आप मेरे तमाम खानदान पर करते आये हैं उसे पेशनज़र करके मैं देखता हूं कि अगर मैं आप के फ़र्मायश की तामील न करूं तो यह निहायत नाशु-करी है। इसलिये मैं यह अर्ज़ करने आया हूं कि जितने रोज़ मेरी रुखसत के अभी बाकी हैं उतने रोज़ मैं आपकी खिदमत में हाज़िर हूं और जो इर्शाद हो बजा लाऊँ।"

पस साहब ने एक रोज़ मुकर्रर कर दिया कि फलां रोज़ से आकर तुम अपना अहवाल मुझे सुनाओ। मैं हर रोज़ ठीक वक्त पर साहब बहादुर के बंगले पर हाज़िर हो जाता और वे भी बराह निवाज़िश मेरे बयानात को अपनी अंग्रेजी ज़ुबान में तर्जुमा करते जाते थे। अब मैं उसे आम में भी पेश करता हूं अगर आप लोगों को भी इसके पढ़ने सुनने से वैसीही खुशी होगी कि जैसे मेरे वालिद माजिद के बुज़ुर्ग आका को हुई थी तो मैं समझूंगा कि मेरी मेहनत रायगां नहीं गई।

मियां मिट्ठू खां।

प्रथम पर्व ।

भरती होने के लिये वालिद की सलाह ।

मेरा नाम मियां मिट्ठू खां है, मेरे वालिद का नाम सियाना है जिन्होंने कम्पनी बहादुर का निमक ४० बरस तक पुरानी बर्कन्दाजो पुलिस में खाया है। सन १८६१ ई० में जब कानिष्टेबु पुलिस का इन्तिज़ाम हुआ मेरे वालिद को लाचार हो सरकारी खिदमत से २४) सालियाना पेन्शन पर इस्तीफा देना पड़ा। पेन्शन के कागज़ात करीब १० महीने तक सर्कारी दफ़्तरों में इधर उधर ठोकर खाते फिरे मेरे वालिद अपने पेनशन का ख्याल भी अनक़रीब भूल गये थे (क्योंकि उम्मेद हटते हटते दिल शिकश्त हो जाता है) कि एक रोज़ इलाके के थानेदार ने एक कांष्टेबु को भेज कर यह कहलाया कि फौरन् साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट बहादुर पुलिस की खिदमत में हाज़िर होओ। मेरे वालिद जब सदर ष्टेशन में पहुंचे तो साहब बहादुर ने पेनशन का कागज़ उन्हें दिया, और जैसा कि हमलोगों का दस्तूर है उन्होंने कागज़ को झुक कर सिर पर चढ़ाया और तब कलेक्टरी में अपनी बाकी की पेनशन लेने को गये। चूंकि यह मौका बहुत उम्दा था उन्होंने साहब बहादुर से अर्ज़ किया कि "हुजूर तावेदार ने ४० बरस तक

सरकार की खिदमत निहायत जाँफिशानी और नेकनीयती से अदा की है और अब २) माहवार में गुलाम का गुज़ारा होना निहायत मुश्किल होगा, इसलिये अर्ज़ यह है कि तावेदार अपने लड़के को जो नौजवान और मजबूत है और थोड़ी बहुत तालीम भी पाये है मलका मुअज्जमा की खिदमत में पेश किया चाहता है। साहब बहादुर ने मेरे वालिद की हालत पर ग़ौर फरमाकर मुझे ५) माहवार पर तीसरे दर्जे का कांष्टेबुल मुकर्रर कर दिया वालिद मेरे एक हफ़्ते तक मेरे साथ रहे और इस अर्से में अपने फौजदारी और पुलिस के पुराने दोस्तों के पास ले जाकर मेरी शिनासाई करा दी। आप जानते ही हैं कि हमारे मुल्कवाले ज़रा खुशामद पसन्द होते हैं इसलिये शिनासाई कराते वक्त मेरे वालिद अपने हर दोस्त से यों कहा करते थे कि यह गुलाम आपकी खिदमत में हाज़िर रहा करेगा इसे अपनाही लड़का समझियेगा। जिस दिन वे रवाना होने को थे उसके एक रोज़ पेश्तर रात को मेरे वालिद ने मुझे यों सलाह दी कि—

"मियां मिट्ठू खां बेटा, तुम देखतेही हो कि मैंने तुम्हें नौकरी में लगा कर अपना फर्ज़ अदा कर दिया, पुराने ज़माने के बर्कन्दाज़ी के दिन गये मगर फिर भी जो तुम अक्लमन्दी को काम में लाओगी तो तनख्वाह से दूना वसूल

कर लेना कोई मुश्किल बात नहीं है खास कर जब कि तुम मुफस्सिल के कारगुज़ार पुलिस में भरती हुये हो। एक बात याद रक्खो कि जब कोई शख्स तुमको एक रुपया देवे तो अगर तुम उसे लेने से इन्कार कर दो रुपये तलब करोगे तो जरूर एक न एक दिन पकड़ जाओगे पर जो तुम बगैर ज़ोर दिये उस रकम को जो देनेवाला अपनी खुशी से देता है मंजूर कर लोगे तो देनेवाला हर्गिज़ शिकायत न करेगा और चाहे कैसाह होशियार हाकिम हो तुम्हें पकड़ न सकेगा। सरकार बहादुर की खिदमत में मेरे बाल सुफेद हो गये सो मैं तुम्हें साफ साफ कहता हूं कि आज तक एक भी रपट मेरे बर्खिलाफ नहीं हुई—अगर अपने हलके के पुलिसस्टेशन के अफसर की किताबों में तुम्हारी नेकचलनी रही तो अकसर तुम्हें तहकीकात में उनके साथ जाना होगा और बिलाशक तुम्हें भी शुकराने का हिस्सा मिलेगा—सरकार बहादुर उसे "याफ़्नी नाजायज़" और साहिबान बहादुरान उसे "रिशवत" कहते हैं, पर चाहे जिस नाम से उसे पुकारो इसका रिवाज़ हर्गिज़ बन्द नहीं हो सकता चाहे इसके लिये फाँसीही की सज़ा क्यों न मुकर्रर हो, और ज्यों २ तुम्हें इस महकमे में तजरुबा होता जायगा तुम्हें मालूम होगा कि तुम्हारे बुड्ढे वालिद का कहना सही है। बाज़ वक्त तुम सम्मन तामील

करने के लिये भेजे जाओगे जिसके लिये तुम्हें ।/) से लेकर १/ तक मिल जाया करेगा याने जैसा मौका और जैसा रुतबा सम्मन पानेवाले शख्स का हो उस मुताबिक तुमको याफ़ होगी। अगर किसी पर्दानशीन औरत के नाम सम्मन हुआ तो शायद उसका शौहर या और कोई रिश्तेदार तुमसे इस बात की इस्तदुआ करेगा कि तुम सम्मन को यह लिख कर वापस कर दो कि मुसम्मात मकान पर नहीं है और इस कारे मिहर्बानी के लिये तुम्हें एक रुपये से ज्यादा कभी कभी ५/ या १०, भी मिल जा सकता है। मेरे फर्जन्द! हमेशा निमक के सच्चे रहना और याद रक्खो कि अगर तुम्हें अपने अदायेफ़र्ज़ में शायद कोई नागवार काम करना पड़े, मसलन् जिस शख्स को तुम फांसी दिलाया चाहते हो उससे चन्द बातें दर्याफ़्त करने के लिये तुम्हें उससे दोस्ती का बहाना करना पड़े शायद तुम्हें इसी नकली दोस्ती की बात चीत में मुलज़िम के मुंह से कोई पोशीदा राज़ दर्याफ़्त हो जावे—शायद तुम्हें किसी वक़्त अपने अदायेफ़र्ज़ के लिये कोई ऐसा भी काम करना पड़े कि जिसे दूसरे लोग दग़ाबाज़ी या बेशर्मी समझें—तो तुम यही समझना कि तुम सरकारी काम के अंजाम देने में अपना फ़र्ज़ अदा करते हो क्योंकि जब तक तुम्हारे जैसे और इस किस्म के मजबूतदिल साफमग़ज़ और

आगा पीछा न सोचनेवाले लोग पुलिस में न हों तब तक आमोखास की हिफाज़त नहीं हो सकती और न लुच्चे बदमाश दब सकते हैं। कल सुबह को मैं अपने वतन के लिये रवाना होऊंगा और मैं उम्मेद करता हूं कि तुम मेरी इस नेक सलाह से फायदा उठाओगे और अपने बुज़ुर्ग वालिदैन पर शर्मिन्दगी आने का मौका न लाओगे।

दूसरा पर्व।

मेरी पहिली जुर्रत।

थाने पर पहुंच कर मैंने थानेदार साहब, जमादारसाहब और मुन्शीजी को सलाम किया। दो या तीन रोज़ बाद मैंने देखा कि जैसे मेरे वालिद ने सलाह दी थी वैसे ही बगैर ऊपरी अफसरों से घी चीनी हुये काम नहीं चलता। थानेदार और जमादार की खातिरदारी बहुत ज़रूरी बात थी क्योंकि मुकद्दमों की तहकीकात उन्हीं के हाथ में रहती है सो वे साथ में चलने के लिये चाहे जिस कांष्टेबल को चुन ले सकते हैं और मुन्शी जी के हाथ में उन वारण्ट और सम्मनों के तकसीम करने का इख़्तियार रहता है जिन्हें मुख़्तलिफ़ अतराफ़ के मजिष्ट्रेट साहबान वास्ते तामील के भेजते हैं, चूंकि मुझे खाना पकाने के इल्म

में खूब मश्शाकी थी मैंने एक रोज़ कुछ पुलाव और निहायत लज़ीज मुर्ग का गोश्त बाकरखानी और जर्दा पकाया और अपने वेड़े से एक रिकाबी मांग कर उसमें इन सब चीजों को सजा बतौर नज़र के थानेदार साहब के पास जो मेरे हममजहब थे ले गया। मेरी इस नाचीज़ नज़र को उन्होंने निहायत बशाशत के साथ क़ुबूल किया और चूंकि दूसरे दिन वे तहक़ीक़ात को जानेवाले थे उन्होंने मुन्शी जी को हुक्म दिया कि इसकी रवानगी रोजनाम्चे में यों लिख ली जाय कि "मलका मुअज्जमः बनाम ज़बर्दस्तसिंह जिमीदार के बच्चेकुशीवाले मुकद्दमे में थानेदार के साथ तहक़ीक़ात पर गया।" दूसरे रोज़ जायमौके पर पहुंच कर थानेदार साहब ने मुझे हुक्म दिया कि ११ बजे तक हमारे लिये खाना तयार कर रक्खो। इतना सुनतेही ज़बर्दस्तसिंह ने खौफ़ से कांपते हुये दस्तबस्तः अर्ज़ की कि—"गुलाम को पेश्तरही मालूम हुआ था कि हुजूर तशरीफ़ लानेवाले हैं लिहाज़ा मैंने एक ख़सी चन्द मुर्ग़ व बटेर, चावल, आँटा, घी, दूध और तरकारी वगैरह का समान मौजूद कर रक्खा है। फ़क़त हुजूर की निगाह मिहरबानी की देर है सब चीजें अभी हाज़िर होती हैं।"

इस पर थानेदार ने ग़ज़ब की निगाह से उसकी तरफ़ देख इस दावत को इन अलफ़ाज़ में नामंजूर किया—

वे बोले—"कार सरकार पर सब से पेश्तर मेरी निगाह रहती है और आज तक मैंने कभी मुलज़िम के मकान के कूंयें का पानी तक नहीं पीया, खाना तो दूर रहा।" इतने में मुफ़सिदसिंह नामी एक दूसरे ज़िमींदार के यहां से, जो जबर्दस्तसिंह का जानी दुश्मन था और जिसे इसके फँसने में कुछ ज़ाती फायदा था, दावत का पैग़ाम आया, और इसे थानेदार साहब ने मंजूर भी फ़र्माया। खाना खाने के बाद वे तहकीक़ात पर चले और मुझे हुकुम दिया कि चन्द लोगों को बतौर गवाह के ले आओ मैंने बहुतों को धरा मगर चूंकि सभी की ख़ाहिश यह थी कि वे अपने ज़िमीदार के मुकाबिल में न खड़े हों खास कर जबरदस्तसिंह जैसे सर्ग़ना शख़्स के बख़िलाफ़ किसी की हिम्मत न पड़ती थी, पस मैंने फी शख्स चार आना लेकर सभों की छुट्टी कर दी और इस तरह २) बात की बात में वसूल कर लिये। मगर चन्द गवाहों को साथ ले जाना भी तो एक ज़रूरी बात थी वर्नः इस औव्वल ही मामले में थानेदार की ख़फ़गी मुझ पर होती। इसलिये छः शख़्सों को जिनके नाम मुफ़सिदसिंह ने मुझे ख़ुफ़िया तौर पर बतला दिये थे मैं अपने साथ लिवा ले गया और अड़ोस पड़ोस की छः सात चमाइनों को भी जो दाई का काम करती थीं गिरफ़्तार कर हमराह ले लिया। पस इस

तौर करीब एक दर्जन गवाहों को पेश कर मैंने रिपोर्ट दी कि बाकी के शख्स इस वक्त मकान पर हाजिर नहीं हैं। क़रीब एक घण्टे के बाद थानेदार साहब ने मुझे निराले में बुला कर कहा—'मियां मिट्ठू खां, मैं देखता हूं कि तुम में औव्वल दर्जे के पुलिसमैन के औसाफ पाये जाते हैं और मुझे पुख़्त: यक़ीन है कि दो तीन बरस में तुम्हें बेशक जमादारी का वह्द: मिलेगा—अच्छा अब इस ख़त को लेकर तुम सदर ष्टेशन चले जाओ और खुद मेरे चचेरे भाई मिर्ज़ा उलटीअक़्ल बेग के हाथ में देना; तुम जानतेही हो कि साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट बहादुर के दफ़्तर में ये पर्वानानवीस हैं, मगर खूब ख़्याल रखना कि ख़ास उन्हीं के हाथ में इस ख़त को देना ताकि कोई दूसरा शख्स न देखने पावे, मैं खत लेकर रवाना हुआ और चूंकि वह किसी ऐसे वैसे गोंद से बन्द किया हुआ था मैंने ज़रा सा पानी लगा उसे रास्ते में खोल लिया और उसके तमाम मजमून से आगाही हासिल कर ली। बाद सलाम दुआ के उसका मतलब यों था कि "आप जानतेही हैं कि ज़बरदस्तसिंह साकीन मौजा झूठपुर के छोटे दुख़्तर की लाश डाक्टर साहब बहादुर के मुलाहिजे के लिये गई है बराह इनायत बज़रिये हामिल रुक़्का हाज़ा इत्तला बख्शिये कि डाक्टर साहब की क्या राय है।"

मिर्ज़ा उलटीअक्ल बेग ने ख़त पढ़ कर दफ़्तर से दर्याफ़्त करने के बाद यों जवाब लिखा कि—डाक्टर साहब बहादुर की यह राय है कि बच्चे की मौत अज़ खुद हुई है किसी किस्म के ज़ोर जुल्म से मारे जाने का शुबह: करने की कोई वजह नहीं है ।"

पस ख़त का जवाब लेकर मैं रवाना हुआ और रास्ते में उसी कार्रवाई के जरिये इसके मजमून से भी आगाही हासिल की। थानेदार साहब ने खत पाते ही नक्शा अलिफ़ को (जिसपर रिपोर्ट लिख कर मुद्दालों की चालान कचहरी में की जाती है) निकाला और निहायत संजीदा शकल बना कर जबर्दस्तसिंह से कहा कि अब तुम्हारी चालान जुर्म खून और तुम्हारी वालदा और मुसम्मात फरेबी चमारिन दाई की चालान इमदाद जुर्म खून में करी जाती है। इतना सुनतेही जबर्दस्तसिंह का रंग फ़क् हो गया और वह थानेदार के पांव पर गिर मिन्नत करने लगा कि मेरी आबरू हुजूर के हाथ में है । करीब दो घण्टे के मश्विरा होता रहा और तब किसी तरह से थानेदार साहब ने यह जाहिर किया के वे गोया नर्मदिल हुये और जबरदस्तसिंह से यों बोले कि "चाहे हमारा जानी दुश्मनही क्यों न हो मैं तो एक चमार पर भी सख़्ती नहीं करता और आप ऐसे लोगों की तो बातही क्या है।

आखिरकार यह तै हुआ कि २००) नज़र पाने पर थानेदार साहब मुजरिम को रिहाई कर देंगे। नाज़रीन खुदही समझ गये होंगे कि यह बहुत आसान बात थी क्योंकि डाक्टर साहब ने तो पहिलेही राय दे दी थी कि बच्चे की मतौ अज़्खुद हुई है। थानेदार साहब ने पौने दो सौ रुपये तो अपने जेब में रक्खे, १) गोड़ैत को दिया और बाकी के २४/ हम तीन कांष्टेबुलों में जो उनके हमराह गये थे तक़्सीम कर दिये गये।

इस पर मुफ़्सिदसिंह बहुत नाराज़ हुआ लेकिन थानेदार साहब ने उस्से कहा कि थाने पर आना तो सब हाल समझा देंगे। चिराग़ जलने के करीब मुफ़्सिदसिंह थानेदार के मकान पर जो थाने से करीबही कोई एक पत्थर के फासले पर था आया, थानेदार ने मिर्जा उलटी अक़्ल बेग का खत उसे दिखला कर यों दिलासा दिया कि "दोस्त तुम देखतेही हो कि मैं लाचार था इसलिये इस मर्तब: तो तुम्हारे मुख़ालिफ़ को मज़्बूरन् छोड़ना ही पड़ा पर खै़र जाता कहां है दूसरी मर्तब: जल्दही उसे किसी न किसी दाम में फँसाते हैं।" इसतरह मुफ़्सिदसिंह की बगलठोंक थानेदार ने कहा—"और देखो हम तुम्हारे साथ एक रियायत यह करते हैं जिसके लिये तुम्हें शुकरगुज़ार होना चाहिये, याने जब कि डाक्टर साहब ने ऐसी राय दी

है तो क्यों नहीं हाकिम कहेगा कि तुम्हारे वे लोग जो खून की गवाही देने को तयार थे दरोग़हल्फ़ी में चालान किये जाँय" मुफ़सिदसिंह ने कहा "बजा है" और सलाम कर रुख़सत हुआ।

हुक्कामों को शायद इस बात की आगाही नहीं है कि सदरष्टेशन में पुलिसवालों के रिश्तेदारों की भरती करने से किस कदर नुकसान पहुंचता है, तमाम कार्रवाई जो वहां दिन में होती है शाम तक उनके रिश्तेदारों के कान तक सिलसिलेवार पहुंचा दी जाती है जिस्से उनको पूरी पूरी आगाही हो जाती है।

तीसरा पर्व।

हथेली गरम।

चूंकि थानेदार की सिफ़ारिश से सर्कल इन्सपेक्टर की निगाह मुझ पर हो गई थी मेरा नाम "होशियार गिराइयों" की फिहरिस्त में दाखिल हो गया था, इसलिये मेरी तैनाती चन्द रोज के लिये एक सिटी थानेदार के मातहत जिनके इलाके में नकबज़नी और छोटे मोटे सरके अकसर हुआ करते थे की गई। यहां मैंने देखा कि पुलिस ऐक्ट के दफ़ा ३४ और जूऐ का बहुत ज़ोर शोर था।

दफ़ा ३४ के बारे में साहब मजिस्ट्रेट ने थानेदार को एक मर्तबः सख़ ताकीद की थी कि तुम्हारे इलाक़े के मह्ले बहुत गलीज़ और मैले रहते हैं अगर दो हफ़्ते के अन्दर सफ़ाई न पाई जायगी तो तुम्हारी तनअज़ुली की जायगी। इस सख़्ती का नतीजा यह हुआ कि थानेदार ने अपने मातहतों के नाम सख़ हुक्म जारी किया कि जो शख़्स सड़क या गली में पाखाना या पेशाब करते पाया जाय चाहे मर्द हो या औरत, गरीब हो या अमीर, उसे फ़ौरन् गिरफ़ार करो। कांस्टेबुलों ने देखा कि यह मौका हाथ गरम करने का अच्छा दस्तयाब हुआ। मैं जब तक पहरे पर रहता तब तक सख़ निगाह रखता, मैंने बहुतों को गिरफ़ार किया और दो दो या चार २ आना लेकर छोड़ दिया करता था। दफ़ा ३४ में जो लोग पकड़े जाते थे वे बखूबी समझते थे कि अदालत में दौड़ने और हलाकानी उठाने की बनिस्बत दो चार आना सिपाही को देकर जान छुड़ाना बहुत बेहतर है। चूंकि ऐसे लोग सुबह चार बजे से ७ बजे के अन्दरही गिरफ़ार होते हैं, अगर कोई तीसरे दर्जे का मजिष्ट्रेट सुबह के वक़्त याने ८ या ९ बजे एक घण्टा अपना इजलास किया करे तो गरीबों का बहुत कुछ बचाव हो। लोगों को यह भी ख्याल है कि जुर्माना होने और हलाकानी उठाने के सिवाय उनका लोटा भी ज़ब्त

हो जायगा और इसी बाइस वे सिपाहियों की मुट्ठी गरम कर अपना पीछा छुड़ाते हैं। एक रोज़ सुबह के वक्त एक कांष्टेबुल ने देखा कि एक भलेमानस ज़िमीदार घोड़े पर उम्दा चारजामा डाले चले जा रहे हैं, उनका कोई मुक-द्दमा दीवानी अदालत में था, वे उसी के बारे में अपने वकील साहब से कुछ मश्विरा करने जाते थे कि इतने में एक दोस्त से मुलाकात हुई और वे घोड़े पर बैठेही बैठे उस्से कुछ बातें करने लगे। इधर घोड़े ने लीद करना शुरू किया, सिपाही ने देखा कि यह उम्दा मौका है चट आगे बढ़ कर दपट के कहा "क्यों साहब आपने क्या खुदा-वन्दन्यामत ज़नाब साहब मजिष्ट्रेट बहादुर दायम इक-बालहू का हुक्म सफाई के बाबत नहीं सुना है?" इतना सुनतेही जिमीदार अपने घोड़े पर से उतर पड़ा और बोला कि "जमादारसाहब!" फिर क्या था, सिपाही ने देखा कि अच्छे दिहाती बेवकूफ़ से काम पड़ा है, पस उसकी बात अनसुनी कर बोला कि 'या तो इस लीद को साफ़ करो या हमारे साथ थाने में चलो।' ज़िमीदार ने देखा कि कहां की बला सिर पर नाज़िल हुई, इतने में उस दोस्त ने जो उस्से बातें कर रहा था और जो शहर का बाशिन्दा था सलाह दी कि "सिपाही साहब की मिहर्बानी खरीदिये तो काम चले"। पस फ़ौरन् कमरबन्द से पांच

रुपये निकाल उसने कांष्टेबु के हाथ धरे और राजी खुशी अपने रास्ते लगा। हां इतना कहना मैं भूल गया कि पहिले वे दोस्त साहब कुछ इगड़ तिगड़ करने लगे पर कांष्टेबु ने उन्हें यह कह कर धमकाया कि "क्या तुम कारे-सरकार के अदा करने में पुलिस अफसर को रोक टोक करते हो?" सुनतेही उसके होश हवास दुरुस्त हो गये।

जूये की यह हालत है कि अकसर हलके के कांष्टेबु लोग जूयेखाने के मालिक से मिल जाते हैं और यह शर्तें पाती है कि इतने रुपये माहवार देने पर फलां वक्त से फलां वक्त तक जूआ करा लिया करो। इस तरह कांष्टेबों को ॥/ से लेकर २, रोज तक की याफ़ हो जाती है। जूआ दबाने का सबसे उम्दा तरीका यही है कि मुखबिर को जुर्माने में से कुछ दिया जाया करे जैसा कि आबकारी और चुंगी के महकमों में होता है, इसके बगैर जूआ हर्गिज़ दब नहीं सकता। क्या कभी ५) या ७) माहवारी पर सरकार बहादुर उम्मेद कर सक्ती है, और तिस पर भी जब कि ।/ महीना वर्दी के रंग वगैरह और जूते की सफाई में कट जाता है, कि सिपाही लोग रिश्वत न लें, खास कर जब कि एक एक शख्स को ६ या ७ आदमी के पेट की फिक्र रहती है और आमदनी की कोई दूसरी सूरत नहीं है। जब कि गल्ला रुपये का १० या १२ सेर

बिक रहा है और खुराक की सभी चीजें मँहगी हो रही हैं तो आप समझिये कि सैकड़ों ऐसे कांष्टेबु हैं कि अगर वे अपनी तनखाहही के भरोसे रहें तो अपने मकानवालों को १२) या १५, साल से ज्यादा नहीं भेज सकते, और यह अदनी सी रकम उतने भूखे पेटों के दर्म्यान किस गिनती में है ? मासिवाय इसके कांष्टेबु भी तो इनसानही हैं उनके यहां भी तो शादी गमी होती है और गिरस्ती के सैकड़ों बखेड़े पीछे लगे रहते हैं तो फिर हुजूरही कहिये कि क्योंकर वे ऐसी हालत में मुठ्ठी गरम करने से बाज़ आ सकते हैं ?। मौका पड़ने पर आप समझते हैं कि क्या वे हाथ बांधे बैठे रहेंगे ? असल बात तो यह है कि जब तक दुनियां में देनेवाले हैं तब तक लेनेवालों की फ़ौज कम नहीं हो सकती। पुराने बर्कन्दाज़ी पुलिस के ज़माने में मेरे वालिद जो एक अदना बर्कन्दाज़ थे एक टट्टू रक्खे हुये थे और बाआराम अपना खर्च चला कर २५०) सालियाना खानदान की पर्वरिश के लिये घर भेजते थे, इन दिनों महज़ किफ़ायतशारी से चलने पर भी उसका दसवां हिस्सा भी नहीं बचता। गोकि मैं इस बात को मंजूर करता हूं कि रिश्वत का लेन देन अब भी जारी है और तालीम की तरक्कीही फकत इसे नहीं रोक सकती ताहम् हर एक शख्स यह बात जानता है कि पेश्तर के म्वाफिक

अब इसका रिवाज़ उतना नहीं रहा और ज़ोरोजुल्म तो फ़कत नामही को रह गया है बल्कि यों कहना चाहिये कि यह बात पुराने ज़माने के साथही गई ।

अब मैं आप से यह दर्याफ़्त करता हूं कि पुलिस को छोड़ दीजिये भला आपही कहिये कि किस महकमे में मुट्ठी गरम करने का रिवाज़ नहीं है । और तो दूर रहा म्युनिसिप्यालिटी के भङ्गी भी मौका पाकर अपना हाथ रँग लेते हैं—उनके ढंग यों हैं कि चन्द म्युनिसिपैलिटियों में पाखाने के अन्दर गिनती के लोग जाने पाते हैं क्योंकि वहां ज्यादा जगह ही नहीं है इसलिये सुबह के वक्त अकसर देखने में आता है कि २० या ३० आदमी लोटा लिये बाहर इन्तिज़ार में बैठे हैं ज्यों ज्यों अन्दर से लोग निकलते आते हैं, भङ्गी बाहरवालों को अन्दर करता जाता है और सब से गन्दी और मैली जगह उन्हें बतला देता है । अन्दर पैठतही पहिली बात यह नज़र आती है कि वहां बैठनाही ग़ैरमुमकिन है । अगर भङ्गी से कहो तो वह धीरे से यही जवाब देता है कि मैं क्या करूं मुझे इख़्तियार होता तो मैं और खुड्डियां बनवा देता आपकी खुशी चाहे बैठिये चाहे जाइये, अगर यह जगह नहीं पसन्द है तो खेत पड़े हैं चले जाइये । लोग जानतेही हैं कि अगर खेत में गये तो ॥) या १) जुर्माना देना होगा और हलाकानी अलग

उठानी पड़ेगी इसलिये बेहतर है कि /) पैसा भङ्गी को दो और जगह साफ़ करा लो। पस बकशीश पातेही भङ्गी जगह साफ़ कर देता है, मगर चूंकि /) रोज़ बहुत ज्यादा होता है इसलिये लोग भङ्गी से माहवार बकशीश ते कर लेते हैं और वह उनके लिये हर रोज़ साफ़ जगह दे देता है। उम्दा तरीका यह होगा कि उठौए पाखाने अलग अलग बने रहें और भङ्गी को ताकीद रहे कि वह मैले को गढ़ा खोद कर गाड़ दिया करे और बाद एक हफ़्ते के पाखाना पासही किसी दूसरी जगह उठ जाया करे। ऐसा करने से तीन फ़ायदे होंगे, औव्वल तो ज़मीन में खाद उम्दा पड़ जायगी दोयम् सफ़ाई ज्यादा रहेगी और सेयुम् यह कि लोग पैसा देने और तकलीफ उठाने से बचेंगे।

चौथा पर्व।

खून छिपा नहीं रहता।

एक मर्तबः का ज़िक्र है कि मेरे थानेदार ने मुझे एक खून का पता लगाने का हुक्म दिया, जिस्का मुख़्सर हाल यों है कि—

शहर की एक निराली गली में एक बुड्ढी रहती थी उसके पड़ोसियों को गुमान था कि इसके पास कुछ नक़द

माल है। सिवाय एक पोते के जिस्की उम्र क़रीब २०—२१ बरस की थी उस्का कोई और रिश्तेदार न था। एक रोज़ सुबह के वक़्त पड़ोसियों ने देखा कि, आज बुढ्ढी अपनी कोठड़ी से निकल कर जैसा कि उसका मामूल था काम धन्धा करती नज़र नहीं आती। कोठड़ी का केवाड़ ढकेलने से मालूम हुआ कि वह अन्दर से बन्द है और पुकारने से भी वह नहीं बोलती। उन लोगों को ख़ौफ हुआ और उन्होंने फौरन् नाके के सिपाही को खबर दी, उसी दम थानेदार और जमादार मै छ सात सिपाहियों के जाय मौक़े पर पहुंचे। बुड्ढी का पोता तलाश करके बुलाया गया और कोठड़ी का दर्वाज़ा उसके रूबरू तोड़ा गया। अन्दर पैठतेही क्या देखते हैं कि बुड्ढी का गला कटा है, और वह अपने खून में लथापथ पड़ी है। पोते ने देखतेही बायवेला शुरू किया, और हमलोगों के दिलासा देने पर भी पूरे दो घण्टे तक रोता पीटता रहा और किसी तरह सब्र न धरता था। हमलोगों ने ख्याल किया कि इसे अपनी दादी की बहुत ज्यादा मुहब्बत है, ख़ास कर जब कि हमसायों से यह बात मालूम हुई कि वह बुड्ढी हमेश: उसे खाने पीने से खुश रखती और उसके कसूरों पर कुछ ख्याल न करती थी। उसके ऐसे मुहब्बताना बायवेले को देख कर किसी को भी उस पर शक की जगह न थी, मगर जिस

वक्त थानेदार साहब तहकीकात कर रहे थे मैंने बग़ौर देखा कि जिन कोने कतरों में बुड्ढी माल रखती थी उनके बतलाने में वह पसोपेश करता था लेकिन उसके कयाफ़े से साफ़ ज़ाहिर होता था कि वह उन मुकामात से वाक़फ़ीयत रखता है। जब बतलाये हुये मुक़ाम पर खोदने से माल न निकलता तो वह कहता कि यहां तो फलां २ चीजें गाड़ी हुई थीं। मैंने अपना शुबहा थानेदारसाहब से कहा, उन्होंने कहा कि तुम्हें खब्त हुआ है या बेवकूफ़ हो गये हो। भला ख्याल तो करो कि इस बुड्ढी के मारने से उसको क्या मुराद हासिल हो सकती है खास कर जब कि वही शख्स उसका वारिस और तमाम दौलत का मालिक है; मासिवाय इसके बुड्ढी की उम्र भी तो ८० बरस के पार हुई तो क्या वह नहीं समझता कि अब वह दो चार महीने की मेहमान है। इसके सिवाय मियां मिट्ठूखां यह तुम बखूबी समझ रक्खो कि ऐसी जईफ़ औरतों का अक्सर यह कायदा है कि वे अपने पोशीदा मालमता को अपने बेटे पोतों पर हर्गिज़ ज़ाहिर नहीं करतीं। थानेदार साहब का यह तर्ज़-बहस मेरे दिल में न बैठा, मगर मैं भी अपने दिल में पूरे तौर से इस बात का एतकाद न जमा सका कि क्यों वह बुड्ढी ऐसे फ़ज़ूलखर्च व जुआरी पोते पर गोकि वह उसका वारिसही क्यों न हो एतकाद जमावे; इसलिये जब

तक तहक़ीकात होती रही मैं खामोश खड़ा होकर सोचता रहा। थोड़े ही अर्से के बाद चन्द कांष्टेबुलों के साथ मैं किसी बात का पता लगाने के लिये भेजा गया, वहां मुझे मालूम हुआ कि उस बुड्ढी के पोते का साथी और भी एक शख्स है और वे दोनों मशहूर जुआरी हैं। तब मैं उनके अड्डों की तालाश में चला, और यह पता लगाया कि करीब एक हफ़्ता गुज़रा कि वे दोनों किसी जूएखाने में अनकरीब डेढ़ सौ रुपया हारे हैं, और यह इकरार किया है कि यह रकम दो तीन रोज़ में चुका दी जायगी, और अनकरीब इसी मज़मून का कोई इकरारी रुक्का भी बनाम हरामज़ादा खां किसी मशहूर जुआरी के लिख दिया है। मेरे मुखबिर और हरामज़ादा खां से पुरानी दुश्मनी थी, और जब मैंने यह इकरार किया कि तुम्हें दो रुपये इनाम भी दिये जांयगे तब उसने बखुशी तमाम पोशीदा बातें ज़ाहिर कर दीं मैंने आतेही थानेदार साहब से यह सब हाल कहा और अर्ज़ की कि फ़ौरन् हरामज़ादा खां के मकान की तलाशी ली जाय। थानेदार साहब इस बात पर निहायत खुश हुए और उसी दम उसके मकान की तलाशी ली गई। कई घण्टे सिरमग़ज़न् करने और तकलीफ उठाने के बाद हमलोगों की कोशिश कामयाब हुई और वही इकरारी रुक्का एक कोठड़ी के अन्दर छोटे से

ताख में लपिटा हुआ पाया गया। हरामज़ादा खां ने बहुत कुछ हीला हवाला किया और यह कहा कि यह इकरारी रुक्का तो उन रुपयों का है जो उसकी शादी के खर्च के वास्ते दिया गया था। पस दोनों फौरन् गिरफ़्तार किये गये और थानेदार साहब ने यह दिखलाया कि वे उन दोनों के साथ निहायत मेहर्बानी से पेश आवेंगे, बल्कि यहां तक कि उन्होंने दरहक़ीक़त दो सेर मिठाई मँगाकर उन दोनों के आगे रख दिया। उन्होंने मिठाई खाना शुरू किया और पीने के लिये पानी मांगा, थानेदार साहब ने दिल्लगी से कहा कि "यारो पानी पीने से भूख मर जायगी और कुछ तो खाओ, पानी आता है"। उधर थानेदार साहब ने मुझे हुक्म दिया कि किसी हिन्दू से पानी मँगवाओ, और एक रुक्का लिख कर इस मज़मून का दिया, कि जब तक मैं आँख का इशारा न करूं पानी हर्गिज़ मत देना।

जब वे मिठाई खा चुके मैंने एक हिन्दू से पानी मँगवाया मगर थानेदारसाहब ने उसे यह कह फेंकवा दिया कि जब तक वे लोग यह न बतलायें कि इन्होंने उस बुड्ढी के माल को जो करीब ३००) का ज़ेवर और २००) नक़द था क्या किया तब तक एक कतरा भी पानी इनको न दिया जाय। इस किस्म का जुल्म मैंने पेश्तर कभी न देखा था, उनके चेहरे ऐंठे जाते थे, ज़बान मारे प्यास के बाहर निकली

आती थी जिस्से कुछ अन्दाज़ हो सकता था कि वे किस क़दर शिद्दत से प्यासे होकर मर रहे थे। लाचार हो उनमें से एक शख्स चिल्ला कर बोला "दारोग़ा साहब इतनी तकलीफ़ तो आदमी सह नहीं सकता अगर मुझे आपका ऐसा इरादा मालूम होता तो मैं एक भी मिठाई को हाथ न लगाता"। तब उसने फिर थानेदार से कहा कि उठिये मेरे साथ चलिये मैं उस मुक़ाम को जहां माल गड़ा है दिखला दूं, हर एक मुजरिम दो दो कांष्टेब्लों के बीच में खड़ा किया गया और उनके पीछे पीछे थानेदार खुद चले। जैसा कि उसने कहा था उसने उस मुक़ाम को दिखला दिया, छः इज्जतदार गवाहों के रूबरू वह जगह खोदी गई और कुल माल ज़मीन के अन्दर से निकल आया। साहब मजिष्ट्रेट के यहां उन्होंने अपने क़सूर का इक़बाल किया; बुढ्ढी के पोते ने यह भी इक़रार किया कि जूआ और बुरी सोहबत दोनोंही ने उसे फांसी तक पहुंचाया साथही उसने अपने दोस्त को बरी भी किया और कहा कि "खास क़ुसूर तो मेरा ही है जो कुछ सज़ा हो मेरी ही होनी चाहिये, मगर जज साहब बहादुर ने वैसा न कर उन दोनों को फांसी का हुक्म लगाया। और वही हुक्म हाईकोर्ट से भी बहाल रहा। नाज़रीन शायद यह जाना चाहते होंगे कि इस मुकद्दमें में मैंनें क्या फ़ायदा उठाया, सो मुझे भी उनकी ख्वाहिश पूरी

करने में कुछ उज्र नहीं है। जब कभी कोई ऐसा मुकद्दमा आ पड़ता है तो पुलिस को उस्की तलाश में बीसियों मौजों में जाना होता है और चूंकि खून का जुर्म संगीन है, लोग अच्छी तरह जानते हैं कि वे भलेही बेकसूर क्यों न हों मगर गिरफ़ार होने से सैकड़ों किस्म की हलाकानी उठानी होगी और मकान की तलाशी भी ली जायगी। इस आफ़त से अपनी जान छुड़ाने के लिये वे बखुशी (?) नज़राना देते हैं। थानेदार साहब के हिस्से में ७५, रुपया आया जमादार को २५/ रु० और हर एक कांष्टेबुों को पांच २ रुपया मिला, सिवाय इसके महकमे की रपट से थानेदार के हिस्से में २५) जमादार के हिस्से में १०) और हरएक कांष्टेबु के हिस्से में पांच २ रुपये की तरक्की हुई। मगर जैसा कि अक्सर हुआ करता है थानेदार ने जब रोज़नामचे खास की नक़ल दफ़र में भेजी तो सिर्फ़ अपनीही बहादुरी का ज़िक्र किया, उन्होंने अपनी जांफ़िशानी का गाना तो बहुत गाया मगर बिचारे इस मियां मिट्ठू खां की जिसने उनको इस मुकद्दमे का पता बतलाया था तारीफ़ में एक लफ्ज़ भी न लिखा। ऐसी गैरवाजिब कार्रवाई से बिचारे कांष्टेबुों का दिल टूट जाता है जिनका जी फिर ऐसे नाशुकरे अफ़्सरों के साथ काम करने को नहीं करता। अगर उसने दो एक नेक कलमा मेरे लिये भी लिख

दिया होता तो मेरे इनाम की मिक़दार दूनी हो गई होती मगर वह ऐसा क्यों करने लगा था, क्योंकि उसकी बहादुरी में फ़र्क आता। मेरे चन्द दोस्तों ने मुझे यह सलाह दी कि इसकी इत्तला साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट बहादुर को दो, मगर मैं जानता था कि ऐसा करना बेफायदा होगा क्योंकि थानेदार ने पेशबन्दी करके पहिले ही साहब बहादुर के बंगले पर पहुंच तमाम कैफ़ियत अपनी खातिर्ख़ाह समझा दी थी, सिवाय इसके मैं नक्कू हो जाता, सो मैंने समझा कि, दूसरे मुकद्दमों में मिलती हुई नमक रोटी को ख़तरे में डाल ऐसी कार्रवाई करने के बनिस्बत चुप रहनाही अक्लमन्दी है। नाज़रीन ने ग़ौर फ़र्माया होगा कि क्योंकर हम पुलिसवाले छोटी मोटी बातों को जो औव्वल नाचीज़ मालूम होती हैं जमाकर अपनी कार्रवाई शुरू कर देते हैं और आखिरकार उन्हीं का सिलसिला बांध मुकद्दमे का पूरा पता लगा लेते हैं।

पाँचवाँ पर्ब।

एक खूनी का साफ़ बच जाना।

एक रोज़ सिपहर को मैं अपने नाके पर पहरा दे रहा था, देखता क्या हूं कि एक तरफ़ से एक हट्टा कट्टा मज़-

बूत राजपूत अपने चार पांच करारे जवानों के साथ लाठी बाँधे चला आता है और दूसरी तरफ़ से एक तुँदीला महाजन आ रहा है उसे देखतेही राजपूत और उसके साथियों ने उसे ललकारा और एकही हाथ उस राजपूत ने अपने लट्ठ से ऐसा जमाया कि महाजन का खोपड़ा फट गया और वह ज़मीन पर गिरतेही मर गया। इस वारदात का देखनेवाला फ़कत मैंही था, वे सब तो फ़ौरन् नौ दो ग्यारह हो गये; मैंने आवाज दी अरोस परोस के चन्द मकानदार निकल आये, लाश को उन्हें सुपुर्द कर मैंने थाने पर पहुंच यह रपट लिखाई कि—

"आज ३ बजे सिपहर को फ़रेबसिंह ने, तीन चार साथियों के साथ, जिन्हें मैं उस वक्त शिनाख़ न कर सका, फ़लाँ गली में मातावदनलाल महाजन का खून किया। मारने के साथही वे सब फ़रार हो गये और जहां तक मैं जानता हूं सिवाय मेरे किसी दूसरे शख़्स ने इस खून को होते नहीं देखा"।

थानेदार चन्द कांष्टेबुों को लेकर जाय मौके पर पहुंचे और उन्होंने तहक़ीक़ात शुरू की, बहुत कुछ लिखा पढ़ी के बाद फ़क़त मेरी गवाही पर फ़रेबसिंह खूनी करार दिया गया। उस्की तलाश में चारो तरफ़ कांष्टेबुल लोग भेजे गये और गिर्दनवाह के थानेदारों को भी इत्तला दी गई कि

वे लोग होशियार रहें। जब फ़रेबसिंह के मकान पर तहक़ीक़ात गई तो मुसम्मातों ने महज़ लापर्वाही से कह दिया कि वह तो तीन चार रोज़ से कहीं बाहर गये हैं; थानेदार ने शक की निगाह से मेरी तरफ़ देख कर दर्याफ़्त किया कि तुम्हें धोखा तो नहीं हुआ ?। मैंने कहा "नहीं जनाब, मैंने अपनी इन्हीं आखों से फ़रेबसिंह को ऐसा देखा है कि जैसा मैं आपको इस वक्त देख रहा हूं"। थानेदार ने कहा कि अगर यह खून किसी भूखे लालची ने किया होता तो कम से कम एक ज़ेवर तो इस्का ले गया होता, इस्से गुमान होता है कि यह काम किसी ऐसे सख़्त बदमाश का है जो ऐसे जुर्मों का आदी हो गया है। ऐसे खून अकसर दुनियां में हुआ करते हैं मुझे इस्का खूब तजरुबा है, बाज़ वक्त ऐसी नाचीज़ बात के लिये खून किया जाता है कि किसी बशर को यह एतक़ाद नहीं हो सकता कि क्योंकर इनसान ऐसी छोटी सी ग़र्ज़ के लिये अपने एक हमजिन्स की जान लेने पर आमादा हो जाता है। मैं गुमान करता हूं कि या तो मियां मिट्ठू खां को निगाहों से धोखा हुआ या किसी शख्स ने इसका हाथ गर्म कर फ़रेबसिंह पर यह इलज़ाम लगाना चाहा है। कोई उम्मेद नहीं है कि अक्ल इनसान इस खून का पता लगा सके" अब उधर का हाल सुनिये कि खूनी फ़रेबसिंह ने क्या

हिकमतअमली की;—खून करने के बादही उसने अपने एक गांव का रास्ता लिया जो वहां से करीब १५ या २० कोस के था, और उसी दिन ८ बजे रात को वहां के थाने के रोज़नामचे में यों रपट लिखवाई कि—

"जाल, कपट, दग़ा और चालाकी अहीर ने बहमराह करीब बीस इज़्ज़तदार बाशिन्दगान मौज़े बेईमानपुर के गांव के गोड़ैत कारसाज़ी चमार के साथ आकर बयान किया कि अर्सा चार दिन का होता है कि फ़रेबसिंह जंगीपुर से यहां आया है और उसी तारीख से हमलोगों पर ज़ोरोज़ुल्म कर रहा है, चुनांचे अब उसका ज़ुल्म इस ग़ायत दर्जे को पहुंचा है कि आज दो बजे सिपहर को उसने जाल अहीर को बहुत मारा पीटा और एक जोड़ा बैल कीमती ३२) का जबरन् खोल कर हांक ले गया। ज़दो कोब के निशानात् पीठ और नीज़ जिस्म के दूसरे हिस्सों पर मौजूद हैं, सायलान् दादरसी के ख़्वास्तगार हैं"

वहां के थानेदार ने तहकीकात करके फ़रेबसिंह को चालान की। मुक़द्दमा जनाब एबिल गोएट्सी बहादुर जएट मजिष्ट्रेट के इजलास में सुना गया जहां कि फ़रेबसिंह ने अपना जबाब यों पेश किया कि—

"मुद्दईयान ताबेदार के रैयाया हैं और मालगुज़ारी देने से इन्कार करते हैं, जब कभी मैं पोत का तक़ाज़ा करता

हूं तो ये हीला हवाला करते हैं और चूंकि सरकारी माल-गुज़ारी अब एक हफ़्ते में अदा करनी होगी तावेदार दो पहर पर दो बजे मुद्दईयान के यहां गया और कहा कि हमारी मालगुज़ारी जो वाजिबुलअदा है चुका दो, इतने में एक शख्स ने जिसके नाम से मैं वाक़िफ़ नहीं हूं मगर रूबरू आने पर उसे पहिचान सकता हूं जाल अहीर के जोड़े बैल को खूंटे पर से खोल मेरी छावनी पर बांध दिया और चूंकि जाल अहीर ने मेरे साथ बहुत सख़्त कलामी की तावेदार ने जोश में आकर बेशक उसे दो तीन जूते मार दिये।"

जराट साहब ने देखा कि मुक़द्दमा पूरी तौर से सुबूत है इसलिये फ़रेबसिंह पर ५१) जुर्माना किया; अगर ५०) जुर्माना किया जाता तो कानूनन् उसे अपील करने की जगह न रहती। फरेबसिंह ने हुक्म की नक़ल ली और विज़डम प्रोविट साहब बहादुर शेशनजज के इजलास में अपील दायर की, मगर वहां से भी छोटी अदालत का फैसला बहाल रहा। दोनों अदालतों के फैसले की नक़ल लेकर फ़रेबसिंह अपने मकान को जंगीपुर में लौट आया और शानोशौकत के साथ सरे बाज़ार घूमने लगा।

वारण्ट तो उसके नाम जारीही हो चुका था, सड़क पर निकलतेही गिरफ़्तार किया गया और जब थाने पर

लाया गया तो उसने बयान किया कि मैं तो यहां थाही नहीं, मगर अपने गवाहों का नाम बतलाने से इनकार किया। थानेदार ने उसको चालान की और मुझ से सुबूत तलब हुआ; मैं क्या अर्ज करूं ऐसा वेवकूफ़ तो मैं कभी भी न बनाया गया था। फ़ौजदारी कचहरी में मुकद्दमा पेश होने पर फ़रेबसिंह ने अपने कमर से दोनों अदालतों की मुसद्दिका नकलें निकाल कर साहब मजिस्ट्रेट बहादुर के रूबरू पेश कीं और यों अपना बयान शुरू किया—

"गरीबपर्वर, हुज़ूर जानतेही हैं कि जब कभी किसी जुर्म का पता पुलिसवालों से नहीं चलता तो वे हक़नाहक़ बेकुसूर लोगों को फँसा कर चालान कर देते हैं; जिस वक्त यह खून यहां हुआ ताबेदार ज़िला भगनापुर में था, और दो साहिबान, दोनों अंगरेज़ बहादुर ने उस वक्त ताबेदार को मुसम्मी जाल अहीर पर हमला करने का कुसूरवार सुबूत पाकर ५१) जुर्माना किया है। खुदावन्द न्यामत गौर फ़र्मावें कि पुलिस ने क्या ताबेदार को हाज़िर नाज़िर समझा है कि मैं एकही वक्त में वहां भी रहूं और यहां भी खून करूं ? हुज़ूरही इस गरीब का इनसाफ़ फर्मावें, ताबेदार की अर्ज है कि मियां मिट्ठू खां को इस झूठे इज़हार और हाकिम को धोखादिही के लिये सख्त सज़ा की जाय"।

साहब, आप ख्याल कर सकते हैं कि उस वक्त मेरे

दिल पर क्या गुज़री होगी। साहिब मजिस्ट्रेट ने मुजरिम की रिहाई उसी दम कर और पुलिस को ताकीद की कि असल मुजरिम की तलाश करो। शुक्र खुदा का कि फरेबसिंह के ज़ोर देने पर भी मेरी सज़ा कुछ न हुई— साहिब मजिस्ट्रेट ने फैसले में यों लिखा "मिट्ठू खां को निगाह का धोखा हो गया जिस्से उसने असल मुजरिम को फरेबसिंह समझ लिया था शायद दोनों की शबाहत मिलती हो"। इस मुकद्दमे में थाने के अफ़सरों को तो एक कौड़ी भी नहीं मिली मगर कांष्टेबूलों को जो थानेदार का सफीना लेकर चन्द बदमाशों को इज़हार देने के लिये धरने गये थे दो दो तीन तीन रुपया अलबत्ते मिल गया।

छठवाँ पर्ब।

एक पुराना फ़कीर।

यह दस्तूर की बात है कि छोटे मोटे मुकद्दमों में कांष्टेबूलों को सब से ज्यादा बख्शिश मिलती है। एक रोज़ का ज़िक्र है कि रात ८ बजे एक ज़ईफ़ सा मुसलमान फ़कीर मेरे थाने पर आया और फ़र्याद करने लगा कि मौज़ा शेखचिल्लीपुर के बाशिन्दे मुझे इस क़दर तकलीफ़ पहुंचाते हैं कि राहशाही पर चलना मुझे मुश्किल हो गया है, अर्ज़

यह है कि उनको ताकीद करने के लिये एक कांष्टेबुल मेरे हमराह कर दिया जाय। चूंकि थानेदार साहब भी मुसलमानही थे और उन्हें ज़रूर मेहर्बानी करनी थी लिहाज़ा मुझे हुक्म दिया कि "शाह साहब के साथ जाओ और उन लोगों को डाँट दो"। मैं फ़कीर के साथ हो लिया और शेखचिल्लीपुर को जो वहां से अनक़रीब एक कोस की दूरी पर था चला—रास्ते में फ़कीर ने मुझ से कहा कि चूंकि थाने पर उस वक्त ८ या १० शख़्स मौजूद थे मैंने असली हालत बयान न की थी वर्नः लोग मुझ पर ठट्ठा उड़ाते इसीलिये मैंने यह रपट लिखाई कि वे लोग मुझे तकलीफ़ पहुँचाते हैं—असली हालत यों है कि—

"मैं मौज़े शेखचिल्लीपुर में आज ७ बजे शाम को पहुँचा, मुझे पाखाने की हाजत जो मालूम हुई तो मैंने चन्द लड़कों से जो एक दरख़्त के तले खेल रहे थे कहा कि "बाबा मुझे थोड़ा पानी ला देना खुदा तुम्हारा भला करै मैं पाखाने जाऊँगा"। उनमें से एक लड़के ने ५ही मिनिट के अन्दर कहीं से लोटा भर कर मेरे हाथ दिया और अपने साथियों के साथ जाकर खेलने लगा। मैं भी उसे दुआ देता हुआ पासही के खेत में उतर गया, पाखाना से फारिग होने के बाद आबदस्त जो लेने लगा तो मियां मिट्ठू खां अब मैं आपसे क्या अर्ज करूं कि क्या मेरी हालत हुई उस

लोटे में पानी की एवज़ रेंड़ो का तेल भरा था—उधर मैंने देखा कि सब लड़के खूब कहकहा मार कर हँस रहे हैं, खुशकिस्मती से मुझे वह मसल याद आई कि 'वक्त पर गधे को भी बाप कहना होता है' इस लिहाज़ से मैंने अपने गुस्से को रोका और खफ़ा न होकर बमिन्नत उनसे अर्ज की कि बाबा मेरी मुसीबत आसान करो। घण्टों दिल्लगी उड़ाने के बाद उनमें से एक शैतान के बच्चे को कुछ रहम आया और उसने एक लोटा पानी मुझे ला दिया और चूंकि दूध का जला छाछ भी फूंक फूंक कर पीता है मैंने इस मर्तब: पानी को अच्छी तरह जाँच लिया। इस किस्म की दिल्लगी, दोस्त मेरे, नौजवानों के साथ अच्छी लगती है न कि मेरे ऐसे ज़ईफ़ और खास कर फ़कीर के साथ; गोकि उन कम्बख्त शैतान के बच्चों को मेरे सुफेद बालों का लिहाज़ न होता मगर उन्हे मेरी फ़कीरी का लिहाज़ बिला शक करना चाहिये था।

साहब मैं आप से दरहकीकत सही अर्ज करता हूं कि मैं बमुश्किल हँसी को रोक सका; मैंने देखा कि यह मौका उन लड़कों के रिश्तेदारों से कुछ झटक लेने का बहुत अच्छा है। सो मैंने निहायत संजीदगी के साथ मौजे के गोड़ैत को हुक्म दिया कि फ़ौरन् मौज़े शेखचिल्लीपुर के तमाम लड़कों को जिनकी उम्र ६ बरस से १६ बरस के

अन्दर ही हमारे रूबरू हाज़िर करो ताकि कुसूरवारों की चालान की जाय। बस मेरा मतलब इतनेही मे हासिल हो गया मैंने देखा कि थोड़ेही देर बाद मौज़े के मुखिया लोग उस जानिब को जहां मैंने अपना 'इजलास' क़ायम किया था आ रहे हैं। उनमें से एक ने जो उन सबों में सरदार आगे बढ़ कर दस्तबस्तः अर्ज की कि हुजूर मौजे शेखचिल्लीपुर में हमेशा मेहमानदारी का दस्तूर चला जाता है और चूंकि आज सरकार हमलोगों के मौजे में तशरीफ़ लाये हैं, मैं और मेरे भाई ज़िमीदार सब अर्ज़-पर्दाज़ हैं कि हुजूर गरीबखाने पर तशरीफ़ ले चलें और कुछ नाश्ता फ़र्मावें इतना सुनतेही मेरा दिमाग़ तो आस्मान पर चढ़ गया और मैं अपने दिल में निहायत खुश हुआ। पस इस निवाजिश का शुक्रिया अदा कर मैंने उस्से कहा कि औव्वल कारे सर्कार होना चाहिये बादज़ां दूसरी बातें देखी जांयगी मैंने इस दिमाग के साथ यह गुफ़्गू की गोया उनके मौज़े की स्याही सुफेदी मेरे हाथमें हो रही है। तब तो उस ज़िमीदार ने दूसरा तर्ज़ निकाला और कहने लगा 'खां साहब हुजूर भी तो किसी वक्त लड़के रहे होंगे और उमेद है कि भगवान की किरपा से ५ या ६ लड़के आपके भी होंगे और रामजी दया करें तो और आपको ६०, ७० दें। मैं इस दुआ को सुन कर दिलही दिल निहायत खुश

हुआ और खुदा से उसके पूरे होने की आर्ज़ू की पर सा-थही यह ख्याल हुआ कि अगर इस दुआ की चौथाई आर्ज़ू भी पूरी हुई तो मैं तङ्गदस्त कैसी मुसीबत में फँस जाऊँगा। क़िस्सा कोताह यह कि उनलोगों ने २५) चन्दा जमा करके मेरे रूबरू पेश किया। मैंने बखुशी उसे मंजूर करके उनके नवेद को भी क़ुबूल किया और करीब शाम क थाने को लौट आया और रपट में लिखा दिया कि उन लड़कों के वालदैन को मैंने सख़ ताकीद कर दिया है कि आइन्दः को कभी ऐसी नाशाइस्ता कार्रवाई खासकर उन लोगों के साथ जो दुनियां से किनाराकश हैं न करें। जब मैंने असली हालत बयान किया तो थाने के लोगों में बड़ा कहकहा उठा, खुशक़िस्मती यह थी कि वह फ़कीर वहां मौजूद न था नहीं तो उसके गुस्से की इन्तिहा न रहती।

सातवाँ पर्व।

जिस थाने पर मैं तैनात था वहां एक रोज़ एक संगीन डकैती की खबर आई। मुद्दई का शक एक मशहूर चोर जल्लाद नामी भर पर था जो डकैतों के गरोह का सर्दार था, मुद्दई ने यहां तक बयान किया कि गोकि डकैती में १२ या १५ शख़्स शरीक थे मगर मैं उस भर की आवाज़ साफ़ २ सुनता था। यह भी मालूम हुआ कि चन्द डां-

कुओं ने तो अपने चेहरे पर खड़िया लगा ली थी और चन्द ने अपना मुंह काला कर लिया था ताकि उन्हें कोई पहिचान न सके। मुद्दई और उसके साले ने बयान किया कि हमलोग खौफ़ के मारे एक बुड्ढी, ६ नौजवान औरतें और ६ छोटे २ बच्चों को वहीं छोड़ कर पीछे के रास्ते से भाग आये हैं । मकान के अन्दर पैठने पर डकैतों ने उस बुड्ढी को धरा और उसके जिस्म को बलती हुई मशाल से दाग दाग कर पूछने लगे कि बतला माल कहां गाड़ा हुआ है मगर वह इतनी तकलीफ़ पाने पर भी दिलेरी के साथ यही जवाब देती थी कि मैं नहीं जानती। आखिरकार जब डाकुओं ने उसकी आखों पर मशाल की टेम लगाना चाहा तो उस बुड्ढी ने घबड़ा कर एक कोठिले को जिस्में अनाज रक्खा जाता था और जो ज़मीन में गाड़ा हुआ था बतला कर कहा कि हमारा ज़ेवर वगैरह सब इसी के अन्दर है। चूंकि कोठिला ज़रा बड़ा था लिहाज़ा डाकुओं में से एक शख्स जो हाथ पांव से कुछ मज़बूत था उस्के अन्दर उतरने पर रज़ामन्द हुआ और फ़ौरन् नीचे उतर जो जो ज़ेवर पाता गया उन्हें ऊपर के आदमियों को देता गया जो उन्हें एक चमड़े की थैली में भरते जाते थे । ये दो शख्स जो वहां से भाग कर आये थे इस कदर हथेली पर सरसों जमा रहे थे कि उन्होंने तमाम मौज़े को

अपने बायवेले से सिर पर उठा लिया और सैकड़ों शख्स बड़े २ लट्ठ बांध कर हज़ारों क़िस्म की गालियां बकते हुये मौके पर जमा हो गये। फ़ौरन् तमाम डकैत करीब १०००) का माल लेकर भाग निकले, मगर वह शख्स उतरते वक्त तो बआसानी कोठिले में उतर गया लेकिन ऊपर न चढ़ सका और अपने साथियों के भाग जाने की वजह से और भी लाचार हो गया। बुड्ढी ने जब देखा कि अब यह खूब फँसा, झट उन नौजवान औरतों की मदद से चक्की के ऊपरवाला पाट उठा कर कोठिले के मुंह पर ढंक दिया अन्दर तो वह डाकू बन्द हुआ और ऊपर सब औरतें बतौर सन्तरी के खड़ी हो रहीं। अब तो वह लाखों तरह से मिन्नत आर्ज़ू करता, हाथ जोड़ता, नाक रगड़ता, मगर उसको कौन सुनता है, बुड्ढी ने जवाब दिया कि 'अभी तो नाचता कूदता उछलता और मेरा तमाम बदन दागता था उस वक्त तो तुझे रहम न आता था मैं तुझ मूये पर दया करूं देख तुझे कैसा मजा चखाती हूं।" जब गांव के तमाम लोग पहुंच गये तो वह डकैत कोठले के बाहर निकाला गया और जब उस बुड्ढी ने अपनी तकलीफें बयान कीं तो पहिले तो खूबही उसकी कुन्दी की गई और फिर वह पुलिस के सुपुर्द किया गया। दूसरे दिन सुबह को थानेदार साहब अपने सिपाहियों को लेकर जाय माजरे

पर पहुंचे और अपनी मामूली तहकीकात करने लगे। वह डाकू जो गिरफ़ार हुआ था हमलोगों से अर्ज़ करने लगा कि मुझे तकलीफ़ न पहुंचाइये मैं बखुशी अपने साथियों का नाम बतला देता हूं क्योंकि वे कम्बख़्त मुझे इस तौर पर कोठिले में फँसा हुआ छोड़ अपनी २ जान लेकर भाग गये। उसने कई शख़्सों के नाम बतलाये मगर जब उनके मकान की तलाशी ली गई तो एक भी माल मसरूक़: वहां न मिला। इस पर मुद्दइयों ने बयान किया कि माल डकैतों के दोस्तों और रिश्तेदारों के मकान में छिपाया होगा इसलिये करीब ५० लोगों के मकान की तलाशी ली गई पर कहीं भी माल का पता न लगा। ऐसे मुकद्दमों में जब कि अमीर और गरीब सब धान बाइस पसेरी तौला जाता है और सभों के मकान की तलाशी होने लगती है तो पुलिस से अपनी इज्ज़त बचाने के लिये लोग इनका हाथ खूब गर्म करते हैं। थानेदार ने १५०, पाया और हरएक कांष्टेबुल ने अठारह २ रुपये याने तीन २ महीने की तनख़्वाह वसूल की। वह गिरफ़ारशुद: डाकू दौरे सुपुर्द किया गया जहां से उसे १०वर्ष की सख़्त सज़ा हुई और वह कालेपानी भेज दिया गया। चूंकि मर्द या औरत कोई भी डकैतों को पहिचान न सकता था लिहाज़ा पुलिस को गिरफ़ारी बन्द करने का हुक्म हुआ मगर तौभी हमारे

चालाक थानेदार साहब ने कितनेही लोगों से बहुत कुछ झटक लिया और उन्हें गोया साथ एहसान के बरी किया। जिस भर की आवाज़ फर्यादी ने बयान किया था, कि मैं पहचानता हूं उस भर को भी थानेदार ने गिरफ़ार किया मगर उसने हलफ़न् बयान किया कि मैं वार्दात वाली शब को उस मौजे से गैरहाज़िर था और करीब २० मील के फासले पर दूसरे गांव में गया था; और चूं कि मौज़े का जिमीदार उस भर का थांगी था उसने पांच सात गवाह इस अम्र के सुबूत में पेश किये, तौभी थानेदार ने कहा कि हम इस्को चालान करेंगे। कोई दस मिनिट तक मामले की बातचीत होती रही आखिर थानेदार साहब ने अपना हाथ गरम कर उसे भी रिहाई बख्शी ।

आठवां पर्व्व ।

एक रोज़ आधी रात के वक्त एक कुनबी रोता, चिल्लाता, दोहाइयां देता, छाती पीटता, सिर के बाल नोचता खसोंटता थाने पर आया। चन्द लोगों ने समझा कि वह पागल है दूसरों ने कहा नहीं नहीं इस कम्बख़ पर कोई सख़ मुसीबत पड़ी है । जमादार ने उसे दिलासा देकर कहा कि अगर तुझे पुलिस की मदद दर्कार हो तो आहिस्ते से बात कर और पागलों के मानिन्द शोरोगुल मत

मचा; जब उसे कुछ दिलासा दिया गया तो वह कुनबी यों बयान करने लगा कि:—

"थानेदार साहब, मेरे फ़कत एकही लड़की है जो इस कुआर में १० बरस की हो जायगी, सो जैसा हम गरीबों का रवाज है मेरी लड़की आज सुबह खेत की रखवाली करने गई थी। हमारे गांव के पटवारी का लड़का जिस्की उमर करीब २२ वर्ष की है और जो अपने फसादी वालिद के म्वाफिक़ बदमाश है मेरी लड़की को मीठी २ बातों से फुसला कर और मिठाई और मेवों का लालच देकर पास ही की एक झाड़ी में बहका ले गया और वहां उसकी बेइ-ज्ज़ती की। उस बदमाश ने वह मौका अपनी जान बहुत अच्छा तजवीज किया था, मगर खुशकिस्मती से मैं दूसरे गांव को जाता हुआ उसी राह से जा निकला। थानेदार साहब मैं आपसे सच कहता हूं कि वह किसमतों से भाग गया अगर मेरे हाथ पड़ गया होता तो अब तक पटवारी अपने बेटे के नाम रोता फिरता! दोहाई सर्कार की! मेरी मदद कीजिये, अगर आप इनसाफ न करेंगे तो थानेदार साहब जान रखिये कि चाहे मेरे बखरी की एक २ परिया बिक जाय पर मैं इसका बदला लिये बिना न छोड़ूंगा।

थानेदार साहब मौज़े की तरफ रवाना हुये और जो कान्स्टेबिल उनकी अर्दली में दौड़ते थे उनमें से मैं भी एक था। वहां पहुंचने पर थानेदार साहब ने जैसा कि हमारे

मुल्कवालों का दस्तूर है कि हर एक काम को बड़ी शान शौकत से करना और थोड़े अख़्तियार को बहुत दिखाना, जिमींदार की बैठक में कचहरी लगा दी और वहीं से इत्तु मनामे फलाने सिंह व ढेकाने खां के नाम निकलने लगे। जब इज़हार लिये गये और उस लड़की ने बहुत सीधे और साफ़ २ तौर से बयान किया और उसके वालिद के इज़हार भी बहुत वाजिब हुये जिससे उस लड़की के इज़हार की पुख़्तगी पाई गई। और सब सबूत चश्मदीद न थे फ़क़त गांव की दाई का इज़हार बाक़ी रह गया था वह भी बुलाई गई; उसने लड़की का इम्तिहान करके कहा कि इससे ज़िना बिलजब्र किया गया है। हां इतना और भी बयान करना जरूरी है कि हमारे शानदार थानेदार साहब इज़हार लेते वक़्त गवाहों से हलफ़ भी लेते थे जैसा कि साहब मजिस्ट्रेट के रूबरू इज़हार लेते वक़्त होता है। ऐसे काफ़ी सबूत पाये जाने पर सिवाय उस नौजवान शख़्स को चालान करने के और कोई चारा न रहा! मुज़रिम के बाप ने थानेदार साहब को २००, रुपया देने का इक़रार इस शर्त पर किया कि वे अपने रोज़नामचे में ऐसा लिख दें कि यह कारवाई लड़की की रज़ामन्दी से हुई मगर खुदा झूठ न बुलावे उस शख़्स ने इस नज़र को हिक़ारत की निगाह से नामंजूर किया। पटवारी ने जब

देखा कि उसकी पहली कोशिश नाकामयाब हुई तो उसने कहा थानेदार साहब आप ख्याल फर्मावें कि मैंने गदर के वक्त में सर्कार बहादुर की बड़ी मदद की है और यह समझ कर कि सबूत की कोताही है उसने थानेदार साहब के कान में आहिस्ते से कहा कि आप सबूत के लिये कोई फिकिर न कीजिये मैं बहुत सबूत पहुंचा दूंगा, इतने पर भी जब थानेदार अपनी बात पर कायम रहा तब पटवारी ने आहिस्ते से कहा कि मैं अब भी २००) आपकी नज़र करने को तयार हूं बशर्ते कि आप इतना लिख दें कि यह नौजवान शख्स उस वक्त शराब के नशे में था, क्योंकि आप और हुक्काम लोग भी बखूबी जानते हैं कि मेरी जात के लोग अक्सर सबही शराब के आदी होते हैं।

इस बात पर थानेदार राज़ी हो गये और जब उनकी निगाह उस रुपये की थैलीपर पड़ी जो उनके पासही रक्खी हुई थी, तो उनकी ज़बान से पानी टपक पड़ा और यों कहने लगे कि मेरे दोस्त आप जानते हैं कि जिस हालत में मुझ पर किसी किस्म की आंच न आवे मैं बखुशी आपकी मदद करने को तयार हूं। योंहीं कुछ देर गुफ़्तगू करने के बाद वह पटवारी वहां से उठ कर मौजे की तरफ चला गया, बादजाँ आध घंटे के एक कलवार और छः शख्सों को साथ लेकर लौटा। कलवार ने इज़हार

दिया कि मैंने पटवारी के बेटे नशाखोर लाल के हाथ एक बोतल निखालिस महुये की शराब बेचा जिसे वह दुकान में बैठेही बैठे पी गया और दूसरे लोगों ने भी बयान किया कि हमलोगों ने कई मर्तबे इसको नशे की हालत में देखा है। एक ने कहा कि मैंने इसे झूमते हुये देखा, दूसरे ने कहा कि लोग इसे शराबी २ कह के पुकारते थे, तीसरे ने बयान किया कि यह शराब पी कर पनाले में पड़ा हुआ था। एक गवाह ने यहां तक बयान किया कि हमने इसे गालियां बकते और फोहश गीत गाते सुना और यह भी देखा कि यह कुछ देर तक बेहोश पड़ा था बादजाँ उठ बैठा कभी रोता कभी हँसता कभी गालियां बकता और कभी नंगा होकर नाचता था, इससे मुझ को गुमान हुआ कि यह बेशक शराबी है। यों इज़हार लिख कर २००) रु० थानेदार ने अपने हाथ किया जिसमें से १५०) रुपया तो उन्होंने अपने जेब में रक्खा, २) गोड़ैत को दिया गया बाकी ४८) हम चार कांष्टेबुलों में बांटे गये। मगर पटवारी को मुतलक़ गुमान न था कि उसके बेटे पर क्या आफ़त आनेवाली है। मुक़द्दमा जएट मजिष्ट्रेट मि: लुक़वेल साहब के इजलास में पेश हुआ जिन्होंने यों फैसला लिखा कि:—

"कलवार ने मेरे रूबरू हलफन् बयान किया कि उसने एक बोतल निखालिस शराब को मुहाले के हाथ बेचा

जो वह उसी के दूकान में बैठा २ पी गया। यह सबूत पाया जाता है कि शराब पीने के चार घण्टे बाद मुद्दाले ने जुर्म किया; अगर कलवार की राय पर इतकाद किया जाय याने यह कि आधी बोतल महुये की शराब पीनेवाले को बेकाम कर देती है तो मुद्दाला जिसकी उमर करीब २२ वर्ष की है शराब पीने के एक घण्टे बाद इस कदर नशे में हो गया होगा कि हिल न सक्ता होगा, हां अगर उसमें एक घोड़े की ताकत हो तो बातही दूसरी है। दरहकीकत गवाहों में से एक शख्स ने बयान किया है कि मुद्दाला बिल्कुल बेकाम था। यह बयान उससे क्योंकर मिलान खा सक्ता है जो दूसरे गवाह का है यानी गवाह ने इसे गालियां बकते और फोहश गीत गाते सुना, बादजाँ उठ बैठा रोया गाया और नङ्गा होकर नाचने लगा। सिवाय इसके मेरी राय में नशाखोरी में बदमस्त होने का बहाना जुर्म को खफ़ीफ न कर और भी सङ्गीन करता है लिहाजा मैं मुजरिम नशाखोरलाल को मुसम्मात भोली पर जिस्की उमर १० वर्ष की है जिनाबिलजब्र का कसूरवार पाता हूं और इसे दौरे सुपुर्द करता हूं।"

मुकद्दमा दौरा जज जुबिलिएट आइरन बिल साहब बहादुर के इजलास में पेश हुआ जिन्होंने नशाखोरलाल को सात वर्ष बामशक्कत सजा दी। हाईकोर्ट में अपील की गई

और वहां से भी ग्रेसन जज साहब बहादुर का फैसला बहाल रहा ।

नवाँ पर्व्व ।

एक जालसाज़ी का मुकद्दमा ।

एक मर्तब: का ज़िक्र है कि साहब बहादुर ज़िला मजिष्ट्रेट के इजलास से एक वारण्ट बनाम झांसादेउ पांड़े साकीन मौजे लाचारीपुर के निकला और उसकी तामीली मेरे सुपुर्द की गई । यह शख्स अकसर दिहात के बेवकूफ़ लोगों को सूद पर रुपया दिया करता था और उस्के ज़ुल्म और जालसाजियों के बारे में अकसर शुहरत सुनी जाती थी । लेकिन आप जानते ही हैं कि बदी एक न एक दिन ज़ाहिर होही जाती है और उसका अन्जाम बद पैदा होता है । किस्साकोताह यह कि मौजे लाचारीपुर में गधा अहीर नामक एक शख्स रहता था जो अपने इस नाम में अपना फ़ख़ समझता था काश्तकारी का काम इस्का अच्छा होता था और फुटकर कामों से भी करीब ५०) माहवारी की आमदनी हो जाया करती थी क्योंकि दिहात में उसका काम बहुत चढ़ा बढ़ा था । एक मर्तब: उसके यहां दो शादियां एक साथही आ पड़ीं, यानि उसको अपने पोते

और पोती की शादी एकही वक़्त में करने का मौक़ा पड़ा तो उसे इस काम के लिये २००) पांड़ेजी से उधार लेना पड़ा जिस्का सूद उसने एक आना फ़ी रुपया माहवारी इक़रार किया। उस्की बदक़िस्मती से म्युनीसिप्यालिटी का जल्सा जब एक रोज़ हुआ तो मेम्बर लोगों की यह राय बक़सरत ठहरी कि आयन्दा को जो मकानात सर्कारी तामीर हो रहे हैं उनकी सुपुर्दगी किसी हिन्दुस्तानी मिस्त्री के मातहत न हो बल्कि २००) माहवारी पर एक अंग्रेज़ सब् इञ्जीनियर मुक़र्रर हो और राज मिस्त्री नौकरी से बर्तरफ़ हो। जब गधा अहीर को म्युनीसिप्यालिटी के इस इरादे से आगाही हुई तो सब से पेश्तर उसका ख्याल महाजन की तरफ़ गया और उसने यह मुसम्मम इरादा कर लिया कि चाहे घर की नथिया थारी तक बिक जावे मगर अब महाजन का कर्ज नहीं रखना इसलिये उसने पांड़ेजी से अर्ज की कि हमारे हिसाब का पुर्जा उतार दीजिये। पांड़ेजी ने ६००) के हिसाब का पुर्जा उतार दिया, और चूंकि अभी कर्ज़ लिये फ़क़त दोही महीने गुजरे थे गधा अहीर के तो होश हवास उड़ गये। उसने कहा कि यह ६००) कैसा चाहिये, खैर यह झगड़ा दीवानी अदालत में पेश हुआ। अर्जी दावे का मजमून यों था कि 'अर्सा क़रीब ढाई बरस का गुज़रता है कि मुद्दाला गधा अहीर मय

अपने खानदान के चन्द लोगों के जिसमें औरत और मर्द दोनों थे तावेदार (मुद्दई) के मकान पर आकर पैरों पर गिर पड़ा और बमिन्नत अर्ज़ की कि हमारी इज़्ज़तबचाओ। मुद्दई ने जब मुद्दाले से दर्याफ़ किया कि तुम पर क्या आफ़त है तो मुद्दाले गधा अहीर ने बयान किया कि मेरा सब से जेठा बेटा डकैती के मामले में फँसा है और अगर ६००) उसके मुद्दई को न दिया जायगा तो वह मेरा घर बार तबाह करने पर मुस्तैद है। मुद्दाले के मुसीबत पर रहम खाकर और ज्यादा कुछ तहकीकात न कर तावेदार नें ६००) उसी वक्त दे दिया। सायल की अर्ज़ है कि तावेदार ने आज तक किसी के साथ बेइमानी नहीं किया लिहाजा इतना बयान करा देना वाजिब है कि सूद वहिसाब २) माहवारी के मुझको हर महीना आज तक अदा होता चला गया है फकत असल रुपया ६००) बाकी है। अपने दावी के सुबूत में तावेदार अपना बही खाता पेश करता है जिसमें मुद्दाले का हिसाब दर्ज है, मुकद्दम अर्ज यह है कि गांव गँवई का दस्तूर है कि तीन चार मुअज़्ज़िज़ गवाहों के रुबरू कर्ज़ दिया जाता है और बही खाते में दर्ज कर लेने के सिवाय दूसरा कोई दस्तावेज़ वगैरह नहीं लिखाया जाता और वही काफी समझा जाता है। ताहम् तावेदार एक ऐसा कागज़ साथ में पेश करता है जो मुद्दाले ने उस

वक्त बतौर रसीद के मुझे लिख दिया था, और चूं कि अब मुद्दाले की बेईमानी के बाइस बातही दूसरी हो गई है मैं समझता हूं कि मेरी निहायत खुशकिस्मती थी जो मैंने उस वक्त यह रसीद उससे लिखवा ली थी। मुद्दई उम्मेदवार है कि अदालत मेरा इनसाफ़ फर्मावे।

यह मुकद्दमा सन् १८७० ई० में सदराला साहब बहादुर के इजलास में पेश हुआ और दोनों तरफ़ के गवाहों के इज़हार लिये गये। तरफ़ैन के वकीलों ने भी अपने अपने मुअक्किलों की तरफ़ से बहुत अच्छी बहस की और हाकिम के रुख से भी मालूम हुआ कि अब मुद्दई की डिग्री हुआ चाहती है। इतनेही में हाकिम को कुछ ख्याल आया और उन्होंने शिरिस्तेदार को फिर से रसीद पढ़ने का हुक्म दिया और उसने यों पढ़ना शुरू किया।

"मन् कि गधा अहीर वल्द खुचुर अहीर काश्तकार साकीन मौज़े लाचारीपुर पर्गनः पाजीपूर ज़िला वियाजखोरपुर का हूं, तस्लीम करता हूं कि मैंने झासादेऊ पांड़े साकीन मौज़े मज़कूर से ६००/ सरकारी सिक्का सूद दर २) सैकड़ा माहवारी पर कर्ज़ लिया जिसका आधा तीन सौ और चौथाई डेढ़ सौ रुपया होता है, मुवर्खः १ सावन

सन् १८६७ ई॰ मुताबिक मि: (यहां हिन्दुस्तानी सम्बत् और महीना लिखा था)।

दस्तखत गधाअहीर
वल्द खुचुर अहीर।

गुवाह आज़ाद पांड़े कच्चासिंह तकरारीसिंह मुश्किल खां।	साकिनान मौजे लाचारीपुर।

यह रसीद फुलसकेप कागज़ पर लिखी थी; जब सिरिश्तेदार ने पढ़ना खतम किया सदराला साहब ने हुक्म दिया कि इसे ज़रा मिसिल में से निकाल कर हमें दो। सिरिश्तेदार ने वह कागज़ हाकिम के हाथ में दिया और उन्होंने उसे रोशनी की तरफ खड़ा करके देखा; मालूम हुआ कि कागज़ के अन्दर जो हरुफ़ (Water mark) बने हैं उनमें लिखा है कि यह कागज़ सन् १८६८ ई॰ में तयार हुआ है। जब यह पोख़: सबूत सुहाले का हाथ आया तो सदराला साहब ने मुद्दई और उसके चारो गवाहों को दफ़ा २०८ और दफा ४६२ कानून ताज़ीरात हिन्द के मुताविक फौजदारी सुपुर्द करना चाहा। रूबकार लिखेजाने के पेश्तर ही मुद्दई और उसके चारो गवाह अदालत से आहिस्ते २

खसके और रूपोश हो गये, इस्तरह मुझे गिरफ़ारी का वारण्ट मजिष्ट्रेटी से हाथ आया था। खैर यों सम्मन लेकर मैं एक मौजे से दूसरे मौजे का सफ़र करने लगा, जहां जाता वहीं के जिमीदार को मैं कहता कि एक जुर्म निहायत संगीन हुआ है और साहब मजिष्ट्रेट बहादुर को शक है कि मुजरिम आप के मौजे में छिपा है और इसमें कोई शक नहीं कि आपने सर्कार के मुजरिम को अपने मौजे में पनाह दी है, इस ढंगबाजी से जिमीदारों में हलचल मच जाती, और जहां मैं देखता कि जिमीदार कुछ खौफ़ में आये और यहां कुछ हाथ गर्म होगा वहीं मैं वारण्ट निकाल कर उन्हें दिखाता और ज़रा नर्मी से कहता कि 'बिलाशक आपके किसी दुश्मन ने साहब मजिष्ट्रेट को यह झूठी ख़बर दी होगी कि आप लोग मुजरिम को पनाह दिये हैं और उसके साथ कानूनी बर्ताव नहीं होने देते" इसमें कोई शक नहीं कि मैं ज़िमीदारों को खुश करने के लिये उन्हें बाबू साहब. पांड़े जी या गोसाईं बाबा कह कर (जैसा मौका होता था) बात चीत करता था। खातिरी के इन चन्द अलफाज़ो से हमेशा मेरा हाथ गरम होता था और वे सब लोग मुझे कहते थे कि "ये बहुत नेक बख़ आदमी हैं।" क़िस्सा कोताह यह कि मैं वारण्ट लेकर बिसियों मौज़े में गया और क़रीब ३०) वसूल कर

लाया। थानेदार साहब ने वारण्ट देते वक्त मुझे जो हिदा-यतें करदी थी उनका बयान करना भी यहां जरूरी है। थानेदार साहब ने कहा था कि "जब तुम्हें मुदायलहुम् का पक्का सूराग़ लगे तो फ़ौरन् गोड़ैत को थाने पर रवाना करना, मैं फ़ौरन् मौके पर पहुंचूगा और ख़ुद वारण्ट की तामीली करूंगा। ख्याल रखना मियां मिट्ठू खां कि चाहे देर क्यों न हो तुम खुद इसकी तामीली हरग़िज़ न करना, मैं यह वारण्ट तुम्हें फकत इसी लिये सुपुर्द करता हूं कि शायद कोई मौका ऐसा आ जावे कि थाने पर इत्तला पहुंचने के पेश्तर मुजरिमों के रूपोश हो जाने का एहतिमाल हो तो तुम फौरन् इसकी तामील कर देना। अगर ऐसा मौका हो तो ख़बरदार रहना और काफ़ी मदद लेकर इसकी काररवाई करना, आस पास के मौज़े से तुमको उसी वक्त मदद मिलेगी, जिस वक्त जिमिदारों से कारे सरकार के लिये तुम मदद चाहोगी वे फौरन् तुम्हारी मदद करेंगे, गोकि वे दिल से यह बात न चाहते हों मगर वे अपनी जवाबदेही से खूब वाकिफकार होते हैं।

खैर योंही कई मौजों में तलाश करते २ मुझे झांसा देऊ पांड़े और दो गवाहों का सूराग़ लगा। फौरन् मैंने थाने पर ख़बर भेजी और थानेदार, ६ कांष्टेबल और आठ गोड़ैतों की मदद से वे लोग सोये हुये गिरफ़ार किये गये

ज़िला मजिस्ट्रेट के यहां उनकी चालान हुई और वहां से वे दौरे सुपुर्द किये गये जहां से पाड़े जी को ७ बरस की सख़ सज़ा हुई और दोनों गवाहों को भी चार चार बरस की सख़ सज़ा हुई गधा अहीर मारे खुशी के फूला न समाता था, मुकद्दमा खतम होने पर कहने लगा कि— "सरकार का इकबाल बड़ा है, राजहंस की तरह दूध का दूध और पानी का पानी अलग अलग कर दिया।" जो तीन सौ रुपया गधा अहीर ने दरहकीकत कर्ज़ लिया था उसे लेने वाला कोई भी न खड़ा हुआ। ऐसी दुनिया की हालत है कि जिस झासांदेऊ पाड़े के लिये किसी वक्त में हज़ारों लोग अपनी जान हथेली पर लिये फिरते थे आज उसे कोई पूछता भी न था। इसलिये साहब मेरी समझ में ईमानदारी के मुकाबिले तमाम दुनिया की दौलत और हश्मत नाचीज़ है। मैं उम्मेद करता हूं कि मेरे इस बयान से आयन्दे ज़माने के लोग फायदा उठावेंगे। बाकी दो गवाह जिन्होंने इकरारनामे पर दस्तखत किये थे न मालूम कहां ग़ायब हो गये क्योंकि आज कल रेल और जहाज़ की मदद से मुजरिम का लापता हो जाना कुछ मुश्किल नहीं है। खैर वे अपने रिश्तेदारों और दोस्त आशनाओं को तर्क कर ऐसे ग़ायब हुये कि आज तक उनका पता न लगा और उनके नाम का वारण्ट फौजदारी

दफ़र में यों लिख कर पड़ा हुआ है कि "पुलिस ने बहुत कोशिश और तलाश की मगर मुजरिमों का कहीं पता नहीं लगा मालूम होता कि शायद वे लोग मिरिच के टापू को चले गये।"

दसवां पर्व्व।

हड्डी और दांत की लड़ाई।

नाजरीन् कहेंगे कि यह क्या मामला है मगर जब वे इस हाल को पूरा सुन लेंगे तो कहेंगे कि हां ठीक है। जब से मैं भरती हुआ तब से यह औवल मुकद्दमा था कि मुझे अंग्रेजों के बीच में काम करना पड़ा। किस्सा यों है कि काली पलटन के असिष्टेण्ट सर्जन साहब ने एक अंग्रेज डाक्तर पर जो दांत की दवा करते थे यह दावा किया कि उन्होंने मुझे मारा है। इसका हाल यों है कि ये दोनों साहब एक गेंद के खेल में शरीक थे जहां और भी बहुत से अंग्रेज साहबान खेल रहे थे। खेलते २ बातोंही बात में दांत की डाक्तरी का ज़िक्र छिड़ पड़ा, दोनों साहब बड़े जोश में बातें कर रहे थे, आखिरकार दांत के डाक्तर साहब ने कहा कि मेरी राय में दांत की डाक्तरी में बनिस्बत चीड़ फाड़ और दूसरी दवाइयों के काम से ज्यादातर

आमदनी होती है। जैसा कि थानेदार साहब से मैंने सुना था "दांत के डाक्टर साहब ने यों कहा कि दांत की डाक्टरी में यह सुभीता है कि इस कार का करनेवाला चन्द बरसों- ही में कसीर दौलत पैदा कर निहायत नेकनामी से अपने मुल्क को लौट जाता है और फौजी डाक्टर बरसोंही मारा मारा घूमता है कोई भी उसे नहीं पूछता।" इसपर फौजी डाक्टर साहब ने जवाब दिया कि शायद यह ताना मुझी पर है और नहीं तो आप साफ साफ बयान कीजिये कि आपका क्या मतलब है?" आहिस्ते जो बहस होती है वह सबको भली मालूम होती है मगर यहां तो बातही दूसरी थी। बातही बात में बात बढ़ गई और दोनों साहब जोश में आ गये और दांतवाले साहब ने गेंद खेलने वाले डंडे से जंगी डाक्टर को एक हाथ जड़ दिया, इसपर उस जंगी डा- क्टर ने ऐसा कस कर एक घूसा जामाया कि दांत वाले साहब ज़मीन नापने लगे। इसपर और साहबान लोग जो खेल में शरीक थे बीच में आ गये और यह कह कर मा- मला ठंढा किया कि दांत वाले साहब ने जो गलती की और पहिले हांथ चलाया उस्का नेक अंजाम उनको बहुत कुछ मिल गया झगड़ा ते होना चाहिये और दांतवाले साहब को वाजिब है कि वे माफी मांगे क्योंकि औव्वल हाथ छो- ड़ने का कुसूर उन्हीं का है। इसपर वे राजी हो गये और

कहा कि मैं कल सुबह को माफी मांगूंगा, पर चूं कि शाम तक भी कोई माफी का कागज़ न आया दो अफसर उस मुकाम पर वास्ते तहकीकात के पहुंचे जहां दांतवाले साहब ठहरे हुये थे। वहां उन्हें पुराने खानसामा से मालूम हुआ कि दांतवाले साहब चारही बजे अपने वेग सेग उठा कर रफू चक्कर हुये, यहां तक कि असबाब उठाने के लिये कूली को भी साथ न लिया। जब उन अफसरों ने दर्य्याफ़ किया कि दांतवाले साहब का कुछ पता मालूम है कि वे किधर और कहां गये तो उसी पुराने खानसामे ने जवाब दिया कि चूंकि वे मेरा हिसाब कौड़ी कौड़ी चुका गये मुझे क्या गरज़ थी कि मैं उनसे दर्याफ़ करता कि आप कहां और किधर जांयगे। दूसरे दिन डाक्तर साहब ने दफा ६५१ और ४०५ ताजीरात हिन्द के मुताविक सदर मजिष्ट्रेट के यहां नालिश की जिन्होंने दफ़ा २५७ जाबता फौजदारी के मुताविक दांतवाले डाकदर साहब पर वारण्ट निकाला। जिन मुकद्दमों में अंग्रेजों का वास्ता होता है उसमें हम लोग बहुत होशियार रहते हैं और हर्गिज़ बखसीस वगैरह नहीं लेते, हां कभी कभी नीलवाले और मामूली सौदागरों से ले भी लेते हैं, मगर वह भी उस हालत में कि जब देने वाला बहुत ज्यादा इसरार करता है और सच्चे दिल से इसबात का वादा कर लेता है कि वह हमारे ऊंचे

अफसरों तक इस्का ज़िक्र कभी न करेगा। इस मुकद्दमें में जब थानेदार ने मुझे दांतवाले साहब का हुलिया लाने के लिये भेजा तो डाक्तर साहब ने मुझ एक रुपया दिया और कहा कि यह मामूली बखसीस है इस्के लेने में कुछ हर्ज नहीं,। मैंने बहुत आजिज़ी से अर्ज़ की कि मुझे इस्से मुआफ़ फर्माइये मैं तो जैसा सर्कार का नौकर हूं वैसाही हुजूर का भी तावेदार हूं। गोंकि उन्होंने उसके लिये बार हा इसरार किया मगर मैंने इनकारही किया क्योंकि मैं वखूबी जानता था कि हमारे सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब फौजी मेसहौस में अकसर आया जाया करते थे। मैं आपही से पूछता हूं कि वह कौन पुलिसमैन है जो रात दिन की जां फिसानी करता रहै और इनाम की उम्मैद न करै! मैं तो कोई चीजही नहीं हूं, मेरे थानेदार साहब या मोटी तनखाह के कोतवाल साहब या कोई भी ऐसा हिन्दुस्तानी पुलिस अफसर न होगा।

खैर दूसरे दिन सुबह को थानेदार के नाम हुक्म आया कि मुझे इत्तला दी जाय कि मैं ११ बजे दिन के वक्त पुलिस दफ़्र में हुजूर कप्तान साहब के रुबरू हाज़िर होऊं। जो सच पूछिये तो दीवान साहब ने ज्योंही हुक्म नामा पढ़कर सुनाया मेरे होश वास्ते हो गये और मैं थरथर कांपने लगा गोंकि मैं वखूबी जानता था कि मैंने कोई गैर-

वाजिब कारखाई नहीं की है ताहम् फक्त इसी ख्याल से कि क्यों मेरी बुलाहट हुई मेरा दिल हौल मारने लगा। वक्त मुकर्रर पर मैं सुपरिंडेंटी कचहरी में हाज़िर हुआ, तो कप्तान साहब बहादुर ने मुझसे यों फर्माया कि "मियां मिट्ठू खां, मैं इस बात से निहायत खुश हुआ कि तुम रिश्वत वगैरह से अपने तई दूर रखते हो, पस यह वह रुपया तुम को इनाम दिया जाता है जो तुमने कल डाक्टर साहब से लेना इनकार किया था।" मैंने झुककर सलाम किया और बखुशी उस रुपये को मंजूर किया जो अब कानूनन् वाजिब हो गया था पर साथही मुझे गुमान हुआ कि मेरे मालिक भी कैसे भोले साहब है। दांतवाले साहब का फिर कुछ भी पता न लगा, शायद उन्होने अपना नाम बदल दिया और कहीं मद्रास की तरफ जाकर अपना रोजगार जारी कर दिया, ऐसी उम्मेद की जाती है कि इस छोटीसी वारदात से वह अक्लमंदही नहीं बलकि बेहतर शख्स हो गये होंगे।

ग्यारहवाँ पर्व्व।

एक मर्तब: मैं एक छोटे से थाने पर तैनात किया गया जहां एक जमादार, एक दीवान जी (याने मुहरिर) और छ कांस्टेबल थे। थाने में एक सवार भी था, यह थाना

ऐन एक पक्की सड़क पर थी जो बड़े ज़िले को जाती थी। वहां का अफ़सर चुपचाप सिंह एक नाख्वांदा पछैहां राजपूत था जिस्के लिये काला अच्छर भैंस बराबर कहना चाहिये, मगर चूंकि उसने वलवे को दिनों में सर्कार की अच्छी मदद की थी इसलिये उसे यह जगह मिल गई थी। वह निहायत ठंढी तबीयत का आदमी था और कभी थाने के झमेलों में अपने तईं न रखता बल्कि उस्का यह कहना था कि यह सब छोटे मोटे काम हैं दीवान जी इस्का इन्तिजाम कर दिया करें। हमारे दीवान जी एकही वेखौफ़ और हिम्मती अफसर थे और नाम भी इनका शेख "धमकाऊ अली" था। जिमीदारों का तो इनके रुबरू आतेही दम खुश्क होता था और उसका ऐसा रोब था कि अगर दस बीस शख्स भी आपस में ज़ोर जोर से बातें कर रहे हों पर ज़हां उसने एक मर्तब: "खामोश" कहा कि सब की जुबान बन्द हो जाती थी; दरहकीकत उसका कहना यह ठीक था कि मैं किसी इनसान या शैतान से खौफ़ नहीं खाता। वह अपने इरादे पोशीदा न रखता था बलकि यह साफ़ २ कहा करता था कि अगर यह उम्दा मौका भी हाथ से निकल गया और जेब न खनखनाया तो मुझसे भारी बेवकूफ कौन होगा, थाने के मातहत एक मौजा था जहां छोटी मोटी चोरियां बहुत ज्यादा होती

थीं, आखिरी चोरी जो वहां हुई वह रोजनामचे में ३७ वां नम्बर रखती थी जो छ महीने के दर्म्यान हुई थीं। एक रोज सुबह के वक्त साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट का हुक्मनामा इस मज़मून का आया कि—

बनाम हेडकांष्टेबुल चुपचापसिंह अफसरे थाना नन्नामूनो बआफियत बांशन्द ।

चूं कि हुजूर ने ख्याल फर्माया है कि मौजे धव्वस भव्वस में बहुत ज्यादा चोरियां होती हैं यहां तक कि आखिरी चोरी का नम्बर जो इस छ माह के दर्म्यान हुई हैं ३७ तक पहुंचा है, लिहाज़ा तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर इस आखिरी सर्के के चोर गिरफ़्तार न होंगे और अगर आइन्द: रियाया के जानोमाल को हिफाजत उमदा तौर से न होगी तो तुम्हारे हक़ में अञ्जाम इसका अच्छा न होगा ।

पस एक हफ़्ते का वक़्त दिया जाता है ताकि तुम आखिरी चोरी याने नम्बर ३७ का पूरा पता लगाओ, इस अर्से में यातो माल मसरूका को मय मुजरिमों के हाज़िर करो या दफ़्तर में हाज़िर हो कर इस बात का जवाब पेश करो कि क्यों नहीं तुम नालायकी में वर्खास्त किये जाओ। अगर तुम इस काम या दर्जे के लायक होते तो कभी यह मुमकिन न था कि इतने थोड़े अर्से में इतनी

वार्दातें चोरी की, एकही मौजे में होतीं सो भी खासकर उस मौजे में जो थाने से फक़त एक कोस की दूरी पर है। हुजूर के गोशगुज़ार हुआ है कि तुम कभी भी अपने थाने के हल्क़े के मौजे में गश्त पर नहीं जाते और इसमें कोई शक नहीं कि इतनी वार्दातों के होने से इस अम्र की सचाई सुबूत होती है।"

इस रिपोर्ट को सुन कर हमारे जमादार चुपचापसिंह ने दीवानजी से सलाह करी, कि अब क्या करना चाहिये, शेख धमकाना अली ने कहा कि यह कोई मुश्किल बात नहीं है, आइन्दे के लिये चोरियों का होना तो आजही बन्द हो सकता है, मगर ऐसा होने पर साहब बहादुर समझेंगे कि येही लोग चोरियां करवाते थे और ऐसा गुमान होना वाजिब भी होगा।

खैर तो अब एक काम कीजिये कि मौजे धब्बस भब्बस के गोड़ैत को आप बुलवा भेजिये और मैं इस बात का ज़िम्मा लेता हूं कि मैं उन शैतानों को अभी गिरफ़ार कर देता हूं कि जिन कम्बख़्तों ने हमलोगों की रोजी पर ऐसी आफत लाई हैं। उसी दिन मौजे का गोड़ैत जिसका नाम सूअरघेंटा पासी था तलब किया गया और तमाम थाने के रूबरूही शेख धमकाना अली ने साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट का फर्मान उसे पढ़ कर सुनाया और पासही के एक दूसरे

गोड़ैत को जो वहां खड़ा था हुकुम दिया कि इसके मुंह पर थूक दो। ऐसा करने के बाद उनने उसकी सख़ मलामत की और यों कहा कि—

"सुन बे सूअरघेंटा पासी, हम तुझे होशियार किये देते हैं कि अगर तीन दिन के अन्दर उन चोरों को तू नहीं हाज़िर करेगा कि जिन्होंने यह आखिरी चोरी की है और जिस्की रपट तू ने लिखाई है कि ७५) का माल सचबात तिवारी के मकान से चोरी गया है, तो हम तुझे इसी दरख़ (उंगली से बता कर) में बांध कर मारते मारते खाल उड़ा देगें और बचा तुम्हारा पासीपन जहन्नुम में भेज देगें। तेरे एक भाई से तेरे मुंह पर थुकवाया गया है ताकि तुझे मालूम हो कि सरकार बहादुर की जानिब तेरा क्या फ़र्ज़ है पस अगर तुझे कुछ भी शर्म है तो फ़ौरन् उन्हें हाज़िर कर और नहीं तो हमें जानता है न!"

फिर ज़रा नर्मी से कहा "और अगर सूराग़ लगा कर रपट लिखावेगा तो हम तेरी सिफारिश साहब सुपरिण्टेण्टेण्ट बहादुर से करके इनाम दिलावेंगे और तेरी तरक्की भी करादेंगे, पस इन सब शर्तों और बातों को याद करता हुआ फ़ौरन् मौज़े धब्बस भवस की तरफ जा और अपनी कार्रवाई दिखला"।

इस डपेट का ऐसा उमदा असर हुआ कि अभी तीन

दिन गुजरने भी न पाये थे कि सूअरघेंटा गोड़ैत मय मुद्दई सचबात तिवारी के दो चोरों को गिरफ़ार किये हुये थाने में आया और माल मसरूका मे से ६२/ की चीजें भी हमराह लाया। दोनों चोरों को चालान की गई और हर एक को दो दो बरस की सख़ सज़ा हुई। मज़ा तो यह कि बिचारे चोरों को सज़ा हुई और चुपचाप सिंह चैन से लहर उड़ाता रहा और अपने वहदे पर ज्यों का त्यों कायम रहा।

अब मैं दीवानजी (मुहरिर) साहब के बे खौ़फ़ तबीयत और मन्मानती कार्रवाई का एक और हाल सुनाता हूं; एक रोज़ उन्होंने घाट के ठीकेदार को जो मुसाफ़िरों से दूना महसूल ले लिया करता था बुला भेजा। उसे यह ख्याल गुज़रा कि शायद किसी मुश्तव: शक्स के मकान की तलाशी वगैर: ली जायगी और मैं बतौर इज़्ज़तदार गवाह के बुलाया गया हूं क्योंकि यह दस्तूर है कि तलाशी लेते वक्त पुलिस को मुहल्ले के दो चार मोतबिर गवाहों के रूबरू अपनी कार्रवाई करनी पड़ती है। पस वह सीधा घाट से उठकर थानेही पर चला आया और घाट की आमदनी जो करीब ६०/ रुपये के रेज़कारी थी थैली में लेता आया। ज्योंही यह थाने पर पहुंचा त्योंही उसे हुकुम हुआ कि थैली रखकर बात करो, और जब उसने थैली रखदी तो

कहा गया कि 'बस जाओ यह थैली मय इस रिपोर्ट के कि तुम मुसाफ़िरों से दूना और तिगुना महसूल वसूल करते और उन्हे लूटते हो, साहब मजिष्ट्रेट बहादुर के पास भेजी जायगी'। होते हवाते यह बात तै पाई कि ठीकेदार उस थैली को छोड़ कर अपनी इज़्ज़त बचा अपने घर का रास्ता ले, पस ऐसाही हुआ कि वह ६०) दीवानजी की नज़र कर घाट को वापस गया। फिर किसी ने भी दर्याफ़्त न किया कि ठीकेदार क्यों बुलाया गया था। मेरे भाई कांष्टेबुलों में जब कभी इसकी चर्चा चलती है तो वे कहा करते हैं कि उस बेवकूफ़ को थैली लेकर थाने पर आने की क्या ज़रूरत थी।

जिस ज़माने का मैं ज़िक्र करता हूं उन दिनों यह हुक्म जारी था (जो अब तर्मीम हो गया है) कि किसी सबब से भी "जमादार मोहरिर" थाना छोड़ कर कहीं न जावै मगर हमारे दीवानजी ऐसे सड़े हुक्मों या सरक्यूलरों को क्या समझते थे। उनका मामूल था कि वे अकसर थाने से कोस डेढ़ कोस इधर उधर के मौज़ों में सैर करते चले जाते थे और इसे वे "कार-सर्कार" कहते थे। जब वे यों सैर करने जाते थे (जिसमें उनको अच्छी याफ़्त होती थी) तो कांष्टेबुल मोहर्रिर को हिदायत कर जाते कि जो जो बातें हमारी गैरहाज़िरी में हों उन्हें एक सादे

काग़ज़ पर लिख रखना जिस्में मैं खुद वापस आकर अपने हाथ से रोजनामचे में लिखलूंगा, और अगर कोई अफसर वगैरः बगैर इत्तला दिये यकबयक थाने पर आ जावे तो कह देना कि मोहरिर या तो पैखाने या नहाने गया है या खाना पकाने के लिये अभी गया है और फौरन् एक नौकर को दौड़ा कर मुझे उस गांव पर खबर कर देना जहां मैं जाता हूं (यह कह कर वह गांव का नाम बता देता था) यह याद रखना चाहिये कि दीवानजी का दौरा मतलबसे खाली न था, उनके जरूरियात इतने थे कि तनखाह और छोटे मोटे रिश्वतों से न उनका दिलही भरता था और न कामही चलता था। इसलिये वे गश्त करती वक्त उन जिमीदारों का नाम पता लिख लाया करते थे कि जिनके मकान के आस पास वे थोड़ा भी कूड़ा करकट पड़ा देखते थे। थाने पर वापस आकर वे एक कांष्टेबल को उस जिमीदार के पास इस ज़बानी हुक्म के साथ भेजते कि 'फौरन् थाने पर हाज़िर आओ।" इस अर्से में वे एक लम्बी चौड़ी रिपोर्ट उस जिमीदार के रूबरू पढ़ने के लिये तयार कर डालते जिस्का आखिरी हिस्सा वे यों लिखते थे—

"चूं कि हुजूर (साहब मजिस्ट्रेट बहादुर) ने सख़ हुक्म सादिर फर्माया है कि तमाम मौजों में उम्दा सफाई रक्खी जावे लिहाज़ा ताबेदार ने उस हुक्म की आगाही जुम्ला जि-

सौदारों को कर दी थी, मगर फिदवी के बार बार ताकीद करने पर भी मौज़ा गुंडापुर का जिमीदार हुजूर के हुक्म पर कुछ भी ग़ौर नहीं करता और न उस्की तामीली करता है; दरहकीकत चन्द जिमीदार ऐसे ज़िद्दी हैं कि अगर उनको रियाया खेतों के खाद के लिये कूड़ा कर्कट उठाया भी चाहती है तो वे उन्हें रोकते हैं। अगर हुजूर इन गँवार और जाहिलों को सफाई व तनदुरुस्ती का मतलब और फायदा समझाया चाहते हों तो अक्लमन्दों ने फकत एकही राय इस बारे में दी है यानि इन पर दफ़ा २७८ ताजीरात हिन्द लगाई जाय। हुजूर को तो आगाही हुई है कि पुलिस ऐक्ट दफ़ा ३४ इस इलाके में जारी नहीं है वर्न: फिदवी ने कभी इन ज़िमीदारों की चालान कर दी होती, इन सभों में मौज़ा गुण्डापुर का जिमीदार औव्वल नम्बर रखता है।"

बस इस पुर्मज़्मून रिपोर्ट के सुनतेही जिमीदार का तो खून सूख गया, उसने इकरार किया कि मैं अभी मौजे की सफाई करा देता हूं, मगर इस कोरे इकरार से दीवान जी को क्या फायदा! सो उन्होंने तड़प कर कहा "यह मैं समझा कि आइन्दे से तुम सफाई रक्खोगे मगर इस वक़्त जो जुर्म तुम पर लगा है उसको क्या तदबीर करते हो?" बस जहां यह ढंग खेला गया कि जिमीदार ने दस पांच रुपये से हाथ गरम कर अपना पीछा छुड़ाया।

बारहवां पर्व ।

कुछ दिनों बाद मिस्र में दूसरा बादशाह हुआ जो यूसफ़ को न जानता था। याने मेरे पहिले थानेदार की तो तबदीली हुई और एक नये हज़रत तशरीफ़ लाये। इन्होंने साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट बहादुर का यह कान भर दिया कि मैं चोर और बदमाशों से मिला हुआ हूं सो मेरी बदली रिज़र्व फोर्स में कर दी जावे। सबब यह हुआ कि मेरे साथी चन्द कांष्टेबु मेरे इख़ियार को देख जलते थे और उन्हीं सभों ने इस नये अफ़सर को मेरे वर्खिलाफ़ कर दिया था। मुझे इस बात का कुछ रंज न हुआ क्योंकि रिज़र्व फोर्स में रहने से मुझे यह मौका था कि कहीं जगह खाली होने से मैं फिर नौकरी पर भेज दिया जाऊंगा, यह कायदा है कि जब कहीं किसी पुलिस के थाने या गारद में आदमी की ज़रूरत पड़ती है तो इसी रिज़र्व फोर्स में से भेजे जाते हैं। खैर अभी मुझे एकही महीने रिज़र्व में हुये थे कि मजिष्ट्रेटी में एक अर्दली की जगह खाली हुई; मैंने सदर इन्सपेक्टर को दर्ख़ास्त दी कि मैं वहां भेज दिया जाऊं। उन्होंने इकरार किया कि तुम्हारी चाल चलन की किताब देखी जायगी और अगर उसमें अच्छी कैफियत दर्ज होगी तो तुम वहां भेज दिये जाओगे। मैं तो जानता ही था कि मेरे अफसर सब मुझपर मिहर्बान थे, मेरे वर्खि-

साफ़ "रोलबुक" में कोई बात न होगी। दूसरे दिन साहब इन्सपेक्टर ने किताब देख कर मुझे कोर्टइन्सपेक्टर के पास जिनको हमलोग नाज़िर साहब कहते थे भेज दिया कि जिस अदालत में जगह खाली हो मैं भेजा जाऊं। मैं दस बजे हाज़िर हुआ और नाज़िर साहब ने मुझे साहब मजिस्ट्रेट बहादुर को अदालत में अर्दली का काम करने का हुक्म दिया और चलते वक्त यों हिदायत कर दी कि "मियांमिट्ठू खां! तुम होशियार शख्स मालूम होते हो, देखो वहां तुम्हें बकवादीदास कांष्टेबू के साथ काम करना होगा वह तुम्हें सब तरीके समझा देगा।" मैं सलाम करके चलता हुआ और अपना काम करने लगा। एकही हफ़्ते में मैंने बकवादी दास से खूब गाढ़ी दोस्ती पैदा करली और जो कुछ आमदनी दिनभर में होती शाम को हमदोनों आधा आधा तकसीम कर लेते। अब मैं आपको अदालती कांष्टेबूों की याफ़्त और काम करने का ढंग सुनाताहूं। उनका एक खास काम यह होता है कि पुकार होने पर मुद्दई मुदाले और गवाहों को अदालत में पेश करना; ज्योंही फौजदारी के पेशकार साहब ने हुक्म दिया कि फलां मुद्दई मुदाले या गवाह को हाज़िर करो त्योंही एक शख्स तो उस हुक्म की तामीली के लिये बाहर दौड़ जाता है और दूसरा दर्वाजे पर खड़ा रहता है। अगर वह शख्स इज्ज़तदार हुआ तो उसने

आहिस्ते से १) हमारे हाथ धरा कि हम उसे खातिरी से ले जावें नहीं तो सब की गर्दनियां देना हमारा मामूल है। अगर किसी मुद्दई या मुद्दाले से हमारी बात चीत हो गई कि फलां फलां शक्स के फलां इज़हार की खबर हमको देना तो वक्त पर किसी मुकर्रर इशारे पर फ़ौरन् एक सिपाही किसी न किसी बहाने से बाहर निकल आता और उसे समझा देता है। यह काम हमलोग बहुत आसानी से कर लेते हैं और हाकिम को मुतलक शक नहीं होता क्योंकि हमलोग बराबर बाहर आया जाया करते हैं; तर्फ़ैन के गवाह भी हमलोगों पर शक नहीं कर सकते क्योंकि हमलोग पेश्तरही चलाकी से उन्हें दूर दूर बैठाते हैं, याने मुद्दई के गवाहों को मुद्दाले के गवाहों से ५० कदम की दूरी पर पहिलेही बैठा देते हैं और जहां तक मुमकिन हो ऐसी जगह पर रखते हैं कि वे लोग एक दूसरे को न देख सकें। फिर अगर किसी मुद्दई या मुद्दाले के मुख़ार को तहकीकातकुनिन्द: अफसर के रोजनामचे खास के देखने की ज़रूरत हुई तो हमलोग फ़ौरन् थाने में जाकर उसे यह कह कर मांग लाते हैं कि यह "बगरज़ मुआइना दर्कार है।"

इस कारे-मिहर्बानी के लिये हमलोगों का हाथ अच्छी तरह गर्म किया जाता है क्योंकि रोजनामचे खास में तर्फ़ैन

के गवाहों के इज़हार जो वे पुलिस में दे चुके हैं, दर्ज रहते हैं; और तहकीकात-कुनिन्दा अफसर की राय भी लिखी रहती है। जब मुख्तार के हाथ यह कागज लग गया तो वह अपने मुअक्किल के मुकद्दमे में खूब पैरवी कर सक्ता है, इसी वास्ते इस काम के लिये अच्छा इनाम मिलता है। बाज़ वक्त मुद्दई या मुद्दाले को किसी ऐसे रिपोर्ट के नकल की ज़रूरत पड़जाती है जिस्को थाने के रोजनामचे में दर्ज हुये महीनों गुजर गये, और अब यह दर्याफ़ करना है कि फलां रिपोर्ट किस तारीख को की गई थी तो हमलोग फौरन् थाने के मुहाफिज-दफ़्र के पास जाकर कहते हैं कि "नाज़िर साहब ने फलां फलां कागजात तलब किये हैं तलाश करके फ़ौरन् दीजिये।" बस योंही अपना काम निकाल लेते हैं। तमाम दिन तो हमलोग कचहरी में रहते हैं। और रात को अपने २ मकानों पर जो किराये का रहता है चले जाते हैं, इस तरह हमलोगों को मुद्दई या मुद्दाले के पास जाकर उनसे बन्दोबस्त कर लेने का पूरा मौका दस्तियाब होता है। हमको इसकी पर्वाह नहीं कि दो में कौन जीते हमको तो अपने हलुये मांड़े से मतलब. जो जीतेगा सोही हमारी मुठ्ठी गरम करेगा मगर हां जो हमें बखूबी खुश करता है हम भी उसकी पूरी मदद करते हैं। अदालतों के जमादारों को ज्यादा आमदनी होती है

क्योंकि हिन्दुस्तानियों को हमेशा यह एतबार रहता है कि इन नायब नाज़िरों का ज़ोर हुक्कामों के यहां ज्यादा चलता है। मैं एक नमूना यहां बयान करता हूं जिस्से आपको कुछ आगाही होगी। साहब जएट बहादुर को अदालत में एक जमादार रहता था, साहब के मातहत आठ थाने थे, जब यह जमादार (नायब नाजिर) फौजदारी अदालत में नौकर हुआ तो उस वक्त उसकी मौरूसी मिलकीयत जो करीब ३० बीगहे जमीन थी रेहन पड़ी थी और उसके बाप के पास पुराने खपड़े की एक झोपड़ी के सिवाय कुछ भी न था। आठही वर्ष में वह शख्स अपने मौजे में आधे हिस्से का खासा ज़िमीदार हो गया और उसने एक पक्का तिमँज़ला मकान तयार कर लिया जिस्में सखुये की धरन और पत्थर की छत लगी थी। मसल मशहूर है कि जो पहिले गोपिया पुकारा जाता था आज वह लाला गोपीनाथ साहब ज़िमीदार हो गये। आपही फर्माइये कि जिस शख्स के यहां दस आदमी खाने वाले हैं और माहवारी तनखाह फकत पांच या छ रुपये हों उसके पास कहां से इतना रुपया आ गया? अकसर डिप्टी इन्सपेक्टर जेनरल साहब बहादुर यों हुक्म सादिर फर्माते हैं कि "सज़ा बहुत कम हुई, कम से कम फी सदी चालिस और होनी चाहिये थी। साहब सुपरिएटेण्डेएट थानेदार पर खफ़ा होते हैं

कि "गिरफ़्तारी वाजिब नहीं हुई" और कोर्ट इन्सपेक्टर पर ताकीद होती है कि "होशियारी के साथ मुकद्दमा चलाओ" मगर इन तमाम फसादों के जड़ की तहकीकात कोई भी नहीं करता। सो यह है कि जब तक कचहरी के सिपाही लैन के बाहर रहेंगे और एकही शख्स बर्सहा वर्ष अदालत में रहेगा तब तक कोर्ट इन्सपेक्टर लाख सिरमारे कामयाबी नहीं पा सकता। कई बर्ष तक एकही सिपाही के मजिस्ट्रेटी में रहने से उसका इतना ज़ोर हो जाता है कि सर्कार की तमाम कार्रवाई फ़जूल हो जाती है। अगर कोई होशियार इन्सपेक्टर इस गंदगी को दूर भी किया चाहता है तो अदालती अमलें यह कहकर उज्र पेश करते हैं कि "हुजूर अदालत का काम रुक जायगा" मगर यह बहाना महज फ़जूल है। कांष्टेबु का कामही कितना ? अगर वह मुद्दई मुद्दाले या गवाहों को भी न पुकार सका या एक अदालत के कागज़ात दूसरी अदालत में न ले जा सका तो वह हर्गिज़ नौकरी के लायक नहीं है। असल बात यह है कि येही सिपाही लोग अमलों की याफ़ के लिये बीच में भुगतान करनेवाले होते हैं और उनकी तबदीली हो जाने से अमलों की मतलबयावरी में फर्क पड़ता है। बाज़ बाज़ ज़िलों में ये लोग साहब मजिस्ट्रेट या सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब की मर्ज़ी से तबदील करदिये जाते हैं और वहां सब काम बराबर चलता है, फिर तो किसी का भी उज्र नहीं चलता।

तेरहवाँ पर्व्व ।

काम पड़ने पर रिज़र्व पुलिस के लोगों में से मुख़्तलिफ महकमों में आदमी दिये जाते हैं, खास कर खजाने या कैदियों के साथ वे लोग मुहाफ़ज़त में भेजे जाते हैं, और जेलखाने या खजाने या दूसरे गारदों की बदली कराया करते हैं । चूंकि ऐसी नौकरी पर याफ़ की कोई जगह नहीं है इसलिये हम सिपाहियों की निगाह में रिज़र्व फोर्स में बदली होना एक तरह की हलकी सज़ा समझी जाती है और हुक्कामों का भी ऐसाही ख्याल है । मगर हां फकत दो मुकाम ऐसे हैं कि वहां कुछ हाथ गरम हो जाता है, औव्वल अदालत, दोयम हवालात । अदालत की याफ़ के बारे में तो मैं अपना तजरुबा आपको सुनाही चुका हूं अब हवालात की याफ़ का हाल अर्ज करता हूं । हवालात उस मुकाम का नाम है जहां ज़ेर तजवीज़ मुकद्दमों के असामी बन्द किये जाते हैं । उनके साथ उसी किस्म का वर्ताव किया जाता है कि जो जेलखाने के कैदियों के साथ होता है फ़र्क इतनाही है कि उनको मशक्कत नहीं करनी पड़ती । आप यह ख्याल न फर्मावें कि मुद्दालों को अपने मुख़ार या रिश्तेदारों से मुलाकात करने की वहां इजाजत रहती हो ताकि वे अपने मुकद्दमे में पूरी पैरवी करने पावें;

नहीं नहीं, बल्कि जब तक साहब मजिस्ट्रेट की खास इ-ज़ाजत न हो तब तक वे किसी दूसरे बशर की शकल तक नहीं देखने पाते और अगर ऐसी इजाजत उनके रिश्तेदारों को मिल गई तो फिर क्या है पहरेदारों की पौ बारह हो जाती है। चूं कि हवालात के असामियों को जेलखाने की खुराक दी जाती है पस अगर उनके दोस्तों या रिश्तेदारों को उम्दा खाना खिलाना मंजूर हुआ तो पहरेदारों को मुट्ठी गरम करनी पड़ती है। जिन लोगों को बदकिस्मती से कभी ऐसा काम पड़ा है वे वखूबी समझ सकते हैं कि किस कदर ज़ोर पुलिसवाले ऐसे मौकों पर दिखलाते हैं। मैं अपने वक्त का हाल आप से अर्ज़ करता हूं कि फकत एक महीने में गारद के जमा-दार ने २५, और हर एक कांष्टेबल ने आठ आठ रुपया पैदा कर लिया और नौ नौ रुपया दूसरे महीने में याफ़ हुई। इसमें शक नहीं कि वह महीना भी हमलोगों के लिये खुश-किस्मत था क्योंकि ज़ेर तजवीज असामियों में से बहुतेरे मा-लदार असामी थे जिनकी चालान एक जूये के मुआमिले में हुई थी और जिन्हें ५ रोज़ तक हवालत में रहना पड़ा था। अगर हमारी क़िस्मतों से कोई बदकिस्मत मोटा असामी आ फंसा तो खूब माल चिरता है और शाज़ो नादिर कोई ऐसा कम्बख़्त माह होता होगा कि जिसमें ऐसे मोटे असामी

दो चार न आ जाते हों। मा सिवाय इसके हवालात का दर्वाजा वक्त मुकर्रर: पर खुलता है इसलिये पुलिसवालों को इन असामियों पर अपना (इख़्तियार) जोरो जुल्म दिखलाने का पूरा मौका दस्तयाब होता है। कोई प्यास के मारे मरा जाता है कोई पाखाने या पिशाब के लिये चिल्लाता है पर वहां कौन सुनता है। मुझे एक शख्स की हालत याद है जो किसी हलके से चोरी के मामले में हवालात भेजा गया था, उसे पाखाने की हाजत हुई सो उसने गारद के सिपाही से कहा कि भई "मुझे जरा बाहर निकालो मैं फरागत जाऊंगा।" सिपाही ने जवाब दिया कि अपने मकानवालों के नाम २) का रुक्का लिख दो कि इस सिपाही को दे देना तो मैं बाहर निकालूं। हरचन्द उसने मिन्नत व आर्जू की कि मेरा कोई रिश्तेदार या दोस्त ऐसा नहीं है कि जो मेरे लिखने पर देवे मगर सिपाही हजरत कब मानते हैं। असामी की खुशकिस्मती से एक अंग्रेज अफसर उधर से किसी काम के लिये जा रहा था; असामी ने उससे अपना दुखड़ा रोया जिसपर उस अफसर ने पहरेवाले को डांट कर असामी को तकलीफ से रिहाई दी। एक दूसरे मौके का ज़िक्र है कि एक हट्टे कट्टे मजबूत असामी को पाखाने की हाजत हुई उसने भी पहरेदार से कहा मगर वहां तो अगर कुछ मिले तो सुनाई हो,

नहीं बका करो; असामी ने आहिस्ते से सिपाही से कहा कि अगर तुम नहीं सुनते तो मेरी धोती बिगड़ जाती है फिर हाकिम तहकोकात करेगा तो तुम्हीं पर आफत आ-वैगी, सिपाही ने देखा कि यह बेढंगा असामी है फौरन् बाहर किया और बाद हाजत रफ़ा के फिर हवालात में बन्द कर दिया। अकसर रात के वक्त असामियों के रिश्तेदार या दोस्त हवालात के दर्वाजे पर पूरी मिठाई लेकर आते हैं यह दस्तूर है कि अगर एक आदमी का खाना खिलाना हो तो तिगुना खुराक ले जानी होती है जिसमें से फकत एक हिस्सा तो असामी को दिया जाता है और दो हिस्से पहरेदार याने गारद का सिपाही खुद ले लेता है और इसके सिवाय अपनी मामूली फीस भी लेता है !

हमलोगों में रुपये का नाम "चांदी का तमाचा" है इसका मतलब यों है कि जैसे बिगड़े तिगड़े को तमाचा सीधा बना देता है वैसेही चांदी का तमाचा भी सिपाहियों को सीधा कर देता है। चूंकि हवालात-गारद को माल-खाने की हिफाजत भी सुपुर्द है इसलिये उसका भी मैं कुछ बयान करता हूं, मालखाने के नामही से उसका मतलब झलकता है याने यहां तीन किस्म का माल रहता है।

(१) जेरतजवीज़ मुकद्दमों की चीजें।

(२) लादावी माल।

(३) लावारिस माल।

औव्वल मद्द में वे तमाम चीजें हैं जो इजलास पर हाकिम के रुबरू पेश होती है इसमें १ रद्दी सिक्के से लेकर सैकड़ों हजारों का माल रहता है चाहे वह एक दमड़ी का जौ हो चाहे हजार दो हजार का जवाहिर हो; जीते जानवरों में मुर्गी से लेकर हाथी तक मालखाने में दाखिल होता है। जब मुकद्दमा खतम हो जाता है तो मजिष्ट्रेट साहब के हुक्म से असली मालिक को माल दे दिया जाता है। मालखाने के मुहर्रिर लोगों के पचासों हथखँड़े माल मारने के हैं, अगर मालिक ने सैकड़े पीछे बँधा हुआ मामूल देने से इनकार किया तो उसे पीछे मालूम हो जाता है कि ऐसी हालतों में पुलिस से बिगाड़ करने में सिवाय नुकसान के फायदा नहीं होता क्योंकि आखिर उनकी आंखें तब खुलती हैं जब उन्हें यह मालूम होता है कि अँगूठी में से असली होरा निकल गया और उसकी जगह काच का टुकड़ा जड़ा है। जब एक मर्तब: मालिक ने हाकिम के रूबरू दस्तखत कर दिया कि हमने अपना माल "सही सलामत" पाया तो फिर मकान जा कर वह लाख सिर पीटा करे उसकी कौन सुनता है, क्योंकि वह भी तो बखूबी जानता है कि अगर अब मैं शिकायत करता

हूं तो झूठा दावा करने का इलजाम मुझपर लगाया जायगा। मुझे याद है कि मालखाने का एक जमादार सोने की चूड़ियां नथिया, बाजूबन्द, छन्द और कंठे वगैरह के छोल लेने से दो तीन रुपये रोज़ की याफ़ कर लेता था।

दूसरे मद्द में लादावी चीज़े रहती हैं। चूं कि अक्सर ऐसे माल का मालिक कोई जल्दी नहीं खड़ा होता, जमादार को अच्छा मौका मिलता है, एक मर्तबः का जिक्र है कि मेरे रूबरू मुन्दर्जः ज़ैल चीजें मालखाने में दी गईं।

२ रेशमी साड़ियां	४०)
१ रेशमी छाता	८)
४ लोटे	८॥)
२ जोड़ा सोने की चूड़ियां	२००)
४ जोड़ा चांदी के कड़े	१६०)
१ चांदी की हँसुली	४०)
६ सोने की अंगूठियां	१२०)
मीजान	५७६॥)

इस माल के लिये मामूली मुनादी पिटवादी गई मगर चूंकि कोई मालिक न खड़ा हुआ उन चीजों को नीलाम कर देने का हुक्म हुआ। नीलाम के वक़्त भी मैं मौजूद था मैंने देखा कि रेशमी साड़ीयां और रेशमी छाते के

एवज़ में मामूली कपड़े की साड़ियाँ और एक मामूली छाता नीलाम किया गया बाकी चीज़ों की क्या हालत हुई यह मैं मालूम न कर सका मगर उनके साथ भी कोई वैसीही कारखाई हुई होगी क्योंकि नीलाम में फकत २१०॥।/ ॥ आया मगर एक खरीददार से मुझे मालूम हुआ कि सोने और चांदी की चीज़ें भी बिलकुल नाकिस निकलीं।

तीसरे मद्द में लावारसी माल रहता है, इस किस्म की तमाम चीजें पुलिस दिवानी अदालत में भेज देती है कि उसकी कार्रवाई दीवानी कानून के मुताबिक की जाय। इस किस्म के माल के साथ भी वही कार्रवाई होती है जो लादावी के साथ मैं बयान कर चुका हूं मगर इस जगह मोहरिर के हाथ कुछ नहीं लगता इसमें थानेवाले माल मारते हैं जो तहकीकात के वक्तही अपनी कारखाई कर लेते हैं।

दीवानी अदालत के एक नाजिर साहब का हाल मुझे मालूम है जो ऐसी कार्रवाइयों की बदौलत जरा बदनाम हो रहे थे। इसी बारे में मुझे एक छोटी सी बात और याद आई एक रोज सुबह के वक्त एक थानेदार साहब जिन्हें "काला अच्चर भैंस बराबर था" और जिनका नाम भी माशाअल्ला गुल्ली डण्डा खाँ था साहब मजिस्ट्रेट के बंगले

पर यह रिपोर्ट लेकर पहुंचे कि किसी मुहल्ले में एक मालदार बुड्ढी रहती थी जो कुछ दिनों से बीमार थी आज सुबह को उसका इन्तकाल हो गया, मैं तमाम माल की एक फिहरिस्त तयार कर लाया हूं और उसके मकान पर एक गारद हिफाजत के लिये बैठाकर हुजूर की खिदमत में यह अर्ज करने के लिये हाज़िर हुआ हूं कि यह तमाम माल लावारसी है क्योंकि बुड्ढी मरहूम का कोई वारिस नहीं है" शिरिश्तेदार साहब का यह मामूल था कि वे हररोज़ सुबह के वक्त साहब मजिस्ट्रेट बहादुर के बंगले पर जुरूरी कागजातों को पढ़ने के लिये हाज़िर हुआ करते थे मगर उस दिन कोई ऐसाही ज़रूरी काम पड़ गया कि वे न आ सके ! मजिस्ट्रेट साहब ने थानेदार गुल्लो डंडा खां को कहा कि अपनी तहकीकात और फिहरिस्त पढ़ कर सुनाओ; उसने फौरन् उज्र पेश किया कि हुजूर मैं अपना चश्मा थाने पर भूल आया हूं साहब ने अपना चश्मा थानेदार को दिया लेकिन थानेदार (जो कि नाख्वांदा था मगर औव्वल दर्जे का चालाक और तेज़ मिजाज शख्स था) ने फौरन् हिम्मत बांध कर जवाब दिया कि हुजूर एक नौजवान शख्स हैं और ताबेदार की उम्र करीब ६५ बरस की हुई, मैं तो सरकार का काम फकत हुजूर के इकबाल से करता हूं गुलाम में तो कुछ भी वस्फ नहीं है; हुजूर का चश्मा मेरी

कमजोर आखों में न लगेगा, पर जो हुजूर हुक्म दें तो मैं अपना चश्मा अभी थाने पर से एक कांष्टेबुल को दौड़ा कर मँगा लेता हूं।" साहब ने कहा "बहुत अच्छा"। थानेदार ने फौरन् एक कांष्टेबुल को निराले में बुलाकर शिरिस्तेदार को बुलाने के लिये दौड़ाया, उधर शिरिस्तेदार रास्तेही में मिले, वे मजिष्ट्रेट साहब के बंगले पर जा रहे थे। उनके साथ थानेदार भी साहब के पास पहुंचे और बोले कि हुजूर वह कागज़ पढ़ा जाय या चश्मों के आने का इन्तज़ार किया जाय साहब ने कहा "कुछ ज़रूरत नहीं, शिरिस्तेदार हाजिर हो गया है।" इस मुस्तैदी और हिम्मत से थानेदार ने अपनी नाख्वांदगी को जाहिर न होने दिया। आइन्दे के लिये वह होशियार हो गया और जब तक शिरिस्तेदार बंगले पर न पहुंच जाता वह कभी साहब के रूबरू न जाता था, अगर कोई दूसरा शख्स होता तो ऐसी हालत में घबड़ा जाता मगर गुल्लीडण्डा खां दूसरेही ढंग का आदमी था। हमारे नाज़रीन ने जुरअत की बड़े बड़े नमूने सुने होंगे मगर यह मैंने अपनी आखों से उस शख्स में देखा जो कद में अभी ५ ही फीट जमीन से ऊंचा था।

चौदहवाँ पर्व्व ।

चोरी के माल का लेना ।

हमारे नाज़रीन बखूबी जानते है कि चोरी के माल का लेना एक निहायत संगीन जुर्म है दरहकीकत बाज़ वक्त असली चोर की बनिस्बत माल लेने वाले को ज्यादा तकलीफ़ उठानी पड़ती है, मसलन चमारों या भर के एक गरोह ने किसी बनिये के यहां चोरी की और २०००, का माल ले गये; पुलिस फौरन् मौके पर पहुंची और तहकी-कात करने लगी, जिस किसी पर शक हुआ उसी की तलाशी ली गई और दुसाध, डोमड़े और धरकारों की धर पकड़ होने लगी, मगर किसी का भी शक तिवाड़ी बड़ीपगड़ीपण्डित या इज्जतदारसिंह जिमींदार पर जो सरकार को मालगुजारी १२००, या १५००) साल देते हैं, नहीं जाता । मजेदारी तो यह है कि कुल माल इन्हीं जिमींदारों के मकान में रहता है और वे खुद तहकीकात की मदद में इतनी कोशिश करते हैं जिसका ठिकाना नहीं ।

पुलिस को कहते हैं यह मकान देखिये वह मकान देखिये अभी आपने फ़लां जगह की तो तलाशी लीही नहीं मुझे याद है कि एक मर्तबः एक अंग्रेज के यहां चोरी हुई

और तमाम माल सोनादास नामी महाजन ने दबा लिया मगर पुलिस को किसी तरह पता लग गया और चोरी का तमाम माल बरामद भी हो गया। अब महाजन ने पुलिस से मिन्नत और आर्ज़ू की कि किसी तरह इज्जत बचाओ, होते हवाते पुलिस ने अपना इनाम (हक) मुकर्रर करके यह ते किया कि माल सब दे दीजिये हम आपको किसी हिकमत से बरी करा देंगे। महाजन ने बखुशी तमाम माल पुलिस के सुपुर्द कर दिया। अब कोई आदमी ऐसा खड़ा होना चाहिये जो इस चोरी की बला अपने सिर पर उठाने को राजी हो मगर ऐसी मुशकिल को हल करना पुलिस के लिये कोई बड़ी बात नहीं है यह तो एक हल-की सी बात थी—फौरन् एक बदमाश को जिसका नाम मारपीट लाल था बुलवा भेजा और महाजन ने उसे ५०/ देना इकरार किया इस शर्त पर कि वह अदालत में बयान करदे कि मैं बाबू सोनादास के यहां माल बेचने लाया था, उधर दो सिपाही रास्ते में बेठा दिये गये और माल उसके हाथ में दिया गया ज्योंही वह माल लेकर सोनादास की कोठी से बाहर हुआ त्योंही उन दोनों काष्टेब्लों ने उसे गिरफ़ार कर लिया।

महाजन ने ५००) पुलिस को देकर अपनी गुलूखलासी की। इस मामले में पुलिस बखूबी समझती थी कि अगर

बगैर मुजरिम के माल चलान किया गया तो साहब मजिष्ट्रेट बहादुर जरूर सवाल करेंगे कि माल क्योंकर हाथ आया; उस वक्त क्या जवाब देंगे और ऐसा हुआ भी, क्योंकि मुकद्दमा पेश होतेही साहब बहादुर ने फर्माया कि "मुझे यकीन है कोर्ट इन्सपेक्टर! कि यह मुलजिम जो अदालत में पेश किया गया है असली खतावार नहीं है। मारपीटलाल एक मशहूर बदमाश है और गोकि इसे बदकारी में एक मुद्दत हो गई मगर ऐसी आसानी से इसका गिरफ़्तार होना हमारी अक्ल में नहीं आता"। कोर्ट इन्सपेक्टर ने अर्ज की, कि "हुजूर का फर्माना बजा है मगर इस मर्तबः पुलिस ने इसे बहुत होशियारी से गिरफ़्तार किया है मैं रोजनामचे खास की रिपोर्ट हुजूर को सुनाता हूं"—इतना कह कर रोजनामचा खास पढ़ने लगा—

"चूंकि जिस तारीख से यह चोरी कमतरीन के इलाके में हुई है ताबेदार की आंख एक पल के लिये भी नहीं झपकी। बन्दे ने अपने तमाम मातहतान को सख़्त ताकीद कर दी थी कि वे लोग होशियार रहें और इसका सुराग़ अक्लमन्दी के साथ लगावें, लिहाज़ा मैं बड़ी बशासत के साथ यह रपट देता हूं कि हुजूर के इकबाल से ताबेदार की वह नाचीज़ कोशिस कामयाब हुई—आज दिन को दो बजे जब कि काष्टेबुल पक्काखां व चालाक मिश्र अपने

नाके पर गश्त कर रहे थे कि उन्होंने मारपीटलाल को आते देखा। हुज़ूर जानतेही हैं कि मारपीटलाल निहायत मशहूर बदमाश है। कांष्टेबुलों ने देखा कि उस्के बगल में कोई चीज़ ऐसी है जिसे वह बहुत होशियारी से छिपाये है, उन्हें फ़ौरन् शक हुआ और उसे गिरफ़ार किया, मालूम हुआ कि वह इस माल को बाज़ार में फ़रोख़ करने वास्ते ले जाता है। कांष्टेबुलों के इस होशियारी और चालाकी की तारीफ़ गुलाम क्योंकर कर सकता है और ताबेदार को उमेद है कि हुज़ूर उन लोगों को इस कोशिस का बहुत अच्छा इनाम अता फर्मावेंगे ताकि दूसरे कांष्टेबुलों का भी दिल बढ़े क्योंकि हुज़ूर के यहां से उमदा मेहनत का समरा हमेशा अच्छा होता आया है। कमतरीन् को इतना और भी अर्ज़ करना है कि मारपीटलाल, औवल इस माल को बाबू सनादास महाजन के मकान पर, जो शहर में एक नामी रईस हैं और हुज़ूर भी जानते हैं कि सरकार बहादुर में उनकी बहुत इज़्ज़त है यहां तक कि जनाब लाट साहब गवर्नर बहादुर के दर्बार में उन्हें कुर्सी दी जाती है, वास्ते फ़रोख़ के ले गया था। बाबू साहब मज़कूर ने फ़ौरन् थाने में खबर दी कि मारपीटलाल के कब्जे में कुछ माल मुश्तबह: जान पड़ता है। पेश्तर इस्के कि इस इत्तला पर कोई कार्रवाई हो मारपीटलाल (जिसे कुछ शक हो

गया था) वहां से खसका और रास्ते ही में निमकहलाल काष्टेबुल मज़कूर ने उसे गिरफ़ार कर लिया । बाबू सोनादास साहब ने जो रपट थाने में लिखाई थी उसकी नकल भी हमराह पेश की जाती है—

"आज दिन को पौने दो बजे, बाबू सोनादास महाजन के मुलाज़िम जाँगरचोट्टा अहीर ने थाने में हाज़िर होकर बयान किया कि मेरे आक़ा ने यह इत्तला करने वास्ते मुझे भेजा है कि आज क़रीब एक या डेढ़ बजे दिन को मारपीटलाल नामी एक शख्स ने हमारी कोठी पर आकर कुछ माल फरोख़ के वास्ते पेश किया, हम को शक हुआ कि यह बेशकीमत माल इस अदना से शख्स के हाथ क्योंकर लगा । पस इस ख्याल से कि सरकारी मुजरिम को गिरफ़ार कराना हर एक खरख्वाह-सर्कार का फ़र्ज़ है मैंने अपने नौकर को भेज कर थाने में रिपार्ट लिखा दी कि पुलिस इस्का बन्दोबस्त वाजिब करे"। चूंकि मारपीट लाल हाथ में माल सहित गिरफ़ार हुआ था फ़कत उन्हीं दो काष्टेबुलों के बयान पर उसे दो बरस की सख़ सजा साहिब मजिष्ट्रट बहादुर के इजलास से दी गई, और माल उस अंग्रेज को दे दिया गया ।

बाज़ वक्त पुलिस उन शख्सों के मकान में चोरी का माल रखवा देती है जिन पर अकसर माल मशरूका के

लेने का शुबहा रहता है मगर वे हमेशा अपनी चालाकी और होशियारी से बचे जाते हैं । यह ढंग फ़क़्त वे ही लोग करते हैं जो नाख़्वांदे होते हैं और जिन्हें छोटे कामों के ज़रिये "ख़ैरख़्वाह सर्कार" बनने की हवस रहती है । अकसर गाँव गँवई के जमादार लोग मुकद्दमों को दबा कर भी बहुत कुछ माल पैदा कर लेते हैं और इस बात का मुतलक ख़्याल नहीं करते कि सचाई का छिपाना वैसाही गुनाह है जसे झूठ का बनाना । वे देखते हैं कि शहर के नायब और थानेदार लोगों को तो अकसर अमीरों से काम पड़ता है इस लिये वे ख़ूब माल चोरते हैं और उन्हें तो गाँव गँवई में ऐसे लोगों से वास्ता पड़ता है कि जिनके पास ज़हर खाने को भी पैसा नहो होता तो ऐसी हालत में जब कभी किसी चोरी वगैरह की रिपोर्ट उनके पास हुई तो वे ख़ुफ़िय: मामूली तहकीकात करके मुद्दई को राज़ी कर उस मुकद्दमे को दबा देते हैं ख़ास कर उस हालत में जब कि माल मसरूका मिल जाता है । तब वे मुद्दई को इसतरह समझा देते हैं कि—"देखो दोस्त तुम्हारा माल तो तुम्हें मिलही गया और अदालत जाने से जो जो दिक़्क़तें और तकलीफ़ उठानी होंगी वह कुछ तुमसे छिपे नहीं हैं फ़र्ज़ कर्दम् की मुजरिम को सज़ा हो गई तो फिर भी तुम्हारा माल महीने दो महीने तक तुम्हारे हाथ न लगेगा ।

सैकड़ों के खर्च में बैठे बठाये पड़ जाओगे, इस्से बेहतर है कि अपना माल चुप चाप लेकर मकान जाके आराम करो।' पस यों समझा बुझा कर उसे राजी कर देते हैं और दोनों तरफ़ से अपना हाथ भी भरपूर गरम कर लेते हैं।

पन्दरहवाँ पर्व्व।

नीलवाले साहब।

ज़िले में हमेशा इन साहब लोगों की तूती बोलती रहती है। बाज़ बाज़ तो इसमें ऐसे लालची और ज़ालिम होते हैं कि मैं आपसे क्या अर्ज़ करूं। और अगर खुश-किस्मती से हुक्काम से उनसे दोस्ती हो गई तो फिर उनके ज़ुलम को इन्तिहा नहीं रहती। बदकिस्मती से मेरी तैनाती एक मर्तबः उस थाने पर हुई जिसके ज़ेर इख़्तियार एक नीलवाले साहब रहते थे। उनके आनरेरी मजिस्ट्रेट मुकर्रर होने के पेश्तर का ज़िक्र है कि वहां के ज़िमींदार लोग उन्हें नील बोने के लिये अपनी ज़मीन देने में रज़ामन्द न होते थे और वे लोग उनसे भी वैसाही बर्ताव किया चाहते थे जैसा कि वे अपनी २ रियाया से पट्टे वगैरह के मामले में करते थे। कई मर्तबः जिमींदारों और नीलवाले साहब के लोगों से मारपीट भी हुई जिसमें अकसर ज़िमी-

दार लोग फतहयाब रहे थे । जिस थाने के जेर इख़्तियार नीलवाले साहब रहते थे वह थाना असिष्टेण्ट जनाब वेल-डन हालडन साहब बहादुर के मातहत था जो इनसाफ़ के मुकाबिल किसी पर भी रियायत न करते थे, चाहे जिमीदारों का कसूर हो चाहे नीलवाले का, वे वाजिबी इनसाफ़ करते थे। वे निहायत होशियार और तेज़फहम हाकिम थे और ऐसा हुआ कि कई एक मुकद्दमों में जिनमें नीलवाले ग्रम्पी ओष्टर साहब असली जिमीदारों को बेदखल किया चाहते थे असिष्टेण्ट साहब बहादुर ने वाजिब फैसला सादिर फर्माया और नीलवाले साहब को कोने में मुंह छिपाना पड़ा। मगर कुछही रोज़ बाद हवा बदल गई और नील वाले साहब आनरेरी मजिष्ट्रेट मुकर्रर हुये। साहबान अंग्रेज़ खूब जानते हैं कि हमारे मुल्क वाले औव्वल दर्जे के खुशामदी होते हैं। पस अब क्या पूछना था, आनरेरी मजिष्ट्रेटी पर मुकर्रर होतेही, साहब बहादुर का दर्बार लगना शुरू हुआ और जिमीदार लोग आपसही में फूट खड़ा कर एक दूसरे की गर्दन काटने पर तयार हो गये। साहब के गोदाम में रोज़ जिमीदारों की भीड़ जमा होने लगी, और अब हुजूर को ज़मीन की क्या कमी थी, एक ज़िमीदार दूसरे से बढ़ कर जमीन देने को तयार था, पस उसी तारीख से ज़िमीदार और उनकी रियाया सभी

साहब बहादुर के ग़ुलाम हो गये । अपने अपने मकानों पर बैठ कर अकसर ज़िमीदार लोग इस बात पर बहस किया करते थे कि सरकार बहादुर ने नीलवाले साहब को किस ग़रज़ से यह इख़्तियार दिया है। दियानतदार मल नामी एक ज़िमीदार ऐसा था कि वह नीलवाले साहब को खुशामद करना नापसन्द करता था और इसी लिये कभी उनकी दर्बारदारी भी नहीं करता था। इधर दुश्म-नों ने साहब का कान भरना और तिनके का पहाड़ बनाना शुरू किया कि वह जिमीदार तो अपने मकान पर बैठा बैठा हुजूर को बड़ी बाही तबाही सुनाया करता है। गांव गँवई का दस्तूर है कि रात के वक़्त खाना खाने के बाद सब अँवार गँवार एक मुकाम पर जमा हो कर गप्प सप्प उड़ाया करते हैं; या तो वे लोग किसी भारी पीपल या बड़ के दरख़्त तले जमा होते या किसी जिमीदार की छावनी पर जा जमते हैं । ऐसे मौके पर ज़िमीदार और उनकी रियाया सभी जमा हो कर मुख़्तलिफ़ किस्म के दोस्ताना गप्प सप्प उड़ाया करते हैं, एक तरफ तो अहीर, गड़ेरिया, नाऊ, नोनिया, जुलाहा, बनिया, चमार, भर ज़मीन पर उकड़ूं बैठ जाते हैं और दूसरी तरफ़ ज़िमीदार, ब्राह्मण, पटवारी, गांव के मुअल्लिम या उस्ताद चारपाई पर पुरानी फटी सी दरी बिछाकर जमा हो जाते हैं। इसी कमेटी में

एक मर्तबः दियानतदार मल के मुंह से निकल गया कि "यारो गंगा मैया क कसम हौ कि जो तो ज़िला हाकिम लोग लौलवाले क पच्छ किहिन तो चाहे नथिया झुलनी बिकाय जाय पर हाइ कोरट में अपील करके निसाफ़ करावौं तो मोर नांव।" बस यह खबर आनरेरी मजिस्ट्रेट बहादुर के कान तक पहुंचाई गई जिन्होंने कहा कि "अच्छा मौका पा कर मैं इसका मज़ा चखाऊंगा।" एक बरस के बाद ऐसा मौका आया कि बिचारा दियानतदारमल एक झमेले में फँस गया जिसका बयान यों है कि—

उस गांव का एक बनिया किसी मेले को गया और एक हफ़्ता गुज़र गया कि वह लौटकर मकान को न आया, इधर गांव के गोड़ैत ने यों रपट लिखाई कि—"अर्सा एक हफ़्ते का गुज़रता है कि मौजे दगाबाजपुर का जालसाज़ी बक्काल नामी बनिया, शिवरात्री के मेले में मौजा फुसवनपुर को जो उसके गांव से १० कोस पर है, गया और अभी तक मकान को वापस नहीं आया। गांववालों की यह राय है कि वह मारा गया और उनलोगों को पुख़्ता शक है कि दियानतदारमल ने किसी बदमाश को उभाड़ कर उसकी जान कहीं रास्ते में ली है। बहुत दिनों से उन दोनों के दर्म्यान १० बीघा जमीन का झगड़ा चला आता है और यही सबब इस खून का जान पड़ता है, पस फ़ौरन् पुलिस के ज़रिये इसकी तहकीकात होनी चाहिये।"

इस रिपोर्ट के होने पर धूमधाम खां थानेदार अपनी शानदार वर्दी जिसके परतले में तलवार लटकती थी, लगा कर, दो कांष्टेबु और चार गोड़ैत आगे और उतनेही पीछे लेकर मौजे को रवाना हुये। वहां पहुंचतेही उन्होंने दियानतदारमल को तलब किया और उस्से कहा कि तुम पर खून करने का शक हुआ है पस वेहतर है कि तुम साफ साफ बयान करो कि जालसाजी बक्काल क्या हुआ। ज़िमीदार ने जवाब दिया कि मैं इस बारे में कुछ भी नहीं जानता मैं तो उस बक्काल को एक महीने से यहां नहीं देखता। बहुतेरे लोगों ने यह इज़हार दिया कि दियानतदारमल और जालसाज़ी बक्काल के दर्म्यान एक मुद्दत से दुश्मनी चली आती है मगर उसकी गैरहाजिरी का हाल कोई कुछ भी न बता सका। इतनेही सुबूत पर थानेदार उस ज़िमीदार को गिरफ़ार न कर सके, इसलिये हाज़िर ज़मानत लेकर छोड़ दिया। अपने खास रोजनामचे में थानेदार ने यों रपट दी कि गोकि दियानतदारमल पर खून का शुबहा होता है ताहम यह अम्र भी काबिल गौर है कि दरहकीकत वह एक इज्जतदार शक्स है और बीसियों आदमी उसकी शराफत और नेकचलनी का बयान करते हैं। इतना लिखने के लिये आप बखूबी समझ सकते हैं कि थानेदार का हाथ अच्छी तरह गरम किया गया

होगा, और हमलोगों को भी अच्छी याफ़ हुई। खैर, जब जिला मजिष्ट्रेट के रूबरू मिस्ल पेश हुई तो उन्होंने लोल-वाले आनरेरी मजिष्ट्रेट को एक खुफिया खत लिखा कि दियानतदारमल की चालचलन पर तहकीकात करके रिपोर्ट दो, जिसका जबाब औष्टर साहब ने यों लिखा कि, 'तहकीकात करने पर मुझे मालूम हुआ कि दियानतदार मल निहायत बदमाश और फसादी शख्स है और वह एक ऐसा बदचलन आदमी है कि अपने मतलब यावरी के लिये उसका खून कर बैठना कोई गैरमुमकिन बात नहीं है। मगर हां, मैं खुद उस शख्स के बरखिलाफ कोई जाती इल्म नहीं रखता, सबब इसका यह है कि वह मेरे गोदाम से कुछ फासले पर रहता है और उसके ज़ोरोज़ुलम के बाइस लोग उससे इस कद्र खौफ़ खाते हैं कि उसकी बदमाशी को जल्दी ज़ाहिर नहीं करते। इतना बयान करना और भी जरूरी है कि उसकी रियाया हमेशा उसके जुल्म के बारतले पिस कर आहें सर्द भरा करती है।"

साहब मजिष्ट्रेट बहादुर ने दियानतदारमल के नाम सम्मन जारी किया और वह भी फौरन् उस हुक्म की तामील के लिये तयार हुआ। अपने दोनों बेटों को जिनकी उम्र १६ और १४ बरस की थी हमराह लेकर वह अपने हाथी पर सवार हुआ और सदर ष्टेशन पर पहुंच साहब

मजिष्ट्रेट बहादुर के बङ्गले पर हाज़िर हुआ, घर से चलते वक्त वह एक अर्ज़ी लिखवा लाया था जिसे उसने साहब बहादुर की खिदमत में पेश किया। औव्वल तो उसमे बहुत कुछ मलका मुअज्जिमा और साहब मजिष्ट्रेट की तारीफ की थी जैसा कि हम हिन्दुस्तानियों का दस्तूर है और फिर यों लिखा था कि—

"ऐ मलका मुअज्जमा, शाहजादीये हिन्द, और पादशाह खलक चहारम के नायब। हुजूर खुदनेकी के तरक्की देने वाले, बदों को दबाने वाले, और गरीब रियाया के मुहाफ़िज हैं यहां तक कि हर एक छोटे बड़े की ज़बान पर हुजूर की अक्लमन्दी और इनसाफ़-पर्वरी का ज़िक्र है। चूंकि मेरे आका और खुदावन्द ने इस ताबेदार को याद फर्माया है मैं फौरन् हुक्म की तामीली से हाज़िर हुआ हूं और खुदावन्द के दो गुलामों को भी साथ लाया हूं जो हुजूर के लिये हर तरह से हाज़िर हैं और जहां हुजूर का पसीना गिरे वहां वे अपना खून गिराने के लिये तयार हैं। ताबेदार के दुश्मनों ने बयान किया है कि एक नाचीज़ फकत १० बीघा ज़मीन के लिये मुद्दत से एक झगड़ा इस ताबेदार और गुमशुदः शक्स के दर्म्यान चला आता है और फकत इसी बेबुनियाद वजह पर वे लोग अपना शुबहः इस ताबेदार पर रखते हैं। हुजूर खुद एक खानदानी

सर्दार हैं, सर्कार के बाल बच्चों की उम्र दराज़ हो. क्या हुजूर दाना और इनसाफपसन्द हाकिम हो कर कभी एतकाद फर्मा सकते हैं कि यह ताबेदार २००० बीघा ज़मीन से ज़ायद का मालिक हो कर ऐसा बेवकूफ होगा कि फकत १० बीघा जमीन से एक बक्काल को बेदख्ल करने के लिये खून करेगा ? भगवान हुजूर की उम्र दराज़ करें और हुजूर पोतों के पड़पोते देखें; ताबेदार रियायत नहीं बल्कि इनसाफ़ का ख्वास्तगीर है । इन दो गुलामों को हुजूर में लाने की मनशा यह है कि खुदावन्द देखें कि एक नाचीज़ १० बीघा जमीन की याफ़्त के मुकाबिले अपनी जिन्दगी बरबाद करना और इन दो प्यारे गुलामों से हमेशा की जुदायगी उठाना क्या कभी कोई बशर पसन्द कर सकता है ? ताबेदार की ज़िन्दगी में यह पहिला मौका है कि गुलाम के नाम अदालत फौजदारी का सम्मन निकला है, हुजूर जानतेही हैं कि इस अदालत की हाज़िरी कोई भी इज़्ज़तदार हिन्दुस्तानी पसन्द नहीं करता । अब यह हुजूर के हाथ में है कि चाहे ताबेदार की इज़्जत बिगाड़ें या इस गुलाम के दुश्मनों की ऐसी गैरवाजिब कोशिश से ताबेदार का छुटकारा करें । हुजूर खुद अक्लमन्द हैं मैं ज्यादा क्या अर्ज करूं ताबेदार खुदावन्द के कदमों में हाज़िर है और उम्मेद पुख़्ता है कि हुजूर इनसाफ़ फर्मावेंगे ।"

चूंकि साहब मजिस्ट्रेट रहमदिल और वाजिबपसन्द हाकिम थे उन्होंने दियानतदारमल को वग़ैर अदालत की हाज़िरी के मकान वापस जाने को इजाज़त दी।

अब उस गुमशुदः बक्काल का हाल सुनिये कि वह क्योंकर ग़ायब हुआ। उस शख्स की शादी न हुई थी और न कोई उसका रिश्तेदारही था उसको जो खबर लेता। दियानतदारमल के दुश्मनों ने उस्से सलाह की थी, कि अगर तुम गांव छोड़ कर अहाते मद्रास में जाकर एक बरस तक रहो तो तुम्हें १५०) दिया जायगा। वह बखुशी राज़ी हो गया और चला गया। क़रीब दस महीने बाद जब जालसाज़ी बक्काल वापस आया तो उसने लोगों को एक उर्दू चिट्ठी दिखलाई जो उसे डांक के ज़रिये वहीं अहाते मद्रास में मिली थी; जिस्से सब भेद मालूम हुआ— उसका मजमून यों था कि —

"कामयाबी नहीं हुई-अपने घर वापस चले आओ, बरस भर का कोई ख्याल मत करो। रुपया तुम्हारा वाजि है, जिसमें से दो तिहाई तुम पेशगी पा चुके हो। सबसे मोकद्दमे बात तो यह है कि वापस आने पर अपनी जबान बन्द रखना।"

हर्फों के पहिचानने वाले उस्ताद कहते थे कि वह खत गोदाम के किसी मोहरिर का लिखा मालूम पड़ता

था, जब कभी उसका ज़िक्र वहां आता तो गोदामवाले उसे उड़ा जाते थे।"

एक बात और भी मुझे याद आई, मुझे एक लीलवाले साहब का हाल याद है जिसका मैं खुद चश्मदीद गवाह हूं। एक रैयत और लीलवाले से कुछ नाइत्तफाकी थी। साहबान अङ्गरेज वखूबी जानते हैं कि हम हिन्दुस्तानियों में "बांह पकड़ने" के यह माने है कि बांह पकड़ने वाला गोया कौल करता है कि वह ताजिन्दगी उस शख्स का निबाह करेगा जिसकी बाँह उसने पकड़ी है याने उसके साथ नेकनीयती और ईमानदारी से हमेशा बर्ताव करेगा। लीलवाले साहब ने मेरे रूबरू उस रैयत की बाँह पकड़ी और इकरार किया मगर ताहम् भी उसने उस ग़रीब रैयत को तबाह कर डाला। अगर लाट साहब बहादुर को यह मन्शा है कि रियाया खुद अपना इन्तिज़ाम करे तो क्यों लीलवाले अंग्रेजों को आनरेरी मजिष्ट्रेट मुकर्रर किया जाता है, जिन्हें रियाया "अँधेरी मजिष्टर" कहती है। अकसर हमलोगों को यह ख्याल होता है कि जिन लोगों का यहां चन्द दिनों के लिये क़याम है उनको ऐसा दर्जा देने से मुल्क या रियाया को क्या फायदा पहुंच सकता है? मुझे याद है कि एक हज़रत अपने इस इख़्तियार के ज़ोर से हमेशा अपनेही लोगों को नौकरी दिलाया करते थे।

सोलहवां पर्व्व ।

बच्चों का फेंकना ।

एक मर्तब: मैं किसी दिहात के थाने पर नौकर था, एक रोज़ सुबह के वक्त मौज़ा तिफ़्लनौज़ातगंज के गोड़ैत ने यों रिपोर्ट लिखाई कि—

"आज छ: बजे सुबह के वक्त जब कि ताबेदार तमाम रात सरकार बहादुर का काम कर गश्त से लौटा आता था, और बसबब जागने तमाम शब के नींद से हैरान था, पासही किसी बच्चे के रोने को आवाज़ सुन कर मेरा ख्याल उस तरफ़ गया । मैंने नजदीक जाकर देखा कि एक लड़को जिस्की उम्र अभी दोही तीन दिन की होगी लबे सड़क एक गड़हे में पड़ी रो रही है । मुझको ख्याल हुआ कि यह किसी इज़्ज़तदार घराने की औरत की औलाद है जिसने अपनी शर्मिन्दगी छिपाने के लिये इसे यहां फेक दिया है । मैंने फौरन् उस बच्चे को उठा लिया और थाने में ले आया । पता लगाने से मालूम हुआ कि इस गांव में फ़कत एकही बेवा औरत ऐसी है जो हमल से थी और उस-का नाम मुसम्मात हरामी ब्राह्मनी है, मगर मैं इस्की सचाई का ज़िम्मेदार नहीं हूं; फकत इतनाही कह सकता हूं कि एक रोज़ रात के वक्त चमारीटोले की चन्द चमारियों को

मैंने आपस में बातें करते सुना था कि मुसम्मात हरामी को उसके देवर पोशीदा पाठक से हमल है ।

इस रिपोर्ट पर थानेदार फौरन् उस मौजे की तरफ़ रवाना हुये और पोशीदा पाठक को तलब किया; मैंने उसकी शकल देखतेही अपने एक दोस्त कांष्टेबुल से कह दिया कि पाठक जी वेशक कुसुरवार हैं। सवाल करने के साथही वह तो बेंत के मानिन्द कांपने लगा और बोला कि मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मेरी भौजाई को हमल था या नहीं इस पर मुसम्मात हरामी तलब हुई और मैं उसे लाने के लिये भेजा गया। तिफ़्लनौजातगंज का मौज़ा बहुत बड़ा था और मुसम्मात हरामी का मकान उस मुकाम से जहां थानेदार साहब का इजलास हो रहा था करीब आधे मील की दूरी पर था। मेरे पहुंचतेही पोशीदा पाठक की वालिदा जो एक बुढ्ढी औरत थी पांओ पर गिर पड़ी और मेरे कदमों पर ४) रख गिड़गिड़ा कर कहने लगी कि मेरे खानदान की इज़्ज़त बचाइये नहीं तो हम सब बरबाद हो जांयगे। मैंने पूछा कि मैं क्योंकर तुम्हारी मदद कर सकता हूं तो उस बुढ्ढी ने जवाब दिया कि "आप फकत इतनीही रिपोर्ट कर दीजिये कि मुसम्मात हरामी मकान पर नहीं है और एक मौजे को जो यहां से २० कोस की दूरी पर है गई है

बस इतनेही में मेरा काम हो जायगा बाकी का इन्तजाम मैं बांध लूंगी ।

मैं बुड्ढी का मतलब समझ गया कि उसका इरादा यह सुबूत करने का है कि उसकी पतोह मुसम्मात हरामी यहां थी ही नहीं, यही बहाना अकसर गांव वालों को जल्द सूझता है । मैंने कहा खैर मैं ऐसी रिपोर्ट लिख देता हूं मगर इस बात का ख्याल रखना कि शायद कोई दूसरा कांष्टेबल तहकीकात के लिये भेजा जावे तो मुझे झूठा न बनना पड़े इसलिये तुम अपनी पतोह को किसी दोस्त के मकान में छिपा दो । इतना कह उन चार रुपयों को जेब में डाल मैं रवाना हुआ और मैंने यह रिपोर्ट दी कि मुसम्मात हरामी मकान पर न थी और न है। उस बुड्ढी ने मेरे कहने के मुताबिक अपनी पतोह को रूपोश कर दिया क्योंकि जब मैंने ऐसी रिपोर्ट दी तो एक गोड़ैत ने जो वहां खड़ा था यों कहा "अभी तो आज सुबह मैंने मुसम्मात हरामी को देखा है उसे क्या पर लग गये जो बीस कोस उड़ गई ?" । इस पर एक दूसरा कांष्टेबल भेजा गया, बुड्ढी ने कहा कि भाई मेरी पतोह तो यहां हई नहीं तुम भलेही मेरे मकान की तलाशी ले लो ।" मकान तलाश करने पर मुसम्मात हरामी वहां न पाई गई, पस उस कांष्टेबल की रिपोर्ट से मेरे रिपोर्टकी पुख़्तगी हो गई । इस दर्म्यान

में पोशीदा पाठक ने भी पटवारी की बिचवई से थानेदार का हाथ गरम कर मामला तै कर लिया । थानेदार ने कहा खैर गोड़ैत और कांष्टेबुलों के लिये कुछ और दो तो मामला तै कर देवें, वह भी दिया गया, और थानेदार साहब की रिपोर्ट जैल मे मुआमिला दब गया ।

"दो दिन और दो रात फिदवी इस मुआमिले की तहकीकात करता रहा, मेरा मुसम्मिम इरादा था कि ऐसी संगदिल मां को जिसने इस बेकस बच्चे के साथ ऐसी बेरहमी की है जरूर इनसाफ के हाथ तले लाऊँ मगर अफसोस मेरी तमाम जाँ फिशानी नाकामयाब हुई । जब कभी ताबेदार के कान में बेचारे मोसीबतज़दे बच्चे के रोने की आवाज़ पड़ती है तो वह मिस्ल छुरी की नोक के मेरे कलेजे में चुभ जाती है जिसका असर ताबेदार पर ऐसा ज़बर्दस्त पड़ता है कि वह और भी ज़ियादा मुस्तैदी और जाँफिशानी से मुजरिम का पता लगाने की कोशिश करता है। तिफ़्लनवज़ात गंज और गिर्दनवाह के मवाज़ियात में तहकीकात करने से यह ज़ाहिर होता है कि मौज़े मजकूर में किसी औरत को हमल-हराम नहीं था। उन चमारियों में से सब की सब जिनको गोड़ैत ने अपने रपट में बयान किया है मुसम्मात हरामी के निसबत ऐसी बदनामी फैला देने से एक क़लम मुनकिर

हैं। मोअज़्ज़िज़ ज़िमीदारान और काश्तकारान की राय इस बारे में यों इत्तिफ़ाक़ करती है कि यह लड़का किसी दूर के मौज़े में पैदा हुआ है वहां से उस औरत ने जिससे यह पैदा हुआ है अपने यार ख़्वाह किसी क़रीबी रिश्ते-दार की मार्फ़त इसको यहां भेज कर इस ग़र्ज़ से रखवा दिया है कि मौज़े तिफ़्लनवजातगंज की औरतोंही पर इस जुर्म के करने का इश्तिबाह किया जावे। इस राय से फ़िदवी की भी राय मुत्तफ़िक़ है। तावेदार फ़ौरन इलाक़ेजात मुलहिक़: में जाकर तहक़ीक़ात करता मगर चूं कि हर एक इलाक़े में सैकड़ों मवाज़ियात हैं जिनमें जा कर तहक़ीक़ात करने के लिये वक़्त कसीर की ज़रूरत है लिहाज़ा अगर तावेदार की तैनाती इसी काम पर कम अज़ कम ३ महीने के लिये हुज़ूरवाला से फ़र्माई जावे तो अलबत्ते सूरत कामयाबी की ज़हूर में आवे बहरकैफ़ फ़िदवी ने इलाक़ेजात मज़कूर के जुमले अफ़सरान पुलिस को इस मोक़द्दमें की इत्तिला कर दी है और उनसे मुजरिम के पता लगाने में इमदाद चाही है।"

चूं कि थानेदार की नौकरी तीन महीने के लिये किफ़ायत नहीं की जा सकती थी और साहब मजिस्ट्रेट जानतेही थे कि वह बच्चा ज़िन्द: है और उसकी परवरिश मिशनरी फौण्डलिङ्ग इंसटिट्यूशन से होही रही है जहां

उन्होंने उसको सपुर्द कर दिया था इसलिये उन्होंने मज़-मून जैल का हुक्म सादिर फ़र्माया।

"वह औरत जुर्म हाज़ा की मुर्तकिब सूरतहाय तख-फ़ीफ़ शिद्दत जुर्म में हुई है बमोकाबिले उस जुर्म के कि उस बच्चे को ऊसर और जंगल में या ऐसी जगह में छोड़ दिया गया जहां आदमियों की आमदरफ़्त बिलकुल नहीं रहती उसको इस तरह छोड़ देने का नतीजा उसकी ज़िन्दगी के लिये बड़ाही खतरे नाक था।

जब तक मुजरिमों का पता न लग जावे काग़ज़ात दाखिलदफ़्र रहें।

सत्तरहवाँ पर्व्व।

हर खासोआम को मालूम है कि पुलिस को आबकारी और महसूली माल में दस्तअन्दाज़ी करने के अख़्तियारात भी हासिल हैं इसलिये हमलोगों को अकसर औक़ात इन अख़्तियारात के जताने की ज़रूरत पड़ती है, बजुज़ गिरफ़्तारी और तलाशी के जो अख़्तियारात सिर्फ आला दर्जे के अफसरों को हासिल हैं। एक रोज़ खूबीलाल नामी सर्कारी गोइन्दे ने रपट की कि शराबीलाल नामी कलवार योरोप की बनी हुई शराब कसरत से फरोख़ करता है, अगर मेरे हमाराह पुलिस चले तो मैं अनकरीब ६

दर्जन बोतलें बिलायती शराब से पुर मोखतलिफ मार्के को बरामद करा दूं। दरहकीकत ऐसी नौकरी पर हम लोग बड़ी खुशी से जाते हैं क्योंकि इस किस्म के मोकद्दमें के सबूत हो जाने पर शय ममनूअ के फरोख्तकुनिन्द: पर जो जरबाना होता है वह पुलिस के मुलाज़िमों को जिन्होंने नाजायज़ शय बरामद किया है बतौर इनाम के तकसीम कर दिया जाता है। खूबीलाल के हमराह उसका एक दोस्त था जिसको एक बोतल ब्रांडी खरीद करने के लिये २) दे दिये गये थे मगर शराबीलाल को शुबहा हुआ कि कहीं उसके ऊपर कोई आफत न आजावे इसलिये उसने शराब मतलूब: के फरोख्त करने से इनकार किया और कहा कि मैंने इसके फरोख्त करने का लेसन्स नहीं लिया है। जब खूबीलाल की कार्रवाई कारगर न गई तब उसने थाने को लौट चलने की सलाह दी मगर थानेदार ने कहा कि हम यह उम्मेद करके चले थे कि जातेही शराबीलाल के मकान से ७२ बोतलें बिलायती शराब को बरामद करेंगे इसलिये हम वग़ैर तलाशी लिये थाने को नहीं लौट सकते, बावजूदे कि गोइन्द: ने कई बार मना किया लेकिन थानेदार ने उस कलवार के मकान की तलाशी ली और एक बोतल ब्राण्डी की दस्तयाब हुई। गोइन्दे को इसी ढूढा ढूढी में अच्छा मौका आधसेर अफीम छिपा

कर रख देने का मिल गया। दो दिन के बाद खूबीलाल फिर थाने में आया और रपट किया कि उसको खबर मिली कि है शराबीलाल नाजायज़ तौर पर अफीम फरोख़ करता है। हमलोग फिर उसके मकान पर पहुंचे और एक घण्टे तक बड़ी मेहनत से उसके मकान की तलाशी ली, आखरश मकान के एक शिकस्त हिस्से में अफीम दस्तयाब हुई। एक जानिब शराबीलाल क़सम खाने को तैयार था कि मेरे मकान में मेरे किसी दुश्मन ने मुझको फसाने की ग़र्ज से यह अफीम रख दी है और वह दुशमन खूबीलालही है; दूसरी जानिब खूबीलाल उस पर झूठो तोहमत लगाने का इलज़ाम रख दावा दायर करने की कसम खाने पर मुस्तैद था। थानेदार ने गोइन्दे को मकान से निकल जाने का हुक्म देकर उन दोनों की हुज्जत और तकरार का खातमा कर दिया। दोनों मोकद्दमों में उस बदनसीब कलवार की चालान की गई, मोकद्दमा औव्वल यह था कि उसने बिलाहसूल लेसेन्स एक बोतल ब्राण्डी की अपने कब्ज़े में रक्खी दूसरा यह कि उसने नाजायज़तौर से अफीम फरोख़ की। पहिले मोकद्दमे की जांच कम्मम्यजिष्ट्रेट ने की और दूसरे की जण्ट सहाब ने कम्मजिष्ट्रेट के रूबरू मुद्दालेह ने उज्र किया कि जिस तरह मलकेमोअज्ज़म: की अंगरेज़ी रिआया को ब्राण्डी रखने का मजाज़

हासिल है वैसाही मुझे भी है। सरिश्तेदार ने उसको इस तरह ललकार कर उज्र करते हुये सुन कर मजिष्ट्रेट को कान में आहिस्ते से कहा "हजूर मुद्दालेह बड़ाही गुस्ताख शख्स मालूम होता है काले आदमी लोगों को अपने मकान में ब्रांडी रखने का कोई काम नहीं है खास कर जब कि वे हजूर पुरनूर के हद आबकारी में बूदोबाश रखते हैं, अलावह इसके चूंकि गोरे लोगों ने चन्द दिनों से शराबख्वारी अख़ियार की है, इसलिये मुजरिम को ऐसी सज़ा होनी चहिये कि जिस्से दूसरों को इबरत हो। मुद्दालेह ने और भी उज्र किया कि मैं शराब फरोख़ करते हुये गिरफ़ार नहीं किया गया बावजूदे कि खूबीलाल ने मुझे फँसाने के लिये कोई तदबीर बाकी नहीं छोड़ी और मैंने इस बोतल को अपने खास इस्तियामाल के लिये सन्दूक में बड़ी हिफाफ़त से रक्खी थी। बावजूदे कि उसने जवाबदेही मोकद्दमे की अपनी बरियत के लिये उमदा तौर से की ताहम शराबीलाल पर क्म्प मजिष्ट्रेट ने ५) जरबाना किया और उसने अपने तईं खुशकिस्मत ख्याल किया क्योंकि वह क़ैद होने और ५०) मजिष्ट्रेट के सरिश्तेदार को रिशवत देने से बच गया जो उन्होंने उससे तलब किये थे। महसूली माल के मोकद्दमे में उसका उज्र यह था कि किसी दुश्मन ने चोरी से उसके मकान में अफीम रखदी। वह बमोकाबिले

ग़लब: शहादत तीन इज़्ज़तदार बनियों के मंजूर नहीं किया जासका, जिन्होंने हलफन् इज़्हार दिया कि हमलोगों के मोकाबिल: में बाज़ाब्त: और ईमानदारी से तलाशी ली गई इसलिये जण्ट साहब ने शराबीलाल पर ८) जरवाना किया और अफीम ज़ब्त कर लेने के लिये हुक्म दिया। मेरी राय नाक़िस में पुलिस को मकानों की तलाशी लेने में बड़ी यहतियात करनी चाहिये मैं ख्याल करता हूं कि गोइन्दे का कोई काम पुलिस के हमराह मकान के अन्दर जाने का नहीं है और न कानूनही इस बात की इजाज़त देता है। कानून इस बात के लिये पायबन्द करता है कि तलाशी दो ख्वाह तीन इज़्ज़तदार आदमियों के मोकाबले में ली जावे जो बतौर गवाहान के हैं और पुलिस का लाज़िम है कि इस बारे में लेजिसलेटिव कौन्सल ने जो तरीके कार्रवाई के मुन्दर्ज कानून किये हैं उसकी पायबन्दी बखूबी करे। शराबीलाल के बारे में यह अम्र सही है कि वह विलायती शराब बग़ैर हसूल लेसन्स फरोख़्त करता था और चूं कि खूबीलाल उसी इलाके का सर्कारी गोइन्दा था इसलिये उसको वह नाजायाज़ और ममनूअ: शय का फरोख़ करने वाला ५) सालाना रिशवत दिया करता था अगर वह लेसेन्स लेता तो उसको १६) खर्च करने पड़ते सो सिर्फ ५) खर्च करके वह अपने ११) बचा लेत था।

साल अव्वल की रक़म नाजायज़ शराबीलाल ने खुशी से खूबीलाल सर्कारी गोइन्दे को देदी मगर जब दूसरे साल की वाजिबुलअदा हुई तो वह उसको आज कल पर टालने लगा, आखरश खूबीलाल गुस्से हो कर अपने मकान को चला गया उसी वक्त शराबीलाल ने समझ लिया कि वह थोड़ीही देर में मेरी हैरानी और सितमरसानी की फिक्र बज़रिय: पुलिस के किया चाहता है और अफसरान पुलिस को लाकर मुझको इमरोज़ फर्दा में बहरे मुसीबत में डालाही चाहता है, इसलिये वह पुलिस के एताब से बचने के लिये तदबीरें सोचने लगा। अव्वल यहतियात उसने यह की कि उसके पास उस वक्त जिस क़दर विलायती शराब वास्ते फरोख़्गी के मौजूद थी, सिर्फ एक बोतल अपने खास इ-स्त्यामाल के लिये रख कर बाकी सब बोतलों को अपने एक दोस्त के मकान में रातोरात रख आया और वही एक बोतल पुलिस ने बरामद भी की थी। इस जगह मेरे नाज़-रीन मुझसे सवाल कर सकते हैं, कि इस क़दर ज़ियादा विलायती शराब शराबीलाल को कहां से दस्त्याब होती थी। इस मोअम्मे का हल करना कारेअहम व मुशकिल नहीं जवाब इस सवाल का सहल है दम के दम में दिया जा सकता है यानि मेसहाउसों से (जहां गोरे खाना खाते हैं) सौदागरों से जो अपने "ष्टाक" (माल मौजूद:) को वक्त

मोकर्रर: पर नहीं जांच लेते, होटलों से, उन अमीरों और शरीफों के मकानों से जो शराब के खर्च का हिसाबो किताब रखना मेहज़ फजूल और दिक्कत ख्याल करते हैं, नाच और दावतों के मौकों पर खास कर जो चन्द से दावतें दी जाती हैं खिदमतगारान खानसामान और बेरा लोग बहुतसी शराब चोरा लाते हैं और बाजार में थोड़ी कीमत पर बेच जाते हैं। इस सिलसिले में मैं एक अमीर कबीर के हालात जो अह्ल यूरोप थे बयान करता हूं। ये साहब बड़े खुशएखलाक और नेकमिज़ाज थे अकसर अपने दोस्तों को दावतें दिया करते थे उनका दस्तूर बिलायती शराब मंगाने का यह था कि वे साल में एक मरतब: कलकत्ते के सौदागरों के यहां से बहुत सी शराब मँगा लेते और तहखाने में रखवा देते थे, उसमें से हर रोज़ खुद पीते और दोस्तों को पिलाते थे एक रोज़ उन्होंने अपने खानसामा को बुलाकर कहा कि हमने एकग्रा नं०१ की १२ दर्जन बोतलें मँगाई थी जिसमें से इस वक्त सिर्फ १२ बोतलें बच रही हैं इस क़दर ज़ियाद: यह शराब किसी तरह खर्च नहीं हो सकती तुम इसका क्या जवाब देते हो ? वह खानसामा ज़रा भी न हिचका उसने फौरन् जवाब दिया "हजूर ने गुलाम पर बड़ा भारी तोहमत लगाई जैसा मैं अपने आक़ा के माल की हिफाज़त करता हूं और खैरख्वाही

में हर वक्त जान निसार किया करता हूं उसका शाहिद खोदावन्द करीम है जिससे कोई बात मुखफी नहीं है इस लिये यहतियातन मैंने खाली बोतलें रख ली हैं यह कह कर वह दग़ाबाज़ खानसामा गोदाम में गया और पंखा कुलियों और घसियारों को बुला कर उन खाली बोतलों को मय तार आहिनी के जिससे वे बँधी थीं निकाल लाने का हुक्म दिया और उन खाली बोतलों को दहलीज़ में ११ क़तार में रखवा दीं बादहू अपने आक़ा से बड़ी आजज़ी से कहा कि यह मामला गुलाम को आबरु का है हजूर मेरी दयानतदारी का सबूत मुलाहिज़ा फरमा लेवें। साहब दह-लीज़ में आये और उन खाली बोतलों की क़तारों को देख उनको शुमार कर बड़े खुश हुये और कहा "ठीक है" मगर उस सीधे सादे साहब को ज़रा भी ख्याल न हुआ कि बाजार में खाली बोतलें अनकरीब तमाम मार्कों की एक एक पैसे को बिकती हैं, अस्लवाक़ई यह था कि वह खान-सामा बड़ाही चालाक और पेशबन्दी करनेवाला आदमी था जब वह एक हाथ से भरी हुई बोतल चोराता था तो दूसरे हाथ से उसी वक्त खाली बोतल उसकी जगह में रख भी देता था। इस चालाकी को उसका सादः मिज़ाज आक़ा क्योंकर समझ सकता था !!!

अठारहवां पर्व ।

एक मुसलमान जादूगर ।

मैंने एक मुसल्मान जादूगर के अजीब व ग़रीब हालात अपने एक हमपेशा कांष्टेबल से सुने थे और चूंकि मैंने और दूसरों ने भी उस जादूगर के रिश्तेदारों से माल पैदा किया था इसलिये मैं अपने नाज़रीन की वाकफियत और फ़ायदे के लिये उनका इस जगह बयान करना अपना फ़र्ज़ समझता हूँ ।

कई वर्ष हुये मेरा एक हमपेशा कांष्टेबल डरपोकखां नामी किसी तवायफ पर आशिक हो गया, वह ग़रीब आदमी था और सिर्फ ६) माहवारी मुशाहिरः पाता था और वह तवायफ दौलतमन्द थी जिसकी सालाना आमदनी जुमलः अखराजात के वज़ा करने पर २०००) रुपये की थी ऐसी सूरत में बिचारे डरपोकखां को बीबी दिलठंढ़कजान के मिलने की क्या उम्मेद थी, खास कर जब कि दौलतमन्द महाजनों और वकीलों के लड़के उस पर दिलोजान से फरेफतः थे और उसकी खातिरदारी करने में हरतरह से मुस्तैद थे वह मरीजेइश्क बेफायदः आहें सर्द खींचता उसकी मोहब्बत का दम भरता और उसकी खुशामद में लगा रहता था । चूंकि वह तवायफ उसी के हलके में

रहती थी जब कभी उसके दो लड़ाके यारों में झगड़ा और दङ्गा फसाद होता तो वह उसको रफा दफा करके उसे इस तरह खुश करता और मदद देता। एक रोज उसने बड़ी जुर्अत करके उस तवायफ से अपनी मोहब्बत का इ-ज़हार किया सुनतेही उसने उसको बड़ी डांटडपट बत-लाई और कहा "क्या तुम सनक गये हो ज़रा होश में आओ।" लेकिन उसके पेशतर के एहसानों को ख्याल कर उसने उसको रह्म की नज़रों से देखा और अपनी ज़बान की सख़्ती को नर्मी में मुबद्दल कर उससे मोहब्बतआमेज़ बातें करने लगी कि "तुम से मोहब्बत मैं तबही कर सकती हूं अगर मैं अपनी तमाम उम्र ऐश और आराम छोड़ ग-दाइयों के सा लिबास पहिन दर ब दर मारी मारी फिरूं। फ़र्ज़ करो अगर मैं तुम्हारीही हो रहूं तो तुम मेरा खर्च किस तरह चलाओगे तुम्हारी तनख़्वाह तो सिर्फ ६) है और तुमको बखूबी वाकफियत है कि मेरा मामूली खर्च १००) माहवारी से कम नहीं है।" बेचारे डरपोकखां यह सुन कर दमबखुद हो गये और अपनी तकदीर को को-सने लगे "हा। मैं सदरआला या डिप्टीकलेक्टर क्यों न हुआ।" बहरकैफ उसने उस तवायफ की नसीहत तस्लीम की और अपनी बदनसीबी पर हजार अफसोस कर लाचार सब्र करने पर कमर मज़बूत बांधी लेकिन वह बिलकुल

नाउम्मेद नहीं हो गया जैसा कि उसके मॉवाद की कार्रवाई से साफ ज़ाहिर होगा। उसको चन्द आदमियों से दरियाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि उस जगह से थोड़ीही दूर पर जंगल में एक बड़े ज़बर्दस्त आमिल शाह साहब रहते हैं जो फन जादूगरी में भी बखूबी माहिर हैं और जिनको इन्हीं अमलों की तासीर से ऐसे अख़्तियारात हासिल हैं कि जिस शख्स को चाहें अपने अख़्तियार में यहां तक कर लेवें कि जो उससे कहें वह वही करे और उसका दिल जिधर चाहें बात की बात में फेर देवें, जिस पर चाहें उस पर उसको आशिकेज़ार बना देवें। इस खुशखबरी के सुनतेही डरपोकखां का पज़मुर्दः दिल एकबार्गी शिगुफ़्तः हो गया, जान में जान आ गई दिलही दिल में खुश हो कर कहने लगा "लो अब मेरा मकसददिली इन्हीं शाह साहब की मेहरबानी और तवज्जह से पूरा हुआही चाहता है अगर यह बात सही है कि उनको अमलों के ज़रिये से ऐसे अख़्तियारात हासिल हैं कि जिस किसी को चाहें अपना मुतीअ कर लेवें तो फिर यह बिचारी तवायफ के दिल को मेरी तरफ मायल कर देना क्या मुशकिल काम है?" ऐसा सोचता हुआ डरपोकखां शाहसाहब की झोंपड़ी की तरफ रवाना हुआ।

शाह साहब झोपड़ी छोड़ कर कहीं नहीं जाते थे क्यों

कि उनको खाना उन्हीं लोगों से मयस्सर होता था जो उनके पूरे मोतकिद थे और जो अपनी आइन्दे की तकलीफ या आराम के बारे में शाह साहब से दरियाफ़्त किया करते और उनसे उन तकलीफात से नजात पाने के लिये तदबीरें भी पूछा करते थे इसलिये डरपोकखां को ज्यादा तरद्दुद उनकी मुलाकात हासिल करने में न करना पड़ा। जब झोपड़ी कुछ दूर रह गई तब डरपोकखां ने शाहसाहब को एक दरख़्त के नीचे बैठे हुये देखा जिसके तने से सटी हुई उनकी झोपड़ी थी इसके चारों तरफ जंगलही जंगल नज़र पड़ता था। डरपोक खां ने नज़दीक पहुंच कर सलाम अलेक किया शाह साहेब ने उसके सलाम का जवाब देकर उसकी मिज़ाजपुरसी की और बैठने का इशारह करके आने का सबब दरियाफ़्त किया। डरपोकखां ने बड़े जोश खरोश से अपनी मोहब्बत का पूरा २ हाल उस तवायफ के ऊपर अपनी जान क़ुर्बान करनी उसकी बेमुरौव्वती से पेश आनी सब कह सुनाया और बड़ी आर्ज़ू व मिन्नत करके कहा कि आप कोई ऐसी तदबीर मुझे बतलायें कि वह तवायफ मुझको जल्द मिल जावे और अपनी तमाम उम्र मेरी अतायत में गुज़रान करे। शाह साहब ने उसको बहुत तरह से तसल्ली देकर कहा "मैं तुमको एक बड़ी उमदी तदबीर बताता हूं जिसका असर तीर बहदफ समझना।

वह यह है कि तुम एक मुर्गी, एक लम्बी रस्सी जो २० हाथ से ज़रा भी छोटी न हो और दो खूंटियां लाकर मुझे दो और एक नई कब्र भी तलाश कर लो मैं तुम को संग लेकर उसी कब्र के पास एक अमल करूंगा जिसके ज़रिये से मैं उस तवायफ का दिल तुम्हारे उपर ऐसा मायल और फरेफत: कर दूंगा कि फिर तुमको वह कभी न छोड़ सकैगी, तमाम उम्र तुम्हारीही हो कर रहैगी।" डरपोकखां ने शाह साहब के कहने के बमूजिब जुमल: सामान ला दिया और ११ बजे रात को दोनों आदमी उस नई कब्र की तरफ रवाना हुये जिसको डरपोकखां ने पेशतर से तलाश कर रक्खा था। वहां पहुंचकर शाहसाहब ने एक खूंटी कब्र पर गाड़ दी और दूसरी खूंटी २० हाथ के फासिले पर ज़मीन में मज़बूती से गाड़ दी, इन्हीं दोनों खूंटियों से उस रस्सी को बांध दी दूसरी खूंटी से उस मुर्गी को भी बांध दी तब डरपोकखां से कहा कि तुम इस मुर्गी से चार या पांच क़दम पर बैठ जाव और जबतक मैं हुक्म न दूं यहां से ज़रा भी न टलो नहीं तो जान बचनी मुशकिल होगी अब मैं उस खन्दक में जाकर जो उस जगह से थोड़े ही फासिले पर है अमल पढ़ना शुरू करता हूं। यह कह शाह साहब उस खन्दक में उत्तर गये और वहां पहुंच कर अमल पढ़ने लगे। शाह साहब के जातेही डरपोकखां की

जान खौफ से निकलने लगी पासही एक ऊंचा दरख़ था वह चट पट उस पर चढ़ गया और एक शाख़ पर बैठ वहीं से कुल कैफियत देखने लगा लेकिन उसको कुछ भी न नज़र पड़ा जब सुबह होने लगी तब वह उस दरख़ से उतर जिस जगह मुर्गी बँधी थी गया मगर उसको वहां न पाया तब वह शाह साहब को ढूंढ़ने खन्दक में उतरा देखा कि वे मरे पड़े हैं । ऐसे घबराहट के मौकों पर हमलोगों के ख्यालात दिमाग़ में ज्यादा तेज़ी से गुजरते है बनिसबत इसके कि हम उनको अपनी ज़बान से ज़ाहिर कर सकें । रफते रफते उसने अपनी खतरेनाक हालत पर ख्याल किया और मोक़बरे से बड़ी तेज़ी के साथ निकल भागा और अपने थाने को वापस आकर इस वार्दात का ज़िक्र किसी से न किया । दो दिन बाद चन्द मुसाफिरों ने थाने में आकर इस मज़-मून की रिपोर्ट की:—

"बड़े पीर साहब के मोकबरे से हमलोग जा रहे थे पास के खन्दक में एक आदमी की लाश पड़ी हुई देखी हमलोगों की राय में यह मालूम होता है कि इस लाश को गीदड़ों ने कब्र खोद कर निकाला है और आराम से खाने के लिये उस खन्दक में उठा लाय हैं।"

तहक़ीक़ात की गई साहब मजिष्ट्रेट खुद जाय वार-दात पर तशरीफ लाये और यह ख्याल कर कि खून ज़रूर

किया गया है पुलिस को मुजरिमों का पता लगाने का हुक्म दे उसी वक्त डाक्टर साहब के पास लाश चीड़फाड़ कर जांच करने के लिये भेजवा दी । डाक्टर साहब ने रिपोर्ट किया कि वह आदमी जिसकी यह लाश है सांप के काटने से मर गया । इस किस्म की रिपोर्ट डाक्टर साहब की जब थाने में आई तब तो डरपोकखां को क़दरे तसल्ली हुई उसको जान में जान आई लेकिन दोही तीन दिन बाद साहब मजिस्ट्रेट का हुक्म थानेदार के नाम इस मज़मून का आया कि पुलिस फौरन् रिपोर्ट करे कि शख्स मरहूम इतनी रात गुज़रे मोकबरे में क्यों गया अब फिर बिचारे डरपोकखां के हवास जाते रहे घबराहट से हाथ पांव फूल गये । इस हुक्म के आने पर मेरी नौकरी उस जादूगर के रिश्तेदारों का पता लगाने के लिये बोली गई । जिससे मुझको अच्छा मौक़ा कुछ रुपये टेंट में रखने का मिला । बदिक्कत तमाम चन्द वाक़िफ़कार आदमियों से दरियाफ़्त करने से मुझको मालूम हुआ कि शाह साहब मरहूम मौजे खूबनफागंज के आठ आने के ज़िमीदार थे इनका नाम मिर्ज़ाबदनसीबबेग था । ये बहुत दिनों से इनसान से नफरत करने लगे थे यहां तक कि अपनी बीबी बड़े भाई और मां की मोहब्बत तर्क कर उनकी जुदाई गवारा कर अपना खास मकान छोड़ बस्ती से मुंह मोड़ सब से किनाराकश हो जंगल में आ बसे थे ।

मैं मौजे खूबनफागंज में पहुंचा और शाह साहब मरहूम के रिश्तेदारों से मिल उनके बदनसीब रिश्तेदार मरहूम का पूरा हाल दरियाफ़ किया। मामूली हालात बयान कर उनलोगों ने कहा कि "मिरज़ा बदनसीबबेग का यह अक़ीदा था कि इनसान को नस्ल मौजूद: पर वह बड़ा यहसान करनेवाला होगा जो उनको नस्ल आइन्द: को बिलकुल नेस्तोनाबूद मिस्ल हेरोद के कर देगा ताकि उनको जानशीनी के लिये कोई जिन्द: न रह जावे और इस तरह इनसान का नामोनिशान सतहे ज़मीन से मिटजावे। मैंने उनके इस अकीद: ही से मालूम कर लिया कि जिस शख्स की ऐसी वेसिर पैर की बातें है तो वह किसी तरह से इनसान का दोस्त या खैरअन्देश नहीं हो सकता वह न किसी की इज्ज़त करता है और न अपनीही बेहतरी की कोशिश करता है जिसका नतीजा यह होता है कि वह खुद हेमेशह खराब खस्तह रहता है। मौज़ा मज़कूर का सर्दार इसी खानदान से होते चले आये और अब भी है यह मौज़ा कसीरुलमुनाफे का है सर्कारी माल गुजारी देकर अनकरीब ४०००) रुपये की बचत है। उस जादूगर का छोटा भाई मिर्ज़ा रोबदारबेग था जिसको शाह साहब के तर्कवास्ता और अलहदगी का बड़ा रंज था। जब कभी वहां जिमीदारों के दरमियान उससे कोई झगड़ा

होता था तो वे उसको तान:ज़नी करते थे कि उसने अपने भाई को घर से निकाल दिया, वे लोग तो उसकी यहां तक बदनामी करते थे कि वह अपने भाई की बीबी से मोहब्बत नाजायज रखता है। ऐसी झूठी बदनामी से रोबदारबेग का दिल बड़ा रंजीद: रहता था उसके दोस्त उसको खुशनसीब ख्याल करते थे लेकिन उसको जो सोज़िशेजिगर थी उससे बहुत कम लोगों को खबर थी; बक़ौल शायर कि—

"हरदिल अपने खार से खूब आगाह है।
जाहिर में भला चंगा मगर पोशीद: आज़ार है॥
वह कौन सी तकिया है जिसमें बिनौला नहीं।
वह कौन सा मकां है जिसमें रंजोअलम नहीं॥
ज़ाहिर में जो खुशहाल देख पड़ते हैं ।
बले बातिन में हम उनकी हालत गैर पाते हैं॥
जो दूर से खुशनुमा नज़र आता है ।
वह नज़दीक आने पर शाज़नादिरही बेऐब पाया जाता है॥
बहुत से लोगों को दुनिया खुशहाल कहती है।
मगर उनके भी दिल में फिक्र गोशह, नशीन रहती है॥
उनकी मोकद्दर में भी कहीं २ शिगाफ होते हैं।
जिन्हें हम पूरे तकदीरवर समझते हैं ॥
जब कभी उनकी खुशहालतों का मज़कूर होता है।
वहीं 'लेकिन' का आना भी ज़रूरी होता है ॥"

मिर्ज़ा रोबदारबेग को लोग एक बड़ा जिमीदार ख्याल करते थे लेकिन उसका यह कलाम था कि मुझसे मेरा गरीब हलवाहा बेहतर है। उसको न कोई फिक्र व न खतरा है॥ वह रूखा सूखा खा के मजे में सोता है। मगर मुझको हर शब सितारे शुमारी के सिवा सोना कब नसीब होता है॥ मैंने मिर्ज़ा रोबदारबेग से उसके भाई बदनसीब बेग के सांप के काटने से वफात पाने का हाल मोफस्सल बयान करके कहा कि मेरी तायनाती साहब मजिष्ट्रेट बहादुरनेमरहूम की लाश शिनाख़ करने के लिये गर्ज़ सेउसकी बीबी और मां को अदालत में हाजिर करने की की है। चूंकि मुसम्मातें परदेनशीन थीं इस वजह से मरहूम का भाई मुझसे बहुत गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि आप बिचारी औरतों को तकलीफ न देवें मैं खुद आप के हमराह चल कर लाश को शिनाख़ कर दूंगा। मैंने जवाब दिया कि मुझको क़तई हुक्म उन्हीं औरतों को हाज़िर करने का दिया गया है मैं उसके खिलाफ हरगिज़ नहीं कर सकता, मैं बग़ैर उन औरतों को लेगये किसी तरहसे बाज़ नहीं आ सकता और यहां से तो मैं बग़ैर उनको हमराह अपने लिये एक कदम भी नहीं टल सकता हूं। मिर्ज़ा साहब। आप बखूबी जानते हैं कि साहब मजिस्ट्रेटके हुक्म में कोई फर्दबशर दस्तन्दाज़ी नहीं कर सकता है। उसी वक्त

गोंडइत--मौज़ा को तरफ़ फिर कर मैंने हुक्म दिया कि जल्द पालकी या डोली मय कहारों के हाज़िर करो। मेरी इस मुस्तैदी को देख रोबदारवेग बहुत घबराया और पांच रुपये निकाल मेरे हाथ गर्म किये और बड़ी मिन्नत से मुझ से कहा कि आप खुदा के लिये उन औरतों को अदालत में हाज़िर होने की बेइज्ज़ती से महफूज़ रखिये। रुपयों को जेब में दाखिल कर मैं रोबदारवेग को अपने हमराह ले कर थाने में पहुंचा। थानेदार साहब मरहूम के भाई को देख गरज कर बोले "तुम्हारी जानिब से बड़ी भारी संगदिली और बेरहमी की गई, कि तुम बावजूदे कि बखूबी इस बात को जानते थे कि तुम्हारा भाई पागल हो गया था ताहम तुम ने उसकी जान की ज़रा भी हिफाज़त और परवाह न की, तुमको मुनासिब था कि तुम उसको फौरन् हुक्कामों की इजाज़त ले कर पागलखाने में दाखिल कराते ऐसा न कर के तुमने दीद:व दानिस्त: उसको जान उसको देने दी। यह तुम्हारी ही संगदिली का बाइस था कि बेचारे बदनसीबवेग की जान हलाक हुई, बस मालूम हो गया कितुम उसका माल व असबाब मार लिया चाहतेथे इस वजह से तुम ने उसके बचाने की मामूली एहतियात भी न की, तुम्हारी इस बे रहमी पर मजिस्ट्रेट साहब बड़े नाराज़ हैं ताज्जुब नहीं कि तुम्हारे भाई का चार आना

हिस्सा मौजे खूबनफागंज का सर्कार बहादुर ज़ब्त कर लें "।

यह डांट डपट व मलामत रोबदारबेग पर ऐसी कारगर हुई कि उसने फौरन २५) अपनी जेब से निकाल थानेदार साहब की नज़र किये। उसी वक्त थानेदार साहब की ज़बान नेभी पलटा खाया; वह सखती नामोनिशान को भी न बाकी रही मिस्ल मोम के नर्मी अख़ियार की और अबतोथानेदारसाहबरोबदारबेगको मिर्ज़ा साहबकहनेलगे।

इसके बाद उन्हों ने मजिस्ट्रेट साहब को इस मज़मून की रिपोर्ट की कि मरहूम पागल हो गया था और जादू-गरी भी करता था उसका मोकबरे में रात के वक्त जाने का बाइस यही मालूम होता है कि वह आधी रात में कोई काम जादूगरी के मुतअल्लिक करने गयाथा। फिद्‌वी ने इस मोकद्‌मे मे बड़ी कड़ी तहकीक़ात की है जिससे साफ ज़ाहिर है कि उस के रिश्तेदारों ने उसकी खबरगीरी और निगहबानी करने में कोई दकीक: बाकी नहीं छोड़ा याने न उसकी मां की नसीहतों ने उसके दिल पर कोई असर किया और न उसके भाई का समझना कारगर हुआ यहां तक कि उसकी बीबी के चश्मगिरियांने भी उस को मकान में मोकैयद न कर सके। एक शब को जब उसके जुमल: रिश्तेदारान ख्वाबेग़फलत में थे वह मकान से नि-

कल भागा और बावजूद तलाश बिसियार के उसका पता न लगा कि वह कहां गया और क्या हुआ "। इस झूठी रपोर्ट पर मजिस्ट्रेट साहब ने काग़ज़ात दाखिल—दफतर किये जाने के लिये हुक्म सादिर फर्माया।

जब यह मामला दब दबा गया और कई महीने हो गये तब एक रोज़ डरपोकखां ने अपना तमाम किस्सा उस तवायफ की बेमुरौव्वती से ले कर मिर्जा बदनसीबबेग के जादूगरी व अमल का मोकबर: में जा कर आज़माना और इसी आज़माइश में उसकी जान तक कुर्बान होनी सब तफसीलवार मुझे कह सुनाया। उसने यह भी कहा कि बावजूदे कि डाक्टर साहब ने अपनी कैफियत में यह तहरीर फर्माया था कि मुसम्मी बदनसीबबेग को सांप ने काट लिया और वह उसके ज़हर से मर गया मगर मुझको इस बात की सदाक़त में शक वाक: होता है। दरहकीकत मुझको ऐसा यक़ीन होता है कि वह बदनसीब भूत से मारा गया मैंने इस बारे में एक ज़ीइल्म मुसलमान डाक्टर सेमशवर:किया।थाउसने मुझे बतलाया कि कब्लइसकेऐसेवाक़यात अकसर देखने और सुने में आये हैं।यकीनन बदनसीबबेग नौआमोज़ आमिल था उसकी यह अव्वल कोशिश अपनी क़ाबलियत को आज़माइश की थी उसने जो मुझे उस बंधी हुई मुर्ग़ी के तीन या चार क़दम के फासिले पर

ठहरे रहने का हुक्म दिया था उस से उस की यही ग़र्ज़ थी कि मुर्ग़ी को भूत आतेही चट कर जायगा और फिर मुझको नज़दीक पाकर मेरे ऊपर भी हमल: आवर होगा मगर मैंने उसको धोखा दिया और वहांसे टल गया थोड़ी दूर पर एक दरख्त था उसी पर चढ़ गया। ग़ालिबन् वह भूत या जिन जिसको बदनसीबबेग अपने ज़ेर हुकूमत कियाचाहता था उस जगह पर आया होगा मुर्ग़ी को खाकर अगर मैं उस जगह मौजूद होता तो मेरी भी खबर लेता पस मुझको वहां न पा कर उसआमिलको जा पछाड़ा और बेचारे की जानही ले ली। इस तरह मुझ डरपोंकखां बेचारेकी जान बच गई। साहबान अंग्रेज भूत प्रेत की बातों को बिलकुल एतबार नहीं करते लेकिन मुसलमानों और हिन्दुओं को तो उन पर पूरा पूरा एतक़ाद है वे इन बातों को ग़ैर मामूली और हैरतअंग्रेज़ नहीं समझते। मेरे मुल्क में रुपया पैदा करने का यह मामूली तरीक़ा है जो शख्श फ़न जादूगरी में मशहूर हो जाता है उस के पीछे हज़ारों आदमिओं की भीड़ जिनके ख्यालात खामहैं फिरा करती है गोकि खामख्याली पर अक़्लमन्द लोग हंसते और नफरत करते हैं मगर बहुत से ऐसे खामख्याली हैं कि चाहे आप उनको कितनेही समझाइये लेकिन वे अपनी बेवक़ूफीहरगिज़ क़बूल न करेंगे। ऐसेलोग शाहसाहब मर

हम को जैसी क़द्र व मञ्ज़िलत उनकी ज़िन्दगी में करते थे वैसी ही उनके वफ़ात पाने पर भी उनकी क़ब्र को ताज़ीम बजा लाते हैं । अगर इस खामख्याली की रुकावट कानूनन न की जाती ख्वाह ईसाई मजहब की खैरअन्देशी का असर उस पर पूरी तौर से न पड़ता तो हमारे मुलकी भाईओं की यह खामख्याली और भी खराबोखस्त: किये होती। यही खामख्याली इनसान की क़ौम को बड़ी बेरहमी से हलाक करती है ।

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

खफीफ मामले ।

मोफ़स्सल के थानों में जो कांस्टब्लान तायनात रहते हैं उनको अकसर खफीफ मामलों की भी खबर पहुंचती रहती है जिनको सदर के हुक्काम कुछभी नहीं जानते; मसलन् जिस वक्त इनकम टैक्स का कानून जारी किया गया था और रोज़गार पेशेवालों की सालाना आमदनी की तशखीस हो रही था उस वक्त जो जो सख़्तियां और ज़बर्दस्तियां बाज़ बाज़ देहात के मोकामात में इसी इनकम टैक्स के इजरा करने में अमल में लाई गईं थी उनका मोख़्तसर हाल जो मुझे याद है मैं ज़ैल में बयान करता हूं:—

चूंकि मैं अपने नाज़रीन का बेशक़ीमत वक़्त ज़ियादा ज़ाया नहीं किया चाहता इसलिये अमूरज़ैल के बयान करने से दरगुज़र करता हूं—

" किस तकलीफ और तरद्दुद से लोग तहसीलदारी में अपना कारोबार छोड़ हफ़्तों हाज़िर रहते, चपरासियों की झिड़कियां सहते जो बात बात में उनसे लड़ पड़ते और पुरानी अदावतें निकालते थे। "

" कलील तनख़ाहवाले अहलकारान की ज़बान पर " ससुर " की गाली तो गोया सखुनत किया सो हो रही थी बड़े बड़े इज़्ज़तदार ज़िमींदारान की शान में यह सक़ोल कलमा कह देना मामूली बात में दाखिल था। "

" किस तरह मज़कूरियान उन को कानून के दफे बात बात में बता कर धमकियां देते और बड़ी बड़ी आंखें दिखाते थे। "

" तहसीलदारी के अहलकारान की खिदमतगारान भी मिज़ाज बनाते और उन पर रोब जमाते थे वगैरह वगैरह। "

उन दिनों मैं एक मोफस्सल के थाने में तायनात था जिसके क़रीबही " परगना तहसीलदारी थी " इसके हद्द हकूमत मेंदोबनिये रहते थे जो लोहे और चीनी का रोज़गार करते थे इनकी हैसियत के बारे में किसी ने कह दिया कि

ये दोनों लखपती असामी हैं। जिस वक्त तहसीलदार साहब उनकी सालाना आमदनी की जांच कर रहे थे हम लोगों को उसी वक्त यक़ीन हो गया कि उन पर सौ रुपये सालाना टैक्स ज़रूर लगाया जायगा। उनमे से हर एक की सालाना आमदनी—१००००) और ११५००) रुपये की थी। बन्दोबस्त के काग़ज़ात में मैंने उन दोनों के नाम के मोकाबिल: में २०० रुपये इनकम टैक्स की रक़म मुन्दर्ज की हुई देखी थी लेकिन जाय तअज्जुब है कि बावजूद इस के कि मोहक़म: बन्दोबस्त ने हस्‌ब हैसियत वाजिब तजवीज़ की थी ताहम तहसीलदार साहबने हर एक पर सिर्फ़ १०) सालाना टैक्स लगाया वजह इसको वे लोग समझ सकते हैं जो हिन्दुस्तान की इस बुरी हालत को बखूबी जानते हैं। दूसरा माजरा काबिल इत्तिला यह है कि उसी तहसीलदारी के इलाके में एक बुढ़िया रहती थी जो "हल्दी वाली बुढ़िया" के नाम से मशहूर थी यह हल्दी बेचतीथी जिसकी हररोजकी आमदनी चारपैसेसे ज़ियादा न थी ताहम उसपर१४) सालानाटैक्सलगायागया। उसने बहुतेरा टैक्स सेबरी किये जाने के लिये अर्ज़ मारूज़ की मगर कौन सुनता है, जब उसने मुतवातिर दर्ख़्वास्तें भेजीं तो उसको यह जवाब दिया गया कि अगर सायल: ईं जानिब को इस तरह फज़ूल दर्ख़्वास्ते भेज कर दिक़ करेगी तो उस

के निसवत हुक्म मुनासिब सादिर किया जावैगा, याने सायल: को खललदिमाग़ हो गया है इसलिये वह पागल खाने को भेजी जावे। लाचार हो बुढ़िया ने दूकान बन्द कर दो और खामोश हो अपने घर बैठ रही। इस जगह मेरे नाज़-रीन मुझसे यह सवाल पूछ सकते हैं कि उस बुढ़िया ने साहब क-लेक्टर के यहां अपील क्यों न की? इस सवाल का जवाब बड़ी आसानी से दिया जा सकता है। एक बुढ़िया बिचारी जिसका न कोई सरपरस्त न ग़मख़्वार तो वह किस तरह अपनी मुसीबतों का इज़हार कर सके सब से मुशकिल अम्र तो यह था कि वह तहसीलदार साहब के बेइनसाफी को शिकायत साहब कलेक्टर से करके उस मौजे में किस तरह चैन से रह सकती अगर वह ऐसा करे तो गोया बैठे बैठाये अपने सिर पर आफत बुलाये। अगर तहसीलदार और ज़िमीदार के दरमियान नाइत्तिफाकी होती तो शायद वह अपील करने की हिम्मत भी करती मगर वहां तो बात ही और थी ज़िमीदार उनका दिलीदोस्त और महरम राज़ सा बन रहा था तो फिर वह खामोश न हो बैठती तो क्या करती? उस पर इस क़दर जियादा टैक्स क्यों लगाया गया? इस सवाल का जवाब यह है कि उस बुढ़िया के पड़ोस में उसी तहसीलदारी का एक चपरासी रहता था जिस पर उसने एक बरस पेशतर अदालत दीवानी में ना-

लिश दायर की थी जिसके अर्जीदावे का यह मज़मून था कि चपरासी मज़कूर ने उसकी थोड़ी सी ज़मीन दबा ली बस इसी अदावत से उसने तहसीलदार साहब का कान भर दिया कि यह बुढ़िया बड़ी रुपये वाली है। यह बात तहसीलदार साहब के दिल पर ऐसी मुनक्कश हो गई कि उन्होंने उस ग़रीब बुढ़िया की मिन्नत समाजात एक भी न सुनी, कोरा कोरा जवाब ऐसी कड़ाई के साथ दे दिया। अस्ल वाक़ई यह था कि तहसीलदार साहब खुद इस कानून की मनशा नहीं समझते थे जनाब लाट साहब बहादुर की हरगिज़ यह ग़र्ज़ इस कानून के इजरा करने से न थी कि यह टैक्स लोगों की हैसियत के मुताबिक़ लगाया जावे बल्कि जो उनकी सालाना आमदनी हो उस पर यह लगाया जावे। इस कानून की खास मनशा यही थी जिसको तहसीलदार साहब बिलकुल नहीं समझते थे। अलावह इसके उनके ज़ेहन में यह बात समा गई थी कि जिस परगने में इनकमटैक्स जियादा लगाया जावेगा उस परगने के तहसीलदार को ज़रूर खुशनूदी का परवाना साहब कलेक्टर अता फ़र्मावेंगे। क्या यह वजह उनके इसक़दर जियादा टैक्स लगाने की काफ़ी नहीं ख़्याल की जा सकती?

मेरे नाज़रीन इस बात से बखूबी वाकफ़ियत रखते होंगे कि बहुत से मवाज़ियात में उर्दू के पढ़नेवाले ख़्वाह

साफ़ और पुरमज़मून अर्ज़ी के लिखने वाले शाज़नादिरही दस्त्याब होंगे इसलिये अर्ज़ी अरायज़ के लिखने का काम मेरे थाने के मोहर्रिर साहबही करते थे इनके अलावः दो या तीन मोखतारान भी जो उसी तहसीलदारी में मोख-तारकारी करते थे, आरायज़ वग़ैरह लिखा करते थे;लेकिन ये लोग उन सितमरसीदः अशखास की दर्ख़्वास्तें नहीं लिखते जो मोकामी आलाक़दर हाकिम दोनों अख़्तिया रात से मुमताज़ याने डिप्टी मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलेक्टर के यहकामात की अपील करनी चाहते थे। मैंने खास अपने तजर्बे से दरियाफ़्त किया है कि चन्द अशखास ऐसे हैं जो बुराई का करना महज़ नाचीज़ और खफीफ मा-मला ख्याल करते हैं जाहिरा तहसीलदार साहब भी इसी ख्याल के आदमी थे। ऐसे अशखास चाहे बुराइयों को ना-चीज़ समझें, उन पर हँसें और कलप करके उनकी सूरत तबदील करदें ख़्वाह नसीहत करनेवाले को हिकारत की नज़र से देखें मगर बुराई बुराइही है एक न एक रोज ज़ा-हिर होही जायगी और उनकी रुसवाई करादेगी और हमेशः के लिये उनको ज़लील और हकीर बना देगी। ऐसे लोगों को यह जरूर यक़ीन कर लेना चाहिये कि इस दुनिया में ज़ुल्म की जड़ ऊपर रहती है हलके झोंकेही उसे उखाड़ देते और ऊंचे दर्जे से गिरा खाक में मिला

देते हैं आफतगंज के तहसीलदार साहब पर जो आफत आई वह इसी धोखेबाज़ी ने थी बुलाई उन्हों ने चार्टर रिसली साहब कलेक्टर को धोखा दिया वे बड़े नेक और खुश अखलाक थे दरगुज़र कर गये मगर जब दूसरे कलेक्टर का दौर दौरा हुआ,उन्होंनेमिस्लसाबिककार्रवाईको आखरशज़िल्लत उठाई। अलक़िस्सः मुझको दीवानजी साहब (मोहर्रिर) बहुत मानते थे मैं उनकी दलाली करता था और रुपये में ।) पाता था यहां इस बात का ख्याल रखना ज़रूर है कि दीवानजी साहब सिर्फ़ अर्जियां लिख देते थे और किसी दीगर किस्म की मदद नहीं देते थे सो भी जब उनको यकीन हो जाता था कि मोअक्किलान असालतन अपनी दर्ख़्वास्ते तहसीलदार साहब के यहां गुज़रावेंगे।

दूसरा तरीका चन्द आने वसूल करने का जिसको अकसर शहर या मोफस्सल के थानों के कांष्टेबलान अख़्तियार करते है यह है कि आतशबाज़ी बनानेवालों को ज़ेर निगाह रखे मसलन किसी शख्स ने आतशबाज़ी बेचने के लिये सर्कार से लेसेन्स ली जिससे वह किसी खास हदूद मोकर्रर: में आतशबाज़ी बेचने का मजाज़ हुआ कुछ अरसे के बाद उसको खबर लगी कि फलां मोज़े या शहर के फलां महल्ले में बड़ा भारी मेला लगे गा जो उसके हदूद मोकर्रर: से बाहर है लालच के मारे वहां जाकर आतश-

बाज़ियां बेचनी शुरू की कांस्टबल हलक: या कोई दीगर कांस्टबल गश्त करता हुआ उस मेले में पहुँचा और उस-को खिलाफ़ कानून अपने हदूद मोकर्रर: के बाहर आतश-बाज़ी बेचने का जुर्म लगा कर उसको गिरफ़ार कर लिया और सख़्ती के साथ उससे पेश आकर कहा "तुमने दीद: व दानिस्त: सर्कार बहादुर को फरेब दिया और स-र्कारी रसूम मारलेने की नियत की" वह बेचारा आतश-बाज़ हाथ जोड़ कर मिन्नत व समाजत करता और गिड़ गिड़ा कर कहता है "नहीं नहीं मेरी यह नीयत हरगिज़ नहीं थी कि मैं सर्कार को फरेब दूं मगर क्या करूं अगर मेले ठेले में जा कर दो पैसे न कमाऊँ तो बाल बच्चों को किस तरह जिलाऊं"। नाकेवाले सिपाही ने कहा "अब तुम-को हमारे साथ थाने को चलना होगा वहां से तुम्हारी चा-लान की जावेगी।" रास्ते में कांस्टबल ने उसके जुर्म को इस तरह बढ़ा कर बयान किया कि ऐसे मुजरिमों पर अ-लावे जुरमाने के जो अकसर किया जाता है क़ैद की सज़ा भी मिलती है और आतशबाज़ी तो तु-म्हारी ज़रूरही सर्कार में ज़ब्त कर ली जायगी। ऐसी ऐसी बातों से उसको पूरे तौर से यक़ीन दिलाया गया कि उसका जुर्म बड़ा संगीन है। वह मारे खौफ के घबरा गया, अपने होशोहवास में न रहा, गोया वह क़त्ल के जुर्म में

मालूम हुआ है। पस अगर वह सोलह आने दे कर अपनी जान बचावे तो क्या वह अपनी तईं खुशनसीब ख्याल नहीं करेगा ? जब वह लौट कर अपने बालबच्चों में पहुंचा तो अपनी गुरबत को जुर्म करने का खास बाइस समझ कर अपनी किस्मत को कोसने लगा उस वक्त उस को पुलिस का जुल्म साफ साफ मालूम हुआ।

मैं अपने नाज़रीन को एक दूसरी मजेदार बात सुनाता हूं। अंगरेज़ी ज़बान में एक मशहूर मसला यह है कि "सच्ची बात झूठे किस्से से ज्यादा हैरतअंगेज होती है" जिसकी तमसील बयान ज़ैल में पाई जायगी।

जिस ज़माने में मैं शहर के एक थाने में तायनात था उसवक्त एक अजीब माजरा वाक़ा हुआ। उस ज़िलेमेंएक मुसलमान डिप्टी साहब रहते थे, ज़बान अंगरेज़ी में उन्हों ने बड़ी उमदा तालीम पाई थी वैसाही ज़बान अर्बी और फार्सी में भी उनको अव्वल दर्जे की ल्याक़त थी। अंगरेज़ों की सोहबत उन्हें अज़हद मर्गूब खातिर थी, हर साल वे उस तारीख को बड़ी खुशी मनाते थे जिस तारीख को उनकी तकुर्री वहदः डिप्टी कलेक्टरी पर हुई थी वे अपने तमाम दोस्त अहबाबों, शिनासाइओं और मुलाकातिओं को यूरोपियन और हिन्दुस्तानी दोनों अकवाम को दावत देते थे और अन्दर बाहर मकान के रोशनी भी खूब कराते, तरह तरह की

आतशबाजियां मेहमानों के दिल को खुश करने के लिये छो-ड़वाते थे । इस ज्याफत में सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब हमेशह बुलाये जाते थे,इस वजह से दो हेड और बारह कांष्टेब्लान की तायनाती सड़क सर्कारी और डिप्टी साहब के हाते में अमन रखनेकी गर्ज़ से की जाती थी। एकसाल पास के ज़िले के इशटण्टसाहब (असिस्टण्ट मजिष्ट्रेटसाहब) कलेक्टरसाहब के यहां इस जलसे के पेश्तर ही से मेहमान थे इस वजह से उनके हमराह जलसे में आये । खाने के मेज़ के एक तरफ साहब लोग और दूसरी तरफ हिन्दुस्तानी कतार से बैठे जिस तरफ हिन्दुस्तानी मेहमान बैठे थे उसी तरफ डिप्टी साहब का भाञ्जा भी ठीकअसिस्टेण्ट साहब के मोकाबिल में बैठा था यह नौजवान आदमी उसी जिले में १५) माहवारी पर मोहर्रिर का काम करता था । असिष्टेण्ट मजिष्ट्रेट साहब को यह ख्याल न था कि वे ऐसे जल्से में शरीक हैं कि जिसमें हर कौम के मेहमान बुलाये गये हैं उन्होंने मोहर्रिर मजकूर को तुम के हकीर लफ़्ज से पुकार कर पूंछा कि इस तमाशे में तुम क्यों आये हो ? चूंकि डिप्टी साहब करीबही मेज के सिरे पर बैठे थे और उनके बगल ही में दाहिनी तरफ साहब कलेक्टर बैठे थे इसलिये उन्हों ने असिष्टेण्ट साहब की गुफ़्गू सुन ली; उन्होंने साहब कलेक्टर के कान में कुछ कह दिया वे अपनी जगह से उठे और

अपने दोस्त असिस्टण्ट साहब से जाकर कहा कि आप जिस आदमी से ऐसी हिकारत के साथ गुफ़्गू कर रहे हैं यह डिप्टी साहब का हकीकी भाञ्जा है। उस वक़्त डिप्टी साहब के कई नौकर वहां मौजूद थे इत्तिफाक वक़्त से मैं भी डिप्टी साहब के नाम एक खत लेकर पहुँच गया और जिस वक़्त ये बातें हो रही थीं वहीं मौजूद था। अपने नौकरों की जबान तो डिप्टी साहब बन्द कर सकते थे मगर मुझ को वे किस तरह खामोश कर सकते थे इसलिये उन्होंने मुझे दहलीज में जवाब के लिये इन्तिज़ार करने को हुक्म दिया और साथही इस बात की ताकीद की कि जब तक मैं न आऊँ तुम वहां से हर्गिज न हिलना। पाव घण्टे के बाद डिप्टी साहब मेरे पास आये और मुझको अलहद: लेजाकर मेरे दाहिने हाथ में पांच रुपया रख दिया और मुझसे मिन्नत कर के कहा कि अभी जो बातें खाने के मेज पर हुई है इसका जिक्र कहीं न करना नहीं तो मेरी बड़ी सुबकी होगी। डिप्टी साहब के खास कलाम ये थे 'मियां मिठूखां आप इस बात से खूब वाकिफ हैं कि हमलोग रस्म के गुलाम हो रहे हैं खुदानख्वास्त: अगर यह वाहियात बात अवाम को मालूम हो जाय तो मेरे दुश्मनों को मेरी बदनामी करने का अच्छा मौका हाथ लगे। वे इसको ऐसा तूल देवेंगे कि असिस्टण्ट साहब ने डिप्टी साहब के भाञ्जे को

लात से मारा। मासिवाय इसकेइसदुनिया में बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनको आदत मोबालगा करने की होती है याने ज़री सी बात को इस कदर तवालत देते हैं कि जमीन और आसमान एक कर देते हैं खुदा न करै कि यह वाहियात बात बाज़ार में फैल जावै वरन मुझको यहां से बहुत जल्द अपना तबादला करा लेना होगा। मुझको उम्मेद है कि मेरे मुलाजिमान जो उस वक्त वहां मौजूद थे मेरे लिये अपनी ज़बान ज़रूर बन्द रखेंगे और मुझको यकीन कामिल है कि आप भी इस बात का जिक्र किसी फर्दीबशर से न करेंगे।" मैंने डिप्टी साहब को हर तरह से मुतमैयन किया और कहा कि तावेदार की ज़बान से इस बारे में एक लफ्ज भी न निकलेगा मेरे नाज़रीन इस जगह इस अम्र का ज्यादातर लिहाज करेंगे कि काष्टेलान के आगे ऐसे बड़े २ लोग भी मिस्ल डिप्टी साहब के घुटना टेकते हैं।

यक़ीनन् मेरे नाज़रीन इस बात से बखूबी वाकिफ होंगे कि यह लफ्ज तुम सिर्फ रज़ीलों और कमहैसियत के लोगों को कहना वाजिब है शरीफों की शान में यह लफ्ज कहना उनकी तहकीर और तौहीन में दाखिल है शायद असिष्टण्ट मजिष्ट्रेट साहब ने मोहर्रिर मज़कूर को इस इज़्ज़त का मुस्तहक न समझा कि आप कहकर कोई बात पूछते, मगर नहीं वे विलायत से हालही में वारिद हुये थे इस वजह से

हिन्दुस्तानी गुफ़्गू के तौर तरीके से महज़ नावाकिफ थे ऐसी सूरत में उनको खामोशही रहना मुनासिब था अब मैं अपने नाज़रीन को एक दूसरा ढङ्ग रुपया पैदाकरनेका सुनाता हूं। सिटी पुलिस ष्टेशन के मुतअल्लिक जितने हलके होते हैं उनमें से उस हलके में सब से ज्यादा आमदनी होती है जिसमें रण्डियां कसरत से रहती हैं। इन रण्डियों को दो या ज्यादा यार होते हैं मगर मुसम्मात हरसिङ्गार को तो १७ यार थे जैसा कि मजिष्ट्रेट मातहत ने हालही में एक हङ्गामे के मुकद्दमे में साबित किया था। जब कभी किसी रण्डी के मकान में दङ्गा फसाद होता है तो कांष्टेबल हलक: और उसके हमराहियों को अच्छे नज़राने हाथ लगते हैं अगर वे दङ्गा फसाद करनेवालों को उनकी मर्ज़ी के मुताबिक कोतवाली न ले जावें। दूसरा ज़रिया वसूली आमदनी का यह है कि अलस्सबाह जिस वक्त आमदोरफ़्त मर्दुमान की सड़कों और गलियों में बिल्कुल नहीं रहती अगर कोई नौजवान आदमी किसी अमीर के खानदान का किसी रण्डी के मकान से निकलकर अपने मकान की तरफ शिताबी से जाता हुआ नज़र पड़ा तो हमलोग उसपर ऐसे टूट पड़ते हैं जिस तरह बाज़ लावे पर टूट पड़ता है। उस को रोक यों बात बनाकर उसको खौफज़द: बना देते हैं कि "कल रात को इस जगह से करीबही एक बड़ी सङ्गीन

वार्दात हुई है तुम्हारा मकान इस महल्ले में है नहीं तो फिर तुम्हारे यहां आने का क्या काम था तुम्हारे ऊपर मुझ को शुबहा मालूम होता है तुम हमारे साथ थाने को चलो।" वह सोचता है कि अगर ये मुझे थाने में ले जायँगे तो मुझको गैर महल्ले में जाने के लिये माकूल वजह बयान करनी पड़ेगी और अपनी तईं बेगुनाह साबित करने के लिये गवाहों को भी पेश करना होगा इससे बेहतर यह होगा कि इनको दो चार रुपये देकर अपनी जान बचाऊँ वह यह भी समझता है कि अगर मैं इनको यहीं कुछ दे कर राज़ी न कर लूंगा तो थाने में जाने पर मुझको तीन या चार पुलिस के अफसरों को रक़म कसीर देनी पड़ेगी इसलिये थोड़ाही नुकसान उठाकर अपनी जान बचाऊँ। मैं एक नौजवान आदमी के हालात बयान करता हूं जो हर शब को अपने मकान से निकल जाता और एक रण्डी के यहां रात ऐशो इशरत में गुज़रान कर सुबह अपने मकान को वापस आता। उसका बाप बड़ा हैरान रहता कि मेरा लड़का कहां जाता है और क्या करता है जब उससे वजह पूछता तो वह खामोश हो जाता। एक रोज़ वह उसके पीछे पीछे गया और रण्डी के मकान में घुसते हुये उसको पकड़ा उसपर बहुत गुस्से हुआ और धमकाया कि मैं तुझको अपने घर से निकाल दूंगा। उसके लड़के ने अपने वालिद से

माफी मांगी और तोबह कर एक़रार किया कि अब मैं हर्गिज़ ऐसा काम न करूँगा मगर उसका तोबह करना चन्दरोज़ा था उसको अपने वालिद की धमकी का असला परवाह न थी बकौल शायर कि:—

वक्त तकलीफ व मुसीबत के वह हरदम खुदा २ कहता था।
दफा होने पर वह भूलकर भी न कभी नामे खुदा लेता था॥

अब मैं अपने नाज़रीन को यह दिखलाकर इस बयान को खतम करता हूं कि बाज़ वक्त एक कांष्टेबल को अपने दूसरे हमपेश: कांष्टेबल की मेहर्बानी और मदद की ख्वास्त-गारी करनी पड़ती है। पञ्जाब में बाज़फिर्कों में यह द-स्तूर है कि एक औरत दो या ज्यादा-खसम रखती है। जिस जिले में मैं नौकर था वहां थोड़े सिक्ख क़ौम के लोग भी रहते थे इन्हीं लोगों में दो हकीकी भाई थे जो मुहकमे पुलिस में ओहद: कांष्टेबली पर मुकर्रर हुये थे। इन दोनों के दर्म्यान सिर्फ एक जोड़ू थी। कुछ ज़माना गुजरने पर एक भाई की तरक्की ओहद: हेड कांष्टेबली पर कर दी गई मगर दूसरा उसी ओहदे पर कायम रहा उसके भाई ने ख्याल किया कि अब चूंकि मेरी तरक्की हो गई तनख्वाह में भी इज़ाफा हो गया तो फिर मैं इस जायदाद मुश्तरक: को क्यों न अलेहद: कर लूं अब तो मैं अपनी बीबी को बनि-स्बत साबिक के ज्यादा आराम पहुंचा सकता हूं।

पेश्तर इसके कि मैं कोई कार्रवाई अमल में लाऊँ उस की मर्ज़ी दर्याफ़ कर लेनी मुनासिब है आया वह मेरे साथ रहने में रज़ामन्द है या मेरे भाई के साथ। बहरकैफ उसने उससे पूछा कि तुम किसके साथ रहना पसन्द करती हो? उस औरत ने ख्याल किया कि अब ये जमादार हो गये हैं इनकी तनख्वाह भी बढ़ गई है अगर मैं इनके साथ रहूंगी तो मुझको बड़ा आराम मिलेगा रुपया पैसा भी ज्यादा हाथ लगेगा। मगर सब से बढ़ के बात तो यह है कि इन की होकर रहने में मेरी इज्जत महल्ले में बहुत ज्यादा हो जावैगी लोग मुझकोजमादारिन कहकर पुकारेंगे? अलावः इसके बेगम साहबः (जिनको लोग तहसीलदारिनसाहबः भी कहते हैं) और खानम साहबः (थानेदारिन) मेरी खातिर करेंगी और मुझको एक ओहदेदार की बीबी समझ पास बैठावेंगी। जब उस बदनसीब कांष्टेबुल को यह हाल मालूम हुआ तो वह अपनी बदकिस्मती को ख्याल कर आहोज़ारी करने लगा। महल्ले वालों से जाकर कहता फिरता कि मैंने इस बेवफा औरत के साथ बड़ी नेकियां की हैं हमेशः मेह-र्बानी से पेश आता था। कभी ज़बां पर सख्त कलमा नलाता इसका। उसने ज़रा भी न पास किया। मुझको हर तरह हाथ जलोलेखूार किया। महल्ले वालों में कई शख्स उसके दोस्त और खैरख्वाह थे उनलोगों ने उस औरत के पास जा

कर वारहा समझाया पर उसने एक की भी न सुनी साफ़ जवाब दिया कि जो कुछ मुझको करना मञ्जूर था मैं कर गुजरी अब मैं हर्गिज़ अपने इरादे को पलट नहीं सकती। जब उस कांष्टेबु ने देखा कि वह औरत किसी के समझाने से नहीं मानती तब उसने उस्को धमकी दी कि अगर तू मेरा कहना नहीं मानती तो मैं तुझसे समझ लूंगा, तुझे हर्गिज़ ज़िन्दः न छोड़ंगा। उस औरत ने यह सब बातें हेड कांष्टेबु मज़कूर के गोशगुज़ार की उसने फ़ौरन् सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब के यहां एक लम्बी चौड़ी दर्ख़्वास्त भेज दी जिसमें मुशर्रह हालात गुजारिश करके उसने यह इल्तिजा की कि फ़लाँ कांष्टेबु फ़लाँ महल्ले न जावे वरन ख़ून हो जाने का एहतमाल है जिसपर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने रिज़र्व पुलिस के इंस्पेकटर के नाम हुक्म जारी किया कि कांष्टेबु मुतअ़ल्लिका को सख़्त ताकीद करे कि वह हर्गिज फ़लाँ महल्ले में न जावे; दरसूरत अदूलहुक्मी उसके निस्बत हुक्म मुनासिब सादिर किया जावेगा। दो महीने तक इस हुक्म की उसने खूब तामीली की मगर एक रोज़ भङ्ग पीकर नशे में चूर हो उस औरत के मकान पर गया और खूब गालियां सुनाई पड़ोस के मकान में हेड कांष्टेबु का एक दोस्त रहता था इत्तिफ़ाक वक्त से वह उस वक्त अपने मकान में मौजूद था, शोरोगुल सुनकर बाहर निकल आया और कांष्टेबु म-

ज़कूर को फसाद बर्पा करने पर आमादा देखकर दौड़ा हुआ हैड कांश्टेबल के पास गया और उसको कुल कैफियत से आगाह किया। हैडकांश्टेबलमज़कूर ने इन्स्पेक्टर साहब को रिपोर्ट कर दी कि फलाँ कांश्टेबल जिसके निस्बत साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट ने हुक्म सादिर फर्माया था कि वह फलाँ महल्ले में हर्गिज न जावे बर्खिलाफ इसके वह साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट के हुक्म की नाफर्मानी करके मेरे मकान पर दङ्गा फसाद करने की नियत से चढ़ आया और गाली गुफ़्ता किया।इस रिपोर्ट पर इन्स्पेक्टर साहब ने मुझको इस अम्र की तहकीकात करने के लिये तायनात किया कि आया कांश्टेबल मजकूर ने हुक्म अदूली की या नहीं।मैं फौरन् जाय मौके पर पहुंचा और उसको वहां मौजूद पाया मुझको देखतेही वह समझ गया और चुपके से मेरे हाथ में दो रुपये रख वहां से चल दिया क्योंकि वह जानता था कि अगर मैं उसकी मौजूदगी की रिपोर्ट कर दूंगा तो उसके हक में इसका नतीजा बहुतही खराब होगा।मेरा हाथ तो उसने गर्म करही दिया था मैं सीधा इन्स्पेक्टरसाहब के पास वापस गया और रपोर्ट किया कि मुझको कांस्टेबल मज़कूर उस महल्ले में नहीं मिला और न उस महल्लेके आस पासही मैंने उसको घूमता फिरता पाया। इन्स्पेक्टर साहब ने मेरे रपोर्ट को काबिल ऐतबार न पाया जैसा कि उनकी मा-

बाद की कार्रवाई से साफ़ ज़ाहिर होता है। चन्द रोज़ बाद इन्स्पेक्टर जेनरल साहब का हुक्म निसबत तबादल: ६ कांस्टबुल ज़िले मुशकिलपुर के सादिर हुआ जिनको ज़िले खारिज करने को ज़रूरत उनके फँसादों को वजह से मुतसौव्वर हुई थी लेकिन बजाय उनके मेरे ज़िले के ६ कांस्टबुलों को तबदील करने की हिदायत की गई। इन्स्पेक्टर साहब ने उन ६ कांस्टबुलों में से एक उसी शेख कांस्टबुल को बग़र्ज़ रफ़ा फसाद आइन्द: तजवीज़ किया और उन छओं को हुक्म दिया कि तुम लोग फ़ौरन मुशकिलपुर को रवाना हो। इस बयान को मैं अक़्वाम गोर्खा और सिक्ख सिपाहियों में जो रसमियात शादी जारी है उनके मुख़्तसर हालात सुनाकर खतम करता हूं। इन लोगों में शादी थोड़े ही खर्च में हो जाती है और वह भी आननफानन। अपने जात वालों को दावत तो देते ही हैं इस से ज़्यादा और कोई खर्च ऐसा भारी नहीं है जिसमें उनको रक़म कसीर के खर्च करने की ज़रूरत हो। एक ब्राह्मण को पहिले से ठहरा लेते हैं उसी के हाथ से दुलह दुलहिन के ऊपर एक सफेद चद्दर छोड़वा देते हैं। गोया शादी के इकारनामे पर मोहर कर दी गई और मेहमानों की आर्जू पूरी करने के लिये वे दोनों एक कर लिये जाते हैं इस रस्म के अदा हो जाने के बाद दोस्त अहबाब अपने अपने मकानों को चले जाते हैं। जिस वक्त ये नये

ब्याहे हुये आशिक वमाशूक अपनी तई बिस्तर पर एकही तकिये पर पाते हैं उस वक्त उनको यक़ीन होता है कि हम दोनों अब दो नहीं हैं बल्कि एक जान दो कालिब हैं। थोड़े दिनों तक मोहब्बत का जोश रहता है रफ़: २ उसमें कमी होने लगती है यहां तक कि झगड़े की नौबत आ जाती है रोज़मर्र: के झगड़े और तकरार से दोनों का जी एक दूसरे से ऐसा बुरा हो जाता है कि गोया दोनों में बड़ी भारी दुश्मनी होगई है. जब यह नौबत आन पहुंचती है तब मर्द अपने ज़ात भाइयों को बुला कर पञ्चायत कराता है। दोनों फरीक अपने अपने दावे पंच के साम्हने पेश करते हैं वे उन पर तजबीज़ करते हैं अगर दोनों में ऐसी नाइत्तिफाक़ी पाई जाती है कि बग़ैर तिलाक दिये दफा फसाद की उम्मेद नहीं पाई जाती, उस वक्त सरपंच बड़ी संजीदगी से तिलाक का फैसला दोनों फरीक़ को सुनाता है बादहू उस मर्द की तरफ से दावत दी जाती है। सर पंच शिकमपुर हो आसूदगी हासिल कर अपने मनमें समझता है कि मैंने इस मोक़द्दमेमें वाजिब इन्साफ किया। एक हफ़्ते के बाद औरत नया घर कर लेती है और पुरानी बातें तिलाक की भूल जाती है, आराम से दुसरे कांष्टब्ल के ज़ेरहिफाज़त रहने लगती है॥

बीसवाँ पर्व्व ।

गुलामी ।

सर्कार बहादुर का यह ख्याल है कि गुलामी एक कलम दबा दी गई । यह ख्याल महज़ग़लत है अगर मर्दुम-शुमारी गुज़श्तः की जांच बखूबी की जाय तो उम्मेद क़वी है कि हुक्कामों की आंखें फौरन् खुल जावें। आप किसी महल्ले या मौज़े को चुन लीजिये जिसमें मुसलमानों की ज़ियादा आबादीहै वादहू देखिये कि उसमें कितने मुतअल्लिक़ान एक खानदान के हैं और उसी खानदान के खिदमत गुज़ारी के लिये कितने नौकरान मुशाहरहदार है और कितने बिला-मुशाहरह के हैं जो एक कौड़ी तनख्वाह नहीं पाते हैं, जिनसे सिर्फ खाने कपड़ेपर बड़ी मशक़्क़त के साथ काम लियाजाता है। उस वक्त आपको मालूम होगा कि ऐसे मुलाज़मान की शुमार जो बिला तनख्वाह खिदमत करते हैं किस क़दर ज़ियादा है अब आपको मेरे खिलाफ राय क़ायम करने की वजह माक़ूल से आगाही हुई होगी । बहरकैफ मैं इस बात को और भी खुलासः कर के बयान करता हूं । मैं एक मुसलमान के खानदान की मर्दुमशुमारी ज़ैल में बयान करता हूं.—

१ बुज़ुर्ग खानदान

४ औरतें (मां दादी चाची और बीबी)

२ लड़के

२ लड़कियां

११ नौकरान। जिनमें १ मर्द १० औरतें हैं)

जिस वक्त सर्दार खानदान से सवाल किया गया कि इतने मुलाज़मान को आप क्या माहवारी तनख्वाह देते हैं तो उसने यह जवाब दिया कि इनकी तनख्वाह कुछ नहीं है ये सिर्फ खाना और कपड़ा पाते हैं। उसकी सालाना आमदनी ५०० या ६००, से जियादा न थी ऐसी सूरत में वह क्योंकर इतने मुलाज़मान तनख्वाहदार रखसकता है लेकिन ये मुसम्मातान खुशी से गुलामी करती हैं अगर आप इनको कुछ माहवारी तनख्वाह देकर अपनी खिदमतगुज़ारी के लिये रक्खा चाहें तौभी ये अपने क़दीम आक़ा की खिदमत से अलेहदा होना हर्गिज़ मंजूर न करेंगी। इनमें बाज़ बाज़ खूबसूरत होती हैं जो चटपट मालिक मकानकी रखैल बनबैठती हैं। अगर मालिक मकान बवजह ज़ईफी इस क़ाबिल नहीं होता तो उसके लड़के या भतीजे उसको रख लेते हैं मगर वे जो बदनसीबी से शकील नहीं होती हैं वे अपने हमपेश: आज़ाद (याने तनख्वाहदार) नौकरों के साथ अपना अक़्द करलेती है ख्वाह लौंड़ियों के लड़कों के साथ रिश्त:तअल्लुक मिला लेती हैं। बाज़ मुजर्रद रहना पसन्द करती हैं मगर दरअस्ल उस मौज़े या महल्ले में

वे कई यार किये रहती हैं। चूंकि उनके आकाओं को औरतों की पाकदामनी के बारे में ऊंचे ख्यालात नहीं होते जिसका नतीजा यह होता है कि ज़िनाकारी हद से जियादा होती है। ये लोग समझते हैं कि औरतें मर्दों के बनिसबत ताक़त जिसमानी और रुहानी दोनों कम रखती है, याने मर्द उनसे अफ़ज़ल हैं। इस बातको वे खुद तसलीम करती है इसी ख्याल से मर्द उन पर मनमाना हकूमत करते हैं अगर ज़रूरी समझते हैं तो लात, घूंसे थप्पड़ों, कलछी के दस्तों और जूतों से उनकी खबर लेकर उनकी बेशर्मी और ज़िद की दुरुस्तगी कर लिया करते हैं। गो उनके ख्यालात अपनी खास बीबियों या दीगर मस्तुरातों के बारे में ऐसे न हों मगर लौंड़ियों के बारे में उनके ऐसेही ख्यालात है जो ऊपर मज़कूर किये गये। सरकार बहादुरने राजपूतों में दुख़्तरकुशी को बन्द करने के लिये बड़े सख़्त क़वानीन जारी किये हैं मगर अगर मुसलमानों के हरम की दीवालों को ज़बान होती तो वे ऐसी खौफनाक बातें बयान करतीं कि जिनको सुन कर साहबान अंगरेज़ को बड़ीही हैरत होती। जब कोई मुसलमान शरीफ खानदान का किसी लौंड़ी से फँस जाता है और उन दोनों से कोई लड़की पैदा होती है तो क्या यह मुमकिन है कि उस लड़की का बाप उसको किसी तरह

ज़िन्दः रहने देगा ? वह इस बात को बख़ूबी जानता है कि उसके बराबर की हैसियत और इज़्ज़तवालों में से कोई शख़्स अपने लड़के को उस लड़की से शादी करने पर राज़ी न होगा और वह ग़रूर की वजह से अपने से नीचे दर्जेवाले को उससे शादी करना कब मंज़ूर करेगा फ़र्ज़ कीजिये कि उसने इसी पसोपेश में उस लड़की की शादी न की और वह जवान हो गई तो उसके दोस्त और रिश्तेदारान उससे इशारतन् कहेंगे कि अगर आप इसकी शादी नहीं करेंगे तो आपकी इज़्ज़त में धब्बा लगेगा और आपकी आबरू न रहेगी। इन क़बाहतों को ख्याल कर वह मुसलमान उस लड़की की जान लेने पर आमादा हो जाता है मगर उसकी ग़रीब मां इस बात को बिलकुल नहीं जानती बावजूदे कि वह उसकी परवरिश और निगहबानी में हरदम मुस्तैद रहती है ताहम् उस बिचारी लड़की को वह किसी तरह बचा नहीं सकती।

राज़ ऐसे खून का हुक्कामों से हमेशः मुख़फ़ी रहैगा लेकिन उस खौफ़नाक मुन्तक़ीम से वह हर्गिज़ पोशीदः नहीं रह सकता। वे चाहे कैसीही तारीकी और गोशे में बदकारियां करें मगर उसकी निगाह वहां भी पहुंच जायगी और उन्हें ढूंढ़ निकालेगी। उस मुनसिफ़े लासानी का फ़तवा उन बदकारों पर ज़रूरही होगा। वहउनको क़ब्रमें

भी चैन न लेने देगा। जिस तरह हवा के चलने से दरख़्तों की पत्तियों को जुम्बिश होती है उसी तरह इन बदकारों के पास बैठनेवाले सलाहकारान इनको अंगुलियों पर नचाते हैं, जो चाहते हैं वही कराते हैं क्योंकि ये मग़रूर मुसलमानान उनके काबू में ऐसे ही रहे हैं जैसे ऊंट की नकेल। बहुत सी लौंडियों की बिचारी लड़कियां इस वक़्त क़ब्र में हैं जिनके खून करनेवालों का पता लगाना पुलिस की मशहूर चालाकी से भी गैरमुमकिन है, अफ़शायराज़ की कोई भी उम्मेद नहीं। इन खूनों के राज़ से वे बदकार ही वाकिफ़ हैं दुनियां उनसे महज़ नावाकिफ़ है। इनको वे अपने गोशये दिल में मोक़फ़्फ़ल रखते हैं मगर ग़ज़बे इलाही से वे कुछ भी नहीं डरते हं। चूंकि हर क़ायदे के लिये मुस्तसना का होना जरूर है इसलिये मैं तमाम अहल् इसलाम को इन बदकारों के ज़ुमरे में शामिल नहीं कर सकता हूं। मेरा कहना यह है कि मुसलमानों में भी चन्द ऐसे बदकार हैं जो राजपूतों की तरह जुर्म दुख़्तरकुशी के मुर्तकिब होते हैं। मेरी अक़्ल नाकिस में यह आता है कि चाहे वे मुसलमान हों या राजपूत दोनों इर्तकाब जुर्म में बराबर हैं। दोनों ग़रूर से अन्धे हो रहे हैं। एक कहता है कि अगर यह मेरी बेवकूफ़ी की निशानी जो हमल हराम से जनी है ज़िन्दः रहैगी तो बेशक उसकी शादी मुझको

करनी पड़ेगी। लेकिन मैं अपने बराबरवाले खानदान में इसकी शादी क्योंकर कर सकता हूं कोई मंजूरही क्यों करेगा ? तो मुझको मजबूर होकर अपने से नीचे दर्जेवाले खानदान में इसकी निसबत करनी पड़ेगी जो मेरे ताज़ीस्त के लिये ज़िल्लत और शरमिन्दगी का बाइस होगा।

मुझ को हमनशीनों और दर्जः मसावी के लोगों के सामने सरनगूं होना पड़ेगा इससे बेहतर है कि मैं इस बखेड़े को अभी से तैं कर दूं, देर करने में मेरी इज्जत और हुर्मत में जरूर धब्बा लग जावेगा। दीगर कौम राजपूत का इसबारे में यह मकूला है कि अगर मैं अपनी दुख़्तरको जिन्दा रहने दूंगा तो जब वह स्यानी होगी तो ज़रूर उसको शादी मुझको करनी पड़ेगी। अगर मैं उसकी शादी स्यानी होने पर न करूंगा तो बिरादरीवाले मुझको बुरा कहेंगे और शरमिन्दः करेंगे। अगरमैं उसकी शादी कर दूंगा तो मुझको ससुर ज़रूर बननापड़ेगा यह मुझसे हर्गिज़ बर्दाश्त न किया जायगा इससे मुनासिब है कि मैं इस लड़की को अभी खतम कर दूं। बिचारे वे ज़बान और बेगुनाह बच्चों का खून करना बड़ी भारी बेरहमी है इससे बढ़कर दुनिया में कोई जुर्म नहीं है मगर चन्द अशखास बेरहमी करने में इससे भी सबक़त ले जाते हैं। जिस वक़्त लौंड़ी का हमल हराम अनकरीब चार महीने का होता है तो वह बदकार मुसल-

मान जिसका हमल हराम होता है इस बात की जांच कराता है कि उस लौंड़ी के पेट में लड़का है या लड़की। अगर जाँच करनेवाले ने लड़की बतलाया तो वह इसकात हमल करा देता है। इस पोशीदः राज़ के दरियाफ़ करने का एक तरीका यह है जो ज़ैलमें बयान किया जाता है।

ऐतवार या मंगल की सुबह के वक्त औरत हामलह को नादानस्तगी में चन्द मन्त्र वगैरह पढ़े जाते हैं बादहू उसको लोग ग़ौर से देखा करते हैं अगर उसने अपने सिर पर हाथ रक्खा ख़्वाह अपने ज़ुल्फों को सँवारा या अपनी नाक ख़्वाह कान को छू लिया तो जान लीजिये कि उस औरत के हमल से लड़की पैदाहोगी। अगर बरअक्स इसके उसने अपने रुखसारे, ऊपर के लब या ठुड्डी को छू लिया तो समझ लीजिये कि उसके हमल से लड़का पैदा होगा। क्योंकि इन्हीं जगहों में गलमुच्छे, मूछें और डाढ़ी होती हैं ये मर्द के अलामात हैं जिनको हमलोग "ज़ीनते मर्दाँ" कहते हैं। दूसरे तरीके का नाम इस्तिखारः है यह इस तरह किया जाता है कि सलाहकार १०१ दाने की एक माला लाता है और मन्त्र पढ़ कर यह कहता है कि "ऐ! आलमुलग़ैब में इसराज़ को दरियाफ़्त करना चाहता हूं जो इनसान की नज़र और अक्ल से बिलकुल पोशीदः है तू मुझ को कलामरब्बानी के ज़रिये से हिदायत कर कि

इस औरत हामल: के हमल से लड़का पैदा होगा या लड़की ?" यह दुआ पढ़कर सलाहकार माले के किसी दाने को छू देता है और उस दाने को अव्वल दाने से शुमार करता है अगर दाने शुमार में ताक हुये तो लड़का पैदा होगा अगर जुफ़्त हुये तो लड़की—

इस्कात हमल का करा देना कोई आसान बात नहीं है क्योंकि यह काम बिला किसी दाई के नहीं हो सकता है उसको इस काम के अञ्जामदेही के लिये ज़रूर रज़ामन्द करना होगा मगर उसको रज़ामन्द करना अम्र दुशवार है। यह पेश: बच्चा जनाने का खास कर चमारनियां करती हैं लेकिन वे किसी बच्चे की जान मारने के लिये हरगिज़ रज़ामन्द न होंगी। अगर उनमें से कोई ज़ियादा लालच देने से राज़ी हो गई तो मतलब बरारी हुई वरन अञ्जाम होना इस कारे मोहाल का गैरमुमकिन है मगर वह जल्दी राज़ी नहीं हो जाती उसके साम्हने ढेर के ढेर रुपये रख दिये जाते हैं वह उनको देख २ लालच में पड़ती जाती है रफ़: २ तमअ़ उसकी नेकनीयती पर ग़ालिब आती है और वह ऐसे बुरे काम के करने पर आमाद: हो जाती है जिस से उस बिचारी औरत हामल: को अज़हद अज़ियत पहुंचाती है यहां तक कि जान जाने का खतरा हो जाता है। ऐसे मोकद्दमात में सेवाय थानेदार

के और किसी अफसर मातहत को तहकीकात करने का मजाज़ नहीं है वे खुद इन मोकद्दमात की रिपोर्ट ष्टेशन के रोज़नामचे में मुन्दर्ज करते हैं। इस किस्म के मोकद्दमात में दस्तअन्दाज़ी करना सहल बात है। यक़ीनन मेरे नाज़रीनों में कोई ऐसा सादा मिज़ाज न होगा जो यह क़यास करेगा कि थानेदारों में शाज़्नादिरही कोई ऐसा होगा जो यह कसीरुल याफ़ के मौके को हाथ से जाने देगा। मैं इसी किस्म के मोकद्दमे में एक दफः थानेदार की हमराही में तायनात किया गया था। उस मोकद्दमे में थानेदार ने शुरू कारवाई यह की कि रोज़्नामचे में इस मज़्मून की रिपोर्ट मुन्दर्ज की कि "फलां गोइन्दे ने मुझको खुफिय: तौर पर इत्तला दी है कि फलां मौजे में फलां मुसम्मात को हमल हराम से लड़का पैदा हुआ उसने उसकी पैदाइश मुखफी रखने की ग़र्ज से उस लड़के को मार कर उसकी लाश छिपा दी है" जब थानेदार और मैं उस मौज़े में दाखिल हुआ और उन्होंने तहकीकात करनी शुरू की उस वक्त दरियाफ़ करने से ज़ाहिर हुआ कि वहां एक औरत थी जो किसी मर्द से मोहब्बत नाजायज़ रखती थी। थानेदार ने उस मर्द को तलब करके खूब डांट डपट बतलाई जिस पर उसने उनका हाथ खूब गर्म किया बादहू थानेदार ने मज़्मून जैल की रिपोर्ट रोज़्नामचे खास में मुन्दर्ज करके इरसाल की—

"फ़िदवी मौज़ः हाज़ा में १० बजे दिन को पहुंचा और उसी वक़्त उस जगह की तलाश करने की कोशिश की जहां बच्चे की लाश छिपा दी गई थी चन्द मोअज़्ज़िज़ और बेग़र्ज़ आदमियों से दरियाफ़्त करने से ज़ाहिर हुआ (यहां दस बारह आदमियों के नाम लिख दिये गये जो मुजरिम के दोस्तों के ज़ुमरे में थे और जिनसे यह उम्मेदक़वी थी कि काश उनको साहब मजिस्ट्रेट तलब फ़र्मावें तो वे मोकद्दमे को किसी तरह ख़राब न करेंगे) कि मुसम्मात क़बूतरी को हमल था मगर इधर दो ढाई महीने से उसको बड़े ज़ोर से बोख़ार आने लगा था इसी बीमारी की हालत में इत्तफ़ाक़िय उसका हमल ज़ायः हो गया। जिस वक़्त ताबेदार को हालात वाक़ई दरियाफ़्त हुये उसी वक़्त उसने तहक़ीक़ात खतम कर दी क्योंकि ऐसे मोकद्दमात में पुलिस को दस्तअन्दाज़ी करने का कोई अख़्तियार हासिल नहीं है। मोकद्दमःहाज़ा में मुसम्मात क़बूतरी शेख़ शोरज़ोर की बीबी मनकूहः है इसलिये उस पर बच्चे की पैदाइश का हाल पोशीदः करने का इश्तिबाह करना महज़ फ़जूल और लाहासिल है। गोइन्दे ने चंद शख़्सों को इस बारः में गुफ़्तगू करते हुये सुना था इसलिये उसने अपनी तईं ख़ैरख़्वाह सरकार ख़्याल कर इस अम्र की इत्तिला फ़िदवी से करनी अपना फ़र्ज़ मनसबी समझी। हज़ूर ब-

खूबी वाकिफ है कि इसी गोइन्दे ने बहुत मौकों पर सरकार की खिदमात ज़रूरी बजालाई है।" (इस जगह थानेदार ने छः मोकद्दमों के हालात तहरीर किये जिनमें गोइन्दः मज़कूर ने अहलकारान पुलिस को मदद दी थी)

रिपोर्ट मज़कूरःबाला से साफ ज़ाहिर है कि थानेदार ने सिर्फ अपनाही बचाव नहीं किया (क्योंकि उन्होंने एक ऐसे मोकद्दमे में दस्तअन्दाजी की थी जिसमें उनको दस्तअन्दाजी करने का मजाज़ न था) बल्कि उस गोइंदे को भी बड़ी होशियारी से बचाया। हाकिम मुतलक़ (साहब मजिस्ट्रेट) ने मोकदमः मज़कूर में ज़ियादा इस्तेफसार करना ज़रूरी मुतसौवर न करके काग़ज़ात दाखिल दफतर किये जाने के लिये हुक्म सादिर फर्माया। मुझ को एक मोकद्दमे का हाल याद आता है जिसमें एक वकील साहब अपनी नौजवान लौंड़ी पर फरेफतः हो अपनी बीबी मनकूहः की मोहब्बत तर्क कर उसी कनीज़ की मोहब्बत का दम भरते थे। उनकी बीबी उन्हीं के खिदमतगार से मोहब्बत नाजायज़ रखती थी। मियां और बीबी के दरमियान हमेशः नाइत्तफाकी रहती थी जिसका ज़िक्र महल्ले वालों में अकसर हुआ करता था। एक रोज़ वे ज्योंही ख्वाब से बेदार हुये त्योंही यह खबर बहशत असर सुनी कि वकील साहब को किसी ने क़त्ल कर दिया। इस ग़म आ-

लूट: खबर के सुनतेही लोगों को मकतूल की बीबी के यार पर भारी शुबहा हुआ मगर वकील के दोस्तों ने ख्याल किया कि अगर यह बात ज़ाहिर होगी कि वकील साहब की बीबी ने अपने यार से उनका गला कटवा दिया तो उनके खानदान पर बदनामी और रुसवाई का धब्बा लग जायगा इसलिये उन्होंने पुलिस के अहलकारान और अदालत के हिन्दुस्तानी अमल:गान के हाथ खूब गर्म किये यहां तक कि मोकदमा दाखिल दफतर कराही दिया । मिस्ल मोकदम: में यह अखीर हुक्म तहरीर किया गया—

"चूं कि मोकदम: हाज़ा में तहक़ीक़ात वाजिब तौर से की गई मगर मुजरिमों का मुतलक पता न लगा लिहाज़ा पुलिस को हिदायत की जाय कि मुजरिमों के पता लगाने में पूरी तौर से कोशिश करें और तावक्ते कि असल मुजरिमों का पता न लगे काग़ज़ात मोकदम: हाज़ा दाखिल दफतर किये जावें ।"

मैंने जो इन बुराइयों की तस्वीर खींच दी है उसको बग़ैर मोबालिग़: सहीह समझना चाहिये अलाव: इसके इनके निसबत लोगों का नाचोज़ या हकीर ख्याल करना और भी खराबी की बात है जिसके लिये मैं अपने मुलकी भाइयों पर अफसोस करता हूं बाइस इसका जहां तक मैं ख्याल करता हूं यही मालूम होता हैं कि यहां वे रुकावटें

नहीं हैं जो यूरोप के मुल्कों में है। ये रुकावटें इनसानी रग़बत को नारास्ती की तरफ़ ज़्यादा बढ़ने नहीं देतीं व न उसको हद्द मौकूफ़: से तजाउज़ही करने देतीं हैं। इनसान की ख़्वाहिश गुनाह करने की भी इन्हीं रुकावटों से रोक दी जाती है। मैं इस अम्र को तसलीम करता हूं कि हमारी जमाअत की यह ख़राब हालत सिर्फ़ बवजह उसके दस्तूरात के ज़हूर में आती है। जिस मुल्क में बग़ावत की बुनियाद पड़ने में आसानी है और कानूनी बर्ताव सिर्फ़ शहादतों के मुताबिक वाजिब तौर से किया जाता है वहां लोग अनवायअक़साम के बरबादी के औज़ार इस्त्यामाल करने लगते हैं। यहां की ऐसी ख़राब हालत देख मुझको लाइन्तेहा शर्मिन्दगी हासिल होती है बावजूदे कि अकसर अवकात ये कानून के खिलाफ चलनेवाले ज़ालिमों को ज़ुल्म करने से अंगरेज़ बहादुर के अदलोइन्साफ के मज़बूत बाज़ू बाज़ रखते हैं। इन सूरतों में अगर ऐसी सर ज़मीन से तुख़्महाय ज़ुल्म और बेइन्साफी दूर न की जा सकें तो इसमें कोई तअज्जुब की बात नहीं है। यहां फिरंगी मजिस्ट्रेट साहब तनहा इन्साफ और हक़रसी की कोशिश करते हैं। ऐसी हालत में मुमकिन है कि झूठी शहादत उस अदल की तलवार से बेगुनाहों को ज़रर पहुंचावे। जिस मुल्क में दरोग़हल्फ़ी का करना और झूठ

का बोलना मामूली गुफ़्तगू में दाखिल किया जावे और उनके ज़ाहिर हो जाने पर करनेवालों को कुछ भी शर्मिन्दगी न मालूम हो ख़्वाह सुननेवालों को ज़रा भी तअज्जुब न हो तो ऐसे मुल्क की क्या हालत होगी आप खुद समझ लेवें।

कांसटेब्लों की भर्ती, तरक़्क़ी और तख़फ़ीफ़।

मेरा एक हम-वतन मेरे पास मेरे मौजे के ज़िमींदार की सिफ़ारिशी चिट्ठी लेकर मोहकमे पुलिस में नौकरी करने की ग़र्ज़ से आया मैं उसको सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब की ख़िदमत में ले जाकर पेश करने और उसका नाम फ़िहरिस्त उम्मेदवारान में मुन्दर्ज कराने से इन्कार न कर सका। सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने उसकी दरख़्वास्त मञ्जूर फ़र्माई लेकिन ३ महीने गुज़र गये उसको एवज़ी तक न मिली तब मैं बड़ा घबराया क्योंकि उसके खाने पीने का सर्फ़ा मेरेही सिर था। मैंने ख़्याल किया कि अगर मैं इसको अपने मौजे को वापस भेजता हूं तो लोग मेरे ज़ईफ़ वालिद को तानाज़नी करके सतावेंगे और कहेंगे कि तुम्हारे लड़के ने बावजूद रसाई बिसियार इस बिचारे उमैदवार के हक़ में कुछ न किया, महरूम होकर वह बदनसीब मकान को वापस आया उसने ३ महीने तक वहीं अपनी

मिट्टी खराब को, तौभी आपके साहबज़ादे से कुछ करते न बन पड़ा। अगर मैं उसको न खिलाता और अपने डेरे से निकाल देता तो मेरी बड़ी भारी बदनामी होती, मैं तमाम उम्र ताने:ज़नी का निशाना बनता। मैं इसी फ़िक्र में ग़लतां व पेचां था कि इसी दरमियान में मेरे एक हमपेशह कांसटेबिल ने मुझ को सलाह दी कि तुम इस नौजवान देहाती आदमी को पुलिस सरिश्तेदार साहब के यहां क्यों नहीं ले जाते। एक महीने की तनख़्वाह उनके क़दमों पर रक्खो। मेरे होशियार दोस्त ने ताकीद करके कहा मगर ख्याल रक्खो कि खाली हाथ हरगिज़ न जाना वरन सिर्फ़ ज़बानी यक़रार से कारबरारी न होगी अगर ऐसाही करने का तुम्हारा इरादा हो तो बेहतर है कि इस ख्याल से दरगुज़र करो और अपने तईं, सरिश्तेदार साहब के मकान तक पाँव घसीटने की तकलीफ़ से महफ़ूज़ रक्खो खाली हाथ जाना महज़ फ़ज़ूल है। मैंने अपने दिल में यह दलील पेश की कि अगर मैं इस वक़्त पांच रुपये से बाज़ नहीं आता तो मालूम नहीं कि कब तक मुझको इस आदमी को खिलाना पड़े। इसके खिलाने में माहवारी दो रुपये से कम मेरा सर्फ़ा नहीं पड़ता इस वक़्त ५) रुपये देदेने से इसको नौकरी मिल जावेगी तो मुझको इसके खिलाने की जेरबारी से नजात मिल जावेगी।

इस तरकीब से अखीर वक्त में मुझको किफायत होगी। मैंने इन बातों को उस नातजरब:कार नौजवान आदमी से बयान किया उसने मेरी तदबीर को खुशी से मंजूर किया। मैंने उससे यह भी कहा कि जब कि तुम इस मोहकमे में भरती कर लिये जावगे तो अव्वलन तुम काम सीखने के लिये रिज़र्व पुलिस में रक्खे जावगे तब तुम मेरे थाने में खाना खाने के लिये नहीं आ सकोगे इस लिये मैं तुम्हारे खाने का इन्तज़ाम इस तरह पर कर दूंगा कि मेरा एक बनिया दोस्त है मैं उससे तुमको ५) रुपये बतौर कर्ज़ दस्त-गर्दां के दिला दूंगा तुम उसको दो किस्त करके दे देना। मैंने उसी दिन ५) रुपये एक बनिये के यहां जमा कर दिया और उससे कह दिया कि तुम रुपया देते वक्त मेरे हमवतन भाई से यह यकरार जरूर करा लेना कि वह तुम्हारा रुपया दो किस्त में अदा व बेबाक कर देवे इसमें हरगिज़ फर्क न पड़े। अगर मैं अपने नाम से उसको कर्ज़ देता तो उसकी वसूली की कोई उम्मेद न थी इसलिये मैंने यह ढंग किया। बनिये ने रुपया दे दिया और मैं और मेरा भाई रात को सिरिश्तेदार साहब के मकान पर जा पहुंचे पहिले तो सरिश्तेदार साहब ने रुपया लेने में हील: हवाल: किया मगर जब मैंने उनके शीरखोरह फर्ज़न्द के हाथ रुपये रख दिये तो वे खामोश हो गये। इत्तिफाक वक्त से वे अपने

लड़के को उस वक्त अपनी गोद में लेकर बैठे थे । रुपया देते वक्त मैंने कहा कि "मेरे छोटे आक़ा इन रुपयों को शीरीनी मंगाकर खाना मगर अफसोस इस बात का है कि ये रुपये अशर्फियां न हुईं ।" एक हफ्ते के अन्दरही मेरे भाई ने पुलिस की वर्दी डांटी । क्या यह कहना गैरमुनासिब है कि बावजूदे कि इस वक्त रिश्वत का एक क़लम बन्द कराने के लिये कोई कोशिश कारगर नहीं हो सक्ती है लेकिन याद रहे कि 'आहे ग़रीबां क़हर खोदा' उन बिचारे मुसीबतज़दों की आहें जिनसे रिश्वत ली जाती है एक न एक रोज़ क़यामत बरपा करेंगी और कभी ऐसा खुशी का वक्त आवैगा कि यह कमबख्त रिश्वतसतानी हमेशः के लिये नेस्तोनाबूद हो जायगी। बहरकैफ मुझको यह ख्याल कर बड़ा अफसोस होता है कि इस बला के दफा होने में अरसा मज़ीद की उम्मेद की जाती है, आनन् फानन् इसका दूर होना गैरमुमकिन है। इस बात को ख्याल करके हिन्दुस्तान के खैरअन्देशान की हिम्मत पस्त होती जाती है। बावजूदे कि साहबान अंगरेज़ ज़मानः हाल इस बात के लिये रंजीदः हैं कि उनको वह खुशी का वक्त देखना नसीब न होगा जब कि रिश्वतखोरी हिन्दुस्तान से एक क़लम निकाल दी जावैगी ताहम उनको खुशी से अपने जानशीनों को वसियत कर जाना चाहिये कि उस खुशी

का हज़ वेही उठावें और उनको लाज़िम है कि अपने दिले मग़मूम को तसल्ली देवें कि गो वे इस बला को कामिल तौर से दफा न कर सके ताहम उन्होंने उसको बढ़ने से बहुत रोका है और उसको जड़ से नेस्तोनाबूद क-रने की पेशबन्दी भी कर दी है।

तरक्की के बारे में सरिश्तेदार साहब का कल्मे खैर कह देना बाज़ औकात बड़ाही मोअस्सर होता है मैं खास अपनी निसबत कहता हूं कि मैंने अपनी तरक्की वहदे ज-मादारी पर कभी न चाही अगर मैं चाहता तो जमादार साहब कहलाते मुझको अरसा मज़ीद हुआ होता। बहुत से लोग अपनी हालत मौजूदः में रहनाही ग़नीमत सम-झते हैं, थानों मेंही रहना पसन्द करते हैं बनिसबत इसके कि वहदे जमादारी पर बातरक्की जावें जिसकी तनख्वाह माहवार ८।।) या ९) है क्योंकि वे जानते हैं कि जमादारी मिलने पर उनको रिज़र्व पुलिस में काम देना होगा ख्वाह जेल या खज़ाना गारद पर तायनाती की जायगी जिसमें कोई सूरत आमदनी की नहीं है। इस सिलसिले में मैं अपने नाज़रीन को एक उमदा हाल सुनाता हूं जिसमें मजिस्ट्रेट साहब का सुपरिण्टेण्डण्ट साहब पर गुस्सा होने का मज़कूर है। साहब मजिस्ट्रेट किसी थाने के कांसटेबल से बवजह गफलतकार सर्कार नाराज़ हो गये उन्होंने सुप-

रिणटेण्डेणट साहब को उसको मुनासिब सज़ा देने के लिये हिदायत की सुपरिणटेण्डेणट साहब ने उस कांसटेबल को रिज़र्व पुलिस में तबदील करके मजिस्ट्रेट साहब के हुक्म का जवाब इस मज़मून का तहरीर कर दिया। बावजूदे कि मजिस्ट्रेट साहब इस बात से बख़ूबी वाक़िफ़ थे कि ऐसा तबादला दरअस्ल एक क़िस्म की सज़ा है ताहम उन्होंने सुपरिणटेण्डेणट साहब को दिक़ करने की ग़र्ज़ से आर्डरबुक में मज़मून ज़ैल की कैफ़ियत इक़ाम फ़र्माई।

"मैं चाहता हूं कि सुपरिंटेंडेणट साहब इस बात को साफ़ साफ़ बयान करें कि किसी क़सूरवार कांसटेबल को थाने से रिज़र्व पुलिस में तबादला करने से उसको क्योंकर सज़ा दी गई उसको दोनों जगहों में कार सरकार करना पड़ेगा तनख़्वाह भी मसावी है। मोफ़स्सल के थाने जात में जो कांसटेबुलान मुतैयन हैं उनको इस क़दर काम ज़ियादा करना पड़ता है कि चालान लेकर सदर ष्टेशन में पहुंचाना पड़ता है मगर जो रिज़र्व पुलिस में तायनात हैं उनको जबकि किसी गारद के मुतअल्लिक़ नहीं होते कोई काम नहीं करना पड़ता, चैन से गुज़र औक़ात करते और हफ़्तों बल्कि महीनों सुस्त बैठे रहते हैं। इसमें शक नहीं है कि रिज़र्व पुलिस के कांसटेबुलान को हर रोज सुबह एक घण्टा कवायद करना पड़ता है लेकिन थाने के कांस्टेबुलान को भी कवायद करना होता है"

सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब को कैफियत तलबशुद: के जवाब देने में बड़ी दिक्कत वाक़ा हुई आध घंटे तक उनका मिज़ाज बड़ाही मुतरद्दिद मालूम होता था आखिरकार वे अपने दफतर से उठ कर मजिस्ट्रेट साहब के इजलास में जा पहुंचे वहां जाने की देर थी दोही चार बातों में मामला तय हो गया क्योंकि थोड़ीही देर बाद दोनों हुक्काम खुशी के क़हक़हे उड़ाने लगे। मैं पेशतर बयान कर चुका हूं कि बहुत से कांस्टबुलान वहदे जमादारी पर अपनी तरक्की नहीं चाहते हैं लेकिन थोडे ऐसे हैं कि जमादार साहब कहलाने को मरे जाते हैं इसी ग़र्ज़ से सरिश्तेदार साहब की खुशामद में हर वक्त लगे रहते हें। एक सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब सरिश्तेदार की सिफारिश बिलकुल नहीं सुनते थे जो वे मुनासिब समझते थे वही करते थे बल्कि अगर सरिश्तेदार दखल दरमाकूलात करते तो सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब उनको अपनी ज़बान देखलाने का हुक्म देते और कहते कि खबरदार अगर तुम हमारे हुक्म में दस्तअन्दाज़ी करोगे तो हम तुम्हारी ज़बान जड़ से कटवा देंगे। लेकिन वह दग़ाबाज़ सरिश्तेदार अपनी फितरतों से कब बाज़ आता था जब उसने देखा कि सुपरिंटेण्डेन्ट साहब के दिल पर मेरे कलमे खैर कुछ भी असर नहीं करते हैं तब वह शिकायत करके अपना मक़सद हासिल करने लगा।

जब कभी सुपरिंटेंडण्ट साहब किसी मुलाजिम की तरक्की करने पर आमाद: होते जिसको वह नापसन्द करता तो वह आहिस्ते २ कुछ बड़बड़ाने लगता इस पर सुपरिण्टेण्डण्ट साहब उस पर मुतवज्जह होकर पूछते कि वह क्या कहता है। सरिश्तेदार हाथ जोड़ कर जवाब इस तरह देता कि "हज़ूर जब किसी कांस्टेबल की चालचलन के बारे में दरियाफ़्त किया चाहते हैं तो उसकी सार्विसबुक (आमालनामे की किताब) तलब करके मुलाहिज़ा फर्माते हैं और उसमें जो मुन्दर्ज होता है उसी के मुताबिक उसको कारगुज़ार ख्वाह अदमकारगुज़ार और नालायक ख्याल फर्माते हैं मगर बीसों मुलाज़िमान के आमलनामों में हज़ूर सादे कागज़ों के सिवाय और कुछ न पावेंगे काश हज़ूर उन कारगुज़ारों की असली चालचलन के बारे में लोगों से खुफिय: तौर पर दरियाफ़्त करेंगे तो हज़ूर को उनके चालचलन का वाकई हालात सुनकर बड़ा तअज्जुब होगा। खुदावन्द नियामत को खास मन्शा तो यह है कि किसी की हकतलफी न हो जुमिल: मुलाजिमान के साथ मुनसिफाना बर्ताव बिला तरफदारी के किया जावे।" इस तरह सरिश्तेदार ने ज़हर की बुझाई हुई तीर छोड़ दी और उसने अपना असर कातिल दफ:तन कर दिखाया।

दूसरा ढंग वसूली रक़म नाजायज़ का सिलसिले तरक्की दिलाने का यह है कि सुपरिंटेंडेण्ट साहब ने खुद अपनी तजवीज़ से किसी मुलाज़िम की तरक्की करदी परवाना लिखा गया सरिश्तेदार ने मज़मून परवाने का सुपरिंटेंडेण्ट साहब को सुना कर दस्तखत करा लिया मगर उसको रवाना न करके अपनें पासही रख छोड़ा और उस मुलाज़िम को जिसकी तरक्की का हुक्म सुपरिंटेंडेण्ट साहब ने दे दिया है ख़ानगो तौर से लिख भेजा ख़ाह कहला दिया कि हम तुम्हारी तरक्की करा देवें तो तुम हमको शुकराने में क्या दोगे । उससे खातिरख़ाह शुकराने की रक़म तय करके परवाना भेज दिया । उस मुलाज़िम ने समझा कि मेरी खुशनसीबी का बाइस सिर्फ सरिश्तेदार का कलम: खैर है उन्हीं की सिफारश से मेरी तरक्की हुई है ।

मैं इस जगह अपने नाज़रीन को यह ज़ेहन नशीन कराता हूं कि अस्ल वाक़ई में एक ऐसी ताक़त है जिसको कोई बशर रोक नहीं सकता है। थोड़े ज़माने के लिये चाहे कोई शख्स उसको नज़रों से पोशीद: करके अंगरेज़ साहबान को धोखा दे देवे मगर इससे अस्लवाकई की खासियत में तफर्क: वाक़ा नहीं हो सकता है जो बात जैसी होती है वह कभी न कभी ज़ाहिर होही जाती है जो बात हक़ीक़त में बुरी है उसका नतीजा हमेश: बुरा

होगा और वह किसी न किसी दिन ज़रूरही ज़ाहिर हो जायगी शाज़नादिर कोई शख्स उसकी पोशीदः करने में कामयाबी हासिल कर लेवे मगर तमाम आदमी ऐसा नहीं कर सकते हैं रफते २ उस बुराई से जियादा लोगों को तकलीफ पहुंचेगी उनमें से कई एक उसको ज़ाहिर करने की कोशिश करेंगे और उसको ज़ाहिर करही देंगे।

इस सिलसिले में मुझको एक बहुतही दिलचास्प हाल याद आता है वह यह है कि सुपरिंटेंडेण्ट साहब बहादुर एक रोज़ दफ्तर में किसी बड़े ज़रूरी काम में मशगूल थे उसी वक्त एक आसामी ने सरिश्तेदार को दो रुपये लाकर दिये मगर देते वक्त रुपये ठन से बोले सुपरिंटेंडेण्ट साहब ने सिर उठाकर सरिश्तेदार की तरफ देखा और पूछा कि क्या इस असामी ने तुमको अभी रुपये रिश्वत दिये हैं हमको दिखलाओ वे रुपये कहां हैं सरिश्तेदार ने रुपये लेने से बिलकुल इनकार किया और जब उस असामी से पूछा कि तुमने रुपये रिश्वत दिये हैं तो वह भी मुनकिर हो गया सुपरिंटेंडेण्ट साहब बहुत घबराये और कहा कि अभी हमने अपने कान से रुपयों की टंकार सुनी है हम किसी तरह तुम्हारे बयान को यातबार नहीं कर सकते उन्होंने सरिश्तेदार से कहा कि हम तुमको हरगिज़ रुस्वा न करेंगे अगर तुम सचसच बयान कर दोगे तो हम तु-

म्हारा क़सूर एक क़लम माफ कर देंगे । सरिश्तेदार इन्कार करतेही गये और अर्ज़ की कि अगर हज़ूर को शुबहा है तो मेरी तलाशी करा लेवें। चूंकि सरिश्तेदार खुद अपनी तलाशी देने पर आमादा थे इसलिये सुपरिंटेंण्डेण्ट साहब ने बड़ी होशियारी से उनके बस्ते, काग़ज़ात के ढेर जो उनके सामने रक्खे थे और नीज़ उनके कपड़ों की तलाशी ली मगर रुपया एक भी न निकला तब तो सुपरिंटेंडेण्ट साहब बहुत घबराये और उनको मजबूर होकर यह कहना पड़ा कि शायद हमारे सुब्हे में सहो हुआ अब हमको कामिल तौर से यक़ीन हो गया कि तुमको रुपया नहीं दिया गया। अब सरिश्तेदार की फतेहयाबी की बारी आई, उन्होंने कहा कि हज़ूर ने वादा किया था कि सहीह सहीह कह दोगे तो हम तुम्हारा क़सूर माफ कर देंगे। सुपरिंटेंडेण्ट साहब ने जवाब दिया कि हां हमने तुमसे ऐसा वादा ज़रूर किया है। तो लीजिये मैं हज़ूर को अपनी चालाकी का नमूना दिखलाये देता हूं। उन्होंने फौरन् कलम उठाकर अपनी दावात का सुफ उठा दिया जिसके नीचे दो रुपये देख पड़े सुपरिंटेंडेन्टसाहबने हंसकर कहा कि इस जगह किसको रुपये पोशीदः रहने का शुबहा हो सकता है। मैं अपनी शिकश्त मानता हूं। किसी किसी ज़िले में सरिश्तेदार की हकूमत सब से बालादस्त

होती है उन्हीं की तूती बोलती है फिर वहां की बात क्या पूछनी है वहां तो बेख़ौफ़ोख़तर बाज़ार रिश्वत का हमेशः गर्म रहता है। अगर ऐसे दबंग बेख़ौफ़ रिश्वतख़ोर सरिश्तेदार का तबादला उस ज़िले से किसी ग़ैर ज़िले में कर दिया जाता तो ऐसी ख़राबी की हालत क्यों होती।!

तख़फ़ीफ़ कांस्टब्लान के बारे में मैं चन्द बातें कहना मुनासिब समझता हूं। उस ख़ौफ़नाक सन १८७० ई० में बहुत से कांस्टब्लान तख़फ़ीफ़ में आगये उनकी और नीज़ उनके बाल बच्चों की रोटी छीन ली गई। कलकत्ते में बड़े लाट साहब बहादुर ने पुलिस ख़र्च में किफ़ायत करने का हुक्म सादिर फ़र्माया लिहाज़ा हिन्दुस्तान के तमाम ज़िलों में ज़ायद अज़ ५००० मुलाज़िमान पुलिस तख़फ़ीफ़ किये गये। इन बिचारों के पास सिर्फ़ चन्द माह की तनख़्वाह बच रही थी जिस वक़्त इनको बरख़ास्तगी का हुक्म दिया गया था। जिस ज़िले में मैं तायनात था वहां ७० आदमियों के बरख़ास्तगी का हुक्म दिया गया था जिनमें १० हेड और ६० कांस्टब्लान थे। बिलाशक ऐसी भारी तख़फ़ीफ़ पुलिस के रोब और उसकी कारगुज़ारी के लिये बड़ीही मुज़िर है। जिस ज़िले में मेरी तायनाती थी वहां के रिज़र्व इन्सपेक्टर ज़ेर रुख़सत थे इस वजह से इस नापसन्दीदः हुक्म की तामील दो हिन्दुस्तानी इन्सपेक्टरों को करनी

पड़ी। उस ज़िले में कुल मुलाज़िमान पुलिस की शुमार ७५० थी जिसमें तमाम दर्जे के मुलाज़मीन शामिल थे। इसमें ६०० पैदल कांसटेब्लान हस्व तफसील ज़ैल थे:—

१५०—७ माहवार पानेवाले

३००—६) „ „ „

१५०—५) „ „ „

६००

सर्कारी तनख्वाह कांसटेब्ल की ६) है मगर दर्जे जो तरक्की व तनज़्ज़ुली के ज़रिये हैं नवाब लेफ्टिनेण्टगवर्नर साहब बहादुर के यहां से इन्सपेक्टरजेनरलसाहब बहादुर की सिफारश पर मंज़ूर किये जाते हैं। उस ज़िले में रक़म तखफीफ की ४६०) मोकर्रर की गई थी याने १००) दस हेडों की तनख्वाह से और ३६०) साठ कांसटेब्लों की तनख्वाह से किफायत में दर लाने का हुक्म उस ज़िले में दिया गया था। मेरे नाज़रीन ५५२०) सालाना रक़म तखफीफ शुदह को एक बड़ी रक़म ज़रूर तसलीम करेंगे। इस ज़ुल्म के हुक्म की तामील के लिये यह इन्तज़ाम किया गया कि १० हेड अव्वल दर्जे के कांसटेब्ल कर दिये गये १० अव्वल दर्जे के कांसटेब्ल दूसरे दर्जे के कांसटेब्ल कर दिये गये १० दूसरे दर्जे के तीसरे दर्जे के कर दिये गये और ७० तीसरे दर्जे के एक क़लम बर्खास्त कर दिये गये। चूंकि इतने कांसटेब्लान बर्खास्त

किये गये इस वजह से कांसटेब्लान के दर्जों में बड़ा रद्दो-बदल वाक़ा हुआ, जदीद इन्तज़ाम के मुताबिक़ १२५ कांसटेब्लान दर्जा अव्वल के २०० दर्जे दोयम और १२५ दर्जे सेउम के मोकर्रर किये गये याने १५ कांसटेब्लान दर्जे अव्वल के दोयम दर्जे के कर दिये गये और ४५ दोयम दर्जे के सेउम दर्जे में तनज़्ज़ुल कर दिये गये। मेरे नाज़रीन खुद ख्याल कर सकते हैं कि उन नेटिव इन्सपेक्टरों को जिनके सपुर्दगी में सहलएतक़ादी सुपरिंटेंडेण्ट साहब ने इस इन्तज़ाम को दे दिया था कैसी भारी आमदनी हुई होगी. उन्होंने उन मुलाज़िमान की फिहरिस्त तैयार की जिनकी तनज़्ज़ुली या तखफीफ वे चाहते थे। हेड कांसटेब्ल के लिये जो इस आफ़त नागहानी से महफ़ूज़ रहना चाहता था १०) की शरह बतौर ज़रे मोखलसी मोकर्रर की गई और कांसटेब्ल के लिये ५ रुपये। तुर्फ़ः माजरा यह था कि जिस वक्त इन नाजायज़ बातों की तैयारियां हो रही थीं साहब बहादुर शिकार में मशगूल थे। खुशकिस्मती से रिज़र्व इन्सपेक्टर साहब जो रुखसत लेकर मकान को गये थे वापस आगये। उन्होंने इन्सपेक्टर जेनरल बहादुर के हिदायतों को जो इस बारे में इजरा हुई थीं बखूबी पढ़ा और उनके मुताबिक़ अमलदरामद साथ दयानतदारी के किया। आखिरी दस आदमी जो वहदे हेड कांसटेब्ली

पर तरक्की पाये थे उनको उन्होंने फिर तनज़्ज़ुल कर दिया और ७० कांसटेब्लान को जो हालही में भर्ती किये गये थे एक कलम बरखास्त कर दिया। अगर नेटिव इन्सपेक्टरों का इन्तज़ाम कायम रहता तो सिर्फ हेड कांसटेब्लों सेही उनकों २०० रुपये की आमदनी हुई होती और ४०० रुपये कांसटेब्लों से। इनका इरादा यह था कि कई थानों और रिज़र्व पुलिस से कांसटेब्लों को बुला कर उनसे यह कह दिया जाय कि सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने खुद उनको तनज़्ज़ुली या बर्खास्तगी के लिये मुन्तखब किया है। अगर तुम लोग हमारी खातिर करोगे तो हम तुम लोगों की बरियत के लिये हत्तुलवसअ़त कोशिश करेंगे। जिस किसी ने रक़म मोकर्रर: दाखिल किया उसको नसीहतन् कह दिया जावे कि देखो हमलोगों की सिफारश से तुम इस आफत से महफ़ूज़ रहे तुम्हारी खैरियत इसी में है कि अपनी ज़बान बन्द रखना क्योंकि जो लोग इस आफत में पड़ जायंगे और नुकसान उठावेंगे वे ज़रूर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब के यहां अपील करेंगे तो ख़्वाहमख़्वाह साहब बहादुर को दूसरी फिहरिस्त बनानी पड़ेगी उस वक्त तुम्हारा नाम फिर से मुन्दर्ज करा दिया जायगा और तुम सफाई से उड़ा दिये जावोगे। इस ज़मानेसाज़ी के हिल: हवाल: का ऐसा ज़बर्दस्त असर होगा कि रिश्वत

देनेवाले बिलकुल खामोशी अख़्तियार करेंगे कुछ भी चूं व चेरा न करेंगे और इसको ग़नीमत और अपनी खुशकिसमती समझेंगे कि वे इस आफत नागहानी से महफूज रहे।

चूंकि इस बयान का एक हिस्सा मज़मून "भरती" के लिये मखसूस कर दिया गया है लिहाज़ा उम्मेदवारों के मुखतसर हालात का इस जगह बयान करना मेरी अक्ल नाक़िस में बेमौक़ा न होगा। एक कचेहरी में हरएक अहलकार मातहत अपनी मदद के लिये एक या दो उम्मेदवार रखता था एक रोज़ एक मोकद्दमे को मिसिल गुम हो गई। बावजूदे कि माकूल तौर से तलाश की गई मगर दस्त्याब न हुई इस पर हाकिम कचहरी की बड़ी खफगी हुई, हुक्म दिया कि इस वक्त जितने मोहर्रिरान काम करते हैं सब के सब मोअ़त्तल कर दिये जांय और जुमल: उम्मेदवारान कचहरी से निकाल दिये जावें। इस सख़ हुक्म का ऐसा असर हुआ कि जितने मोअत्तलशुदह मोहर्रिरान थे सभों ने मिसिल के तलाश करने और उसको बरामद करने को माकूल कोशिश की जिसका नतीजा यह हुआ कि मिसिल गुमशुदह अखीर वक्त में एक उम्मेदवार के क़ब्ज़े में पाईगई। हाकिमने उस उम्मेदवार को अपने सामनेतलब करके धमकाया कि अगर तुम फौरन् मिसिल ग़ायब करने का बाइस साफ साफ बयान करोगे और उसका ठीक २

पता बतला दोगी तो खैरियत समझो वरन हम तुमको बेंत लगाने का हुक्म देते हैं और जब तक तुम सही सही यकबाल न करोगी बराबर बेंत लगते जायंगे यहां तक कि तुम्हारे तमाम बदन की खाल उखड़वा देंगे। इस धमकी ने बड़ा काम किया उस उम्मेदवार ने साफ साफ यकबाल कर दिया कि मैंने उस मिसिल को फलां कुयें में फेंक दी। जिस कुयें को उसने बतलाया उसमें कटियां छोड़वाई गईं और बहज़ार तरद्दुद वह गुमशुदह मिसिल कुयें से गली हुई हालत में बरामद की गई। जब उस उम्मेदवार से ऐसी शरारत करने का बाइस पूछा गया तो उसने बग़ैर किसी घबराहट के जवाब दिया कि मेरा मतलब इस मिसिल के ग़ायब करने से यह था कि चूंकि मेरा नाम उम्मेदवारों की फिहरिस्त में अव्वल है वह मोहर्रिर जिसने अखीर में इस मिसिल के पाने की रसीद दी है ज़रूर मौकूफ कर दिया जायगा और उसकी जगह में मैं ज़रूर ही मोकर्रर किया जाऊंगा। वह उम्मेदवार माखूज़ किया गया और अदालत फौजदारी से उसको कैद की सज़ा दी गई। हाकिम कचेहरी ने एक नसीहत हासिल की आइन्दे से उन्होंने उम्मेदवारों से मुफ़ काम लेना क़तई तौर पर मौकूफ कर दीया। अपने मातहतान को हिदायत की कि जो आदमी अपना काम बखूबी अञ्जाम नहीं दे स-

कता है उसको मुनासिब है कि ऐसे आदमी को तलाश करके लावे जो उसका काम अञ्जाम दे सकता हो इसके बाद फिर किसी मातहत ने कसरत कार की शिकायत कभी न की ।

बाईसवाँ पर्ब्ब ।

ज़राअत का मवेशियों से चरा लेना और नुकसान पहुंचाना ।

जिन ज़िलों में नील की खेती ज़ियादा होती है वहां ज़रूरहो मवेशियों से खेत चरा लेने और नुकसान रसानी के मोकद्दमात कसरत से होते हैं क्योंकि गल्ले की ज़राअत के लिये नील के खेतों की वजह से किल्लत आबपाशी की होती है। अमूमन नीलवाले साहब मोअज़्ज़िज़ और सच्चे होते हैं लेकिन जिस तरह हर क़ायद: के लिये इस्तिसना का होना लाज़मी है वैसेही कोई २ उनमें से औसाफ मज़कूर:बाला के खिलाफ भी होते हैं। मैं इस जगह अपने नाज़रीनों को मवेशियों से ज़राअत चरा लेने के मोकद्दमात के सिलसिले में एक मोकद्दम: के हालात सुनाता हूं ।

एक नीलवाले साहब का कारिन्दा अकसर इस किस्म की रपोर्ट थानों में आकर करता था कि फलां ज़िमीदार

या तालुकेदार को मवेशी जिनका शुमार ५० या १०० रास थी मेरे आका के नील के खेत को चर गई जिसकी कीमत वह हमेश: पांच२ सौ या एक २ हज़ार तखमीनन् अपनी रपोर्ट में लिखाता था। चूंकि पुलिस को इस क़दर ज़ियादा नुकसानी के मोकद्दमे में दस्तअन्दाज़ी करने का मजाज़ न था इस वजह से मुद्दई को मजिस्ट्रेट साहब के इजलास में चाराजोई करने की हिदायत की जाती थी। नील के कारखाने के मुलाज़िमान अपनी रपोर्ट में कीमत नील की ज़रूरही लिखाते हैं क्योंकि ऐसा करने से उनके साहब अदालत दिवानी में अपनी नुकसानी का दावा कर सकते हैं। इस किस्म के मोकद्दमों में म्यजिस्ट्रेट साहब पुलिस से अमूमन कैफियत तलब करते हैं। एक मोकद्दम: में मैं थानेदार के हमराह तहकीकात करने गया था। उस मोकद्दम: के सहीह सहीह हालात ज़ैल में बयान करता हूं:—

नीलवाले साहब ने ज़िमीदार दीह: से १०० बीगहा आराज़ी नील बोने के लिये मांगी उसने आराज़ी देने से इनकार किया और कहा कि मैं २ वर्ष तक कोई आराज़ी नहीं दे सकता हूं इस पर नीलवाले साहब बड़े नाराज़ हुये और उसके इनकार करने को गुस्ताखी समझ कर जवाब दिया कि देखो तुम हमको आराज़ी नील बोने को

नहीं देते हो यह बात अच्छी नहीं है हम तुमसे समझ लेवेंगे। कई महीने के बाद अनक़रीब दसहरे के जिस वक्त हिन्दू लोग अपने सालान: तेहवार में लगे रहते हैं साहब ने अपने चन्द मुलाज़िमान को हुक्म दिया कि ज़िमीदार मज़कूर की मवेशी को उनके नील के खेतों में हांक देवें। जब ज़िमीदार की मवेशी नील के खेतों में पहुंच गई तब साहब ने अपने कारिन्दे को बुला कर हुक्म दिया कि गोड़इत मौजे को फौरन् बुला कर दिखला देवे और एक आदमी को रपोर्ट करने के लिये थाने को रवाना कर देवे। मोकद्दम: डिप्टी साहब (डिप्टी मजिस्टरेट साहब) के इजलास में पेश किया गया। डिप्टी साहब ने पुलिस की रपोर्ट तहकीक़ाती पढ़वाई जिसको सुन कर मोकद्दमा खारिज कर दिया। मोकद्दमा खारिज होने पर हर शख्स यह ख्याल करैगा कि अब अदालत दिवानी में दावा करने के लिये कोई वजह बाकी न रही मगर नीलवाले साहब ने कुछ औरही ख्याल किया और चटपट सदरआला साहब [जज मातहत] के इजलास में नालिश दायर करही दिया। नतीजा यह हुआ कि सदरआला साहब ने मुद्दाअलेह की डिगरी की। इस मोकद्दम: के फैसल होने के थोड़ेही अरसे के बाद सुपरिंटेंडेण्ट साहब रुखसत लेकर बिलायत गये और उनकी जगह में एक नये साहब मोक-

र किये गये। साबिक़ के सुपरिंटेण्डेण्ट साहब नीलवाले साहबान से बिलकुल नहीं मिलते थे लेकिन ये नये सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब शिकार के बड़े शौक़ीन थे लिहाज़ा उन्होंने ठेंगापुर गोदाम के मालिक से दोस्ती पैदा की अब थानेदार के लिये आफ़त का सामान मोहैया होने लगा, उनके बुरे दिन आ गये क्योंकि ये पेश्तर से ज़ुल्म करने और रिश्वत लेने में बदनाम हो रहे थे मासिवाय इसके गोदाम मज़कूर के मालिक उनसे बहुतही बुरा मानते थे इसलिये उन्होंने सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब के कान खूब भरे और उनको थानेदार की तरफ़ से बिलकुल बदगुमान और बर्ख़ास्त: मिज़ाज बना दिया। एक रोज़ सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने थानेदार से कहा कि हम तुम्हारी बड़ी शिकायत सुनते हैं। बिचारे थानेदार ने अर्ज़ की कि अंगरेज़ साहबान का आम दस्तूर यह है कि मुद्दई ख़्वाहमुद्दाअलेह से मोक़ाबिल: कर बैठते हैं मगर मेरे ऊपर ऐसी तोहमत मुश्तबह: लगानी इन्साफ़ के क़वायद से बिलकुल खिलाफ़ है इसलिये मैं महज़ लाचार हूं। जब थानेदार थाने को वापस आये उस वक़्त उनका चेहरा बड़ा उदास और मग़मूम मालूम होता था! उन्होंने अपने मातहतों से कहा कि मेरी दानिस्त में अब ज़माना रास्ती का न रहा। २ महीने के अन्दर उनका तबादल: रिज़र्व पुलिस में हो

गया, गोया वे थाने के यहतमाम के लायक बिलकुल न थे। नक्ल हुक्म तबादले की ज़िल: मजिस्ट्रेट साहब की खिदमत में बग़र्ज़ इत्तेफ़ाक़राय इरसाल की गई और इत्तलाअन तहरीर किया गया कि चूंकि थानेदार रिश्वत लेने का आदी हो गया है इस वजह से उसका तबादल: अमल में लाया गया। साहब मजिस्ट्रेट ने उस नक्ल हुक्म पर तहरीर फर्माया कि हम सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब की राय से इत्तफाक करते हैं। थानेदार को रिज़र्व पुलिस में आये कई रोज़ हो चुके थे कि एक रोज़ सुपरिंटेंडेण्ट सहाब अलस्सबाह मोआइने के लिये रिज़र्व पुलिस में पहुंचे और उनको दिलशिकस्त: और मग़मूम देख कर सबब दरियाफ़्त किया। थानेदार ने जवाब दिया कि अगर तावेदार का तबादल: रिज़र्व पुलिस में ज़रूरतन् किया जाता तो तावेदार को इस क़दर रंज न होता क्योंकि तनख़्वाह दोनों जगहों की मसावी है मगर चूंकि मेरा तबादल: सज़ाअन् अमल में आया इस वजह से मुझको अपने मातहतों और दोस्तों के रूबरू शरमिन्दगी से सर झुकाना पड़ता है। थानेदार ने नीलवाले साहब का उनसे बुरा मानने का सबब सुपरिंटेण्डेण्टसाहब से मुशर्रह बयान करके अर्ज़ किया कि "हज़ूर इस बात को ख्याल फर्मावें कि उस थाने के इलाके में बजुज़ नीलवाले साहब के और कोई फर्दबशर मुझ से ना-

खुश न था इसलिये मैं ख्याल करता हूं कि उन्होंने ज़रूर मेरी बेसिर पैर की शिकायत हजूर से कर के हजूर का मिज़ाज ताबेदार की तरफ से बिलकुल बरहम कर दिया"। सुपरिंटेण्डेण्ट साहब के सवाल करने पर थानेदार ने कहा कि बहुत से मोकद्दमे नील चरालेने के थाने में रपोर्ट किये गये जिनमें बिचारे जिमीदारान और किसानान ने कमोबेश नुकसान उठाये मगर जायतअज्जुब है कि हाकिम ने एक मोकद्दम: में भी यह अम्र दरियाफ़्त करने की तकलीफ न उठाई कि आया बैल या गाय नील के पौधे खाती हैं या नहीं। आज शाम को या कल सबेरे हजूर इस पक्की सड़क पर हवाखोरी के लिये घोड़े पर सवार होकर तशरीफ ले चलें सिर्फ एक मील के फासले पर नील के कई खेत हैं वहां पर ताबेदार २० रास मवेशी मौजूद रक्खेगा और हजूर के नज़रों के सामने मैं उन सबको एक खेत मं हांक दूंगा अगर उनमें से एक भी नील की पत्ती खावे तो हजूर मेरा सिर क़लम करा लेवें। हजूर तो बराबर सुनतेही आये हैं कि बैल और गायें नील की पत्तियां खा ज.ती हैं इस बात की सदाक़त हजूर बचश्म खुद देख लेवेंगे। काश यह बात सही होती कि मवेशी नील की पत्तियां चर जाती हैं तौभी ज़िमीदारान और किसानान दिन के वक्त बिलऐवज़ रात के अपनी मवेशी नील के खेत में क्यों हांक देंगे क्योंकि

दिन में उनके जुर्म के देखनेवाले बहुतसे आदमी हो सकते हैं जो उनके बखिलाफ़ चश्मदीद शहादत देकर अदालत फौजदारी से उनको सज़ा करा सकते हैं, मासेवाय इसके रात के वक्त उनको नील के खेतों को चरा लेने में बड़ी आसानी है क्योंकि रात को खेतों को कौन हिफाज़त करता है उस वक्त वे बेखतर जिसक़दर नील के पौधे काटना चाहें काट ले जा सकते या चरा ले सकते हैं मगर नीलवाले साहब या उनके मुलाज़िमान उनका कुछ भी नहीं कर सकते हैं। हां मैं तसलीम करता हूं कि उस मोकद्दमे में जिसको रपोर्ट नीलवाले साहब ने मेरे थाने में की थी छ पौधे अलबत्तः नुकसान हुये थे इससे ज़ियादा कुछ नुकसान नहीं हुआ मगर नीलवाले साहब ने जो ज़िमीदार पर मवेशी से चरा लेने का दावा किया था वह महज़ बेबुनियाद था क्योंकि मवेशी नील की पत्तियां छूती तक नहीं चरना तो दरकिनार रहा अलावह इसके मैं इस अम्र का सबूत कामिल दे सकता हूं कि नीलवाले साहब के खास मुलाज़िमों ने उस ज़िमीदार की मवेशी नील के खेत में हांक दिये थे मगर बात तो यह है कि हमलोग हिन्दुस्तानी झूठेही ख्याल किये जाते हैं। हमलोगों की बातों का बमोकाबलः साहबान अंगरेज़ कुछ भी येतबार नहीं किया जाता है चाहे वे बिलकुल रास्त और सहीह क्यों न

हीं । सुपरिंटेंडेण्ट साहब ने इस मामले पर ग़ौर फर्माया और थानदार को एक मोफस्सिल के थाने में बजाय एक जंगी पुलिस के थानेदार के तबदील फर्माया जिसको जंगी क़वायद सीखने की सख़ ज़रूरत मुतसौवर की गई थी। चूंकि सुपरिंटेंडेण्ट साहब को नीलवाले साहब की खातिर मञ्जूर थी इस वजह से थानेदार मज़कूर को उस थाने में तबदील नहीं किया।

मोफस्सिल में इस क़िस्म के नुकसान-रसानी के मोकद्दमात कसरत से थानों में रपोर्ट किये जाते हैं कि फलां ज़िमीदार या काश्तकार ज़बर्दस्ती मेरे कुयें का पानी मेरे खेत को नाली तोड़कर अपने खेत में आबपाशी के लिये ले गया जिससे मेरा बड़ा नुकसान हुआ। ताल और तालाबों से जिन आराज़ियात की आबपाशी की जाती है उनके निसबत नुकसान रसानी के दावे बहुत कम दायर किये जाते हैं क्योंकि नीलवाले साहबान को ताल और तालाबों में हक़ मालकाना बिलकुल हासिल नहीं रहता, उनका इस्तेहक़ाक मालकाना ज़िमीदारों कोही हासिल रहता है इसलिये नीलवाले साहबान सर्कश और शोरेपुश्त ज़िमीदारान और काश्तकारान को ज़ेर करने के लिये सिर्फ क़िस्म अव्वल के मोकद्दमातही उठाते हैं याने ज़िमीदार से उस आराज़ी का बन्दोबस्त अपने नाम करा लेते हैं जिसमें

कुआं होता है और बादहू उस कुयें का पानी बगर्ज़ आब-पाशी आराज़ियात किसी ग़ैर ज़िमीदार ख़्वाह काश्तकार को लेने नहीं देते हैं। जिस काश्तकार का खेत आराज़ी मज़कूर के मुलहिक होता है वह उज्र करता है कि इसी कुयें के पानी से मेरा खेत अर्से बीस बरस से बराबर सींचा जा रहा है बल्कि मेरे बाप दादे और परदादे अपना खेत ज़मानः क़दीम से इसी कुयें के पानी से बराबर सींचते आये किसी ने न मुझ को व न मेरे बुज़ुर्गों को कभी मना किया अब यह नई बात कैसे हो सकती है और अब नीलवाले साहब इस कुयें के पानी को मुझको अपने खेत में आबपाशी के लिये ले जाने से क्यों रोकते हैं उनको किस तरह इस कुयें पर कुल्लहूम इस्तेहक़ाक़ हासिल हो सकता है। हां यह करने को मैं रज़ामन्द हूं कि साहब पेश्तर अपने नील के खेतों को सींच लेवें और जब उनको पानी की ज़रूरत न रहे तब मैं अपना खेत सींचलूं। मगर नीलवाले साहब कब मानते हैं वे कहते हैं कि नहीं मैं इस कुयें का पानी हरगिज़ तुम्हारे खेत में जाने न दूंगा। खैर काश्तकार मज़कूर यह समझ कर खामोश हो बैठता है कि "ज़बर्दस्त का ठेंगा सिर पर" मगर जब वह देखता है कि बग़ैर सींचे खेत मेरा पटक रहा है और कुयें का पानी नीलवाले साहब अपने मसरफ़ में लाते भी नहीं हैं

तब एक रोज़ वह अपने भूखे बैलों को लाता है और पुर-वट में नाध कुयें से पानी निकालने का काम शुरू करता है मगर वह यह भी जानता है कि साहब की तरफ से बड़ी रोक छेंक की जायगी इसलिये वह यहतियातन अपने बिरादरी के लोगों को पहिले से उस जगह बुलाकर मौजूद कर रखता है। नीलवाले साहब को किसी मुफसिद ने जाकर इस बात को खबर पहुंचाई। उन्होंने फौरन् अपने गोदाम के बैलों को मय हांकनेवाले और २ मुलाज़िमों के बतौर गवाहान भेज दिया जो मौकद्दमे की पेशी के वक्त यह इज़हार देंगे कि हमलोग साहब के मुलाज़िम नहीं हैं बल्कि इत्तिफाक से जायमाजरे पर पहुंच गये थे। बावजूदे कि इस बात को सभी जानते हैं कि ये साहब के मुलाज़िम हैं। साहब के बैलों की गर्दन में जुआ डाल दिया गया और हांकनेवाला रस्से को जुये से बांध, मोट कुयें में डाल, पानी निकालने लगता है तब वह बिचारा काश्तकार गिड़गिड़ाकर कहता है कि मेरा खेत सूख रहा है मुझको आज अपना खेत सींचने दो और साहब के नील के खेत तो अभी हालही में सींचे गये हैं क्या साहब अपने खेतों को फिर से सिचवाना चाहते हैं!" इसी मौके पर उस काश्तकार के दोस्त लोग भी समझाने लगते हैं। बस फिर क्या पूछना है हांकनेवाला तो पेश्तरही

से सिखा पढ़ा कर भेजा जाता है वह फौरन बैलों को खोलखाल थाने को तरफ हांककर ले जाता है । उसके पीछे गवाहान भी थाने में पहुंचते हैं और बिचारे काश्तकार पर दो जुर्म करने का रपोर्ट लिखाते हैं अव्वल यह कि उसने खिलाफ कानून के दंगा और फसाद करने की नियतसे बहुत से लोगों को एकट्ठा किया दोयम यह कि साहब के नील के खेतों को सींचने न दिया इस वजह से साहब के नील के खेतों को बड़ा भारी नुकसान पहुंचाया। इस रपोर्ट की तहकीकात के लिये थानेदार जायमाजरे पर शिताबी से पहुंचे उनको उम्मेद थी कि वहां बहुत से आदमी दंगा व फसाद करने के लिये मौजूद होंगे मगर जब वे जायमाजरे पर जा पहुंचे तो वहां वह ग़रीब काश्तकार बुलन्द आवाज़ से देहाती गीत गाता हुआ बैलों को हांक रहा था और उसका बड़ा लड़का अनक़रीब १२ बरस का मोट थाम कर पानी गिराने के लिये कुयें के मुंह पर खड़ा था और एक बुड्ढी औरत खेत में पानी जाने के लिये नालियां दुरुस्त कर रही थी, इन तीन शख्सों के सेवाय उस जगह थानेदार ने और किसी आदमी को न पाया तब वे नील-गोदाम के आदमियों पर बड़े खफा हुये और कहा कि हमको इन सभों ने खूब छकाया। अगस्त महीने के दो पहर की धूप में हमको दो ढाई कोस फजूल आना

पड़ा। थाने में वापस आकर थानेदार ने उस रपोर्ट को मजिस्ट्रेट साहब बहादुर की खिदमत में वास्ते हुक्मरसी के भेज दी। इधर गोदाम के मुला:ज़िमान अपने आक़ा नीलवाले साहब के यहाँ वापस आये और कहा कि "लीजिये हजूर थानेदार तो काश्तकार से मिल गये उस काश्तकार ने उनको ५) रुपये नज़र दिये" -- ग़ालिबन उस वक्त उस काश्तकार के पास शायद ५ पैसे भी न रहे होंगे। नीलवाले साहब यह सुनतेही आगबगूला हो गये। उसी वक्त अपनें मोख़्तार को बुला भेजा और एक ज़ोरशोर की दर्ख़्वास्त लिखवा अदालत फौजदारी में झटपट नालिश दायर कर दी। जब सम्मन उस काश्तकार के पास पहुंचा तो उसको मालूम हुआ कि साहब ने मेरे ऊपर इस बात का दावा किया है कि तुमने अदावतन हमारे नील के खेतों में कुयें का पानी जाने से रोका जिस से उन खेतों की आबपाशी मुनासिब तौर से न हो सकी इस वजह से हमारा नुकसान कसीर हुआ। अब वह बिचारा काश्तकार बड़ा घबराया मोकद्दमे की पैरवी के लिये एक पैसा पास नहीं मजबूर हो मोकद्दमे के पेशीवाले दिन असालतन अदालत में हाज़िर हुआ और जवाबदेही मोकद्दमे की करने पर मुस्तैद हुआ। उसके पास थाही क्या जो वह किसी वकील को अपने मोकद्दमे की पैरवी के लिये मोकर्रर

करता। जिस वक्त हाकिम अदालत ने उस काश्तकार को मुद्दई के दावे को पढ़कर सुनाया तो उसने उज़्र किया कि मुद्दई जो अपनी नालिश में मेरे ऊपर नुकसान-रसानी का दावा करता है सो बिलकुल ग़लत है मैंने कोई ऐसा फेल नहीं किया है जिससे मुद्दई का नुकसान होता -- अस्ल वाकई यह है कि नीलवाले साहबही की जानिब से मुझ पर ज़ियादती हुई है नकि मेरी तरफ से। मुझको उन्होंनेही सताया और मेरे ऊपर दावा भी कर दिया। मोकद्दमे की जांच हस्ब ज़ाब्त: की गई और हाकिम अदालत ने उसको खारिज कर दिया। जब अदालत फौजदारी से मोकद्दमा हर गया तब साहब दीवानी में पहुंचे और झटपट नालिश दायरही कर दी जिसमें उन्होंने इस्तेहकाक मालिकाना निसबत कुयें के क़ायम करके नुकसानी दिला पाने का दावा किया। वहां से भी वह काश्तकार फतेहयाब होकर आया लेकिन उसको एक जोड़ी बैल कलेजा थाम कर मोकद्दमे के सर्फ़ के लिये फरोख़ कर देनाही पड़ा। फौजदारी कचेहरी में तो उसने असालतन ही जवाबदेही मोकद्दमे की की थी लेकिन अदालत दीवानी में उसको लाचार होकर एक वकील मोकर्रर करनाही पड़ा। मेरा इस बयान से यह मतलब नहीं है कि जुमल: नीलवाले साहबान ऐसाही किया करते हैं अमूमन्

वे शरीफ और इज्ज़तदार होते हैं। वाज़ह रहे कि यह बयान जो मैंने किया है वह सिर्फ मेरा तजरुबः ज़ाती है। बावजूदे कि काश्तकार ने थानेदार को एक हब्बः शुकराना नहीं दिया ताहम उसके ज़िमीदार ने कुशादः दिली से ५/ अपने जेब खास से निकाल उनके हाथ पर रक्खा और कहा कि आप बड़ी दिलेरी से मिञ्जानिब कमज़ोर सच्चा हकदार के ज़बर्दस्त नाहक करनेवाले से मोकाबिलः किया। मुझको भी एक रुपया हक्कुल मेहनत का वसूल हुआ। मैंने बयान किया है कि नीलवाले साहबान अमूमन् शरीफ और मोअज़्ज़िज़ होते हैं सो बिलकुल सही है। इस बात की सदाकत के निसबत मैं खुशी से शहादत देता हूं। वे अकसर शरीफ होते हैं जिनको ग़रीब काश्तकारान बजाय अपने मा बाप के समझते हैं और नीलवाले साहबान भी ग़रीब और भूखे काश्तकारान को कुशादः दिली से हर तरह की मदद देने पर हमेशः आमादः रहते हैं वे हरगिज़ ऐसा जुल्म नहीं करते हैं मसलन अगर उनसे किसी छोटे कम हैसियत के ज़िमीदार ख्वाह काश्तकारसे जिनके खेत उनके नील के खेतों के मुलहिक होते हैं बिगड़ जावे तो वे उसको यह समझ कर तंग करें कि यह हमसे अदालत तो करही नहीं सकता है इस पर हम जो ज़ुल्म चाहेंगे करेंगे। मैं एक नीलवाले साहब का हाल बयान करता हूं जो

अब ज़िन्द: नहीं हैं। ये ऐसे रहमदिल और खैरअन्देश काश्तकारान थे कि एक रोज़ उनसे कोई ग़रीब काश्तकार बचश्मगिरियां आकर अपनी मुसीबत ज़द: हालत बयान कर कहने लगा कि "हज़ूर हम काश्तकार लोग इन ज़ियाद: सूदखोर बनियों से बहुत तंग आगये हैं इन्होंने हमलोगों को बिलकुल तबाह कर डाला। घर बैल और खेत सबही नालिश कर डिगरी हासिल करके नीलाम करा दिया। यहां तक तबाह कर दिया कि अब हमलोग भूखों मर रहे हैं। साहब को यह हाल सुन बड़ा तर्स आया। उन्होंने उससे कहा कि इस मौज़े में जितने काश्तकारान हैं तुम सबसे जाकर कह दो कि अब से जिस किसी को कर्ज़ लेने की ज़रूरत हो वह हमसे ले लिया करे हम सिर्फ एक रुपया सैकड़े माहवारी सूद लेंगे अब से कोई इन कमबख़्त बनियों से कर्ज़ लेवेही नहीं। साहब ने १२) साल फीसदी शरह सूद को भी कम कर दिया याने ९) सालाना सूद पर कुछ दिनों तक काश्तकारान को कर्ज़ देते रहे बाद इसके ६ सालाने की शरह सूद को कायम कर दी और बाज़ बाज़ मौकों पर तो वे बिलकुल सूद छोड़ही देते थे सिर्फ असल रुपया लेकर कर्ज़ की फारखती लिख देते थे। साहब के ऐसे २ नेक कामों के सबूत में मैं एक बड़े नादेहन्द आदमी का हाल बयान करता हूं

इसको कोई बनिया एक पैसा बगैर ज़मानतदार की ज़मानत लिखाये नहीं देता था और ज़मानतदार उसको कोई मिलताही न था आखरश उस मौज़े के एक महाजन ने उसको सौ रुपये कर्ज़ ज़ैल की शर्तों पर देना मञ्जूर किया।

(१) अगर कर्ज़ लेनेवाला कुल रुपया कर्ज़े का मय सूद के अदा व बेबाक न करेगा तो उसको अपने इस्तेहकाक़ मालिकाना निसबत १२ बिगहे खेत सीर के छोड़ देना पड़ेगा।

(२) शरह सूद की ॥/ रुपया मोकर्रर की जाती है।

ऐसी शर्तों पर कर्ज़ लेने की कौन शख्स हिम्मत कर सकता है मगर बग़ैर कर्ज़ लिये उस बिचारे काश्तकार का कामही नहीं चलसकता था क्योंकि उसकी बड़ी लड़की की शादी को सिर्फ आठही सात रोज बाकी रह गये थे। अगर रुपये का बन्दोबस्त न लगा तो उसकी बड़ी बेइज़्ज़ती हो जायगी। जिस वक्त उसका समधी दो सौ आदमियों की बारात लेकर दर्वाजे पर आवेगा तो उस वक्त वह क्या करेगा। उनको किस तरह खिला पिला खुश खुर्रम रुखसत करेगा। इसी फिक्र में वह काश्तकार पड़ा था कि उसके दिल में यह बात आई कि अगर मैं नीलवाले साहब से अपनी मुसीबत की हालत बयान करूं क्या जाने

उनको मेरे ऊपर रहम आजाय और मेरा काम उन्हीं की मेहरबानी से अञ्जाम को पहुंच जाय। यह ख्याल कर वह साहब के बंगले पर गया और उनको गोदाम के बरामदे में मय बाबा लोगों के एक बिसाती से सौदा खरीदते पाया। वह झटपट साहब के कदमों पर गिर कर रोने लगा और सिसकियां भर २ कर कहने लगा कि अगर हज़ूर मेरी इज़्ज़त रखें तो रहती है नहीं तो अब मेरी बेइ-ज़्ज़ती हुआही चाहती है। साहब ने पूछा क्यों कर तुम्हारी इज़्ज़त जायगी और मेरे रखने से तुम्हारी इज़्ज़त किस तरह रह जायगी। तुम मुझसे किस किस्म की इमदाद चाहते हो साफ २ बयान करो। इस पर काश्तकार मज़कूर ने कुल किस्सा सूदखोर बनियों की ज़ियादतियों का कह सुनाया और यह कहकर खतम किया कि बड़ा वियाज़-नामी महाजन तो मुझको कर्ज़ देने पर राज़ी हैं लेकिन उसकी शर्तें ऐसी हैं कि मैं उससे कर्ज़ लेना पसन्द नहीं करता हूं। साहब यह सुनकर कुर्सी से उठे और बंगले के अन्दर जाकर रुपयों की थैली उठा लाये और उसको फर्श पर रख कहने लगे।

टेढ़े मिज़ाज मिश्र, तुम्हारी बड़ी बदनामी सुनने में आती है लोग कहते हैं कि तुम्हारा मिज़ाज ऐसा खराब है कि तुमसे कोई शख्स लेनदेन नहीं कियाचाहता है।

मैं तुम्हारे सामने ये सौ रुपये रख देताहूं तुम इन को ले जाओ और अपनी इज़्ज़त रक्खो। मैं तुमसे सिर्फ १) सैकड़े के हिसाब से सूद लूंगा तुमसे मैं दस्तावेज़ भी नहीं लिखाता हूं सिर्फ अपनेबही खाते में लिख लेता हूं। अब तुम अपने मकान को जाओ और इस मौज़े के बाशिन्दगान व नौज़ गिर्दनवाह के मवाज़ियात के बाशिन्दगान पर यह साबित करो कि तुम खरे असामी हो जो बदनामी तुम्हारे नादिहन्दी को हो रही है उसको अच्छीतरहसे मिटा दो। हमेश: ईमान्दार होने की कोशिश करो और मैं तुम्हारा हमेश: के लिये दोस्त हो जाऊंगा। बेबाक़ी क़र्ज़ के लिये-एक बरस की मैयाद दी गई। काश्तकार मज़कूर ने अन्दर मैयाद के साहब को सौ रुपये मैं सूद मुबलिग़ १२) के अदा करदिया मगर साहबने सूद के रुपये उसको वापस दे कर कहा कि " मैं तुमको ये सूद के रुपये माफ कर देता हूं ताकि तुम इसी तरह हमेश: ईमानदारी से लेनदेन किया करो और इन्हीं रुपयों का तुम सोना खरीद कर सोनार से एक नथ बनवा कर अपनी दुखतर को बतौर यादगारी इस अम्र के मेरी तरफसे भेजवा दो कि तुम जो उसके वालिद हो ईमानदारी और वादावफाई करने पर साबित क़दम रहे। टेढ़ामिज़ाज मिश्र तुम याद रक्खो

कि तुम्हारी दुखतर की शादी ने तुम्हारी क़दीम खासियत को बदल दिया।

टेढ़ामिज़ाज मिश्र का क़िस्सा खतम करने में मैं इस बात की खुशी ज़ाहिर करता हूं कि इस वाकेश्र के बाद वह हमेश: राह रास्त में चलने और ठीक यकरार पर अपना कर्ज़ अदा करने लगा। इस वाकेश्र का ज़िक्र उस मौज़े व नौज़ गिर्दनवाह की मवाज़ियात में सालहासाल तक होता रहेगा।

झूठी शहादत देने के बारे में मैं सतूर बाला में किसी क़दर बयान कर चुका हूं। उसी सिलसिले में यह भी बयान करना ज़रूरी समझता हूं कि बहुत से अशखास ऐसे हैं जो हमारे हिन्दुस्तानी तरीक़े के खौफनाक नतायज की जो जमाअत पर आयद होते हैं पर्द: पोशी करने की कोशिश करते हैं और उन लोगों पर गुमराही का इत्तेहाम लगाते हैं जो उस तरीके के नुक्स और खराबियों को खासओआम पर ज़ाहिर करने की कोशिश करते हैं। मैं बेखौफ हो उस तरीक़े के नतायज को जैसे कि वे वाक़ई पाये जाते हैं बयान करता हूं। खास कर झूठी शहादत देनें के बारे में जो जो खराबियां सुनने और देखने में आती हैं उनके ज़ाहिर होने के साथही इनसान की रूहें कांप जाती और हैरत में पड़ जाती हैं। मेरे नाज़रीन यह न

ख्याल करें कि यह शिकायत करनी मेरी खुदगर्ज़ी से है ख़्वाह इस वजह से है कि मैं तरीके हनूद के बखिलाफ हूं क्योंकि वे मेरे रग़बतदिली के बरअक्स हैं और न मेरी यह ख़्वाहिश है कि यहां के लोग अंगरेज़ी तरीके को अख़्तियार कर लेवें बल्कि मैंने अपना फ़र्ज़ मनसबी ख्याल कर यहां के क़वानीन और इन्तज़ाम मुलकी से बखूबी वाकफियत हासिल की है और चूंकि मैं हिन्दुस्तानियों के मुखतलिफ तरीकों से वाक़िफ हूं इस वजह से ऐसी राय इस बारे में दी है॥

तेइसवां पर्व्व।

एक शिकस्तः हाल नवाब साहब।

इस बयान में मैं मिर्ज़ा बदनसीबबेग नाम के एक नवाब साहब के हालात दर्दनाक बयान करता हूं। इब्तिदाय तफ़ूलियत से नवाब मिर्ज़ा बदनसीब बेग की परवरिश गोया ऐशोइशरत के गोदही में की गई थी जब इन्होंने कुछ होशोहवास संभाला तबही से फ़ज़ूलखर्ची और ऐयाशी के आसार नमूदार होने लगे। जिस वक्त उनके वालिद को इस अम्रकीखबर हुई तो वे इन दोनों तबाह करनेवाली बदख-

सलतों के रोकने की तदबीर सोचने लगे। आखरश उनकी राय इस बात पर क़रार पाई कि इस तिफ़्ल नातजर्बः कार ज़माना व दुनिया की शादी मैं बहुत जल्द कर दूं। जब यह खानःदारी में फँस जायगा तो फिर ऐयाशी क्यों करैगा। पस उनके वालिद ने चौदह बर्ष के सिन ही में बदनसीबबेग का निकाह करा दिया। लेकिन नतीजा इस कार्रवाई का खराब ज़हूर में आया। जो उन्हों ने ख्याल किया था उसके बरअक्स वाक़यात पेश नज़र हुये। जब तक बदनसीब बेग अपनी बीबी ग़फलत्तुलनिसाबेगम को मेहरबानी और शफक़त की नज़र से देखते थे तब तक वह भी सैकड़ों तरह से अपने शौहर की खिदमात अज़ खुद बजा लाती रही याने उन ख्वाहिशों को पेशतर इस के कि ज़ाहिर की जायं पूरी कर देती, उनके माल औ असबाब की कमाहक़्हू हिफाज़त करती, अगर घर वाले उसके शौहर की शिकायत करते तो उनसे वह लड़ पड़ती थी मगर थोड़े अरसे के बाद नबाब बदनसीबबेग अपनी बीबी मनकूहः से दिलकशीदः हो परहेज़ करने लगे। जब मोहब्बत का मुआवेज़ः लापरवाही से दिया जाता है तबही से शजरेमोहब्बत पज़मुर्दः होने लगता है क्योंकि उसको सरसब्ज़ रखने वाला आबेरहम्मत मयस्सर नहीं आता है इस लिये वह अज़खुद कमज़ोर हो कर र-

फते २ खुश्क होनेलगता है। अभी शादी हुये सिर्फ एक वर्ष का ज़माना गुज़रा था कि बेगम गफलत्तुलनिसा को एक छोटा सा खूबसूरत लड़का पैदा हुआ। बुड्ढी दाई ने उस बच्चे को लेजा कर नवाब बदनशोबबेग को दिखलाया, यह दाई बेगम के साथ उनके मैके से आई थी। बच्चे को देख नवाबसाहब ने कहा "यह बड़ाही बदसूरत बन्दर का छोटा सा बच्चा है मेरी सूरत इस से बिलकुल नहीं मिलती मैं हरगिज़ येतबार नहीं कर सकता हूं कि यह मेराही लड़का है"। उस दाई ने जाकर बेगम से तमाम सरगुज़श्त ज्यों की त्यों बयान की बेगमसाहबः यह बात सुनकर बड़ी अफसुर्दः हो कहने लगीं कि नवाबसाहबने जो मेरे बच्चे के बारेमें ऐसी खराब बात कही है उससे मेरे असमत में बड़ा भारी धब्बा लगता है ऐसा उनको कहना मुनासिब न था। इस्के सिवाय उनकी ऐसी हरकत से साफ ज़ाहिर होताहै कि उन्होंनेकिसीऔरतसे मोहब्बत नाजायज़ की है। पस उन्होंने कई भेदिये मोकर्रर किये। उनलोगोंने खुफिय पता लगाना शुरू किया और बेगमसाहबः से आकर खबर की कि नवाब साहब एक तवायफ के दामेमोहब्बत में गिरफ़ार हैं जिस्का नाम उमदाचेहराजान है जो हालहोमें सुबे अवध से वारिद हुई है। यह तवायफ बड़ीही खूबसूरत है यहां तक कि वह खूबसूर्ती में अपनी सानी नहीं रखती है। बेगमसाहबः

ने कहा कि तबही तो उसने नवाबसाहब के सीधेसादे दिल को ऐसी आसानी से अपने अख़्तियार में कर लिया है। उम्दाचेहराजान साबिक में एक महाजन के पास थी जो उसको सौ रुपया माहवारी देता था। नवाब के नौजवान दोस्तों में से एक ने इस तवायफ को देख लिया था। उसने आकर नवाब से उसकी खूबसूरती को बड़ी तारीफ की। उस वक्त से नवाबसाहब ने इस नौजवान खूबसूरत औरत को अपने क़ब्ज़े में लाने का मज़बूत इरादा कर लिया था। कई दल्लाल: बुढ़ियाओं को उसके पास भेज कर कहलाया कि नवाब साहब तुमको बड़े आराम से रखेंगे और २००, माहवारी देवेंगे। नतीजा अखीर यह हुआ कि एक महीने के अरसे में उम्दाचेहराजान नवाब की रखेल बन बैठी। उस महाजन का नाम बेवकूफराय था जो उस तवायफ को सौ रुपये माहवारी पर रखे था। नवाब बदनसीब बेग से और बेवकूफराय महाजन से बड़े २ दंगे फसाद हुये। क्या इलाके के थानेदार और कांसटेबिलान ने ऐसे मुनफ़अत के मौकों को हाथ से जाने दिया होगा ? क्या वे ग़ाफ़िल सोते रहे होंगे !' हरगिज़ नहीं। अगर नवाब साहब फसाद पैदा होने के पेश्तरही अपनी बेगम के पास जाते और इस तरह समझा कर कहते कि हमने यह कोई नई बात नहीं की कि रखेल रख ली हमारे हमकौम में शाज़ना-

दिर कोई ऐसा होगा जो ऐसा न करता होगा । सौ में निन्नानबे ऐसे हैं जो रखैल रख लेते हैं । अगर हमने रखैल रख लिया तो इसमें तुम्हारा क्या नुकसान किया । हमारा जो फर्ज़ ब्याहुता के साथ करने का है उसको हम हरगिज़ फरामोश न करेंगे और तुम्हारी खातिरदारी हम मिस्ल साबिक बल्कि उससे भी ज़ियादा करेंगे। तुमको किसी बात का अन्देशः नहीं करना चाहिये। अगर नवाब साहब इस तरह बेगमको समझा दिये होते तो फसाद बढ़ने क्यों पाता और उन पर ऐसी भारी आफत क्यों आती जैसी उन पर आ गई जिसका खुलासा हाल इस बयान के अखीर में ज़ाहिर होगा।

गुरूर नवाब साहब की तबाही का खास बाइस हुआ इसी ने उनसे ज़बर्दस्ती जो काम नहीं करना चाहता था वह करा दिया। यह उनकी तक़दीर में लिखा था कि अपने हाथों से अपना बना बनाया घर बरबाद कर देवें ताकि उनकी शर्मिन्दगी और सख़्तियां तमाम ज़िले में ज़ाहिर हो जावें।

बेगमसाहबःने अपने वालिद को बुलाभेजा और उनसेकुल हालात मोफस्सिल बयान करके कहा कि अब मैं नवाब साहब का ज़ुल्म बर्दाश्त नहीं कर सकती हूं। उधर नवाब

साहब की ऐयाशी रोज़बरोज़ बढ़ती जाती थी जब उनके दोस्त उनको कहते कि बेगम साहब: को आप राज़ी कीजिये तो वे इस तरह जवाब देते कि मैं उस कम्बख़्त की सूरत देखना नहीं चाहता हूं वह मेरी जानीदुश्मन है। मैं दुश्मनों के गरोह से मोकाबिल: करने को तैयार हूं मगर उसकी मनहूस सूरत से गुरेज़ करता हूं।"

बेगम को सिर्फ़ अपने छोटे बच्चे की मोहब्बत थी उनके ज़िन्दगी का एक वही सहारा था और तो जुमल: सामान मुसीबत का नवाबसाहबने उनके लिये मोहैया करही दिया था। वे कभी२ अपने रिश्तेदारों से उस वक़्त का ज़िक्र किया करती थीं जब कि नवाब साहब का मिज़ाज ऐसा ख़राब नहीं हुआ था और वे उनके साथ मेहरबानी और मोहब्बत से पेश आते थे। अगर नवाब साहब का कोई सच्चा दोस्त होता तो बेगम से मेल हो जाना बहुतही आसान था लेकिन उनके जितने दोस्त थे वे सब के सब उनके बदख़्वाह और उनकी तबाही चाहनेवाले थे। जब मामिला बहुत तूल खिंच गया तब नवाब साहब को गुज़श्त: बातें याद आने लगीं। क़ित:कलाम यहकि नवाब साहब के दिल में उनकी बेगम और फ़रज़न्द की मोहब्बत का जोश पूरे तौर से हुआ मगर मजबूर थे उनके दोस्तों मेंसे कोई ऐसा न था जो इस मुसीबत के वक़्त में

उनकी मदद करता। बेगमसाहब: को नवाबसाहब की तरफ से बड़ी नफरत हो गई वे इनको भारी मक्कार समझने लगीं नतीजा आखीर यह हुआ कि उन्होंने नवाबसाहब पर एकलाख का दावा अपने महर का अदालत दीवानीमें दायर करही दिया। अदालत इब्तिदाई से बेगमसाहब: मोकद्दम जीत गईं उस पर नवाबसाहब ने अदालत आलिय: में अपील दायर की फिरभी बेगमसाहब: फतेहयाबहुईं। जब तक मोकद्दम: ज़ेरतज़वीज़ अदालत था नवाब साहब की जानिब से कई बातें खिलाफ इनसानियत के की गईं। वे इस बात को खूब जानते थे कि बेगम का कोई रिश्तेदार मर्द बजुज़ उनके कमज़ोर ज़ईफ बाप के उनकी हिफाजत करनेकेलिये मौजूद नहीं हैं। वेअलगहोअलगरहते मगर चंद रज़ील आदमियों को रुपया देकरउनकोहरतरहकीतकलीफ दिलाते थे उनकी बदनामी की ग़ज़लें उस गली में गवाते जहां बेगमका मकान वाकअ था। बेशर्मी की तसवीरें उनके मकान के फाटकपर चिपकवादेते या उनके पास डांक के ज़रिये से भारी बैरंग लिफाफोंमें भेजवादेते थे। बेगम उन लिफाफों को समझतीं कि इनमें ज़रूरी अदालत के कागज़ात बन्द कर के उनके वकील ने भेजे हैं महसूल देकर ले लेतीं, खोलने पर फोहश तसवीरें पातीं। रातको उनके मकान में पत्थर और ईंटे पड़तीं। जब बेगम बहुत तंग

हुईं तब उन्होंने थानेदार को बुला भेजा थानेदार ने उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया। मुझको उसी हलके में तायनात किया जहां बेगमसाहब: रहती थीं और चूंकि मैं उनका हम मज़हब था इस लिये उन्होंने हुक्म दिया कि मैं उनके मकान पर दस बजे दिन को और शाम को खाना खा लिया करूं इसके अलावह ५) माहवारी भी मोकर्रर कर दिया। एक रात को मैं बड़ी मुस्तैदी से पता लगाता रहा कि ढेले किधर से आतेहैं और चूंकि बेगमने फेकनेवाले को गिरफ़्तार करने के लिये ईनाम देने का यक़रार भी किया था इस वजह से मैंने एक शराबी कलवार को पकड़ लिया और उसकोथाने कोलेगया उधरबेगमसाहब:कोइत्तिला कर दी कि मैंने एक मुजरिम को पत्थर फेकते गिरफ़्तार किया है इस पर बेगम ने एक लौंडो को मेरे पास भेज करकहलाभेजा कि बेगमसाहब:तुम्हारी इसकार्रवाई से बहुत खुश हुईं और अगर थानेदार उस मुजरिम को चालान कर देवेंगे तो वे बड़ी यहसानमन्द होंगी। थानेदार ने जवाब में कहला भेजा कि ऐसा मूज़ी जिसने बेगमसाहब: को तंग करने की हमाक़त की है हरगिज़ बग़ैर सज़ा पाये बच नहीं सकता है और बावजूदे की उनको ५०) मुलज़िम को छोड़ देने के लिये मिलते थे मगर उन्होंने न छोड़ा। अगर ५००) मिलते तो भी वे उसको न छोड़ते।

उस कलवार की चालान दफा३४ एक्ट५ बाबत सन्१८६२ ई० के मुताबिक़ यानि शराब पीकर बदमस्त होने और अवाम को तक़लीफ पहुंचाने का जुर्म लगा कर की गई और थानेदार ने मज़मून ज़ैल की कैफियत लिख कर अदालत मे इरसाल की:—

"हलक़े के कांस्टेब्लान इस बात की रपोर्ट बराबर करते आते हैं कि यहां शराबख्वारी रोज़ बरोज़ तरक्की पर होती जाती है। उन को अपने कारहाय मनसबी चौकी पहरे को छोड़ इन्हीं शराबियों की निगहबानी करनी पड़ती है। अगर हजूर इस थाने के रजेस्टर जुर्महाय को मुलाहिज़ा फर्मावेंगे तो वाज़ेह होगा कि माहरवां में ५ मोक़द्दमे इस क़िस्म के हो चुके। मोक़द्दम: हाज़ा में अगर कांस्टेब्ल हलक़: वहां मौजूद न होता तो दो अंगरेज के लड़कों की जानें मुफ़ में ज़ाय: हो जातीं। वे लड़के एक खुली हुई गाड़ी में सवार होकर चले जाते थे यह शराबी आदमी एक गली से एकबारगी खौफनाक तौर से शोरोगुल करता हुआ निकल पड़ा जिससे दोनों टट्टू ऐसे भड़के कि मुश्किल से रोके जा सके। लिहाज़ा फिदवी उम्मेदवार है कि इस शराबी को सख़्त सज़ा हजूरबाला से फर्माई जावे।"

कलवार मज़कूर ने जएट साहब के रूबरो यकबाल

किया कि मैं उस वक्त शराब के नशे में बदहोश थो अपने तन बदन की कुछ भो खबर नहीं रखता था । उस पर जण्ट साहब ने २५/ जरबाना दोनों जुर्मों में किया याने शराब पीकर बदमस्त होने और गाड़ी के टट्टुओं को भड़का देने के लिये उसको यह सज़ा तजबीज की गई । इस अम्र की इत्तिला बेगम साहब: को वाजिब तौर से की गई और यह कहा गया कि हाकिम उस कमबख्त़ को ज़रूरही जेल में भेज देते मगर आपके हमसायों ने आपकी जानिब से शहादत देने से इनकार कर दिया । बेगम साहब: को यह भो कामिल तौर से येतकाद दिलाया गया कि बजुज़ पुलिस के और हरएक शख्स उनका दुश्मन हो रहा है सिर्फ पुलिस उनका दोस्त है। थानेदार को ५०/ रुपये नज़राने में मिले और मुझको दस रुपये को एक मोहर सोने की मिली ।

नवाब साहब को गुजश्त: बातें याद आने लगीं । गुज़श्त: बातें ख्वाह वे अच्छी हों या खराब जरूरही एक न एक रोज़ याद आती हैं और साथही इसके उनके नतायज भी ज़हूर में आते हैं। नवाब साहब जिस ज़माने में दौलतमन्द थे तब लोग कहते थे कि वे दौलत से जो चाहें कर सकते हैं लेकिन वादहू उनको यह तसलीम कर लेनाही पड़ा कि दौलत से बहुत कम असली बातें हासिल हो

सकती हैं। जबतक आदमी के पास दौलत रहती है उसके यहां तबतक खुशामदियों की भी हजूम रहती है दौलत के जातेही उनकी सूरत भी नज़र नहीं आती है। झूठी मोहब्बत को भी दौलत खरीद सकती है जिस तरह उम्दा वेहराजान की लेकिन सच्चे दिल को यह किसी तरह अपने अख़्तियार में नहीं कर सकती।

बेगमसाहब: ने अपनी अदालत दीवानी की अता की हुई डिगरी को जारी कराया और बिचारे नवाब साहब की तबाही अच्छी तरह से आ गई। वे अपने चचाज़ाद भाई के यहां जाकर रोटियां तोड़ने लगे। बिचारे की हालत तबाही में उनके बेशुमार दोस्तों में से एक भी ऐसा शरीफ न निकला जो उनकी मुसीबतों में उनकी इमदाद करता और हाथ बढ़ाकर उनकी दस्तगीरी करता और कहता कि "आप की यह खराब हालत सिर्फ आप की बेसमझी के वजह से हुई है। मैं जानता हूं कि ऐसी हालत में इस वक्त आपकी इमदाद कोई शख़्स नहीं करता है और न आपका कोई एतबारही करेगा ताहम् मैं आपको मदद देने को तैयार हूं ताकि आपको इस मुसीबत से नजात मिले।" अगर नवाब साहब को ऐसा सच्चा दोस्त मिला होता तो उनको ऐसी खराब हालत हर्गिज़ न होती। यह उनकी खुशकिसमती थी कि यह महर का

मोकद्दमा गफलत्तुलनिसा बेगम ब नाम नवाब मिर्ज़ा बद-नसीबबेग ऐसी अदालत इब्तेदाई में दायर किया गया जिसके हाकिम एक मुसलमान सदरआला साहब (मात-हत जज) थे। बहुत से लोगों का इस बारे में यह ख्याल था कि नवाब साहब की जायदाद ग़ैरमनकूल: पर कुर्क़ी किसी तरह हो नहीं सक्ती क्योंकि किसी मुल्क में जहां मुसलमान जाकर बस गये हैं अदालत को महर दिला पाने के मोकद्दमों में ज़मीन और मकानात पर कुर्क़ी करने का मजाज़ नहीं है। वे यह भी कहते थे कि अगर अदालत जायदाद ग़ैरमनकूल: को क़ानूनन् कुर्क़ कर दे ताहम् अदालत को चाहिये कि कुल जायदाद पर डिगरी न देवे निस्फ़ हिस्सा उसका उस बदनसीब खसम की औक़ातबसरी के लिये छोड़ देवे। मैं पेश्तर कह चुका हूं कि खुशक़िस्मती से यह मोकद्दमा मुसलमान हाकिम के इजलास में पेश किया गया जो बड़े ज़ीइल्म थे। उन्होंने बेगम साहब: के हक़ में डिगरी दी। इधर मुसलमानों ने बड़ा शोरोगुल मचाया जो सिर्फ़ ज़बानी जमा खर्च था। उनमें से जो बढ़बढ़ के बातें कहते थे एक ने भी चन्दा जमा करने और उसी ज़रेमज़मूअ से मल्कामोअज़्ज़मअ की प्रिवी कौन्सिल में अपील दायर करने की सलाह न दी और न कोई इस कारेखैर को अञ्जाम देने पर मुस्तैदहो हुआ सिर्फ़

ज़बानी हमदर्दी करने को जी मरे जाते थे। आफ़ताब ग़-रूब होने के बाद नवाब साहब के मकान पर मुसलमानों की बड़ी भीड़ होती थी। थानेदार को भी यह अच्छा मौक़ा फ़ायदा उठाने का हाथ लगा। एक रात को वे ८ और ९ बजे के दर्मियान उनपर जा टूटे और डांट बताकर कहा "हैं रात के वक्त ऐसा जमावड़ा करना बिलकुल कानून के खिलाफ है। हम इसकी रपोर्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब और मजिस्ट्रेट साहब के यहां ज़रूर कर देंगे।" वे समझते थे कि एक क़ौम के इतने लोगों के एक जगह जमा होने से वहाबियों की बग़ावत की तरह कोई भारी फ़साद बर्पा न हो जावे। जिस ज़माने का हाल मैं बयान कर रहा हूं उस ज़मान: में अंगरेज़ी अखबारवालों ने इस नये फ़िर्क़े के बारे में बड़ी धूम मचा रक्खी थी और पुलिस भी उनकी जुस्तजू में रहती थी। थानेदार ने यह डांट सिर्फ़ ज़बानीही नहीं बतलाई बल्कि ज़ाब्ते की कार्रवाई भी शुरू कर दी "खबरदार तुम लोगों में से एक आदमी भी यहां से टले नहीं हम तुम लोगों के नाम की फ़िहरिस्त अभी बनाते हैं।" वे खौफ़ में आगये और उनमें से बहुतों ने थानेदार से आर्ज़ू व मिन्नत की कि उनका नाम फ़िह-रिस्त में मुन्दर्ज न किया जावे। थानेदार ने जवाब दिया कि मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि वे जिनका नाम

फिहरिस्त में मुन्दर्ज किया जायगा ज़रूर इस तरफदारी के बारे में दर्ख्वास्त देंगे और मेरी नौकरी पर ज़वाल आ जायगा। इस पर उन लोगों ने सौ रुपये चन्दा करके मोहैया किये और थानेदार के सामने लाकर रख दिये जिस में से ६०) थानेदार ने लिया और बाकी ४०) उन चार कांसटेबों को दिया जो उनके हमराह फसाद दफा करने गये थे। जिस वक्त थानेदार थाने को वापस आये उन्होंने रोज़नामचे में लिख दिया कि मोहल्ला गुलगुला में दंगा फसाद होने का सामान हो रहा था इसकी खबर मुझको मिलतेही मैं फौरन् वहां पहुंचा मगर मेरे आने की खबर उन फसाद बर्पा करनेवालों को ज्योंही मिली वे चुपचाप वहां से चले गये।

चौबीसवाँ पर्ब्ब।

मोहकमः पुलिस का अन्दरूनी इन्तज़ाम और दीगर स्वासिले।

जब कांसटब्लान को कोई अम्रद ज़रूरी काम मकान पर जाने का दर्पेश होता है ख्वाह उनके मकान से ऐसे तकाज़े के खतूत मुतवातिर आते हैं कि तुम जिस तरह बन पड़े फौरन् मकान पर चले आओ तुम्हारे न आने से

बड़ा भारी नुक़्सान हो रहा है। तब वे दो हफ़ते की रेआयती रुख़सत की दर्ख़्वास्त देते हैं लेकिन अकसर औक़ात ग़ैरहाज़िर होनेवालों का शुमार हद मोकर्ररह से ज़ायद हो जाती है ऐसी सूरत में सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब "फ़िलहाल नामञ्ज़ूर" का हुक्म अमूमन् सादिर फ़र्मा देते हैं। ऐसी मजबूरी की हालत में कांसटब्ल्यान को बीमारी का हीला करना पड़ता है तब वे पुलिस अस्पताल को भेजे जाते हैं वहां हिन्दुस्तानी डाक्टर साहब उनको बहुत कुछ आराम देते हैं और उन पर नज़र मेहरबानी की रखते हैं, मैं अपने एक हमवत्न कांसटेब्ल का हाल बयान करता हूं। चूंकि उसके मौज़े में बन्दोबस्त का काम जारी था उसकी बेवः मां ने उसके पास एक बड़ाही ज़रूरी ख़त लिखा कर भेजा जिसमें मज़मून ज़ैल लिखाकर उसको मकान पर बुलाया:—

"हमलोगों की जायदाद जिसको तुम्हारे पुर्खे ज़माना क़दीम से अपने क़ब्ज़े में रखते आये अब हमलोगों के हाथ से निकला चाहती है। तुम्हारे छोटे भाई लोग बिलकुल तिफ़्लनातजर्बःकार हैं इस बारे में वे कुछ करने लायक़ हुई नहीं है इसलिये तुम ख़त देखतेही चले आओ अगर खाना वहां खा रहे हो तो हाथ यहीं आकर धोना आने में ज़रा भी देर न करना।"

चूंकि उस कांसटेबु को रुखसत मंजूर होने की कोई भी उम्मेद न थी इसलिये वह अपनी बीमारी की रपोर्ट देकर असपताल में जा पहुंचा और हिन्दुस्तानी डाक्टर से बड़ी आर्जू मिन्नत करके मकान जाने की इजाज़त मांगी। उन्होंने वादा किया कि हम तुम्हारे बारे में डाक्टर साहब बहादुर से ज़रूर सिफारश कर देंगे। उस कांसटेबु ने उनको १) नज़र देकर अर्ज़ किया कि आप मेरे लिये रुखसत रिआयती मंजूर करा देवें क्योंकि बीमारी की रुखसत अगर मंजूर होगी तो मुझे एक कौड़ी तनख्वाह न मिलैगी, मेरी कुल तनख्वाह येवज़ की दे दी जायगी। हिन्दुस्तानी डाक्टर ने कोशिश करके उसके लिये १५ योम की रुखसत रिआयती मंजूर करा दी जिससे उसको २॥) की बचत हो गई क्योंकि आधे महीने की तनख्वाह २॥) होते हैं सिर्फ १) खर्च करके उसने २॥) बचालिये जो उसने रेल के किराये और दीगर ज़ादराह में सर्फ किये। ऐसेही ढंग से हमलोग अपने मकान पर चले जाते थे। जब हमलोगों की रुखसत नामंजूर कर दी जाती थी ख्वाह उसके मंजूर होने की जब हमलोगों को कोई उम्मेद बाकी नहीं रहती थी उस वक्त हमलोग यही कार्रवाई अमल में लाते थे। नेटिव डाक्टर हमलोगों पर इसी तरह

यहसान करते थे लेकिन कभी उनको गिरफ़्त हो जाने का यह्तमाल नहीं होता था। डाक्टर साहब बहादुर अस-पताल का मोआइन: करने ज़रूर आते थे मगर वे सिर्फ़ भारी बीमारियों में नुसखा लिखते थे ख़्वाह जिस किसीका ज़हरबाद या फोड़ा वगैरह चीरना होता था तो वे अपने हाथ से चीरते थे अक्सर अवक़ात नेटिव डाक्टर का २३ बरस का तजर्बः ज़ियादा लिहाज़ किया जाता था। म-रीज़ों का हफ़तेवार नक़्शा नेटिव डाक्टरही तैयार करते थे, डाक्टर साहब बहादुर सिर्फ़ इस क़दर ज़रूर पूछ लेते थे कि क्या यह नक़्शा ठीक है इसके जवाब में नेटिव डा-क्टर कहते थे कि "जी हुजूर बहुत ठीक है" बादहू डाक्टर साहब बहादुर उस नक़्शे पर दस्तखत कर देते थे और तब वह अफ़सरआला की खिदमत में इरसाल किया जाता था।

दीगर म्वामिला जिसका ज़िक्र मैं इस बाब में करूंगा हमलोगों का सालाना मोआयन: है। मोआइने के वक्त बिचारे जंगी पुलिस के कांसटेब्लान की जान को आफत आ जाती है जो जंगी क़वायद से बख़ूबी वाक़िफ़ होते हैं, जब किसी मोआयन: करनेवाले अफ़सर की आमद की खबर सुपरिण्टेण्डण्ट साहब को मालूम होती है तो वे जा-नतेही हैं कि अव्वल मोआयन: रिज़र्व पुलिस के कांसटेब-

लान का होगा इसलिये वे तमाम थानेजात से जंगी पुलिस के कांसटेब्लान को जो बहुत उम्दः क़वायद जानते हैं तलब करते हैं। अफ़सर मोआइनः कुनिन्दः की आमद हुई जंगी पुलिस के कांसटेब्लान की परेड उनके सामने बग़र्ज़ मोआइनः खड़ी की गई। सुबह इनका मोआइनः करा दिया गया तीसरे पहर जेल और खज़ानः गारदों का मोआयनः कराया गया इनमें उन्हीं कांसटेब्लान की परेड खड़ी करा दी गई जिनका मोआइनः रिज़र्व पुलिस में पेशतर करा दिया गया था मगर अफ़सर मोआयनः कुनिन्दः को इस धोखेबाज़ी का हाल कुछ भी न मालूम हुआ। दूसरे दिन सुबह को वे शहर की कोतवाली का मुलाहिज़ः करने गये वहां भी वही धोखेबाज़ी की गई और रिज़र्व पुलिस के वे कांसटेब्लान भेजे गये जिनका मोआइनः जेल और खज़ाने के गारदों में नहीं हुआ था एक मौक़े पर अफ़सर मोआइनः कुनिन्दः ने मोआयनः की रपोर्ट में इस मज़मून की कैफ़ियत तहरीर फ़र्माई "मग़र्बी शिमाली में सब से उम्दः कवायद जाननेवाली पुलिस।"

इन्सपेक्टर जेनरल बहादुर अपने डिप्टी साहब को इस अम्र की रपोर्ट इरसाल करनेकेलिये हुक्म सादिर फ़र्माते हैं कि साल गुज़श्तः में कितने मोक़द्दमात में सुपरिन्टेंडेंट

साहब ने खुद जाकर तहक़ीक़ात की है और उन मोकद्दमात में नतीजा अखीर क्या हुआ ? एक साहब थे जो इस किस्म की धोखेबाज़ी अमल में लाते थे। सिर्फ इन्हींको मैंने ऐसा करते सुना है। याने हर साल वे अनक़रीब २० मोकद्दमों में मौके माजरे पर तहक़ीक़ात के लिये जाते थे मगर जिन मोकद्दमों में कामयाबी होती थी उनकी निसबत वे मज़मून ज़ैल की कैफियत थाने के रोज़नामचे में लिखवा देते थे:—

'फलां तारीख और फलां वक्तपर सुपरिण्टेण्डेण्टसाहब फलां मोकद्दमे में जिसमें फलां जुर्म मिनजानिब फलां शिकायतकुनिन्द: लगाया गया था इलाके हाजा में बग़ज़ं तहक़ीक़ात तशरीफ लाये और बाद तहक़ीक़ात सदर ष्टेशन को वापस तशरीफ ले गये।"

दरहक़ीक़त उन मोकद्दमात में यह कैफियत मुन्दर्ज नहीं की जाती थी जिनमें मुजरिमों का पता नहीं लगता था और जिस वक्त अफसर मोआइन: कुनिन्द: सालाना दौरे पर आते थे तो सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब नक्श: ज़ैल इत्तलाअन पेश करते थे:—

जुर्म।	शुमार मोकद्दमात।	शुमार अशखास जो इर्तिकाब जुर्म में मुश्तबह हुये।	शु०अशखास जो गिरफ़ार कियेगये और अदालत को वास्ते इंसाफ के भेजे गये।	शु०अ०जो सज़ापाये	शु०अशखासरेहाशुद:	मालियतमाल मसरूक:। रु०	आ	पा	मालियतमाल वसूलशुद:। रु०	आ	पा
राहज़नी।	२	१२	११	१०	१	४५०	६	६	४११	४	३
डाक:ज़नी।	१	२०	१८	१७	१	२०००	—	—	१९९०	०	०
नक़बज़नीऔर सरक़:।	३	१०	१०	१०	०	१७५०	३	९	१६८५	०	०
ज़हरखोरानी।	१	२	२	२	०	४५	०	०	५५	०	०
राहज़नी डाक	१	२	२	२	०	५	८	६	५	४	६
मीज़ान।	८	४६	४३	४१	२	४२६१	२	९	४१४६	८	९

मगर वाक़ियात वाक़ई ये थे कि ८ में से ६ मोकद्दमात में पुलिस ष्टेशन के मुलाज़िमान ने जिस इलाके में जुर्महाय मुन्दर्जः नक़्शः हाज़ा वाक़अ हुये थे मुजरिमान को गिरफ़ारी करके माल बरामद करलिया था मगर सुपरिण्टेण्डण्टसाहब हंगाम तहक़ीक़ात जायमाजरे पर पहुंचे और मोकद्दमात की कारगुज़ारी अपनेही नाम कराली जो वाजिबन् उनके मातहतान ने की थी। यह कहो कि उन्होंने अमूर वाक़ई को ज़ाहिर क्यों नहीं कर दिया इस बात का सबूत काफ़ी रखता है कि जो लोग ऐसा कहते हैं वे हिन्दुस्तानियों की चालचलन से बख़ूबी वाक़िफ़ नहीं हैं। मैं पूछता हूं कि कौन ऐसा हिन्दुस्तानी होगा जो अपने अफ़सर बालादस्त के खिलाफ़ कहने की हिम्मत करेगा क्योंकि वे ऐयाम तफ़ूलियत से 'जो हुक्म" कहने के आदी हो रहे हैं मोखालिफ़त करना उनके खमीर मेंही नहीं है। अगर हरएक मोकद्दमा जिसमें साहब बहादुर ने तहक़ीक़ात की थी नक़्शःहाज़ा में मुन्दर्ज किया जाता तो नतीजः औरही ज़हूर में आता और अफ़सर मोआयनः कुनिन्दः को सहीह सहीह मालूम हो जाता कि दरअस्ल सुपरिंटेंडेंट साहब की कोई कारगुज़ारी हुई है या नहीं।

बाज़ औक़ात मजिस्ट्रेटी से (क़सदन् नहीं) हमलोगों की जेबों में रुपया रख दिया जाता है। दफ़ः ३४ पुलिस

ऐक्ट की मन्शा यह है कि जो आदमी मोक़ामात मम-नूअ में ख़्वाह कचहरी के इर्द गिर्द हाजत ज़रूरी रफ़ा क-रते गिरफ़्तार हों उनकी चालान फ़ौरन् की जावे। यह बात तो ज़ाहिरही है कि कचहरी के क़रीब कोई पेशाब-खाना सर्कारी तो बनाही नहीं रहता पस ऐसी सूरत में कितने लोग इस दफ़ा के खेलाफ़ अमल करते हुये प-कड़े जा सकते हैं मगर जितने आदमी इस जुर्म के इर्ति-काब में पकड़े जाते हैं क्या उन सभों की चालान की जाती है? हरगिज़ नहीं। उनमें से बहुत लोग कांसटेबल गिरफ़्तार कुनिन्दः के हाथ में आहिस्ते से दो आने रख देते हैं और वह उनको छोड़ देता है।

एक रोज़ मेरी तायनाती किसी मौज़े में की गई। मैं वहां पहुंचा मगर क़ब्ल इसके कि मेरा काम यखतेताम को पहुंचे रात हो गई पस मैं वहीं एक ज़िमीदार की दा-लान में रात गुज़ारने का क़स्द करके ठहर गया। उस मौज़े के कई आदमी उस दालान में आकर बैठे और अन-वाय यक़साम की बातें होने लगी उनमें से एक आदमी ने इस जदीद हुक्म के बारे में तज़किरः छेड़ दिया जिस पर एक बड़ी बुड्ढे ने हस्ब ज़ेल तफ़सीलवार बयान करना शुरू किया:—

"सर्कार बहादुर की ख़्वाहिश है कि कसरत से मोकद्दमात दायर न किये जायँ, इसके रोकने के लिये यह तदबीर तजवीज़ की गई कि रसूम स्टाम्प ईज़ाद करदिया जावे मगर जब ईज़ाद करने पर भी कसरत मोकदमात की साबिक़दस्तूर रही और ज़रा भी कमीज़हूर में न आई तब हुक्काम ज़िले को हिदायत की गई कि वे कोई दीगर तदबीर इससे ज़ियादा मोअस्सिर अमल में लावें। मैं इस ज़िले के हुक्काम की तेज़फहमी की तारीफ करता हूं कि उन्होंने यह बड़ी उम्द: तदबीर हमलोगों को अदालतों से भगादेने की निकाली। हमलोगों को अदालतों में बराबर दस बजे से लेकर तमाम दिन हाज़िर रहना ज़रूरी है वजह यह है कि कोई हाकिम ११ बजे कचहरी में पहुंचते है कोई दो बजे और कोई तीन बजे और वे ५ बजे शाम तक इजलास करते हैं बल्कि अन्धेरा हो जाने पर मोमबत्ती जलाने की भी नौबत आजाती है पस चूंकि मोकद्दमे की पेशी के लिये कोई वक़्त मोकर्रर तो रहताही नहीं मुद्दई और मुद्दालेह को ख़्वाहमख़्वाह जबतक हुक्काम इजलास से न उठ जावें बराबर हाज़िरही रहना पड़ता है ऐसी मजबूरी की हालत में अगर उनको हाजत ज़रूरी रफा करना हो तो वे क्या कर सकते हैं, दूर जाने से रहे क्योंकि मालूम नहीं कि कब उनकी पुकार हो अगर कचहरी के हाते भर में

कहीं बैठ कर पेशाब करने लगे तो फिर उनकी पूरी शामत आगई । इसी ताक में कांसटेब्लान लगेहो रहते हैं वे उनको फौरन गिरफतार कर लेते हैं अगर उनसे झाड़ झपटकर कुछ वसूल होगया तो बेहतर वरन हाकिम के रूबरू लेजाकर उन्हें जरबानः करा देते हैं। अब आपलोग इस हुक्म की ज़ियादतियों को खुद समझ लेवें मिस्ल आईने के साफ है। और नदी कचहरी से फासलः पर है अगर कोई दो या तीन मर्तबे नदी को जाकर अपनी हाजत ज़रूरी को रफा किया चाहै तो आध कोस जाने और आने में बड़ा वक्त सर्फ हो जावै ताहम हुक्काम क़रीब कचहरी के सर्कारी पाखाना या पेशाबखानः नहीं बनवा देते।"

कचहरी के पासही जराट साहब रहते थे उन्होंने इस बारे में हुक्म क़तई इजराफर्माया था । पस जिस कांसटेब्ल की नौकरी खास कर इसी बात की निगरानी करने को बोली जाती थी वह खुशी से जमादार को चार आने देता था क्योंकि इस नौकरी पर तायनात होने से उसको कई चार आने वसूल हो जाते थे। तुर्फ़ह माजरा तो यह था कि वे इस नाजायज़ रक़म को पेशगी दे देते थे। उनको तो इस बात का पूरा यक़ीन था कि इससे दहचन्द उनको वसूल हो रहैगा इसलिये उनको पेशगी देने में ज़रा भी पसोपेश नहीं होता था।

मैं इस बयान को एक दीगर तरीक़े को बयान करके खतम करूँगा। इस तरीक़े से हमलोगों को दो या तीन रुपये माहवारी की आमदनी हो जाती है। इस खफ़ीफ़ आमदनी का मौक़ः बवक़्त तक़र्ररी चौकीदारान् देहात के आता है याने जब किसी मौज़े में चौकीदार की तकर्ररी ज़रूरी मुतसौव्वर होती है तो थाने से एक कांष्टेबुल उस मौजे को भेजा जाता है जो वहां पहुंचकर ज़िमींदारान् को किसी शख्स को नामज़द करने के लिये हुक्म देता है। अगर उस मौजे की जिमींदारी ६ या ज़ायद हिस्सेदारान् के कब्ज़ोदखल में होती है जैसा कि अकसर औकात होता है तो चौकीदार के नामज़द करने में तकरार की नौबत ज़रूरही आ जाती है क्योंकि उन हिस्सेदारान् में से हर शख्स अपना खास आदमी मोकर्रर कराना चाहता है। ऐसे मौकों में थानेदार खुद मौजा मखसूस में जाते हैं और जो शख्स उन हिस्सेदारों में से रक़मकसीर बतौर नज़राने के देता है उसी का आदमी मोकर्रर किया जाता है। मगर अमूमन् इस नज़राने की रक़म ३/ मोकर्रर है जिसमें से एक रुपया थानेदार लेते हैं और एक रुपया दीवानजी को मिलता है बक़ीयः एक रुपया कांष्टेबुल हलक़ः को दिया जाता है। मगर जहां बन्दोबस्त मालगुज़ारी सर्कार का दवामी होता है वहां चौकीदार मोक़र्ररशुदः को मिन-

जानिब ज़िमींदार चार या पांच बिगहे खेत दे दिये जाते हैं और जो रुपया ज़िमींदार उसकी मोकर्ररी के लिये सर्फ करता है उसकी वसूली का बन्दोबस्त वह इस तरह पर करता है कि उन खेतों में से वह दो या तीन बिगहे एक साल के लिये चौकीदार मज़कूर के कब्जे से निकाल लेता है। जिन ज़िलों में तन्ख़्वाह चौकीदारान् को नक़द देने का दस्तूर है वहां निस्फ तन्ख़्वाह चौकीदार मोकर्ररशुद: को मिलती है और निस्फ जिमींदार बिल-एवज़ अपने रुपये के वसूल करता जाता है जो उसने चौकीदार की तकर्ररी के लिये सर्फ किये थे। यही वजह है कि चौकीदारान् अपने को जिमींदारान् के खास मुलाज़िम समझते हैं क्योंकि उनकी तकर्ररी जिमींदारों की सिफारशही पर मुनहसर है। इसमें कोई शक नहीं है कि यह तरीक़: तक़र्ररी चौकीदारान् जैसा सतूरबाला में बयान किया गया है बहुत ही खराब है और इसकी दुरुस्तगी जबतक मजिस्ट्रेट साहब ख़्वाह सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब खुद चौकीदारान् को मोकर्रर न करेंगे किसी नवअ से नहीं हो सक्ती है। अगर ज़िमींदारान् से निस्वत इस इन्तिज़ाम के कोई वास्त: व सरोकार न रक्खा जावे तो अलबत्त: इसकी दुरुस्तगी की उम्मेद की जा सक्ती है। हम कांष्टेबुलान की स्वाज़ियात में बहुत ज्यादा काम करना पड़ता है इस वजह से हमलोगों को वहां के हालात

की वाकफ़ियत कामिल तौर पर रहती है। बिचारे चौकीदारान् को मासेवाय इस्के कि ज़िमींदारान् मोखालिफ की बन्दिशों को बेकार करें किस क़दर ज्याद: काम करना पड़ता है? म्युनोसिपल चौकीदारान् को मोक़र्ररी मुताबिक मनशाय ऐक्ट २०बाबत सन् १८५६ ई०ख़्वाह ऐक्ट ६ बाबत सन् १८६४ ई० के बारे में भी मैं कुछ बयान किया चाहता हूं। ये जमादारों की मातहती में रक्खे जाते हैं और माहवारी तनख़्वाह इनको पांच से दस रुपये तक होती है। जिस वक़्त ये जमादारान् और चौकीदारान् जिस्मानी जाँच कराने के लिये भेजे जावें तो सुपरिण्टण्डण्टसाहब को उनसे यह बात ज़रूरदर्याफ़्त कर लेनी चाहिये कि आया वे मिञ्जानिबटैक्स देनेवालों के नामज़द किये गये हैं या मिञ्जानिब थानेदारान् के। मैं कई जमादारान् को जानता हूं जो थानेदारों के रिश्तेदार थे और चौकीदारान् उनके खास खिदमतगारान् या उनके हमवतन थे। दर अस्ल यह बड़ी भारी बुराई है इसके रोकने के लिये यह तदबीर अमल में लानी चाहिये कि जमादारान् और चौकीदारान् से सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब उनकी सकूनत दर्य्याफ़्त करें अगर वे अपनी सकूनत वही बतावें जो थानेदार की हो तो सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब को यक़ीन करना चाहिये कि वे मिञ्जानिब टैक्स देनेवालों के नामज़द नहीं किये गये हैं बल्कि मिञ्जानिब थानेदारान् के।

पचीसवाँ पर्व्व ।

लड़कियों को निकाल ले जाना ।

मुझको अपनी "डिटेक्टिव" की चालाकियों के दिखलाने का मौक़ा एक ऐसेही मोक़द्दमे में मिला जिसमें एक बदनीयत ब्राह्मण ने अपने एक ग़रीब हमक़ौम को फरेब दिया था । रूयदाद मोक़द्दमे की यह थी:—

गरीबमिश्र नाम का एक ज़ईफ ब्रह्मण था जो सूबे अवध में किसी अच्छे ब्राह्मण के खानदान में अपने पोते की शादी करना चाहता था । इसी ग़र्ज़ से उसने कई जगह बातचीत लगाई लेकिन कामयाबी न हुई क्योंकि अवध की औरतें अपनी लड़कियों को कब इतनी दूर भेजने के लिये राज़ी हो सकती हैं । उस सीधेसादे बुड्ढे ब्रह्मण ने जालसाज़ मिश्र नामी हमकौम से अपना दिली मतलब ज़ाहिर किया इस पर उसने वादा किया कि मैं तुमको तुम्हारे हसूल मतलब के लिये मदद दूंगा । जालसाज़ मिश्र को उस बुड्ढे ब्राह्मण ने दस रुपये ज़ादराह दिये और एक अच्छे योतिषी से उम्दा साइत बिचरवा कर तीन दिन के अन्दर उसको रवाना किया । डेढ़ महीने गुज़र जाने पर जालसाज़ मिश्र एक लड़की लेकर उस मौजे को वापस आया । उस लड़की की उम्र ७ वर्ष की थी । जालसाज़ मिश्र अहमक

मिश्र को भी अपने हमराह उस लड़की का फर्ज़ी बाप बनाकर लाया। उस मौजे के बहुत से ब्राह्मण जमअ़ हुये लड़की के बाप को २०) क़ीमत लड़की की देने का एक़रार किया गया बशर्तेकि वह दर्मियानी जालसाज़ मिश्र के हाथ का बनाया ख़्वाह कुआ हुआ खाना खा लेवे। जालसाज़ मिश्र ने इस बात को मञ्जूर किया और ग़रीबमिश्र से कहा कि मेरे लिये खाना उस फ़ाज़िल कोठरी में उसी लड़की के हाथ भेज दो। लड़की ने खाना वहां ले जाकर चौके में रख दिया। ऐसी कार्रवाई से जालसाज़मिश्र पर किसी बात का शक व शुबह: न हुआ और रुपये अहमक़मिश्र को दे दिये गये। दूसरे दिन सुबह के वक़्त वह अपने मौजे को वापस गया। हस्ब दस्तूर जालसाजमिश्र उसको पहुंचाने गया और जब दोनों आध कोस उस मौजे से निकल आये तब दोनों ने वह रुपये तक़सीम कर लिये और जालसाज़मिश्र अपने मकान को वापस आया। एक हफ़्ते के बाद ग़रीब मिश्र के खानदान के लोगों ने ख़्याल किया कि अब वह लड़की अपने जदीद मकान से ज़रूर राज़ी हो गई होगी इसलिये उन्होंने उसको अपनेही आदतों के मुताबिक च-लाना चाहा। चूंकि वह लड़की काफ़ी मज़बूत मेहनत तलब कामों के अञ्जाम देने के लिये न थी इसलिये औरतों ने खानेदारी के छोटे और हलके काम उससे लेना शुरू

किया मसलन् एक घड़े का पानी दूसरे घड़े में छोड़ना, रूई से बिनौलों को अलैहद: करना वगैरह वगैरह। मगर उस लड़की को ऐसे कामों के अञ्जाम देने का मोहावर: न था इसलिये वह चिढ़ती और रोती थी। एक रोज़ सुबह के वक़्त उससे कोई काम करने को कहा गया मगर वह जिस जगह बैठी थी बैठीही रह गई औरतों ने उसे बहुत कुछ समझाया पर उसने किसी की न सुनी ज़िद में आकर वहीं बैठी रह गई। औरतों ने जाकर इस बात की खबर ग़रीबमिश्र को दी। ग़रीबमिश्र नेकनीयत और रहमदिल आदमी था, उसने अपनी बीबी को हिदायत की कि वह उस लड़की से फुसलाकर पूछे कि जब वह अपने बाप के घर थी तो कौन २ सा काम करती थी और जब वह बतला देवे तो उससे वेही काम लिये जावें ताकि उसको तकलीफ़ न हो और खानेदारी के हलके कामों को खुशी से अञ्जाम देती रहे। बहुत देर तक समझाने और फुसलाने पर उस लड़की ने सिर्फ एक लफ्ज़ मुंह से निकाला "ताना बाना" याने कपड़ा बिनने का काम। उसके मुंह से यह लफ्ज़ निकलतेही तमाम मकान में "तुर्किन! तुर्किन!" की आवाज गूंज उठी। रफ़ते २ यह खबर एकै बा दीगरे उस मौजे में घर२ फैल गई यहां तक कि छोटे २ लड़के भी तोतली जबान से सयाने आदमियों

से कहने लगी 'गलीब मिसिर क घरो भर मुसुलमान होइ गये।" उस मौजे में लोग एक दूसरे से सवाल करते थे क्या यह बात सच है कि रिषेश्वर मनुजी महाराज के एक खानदानवाले ने गोमांस खानेवाली लड़की को अपने घर में रखकर अपने मकान को नापाक कर दिया ? अगर ग़रीबमिश्र के खानदान की औरतें इतना शोरोगुल न मचा देतीं और आहिस्ते से इस बात की खबर सिर्फ सर्दार मकान को कर देतीं तो इतना भारी बखेड़ा न उठता और न इस कदर जेरबारोही की नौबत आती जैसा कि इस बयान के नतीजः आखीर से जाहिर होगा। बजाय खामोश रहने के उन औरतों ने दूसरे म्वाज़ियात के रहनेवालों से जो अकसर उस मौजे में आया जाया करते थे इस खराब खबर को कहना शुरू किया यहां तक कि दो कोस के फासिले पर जितने म्वाजियात आबाद थे सबों में इस वाक़ग्र की खबर पहुंच गई और घर २ इस बात की चर्चा होने लगी। नतीजा आखीर यह हुआ कि गरीबमिश्र को मै उस्के खानदान के लोगों के सिर्फ उस्को बिरादरी के लोगों नेही नहीं बल्कि तमाम हिन्दुओं ने छोड दिया । ऐसी ज़लील हालत एक खानदानी ब्राह्मण के लिये कैसी रञ्ज की बात है याने शूद्र जो ब्रह्मा के पांव से पैदा हुये हैं वे भी गरीबमिश्र ख़्वाह उसके खानदानवालों के हाथ का छुवा हुआ पानी

नहीं प ते हैं क्योंकि वे सम ते हैं कि वह पानी उनके छूने से नापाक हो गया। ऐसी हिक़ारत की बात एक ब्राह्मण के लिये क्या कुछ कम रञ्जदेह है ?

हिन्दुओं के शास्त्रों में ब्राह्मणों के अख़्तियारात कामिल तौर पर महफ़ूज़ किये गये हैं इस बारे में जितने एहकामात उनमें मर्क़ूम हैं वे बहुतही साफ़ हैं जिनकी तामील दीगर अक़वाम हनूद पर महज़ लाज़िमी है । इस बात से साफ़ ज़ाहिर है कि हिन्दुओं के तरीक़ और मज़हब के क़ायम करनेवाले या तो देवता थे या खुद ब्राह्मणान । मगर अ-ख़्तियारात और हक़ूक़ ब्रह्मणान देवताओं के अख़्तियारात और हक़ूक़ से भी ज्यादःतर वसीय और अफ़ज़ल क़रार दिये गये हैं इसलिये हमको उनकी इज़्ज़त खालिक के बराबर करनी ज़रूर और अनसब है। उनकी इज़्ज़त आली मर्तबः और लाज़वाली मज़हब हनूद की जान है । जिस तरह आफ़ताब के गिर्द सितारे गर्दिश करते हैं और उसके ज़ेर हक़ूमत रहते हैं वैसेही दीगर अक़वामहनूद पर फ़र्मा-बर्दारी ब्रह्मणान की फ़र्ज़ है। बावजूदे कि और मुल्कों में भी पादड़ियों की इज़्ज़त ज्यादा की जाती है मगर ऐसी नहीं जैसी अक़वाम हनूद ब्राह्मणों की ताज़ीम बजा लाते हैं तो क्या उनकी इज़्ज़त योंही फ़ज़ूल की जाती है ? हर्गिज़ नहीं उनकी पाकीज़गी और पाकदामिनी तमाम हिन्दुस्तान

में अज़हर मिनसश्शम्स है। गो इनक़ेलाब ज़माना की वजह से हिन्दुओं के इन्तज़ाम मुल्की में बड़ाही रद्दोबदल वाक़अ हो गया है यहां तक कि इस ज़मान: आख़ीर में रिखिश्वर मनुजी महाराज की असली मनुस्मृति की ठठरीही ठठरी बाक़ी रह गईहै ताहम् ब्राह्मणों की इज़्ज़त और तौक़ीर जिस तरह ज़माना क़दीम में की जाती थी वह वैसीही क़ायम है उसमें ज़रा भी कमी वाक़अ नहीं हुई है । हिन्दुस्तान में पुरोहितों का मर्तबा काफ़ी तौर से ज़ाहिर है बाज़ बाज़ मोक़ामात में तो इनके अख़्तियारात सलतनत जमहूरी से कुछ कम नहीं है मगर ज़िला ब्राह्मणराजपुर में जहां मोक़द्दम: हाज़ा वाक़अ हुआ था ब्राह्मणों के एक सर्दार रहते थे जिनका फ़ैसला मुबाहिसे के मामिलात में क़तई माना जाता था। चूंकि ग़रीबमिश्र मज़हबहनूद से ख़ारिज कर दिया गया था इसलिये वह ब्राह्मणों के सर्दार ज़बर्दस्त पाठक के मकान पर गया और अपना मोक़द्दमा उनके सामने पेश किया। ज़ीइल्म पाठकजीने उसको इत्तिला दी कि तरीक़हनूद में जिसको बड़े २ रिखिश्वरों ने क़ायम किया है अगर कोई शूद्र किसी ब्राह्मण के हाथ का पानी न पीवे तो यह अम्र क़ाबिल बर्दाश्त न होगा । जब तक हम उस ब्राह्मण के ख़ारिज़ कियेजाने के लिये हुक्म न जारी करें कोई शूद्र ऐसा नहीं कर सकैगा अगर वह ऐसा करे

तो उसको ज़रूर सज़ा दी जाय। उसी वक़्त उन्होंने ग़रीबमिश्र को हुक्म दिया कि अगर तुम्हारी बिरादरी के लोग तुमको और तुम्हारे खानदानवालों को थोड़े दिनों के लिये याने जबतक यह म्वामिला क़तई तौर पर फ़ैसल न कर दिया जावे खारिज़ कर दें तो कोई नामुनासिब बात नहीं है। इसके बाद पाठकजी ने तहरीरी हुक्म तमाम ब्राह्मणों के नाम जारी किया जिसमें उन्होंने हिदायत की कि उन शूद्रों के मकान में कोई मज़हबी काम करने न जावे जिन्हों ने ग़रीबमिश्र के हाथ का पानी पीने से इनकार किया है। यह बड़ी कड़ी सज़ा दी गई जिससे शूद्रों के होशोहवास में खलल वाक़ग्र हो गया और वे सहजही में सीधे कर दिये गये। इस म्वामले की दुरुस्ती यहां तक करके पाठक जी ग़रीबमिश्र से कहने लगे कि हिन्दुओं के मज़हब में हर एक पाप से उद्धार होने के लिये प्रायश्चित लिखा है मगर तुमने तो कोई पाप कियाही नहीं है सिर्फ़ क़सूर तुम्हारा इतनाही है कि तुमने इस बात को बखूबी तहकीक नहीं कर लिया कि वह ब्राह्मण किस मौजे का रहनेवाला है और आया यह लड़की उसी की है या किसी दूसरी ज़ात की। इसके बाद ग़रीबमिश्र को पाठकजी ने हुक्म दिया कि अव्वल तुम जालसाज़मिश्र से इस दग़ाबाज़ी का बदला लो तब तुमको ज़ात में ले लेने की तदबीरें की जावेंगी।

बमूजिब हुक्म के ग़रीबमिश्र जालसाज़मिश्र के मकान पर गया और उसको और उसके बेक़सूर खानदानवालों को कोसने लगा और उसकी तीन पुश्त को सलवातें सुनाने लगा। जालसाज़मिश्र ने इलज़ाम से बरी होनेकी कोशिश की। उसने बड़ी आजिज़ी से ग़रीबमिश्र से कहा कि मेरा इसमें कोई क़सूर नहीं है मैंने दीद:दानिस्त: तुमको धोखा नहीं दिया बल्कि मैं खुद धोखे में आगया। इस मोक़द्दमे की रिपोर्ट थाने में की गई और थानेदार मुजरिम के मौजे को फ़ौरन् रवाना हुये और वहां पहुंचकर जालसाज़मिश्र को गिरफ़्तार कर लिया। अवध की पुलिस के ज़रिये से लड़की के मौजे में तहक़ीक़ात कराई गई मगर सुपरिण्टेण्डेण्टसाहब पुलिस ने जवाब में तहरीर फ़र्माया कि इस ज़िले में कोई मौज़ा छोकड़ीलेभागनापुर नाम का नहीं है। जब जालसाज़मिश्र ने देखा कि अब बात बिलकुल बिगड़ गई तब उसने यक़बाल किया कि यह जोलाहे की लड़की है जो इसी ज़िले में २५ कोस के फ़ासिले पर रहता है वही अहमकमिश्र नखातू जोलहा था। पुलिस ने उसको तलाश किया मगर कामयाबी हासिल न हुई क्योंकि नखातू जोलाहा एक हफ़्त: पेशतरही बम्बई को रवाना हो गया था। जिस मौजे में नखातू रहता था वहां के ज़िमीदार ने थानेदार से आकर बयान किया कि नखातू को ए-

कही लड़की थी जिसकी शादी वह हालही में करके अपना चन्द मालोअसबाब फरोख़्तकर मौज़ा छोड़ मालूम नहीं कहां चला गया। थानेदार ने जालसाज़मिश्र को तम्बीह की राह से कहा कि तुमने मुसलमान के हाथ का पकाया खाना खा लिया उसने इन्कार किया और बयान किया कि मैंने उस खाने को चोरी से अपने कमरबन्द में बाँध लिया था और उसको लेजाकर कुत्तों को खिला दिया। जालसाजमिश्र की चालान की गई इस वजह से हमलोगों का उससे कुछ न मिला मगर गरीबमिश्र को थानेदार ने धमकाया कि तुमने इस लड़की को निकाल लाने में जालसाजमिश्र की मदद दी है हम तुम्हारी भी चालान करते हैं इसपर ग़रीब मिश्र ने खौफ में आकर ५०) थानेदार को नज़र किये जिसमें से चार चार रुपये उन चार कांसटेब्लों में से हर-एक को मिले जो थानेदार के हमराह तहकीक़ात करने गये थे। जालसाजमिश्र दौर सपुर्द किया गया जहां से उसको ५ वर्ष की सज़ा सख़्त दी गई। अब ग़रीबमिश्र को उसके खास हकूक़ प्रोहिती के वापस मिलने बाक़ी रह गये इसलिये ज़बर्दस्त पाठक ने चन्द दीगर ज़ीइल्म पण्डितों को बुला भेजा और अठकौंसल करके बड़ी संजीदगी से मज़मून ज़ैल का फैसला ग़रीबमिश्र को सुनाया—

"खताकार चारो धामों की यात्रा कर आवे और दो

सौ ब्राह्मणों को भोजन करावे तब वह अपनी ज़ात में मिल सकेगा।"

बादहू ग़रीबमिश्र और उसके खान्दानवाले गोवर और गोमूत्र वगै़रह पिलाकर पाक किये गये। वह लड़की लावारिस क़रार दी गई। मजिस्ट्रेटसाहब बहादुर ने उसको पादड़ीसाहब को सपुर्द किया। मैं यक़ीन करता हूं कि अगर उसको इस वक़्त ग़रीबमिश्र ख़्वाह उसका खास वालिद देखे तो किसी तरह उसको शिनाख़्त नहीं कर सकेगा कि यह वही लड़की है जिसको उसने ग़रीबमिश्र के यहां २०) रु० पर फ़रोख़्त कर दिया था। मेरी राय नाक़िस में वह लड़की हर तरह से फ़ायदे में रही।

इस सिलसिले में मैं बयान करता हूं कि मौज़ै बमनराजपुर गोया अबतरीका बड़ा तमाशःगाह मोकर्रर कर दिया गया था जहां खास खास तमाशा दिखलानेवाले रुपया पैदा करने की तमअ से ख़्वाह नौतर्ज़ी के शौक़ से रोज़बरोज़ जदीद रसमियात और दस्तूरात ईजाद करके बाशिन्दगान मौजे मज़कूर को उनका तमाशा दिखलाते थे बावजूदे कि वे रसमियात हिन्दुओं के शास्त्रों से बिलकुल खेलाफ और नापसन्दीदः थे।

इससे मेरे नाज़रीन यह हर्गिज़ ख्याल न करें कि मज़-

हब हनूद की आलीशान इमारत जिस्की किदामत मज़बूती और पायदारी से हमलोग खूब वाकिफ़ है एक या दो दरारों के होजाने से ख्वाह एक या दो मेहराबों के खसक पड़ने से बिलकुल मिसमार होजायगी । तरीक़ हनूद की बहुत सी बातें ज़मान: क़दीम से एक तौर पर चली आती हैं जो बहुत ज़मान: तक क़ायम रहैंगी बावजूदे कि वे बातें हिन्दुओं की वाजिब तरक्की करने में मुखिल हैं। जब तक तरीक़ हनूद की जानिब से ग़रूर, हौसल: तमअ और खुदग़र्ज़ी की हिमायत की जायगी जो तमसीलन बयान हाज़ा में मज़कूर किये गये हैं तबतक उसमें हज़ारहा अक़साम के खुराफात और फसादात पैदा होतेही रहैंगे । मगर अफसोस इस बात का है कि इस तरीके में उन अशखासों के लिये कोई मज़बूत रुकावट वजुज़ राय अवाम के नहीं है जो हमेश: बदलतीही रहती है ।

छब्बीसवां पर्व ।

दो सवत जोरुओं का बयान ।

जिस थाने में मैं तायनात था वहां के इलाक़े में एक दौलतमन्द मोमिन (जोलाहा) रहता था। यह ज़रदोज़ी का भारी कार्खाना करता था। इसका नाम लट्टू मियां था।

लट्टू मियां दो जोरुओं का खसम था । एक का नाम गु-लाबो और दूसरी का नाम महताबो था । गुलाबो को कोई औलाद न थी मगर महताबो को ४ लड़के और दो लड़कियां थीं । उनके खसम की यह बड़ी भूल और बेवकूफी थी कि उसने उन दोनों सवतों को एकही मकान में रक्खा था गो जुदा जुदा कमरों में, इसलिये जब वे मिलती थीं तो बड़ा शोरोगुल मचाती थीं मैं इनकी चालचलन से अपने नाज़रीन को बयान हाज़ा में वाकिफ़ कराऊंगा । अव्वल गुलाबो का हाल बयान करता हूं । यह बड़ीही बेबाक और खराब औरत थी इसी वजह से उसका खसम उससे नाराज़ रहता था मगर उसकी सास चन्दोबीबी के दिल को इससे क़रार था क्योंकि वह समझती थी कि अगर मेरा फर्ज़न्द ऐसी बदखसलत औरत से नाराज़ रह कर दूर रहेगा तो वह सलामती से अपनी ज़िन्दगी बसर करेगा । इसी वजह से गुलाबो को कोई औलाद न होने से चन्दोबीबी बड़ी खुश थी ।

गुलाबो की सवत महताबो चार फरज़न्दों की मां थी इससे गुलाबो उससे बड़ीही जला करती थी मगर महताबो हलीम, हयादार और नेकखसलत औरत थी । गुस्सा तो उसको ज़रा भी न था जिस वक़्त क़ादिर मुतलक ने उसका दिल बनाया तो ज़रर पहुंचने पर गुस्सा करने का मसालह

मिलाना भूल गये। लोगों का यह कहना था कि जिस वक़्त दोनों सवतों में लड़ाई तकरार की नौबत आती थी तो महताबो उसको बड़ी सहूलियत से रफा दफा कर देती थी। चन्दोबीबी इन दोनों सवतों की सास थी दर-अस्ल जब से इसकी पैदाइश हुई इसने अपने को किसी असली ख्याल के ख्याल करने की तकलीफ दीही नहीं।

लट्टूमियां बड़ाही नेकमिज़ाज आदमी था अपने हमसायों से मोहब्बताना बर्ताव रखता कभी उनसे लड़ाई तकरार करता। वह अपनी ब्याहुता बीबी का बहुत ज़ियादा येतबार करता था। यह उसकी बड़ी भूल थी क्योंकि फितरत इनसान की बड़ी खराब खसलत है जा कमज़र्फ और कम अक़्लवाले आदमियों में कसरत से पाई जाती है बढ़ते २ यह उनको जलीलोख्वार कर देती है।

गुलाबो ने देखा कि मेरे कोई औलाद तो हैही नहीं और मेरा खसम मेरा येतबार भी ज़ियादा करता है पस उसने अपनी सवत महताबो को ज़लील करने के लिये यह दगाबाज़ी की जिसका सिर्फ यही क़सूर था (जो सवत की नज़रों में बड़ा भारी है) कि वह अपने खसम के छ लड़कों की मा थी। इस काम में पूरी कामयाबी हासिल करने की ग़र्ज़ से गुलाबो ने एक बदमाश सेसर खां नामी को कुछ रुपये रिश्वत दिये। इस शख्स की आवार्गी

अज़हर मिनश्शम्स थी जिस्को उसका चेहराही ज़ाहिर और साबित किये देता था। उसका दिल हमेशः बदकामों को करते २ बड़ा खराब हो रहा था। बड़े अफसोस की बात है कि ऐसे बदमाशों को लोग अपने मकान के अन्दर क्यों आने जाने देते हैं ये बेगुनाहों को आनन फानन अपने दामे फितरत में फँसा लते हैं। सेसरखां में जहां और सब बदआमालियां थी वहां मक्कारी भी बहुत ज़ियादा थी। मैं सहीह सहीह येतबार कराता हूं कि अगर उसके बग़ल में एक भेड़ का बच्चा खड़ा करके मोक़ाबिला किया जावे तो वह बच्चाही ज़ाहिर कर देगा कि वह कैसा भारी दग़ाबाज़ आदमी है। वह फितरत यह थी कि सेसरखां ने एक बेनाम चीठी लट्टू मियां के नाम भेजी और चूंकि वह चीठी बर-वक़्त तहक़ीक़ात पुलिस को हवालः की गई थी इसलिये मैं उसका मज़मून ज़ैल की सतरों में बयान करता हूं—

"मैं आप से मुलाकात करने की फिक्र में अरसे से हूं मगर अबतक इस खुशी से महरूमही रहा ताहम् मैं कोई वजह नहीं पाता हूं कि आपके साथ बर्ताव दोस्ताना का क्यों न करूं? क्या आप इस बात से वाकिफ़ हैं कि आपकी दूसरी बीबी सेसरखां से मोहब्बत नाजायज़ रखती है और जब आप मकान से कहीं चले जाते हैं तब वह अपने यार को बुला कर अपने दिल का अर्मान निकालती है।"

अगर लट्टू मियां दूरन्देश और अक्लमन्द खसम होता तो इस बारे में अपनी मां से मशवरः करता ख्वाह किसी आदमी को इस बात की निगरानी करने को मोकर्रर करता मगर वह इन दोनों तदबीरों में से एक को भी अमल में न लाया बल्कि उसने महताबी को बातबात में खफीफ बनाना, बिला क़सूर सताना, तानअज़नी करना शुरू किया सिर्फ इस ग़र्ज से कि देखें महताबी कहां तक बर्दाश्त कर सकती है। एक रात को लट्टू मियां ने एक खफीफ होला ढूंढ़ कर महताबी को ऐसी मार मारी कि थाने में ज़रर संगीन की रिपोर्ट करने की नौबत आई। इस बेवकूफी की कार्रवाई से लट्टू मियां पुलिस के पंजे में आगया। थानेदार को इस मज़मून की रिपोर्ट की गई कि लट्टू मियां ने अपनी एक बीबी को इस क़दर ज़दोकोब किया कि वह बिचारी औरत बेदम होगई। थानेदार को इस मोकद्दमे के बारे में ज़हरखोरानी का इश्तबाह हुआ क्योंकि दोनों सवतों के लड़ाई तकरार का हाल पेश्तरही से अवाम के दर्मियान कसरत से मज़कूर हो रहा था पस थानेदार फौरन् जायमाजरे पर पहुंचे। हम और एक दीगर कांष्टेबल उनको हमराही में गये। थानेदार ने बहुत से अशखास की शहादतें क़लमबन्द कीं मगर मोकद्दमे की असलियत दरियाफ़्त न कर सके। घबड़ा कर उन्होंने हमलोगों को हुक्म दिया

कि सेसर खां को जो बड़ाही हरमुशटक आदमी था फौरन् गिरफ़ार करके लाओ। महल्ले के लोग इस आदमौ से बड़ा खौफ खाते थे गोया वह शैतानही था। हमलोग उसको गिरफ़ार कर लाये ज्योंही वह थानेदार के सामने आया उसने लाफज़नी करनी शुरू की और इस तरह गुफ़गू करने लगा गोया तमाम कानून उसकी ज़बान पर था। थानेदार ने आहिस्ते से मुझ को जमादार के नाम एक रुक्का लिख कर दिया जिसमें उन्होंने जमादार को हुक्म दिया कि फौरन् मौके तहक़ीक़ात पर मय दो मज़बूत कांस्टेब्लों के हाज़िर हो। अब हमलोग ६ पुलिस के आदमी होगये। मदद पहुंचने पर थानेदार ने सेसर खां को धमकाया कि हम तुमको बँधवा कर उलटा लटकवा देंगे अगर तुम इस मोकद्दमा का सहीह २ हाल बयान न कर दोगे। थानेदार ने उससे इस तरह डपट कर कहा—

"सेसरखां हमको दरियाफ़ हुआ है कि तुम एक ग़ैर आदमी को बीबी से मोहब्बत नाजायज़ रखते हो। तुम्हारी बड़ो बदनामी हो रहो है लोग कहते हैं कि तुम तमाम दुनिये की हरमज़दगी कर सकते हो अब तुम सच सच बयान करो भला एक मर्तबे तो तुम अपनी तमाम ज़िन्दगी में सच बोलो। मेरा मतलब उस सचाई से है जिससे तुम इब्तिदाय ज़माना तुफूलियत से बिलकुल अजनबी

से हो। अगर तुम सच न बोलोगी तो हम तुम्हारे साथ क्या सलूक करेंगे तुम खुद जानतेही होगी।"

थानेदार की ऐसी सरगर्मी देख मेसरखां जो अपने को बड़ा बाँका तिरछा लगाता था बड़ाही बुज़दिल होगया उसने थानेदार से गिड़गिड़ाकर कहा "थानेदार साहब आपकी मेहरबानी और रहमदिली का तज़किरा हमलोगों के मकानों में हुआही करता है खुदा के वास्ते आप जो धमका कर कहते हैं उसको कहीं सचमुच न कर दिखाइयेगा। मैं सच्चा सच्चा हाल आप से ज़ाहिर किये देता हूं। उसने अव्वल गुलाबो के बहकाने और लालच देने की मोफस्सल कैफियत बयान की बादहू उन दोनों ने जो तदबीर सोच कर निकाली थी उसको भी कह सुनाया। उसने यकबाल कर दिया कि—

"दरहकीकत हमलोग यह तदबीर सिर्फ एक बेगुनाह औरत के ज़लील करने को अमल में लाये थे" बेशक गुलाबो के दिल पर कोई औलाद न होने से बड़ा भारी सदमा था क्योंकि जब कभी उससे और किसी औरत से लड़ाई तकरार की नौबत आती थी तो उसको वह यही ताना देती थी कि चल दूर हो अरी बाँझ। जो लोग हिन्दुस्तानियों के खानेदारी के इन्तज़ाम से वाकिफ हैं वेही इस बात को बखूबी समझ सकते हैं कि गुलाबो के दिल पर बाँझ होने

का कैसा भारी सदमा रहा होगा। सेसर खां अपने को तालीम-याफ़्ता कहता था अगर वह अक़्ल से काम लिये होता और गुलाबो का साथ ऐसे बुरे काम में न दिये होता तो गुलाबो को कोई दूसरा साथी न मिलता और न ऐसी रुसवाई की नौबतही आई होती।

जब महताबो को मालूम हुआ कि उसकी हरतरह से सफ़ाई होगई और वह महज़ बेगुनाह ठहराई गई, उसके असमत पर जो धब्बा लगाया गया था वह सफ़ाई से उड़ गया तब उसने थानेदार को कहला भेजा कि अब मैं चंगी होगई मगर थानेदार क्यों मानने लगे उन्होंने कहला भेजा कि उनसे कह दो कि हम उनका मुलाहिज़ा डाक्टरसाहब बहादुर से कराये बगैर नहीं मानेंगे उनसे यह भी कहो कि अब चलने की तैयारी करें। वे अब चंगी तो होगई हैं लेकिन जुर्म जो किया गया उसकी सफ़ाई तो अभी हुईही नहो। लड्डूमियां ने इस म्वामिले की दुरुस्तगी इस तौर पर कर दी याने उसने अपनी पगड़ी थानेदार के पाँव पर रख दी और साथही सौ रुपये भी बतौर चारे के रख दिये और ज़ोर से चिल्ला कर कहा "खुदा के वास्ते थानेदारसाहब मुझको और मेरे खानदान को अदालत में हाज़िर होने की बेइज़्ज़ती से बचाइये।" थानेदार ने ५०) खुद ले लिये और २५ रुपये जमादार को दिये और जो बाकी बचे उ-

नको कांस्टेबुलान के दर्मियान तकसीम कर दिये—सेसरखां से क्या मिलना था वह तो अपने को खानदानी मुफलिस कहताही था और न उसके पास कुछ थाही इसलिये थानेदार ने उसको छोड़ दिया वह अपने मकान की तरफ चलते वक़्त एक कांस्टेबल से बोला "मेरेही बदौलत आपलोगों के हाथ गरम हुए हैं अगर मैं न होता तो आपलोग खाली हाथ थाने को लौट जाते आप और आपके साथियों को चाहिये कि हमको भी कुछ नजर दें। चूंकि इस मोकद्दमे की रिपोर्ट सरकारी तौर पर करनी ज़रूर थी इसलिये थानेदार ने मज़मून ज़ैल की रिपोर्ट इरसाल की।

'जल्दीवल्दी नामी कांस्टेबल मोहल्ला मोमिनगंज ने रिपोर्ट की कि लट्टूमियां जुलाहे ने अपनी दूसरी बीबी को इस क़दर बेरहमी से मारा कि वह बेहोश होगई। फिद्वी फौरन् जायमाजरे पर पहुंचा क्योंकि कांस्टेबल मज़कूर के बेठकाने की रिपोर्ट को हजूर के गुलाम ने ख्याल किया कि यह मोकद्दमा या तो ज़रर संगीन का है या ज़हरखोरानी का बल्कि उसको ज़हरखोरानी का ज्यादातर इश्तबाह हुआ क्योंकि मुद्दालह की दो बीबियां हैं जो अकसर लड़ाई तकरार कियाही करती हैं। जब फिद्वी जायमाजरे पर पहुंचा तो दरियाफ़्त हुआ कि जोरू खसम में लड़ाई तकरार वाकई में हुआ जिसपर खसम गुस्से में आकर अ-

पनो बीबी के मुंह पर दो या तीन थप्पड़ मार दिये और एक लात उसकी पीठ पर भी लगा दी। हुजूर पूरब की ज़बानों और दस्तूरों से खूब वाकिफ हैं लिहाज़ा इस हिन्दुस्तानी मसले को भी जानतेही होंगे "ऊंट की पकड़ और औरत का मक्कर"। मुसम्मात महताबी अपने खसम को होश में लाने की ग़र्ज़ से ज़रर शदीद पहुंचने का हीला करके बेहोश होगई मगर ज्योंही हुजूर के गुलाम ने उससे अपना इरादा उसको डाक्टर साहब बहादुर के यहां मोलाहिजे के लिये भेजने का और उसके खसम को गिरफ़्तार करने का जाहिर किया त्योंही वह अपने बिस्तर से उठ खड़ी हुई और कहने लगी कि अब मुझको बिलकुल सिहत होगई। चूंकि मोकद्दमा हाज़ा पुलिस की दस्तअन्दाजी के काबिल न था इसलिये हुजूर का गुलाम थाने को लौट आया।"

हाकिम ने इस रपोर्ट पर मज़मून ज़ैल का हुक्म सादिर फर्माया—

"चूंकि मोकद्दमा हाज़ा सिर्फ खफीफ मारपीट का है लिहाज़ा हुक्म हुआ कि फरीक जिसको ज़रर पहुंचा है अदालत में चारांजोई करे।"

महताबी ने मजिस्ट्रेट साहब की सलाह के मुताबिक अमल करना वाजिब न समझा।

सेसर खां में हम मुसलमानों के एक खास फिर्के की चालोचलन पाते हैं जिसको होगार्थ साहब साफ साफ लफ़्ज़ों में "तरक्की ऐयाशी" बयान करते हैं। तमाम मुल्कों में जहां जमाअत की तरफ से इस बदखसलत के रोकने के लिये ज्यादा ताकीद नहीं है ख्वाह जहां लोगों के दिलों पर रुकावट नहीं है वहां यही कैफियत देखने में आती है।

खानेदारी के हालात जो मैंने सतूरबाला में बयान किये हैं वे दीगर खानदानों में भी बजिन्सह्ह पाये जाते हैं मगर हरकायदः के लिये मुस्तसना का होना भी ज़रूरियात से है कैफियत वाकई यह है कि जिस ज़माने में सेसरखां की तालीम हुई थी उस वक़्त तालीम का कोई उम्दा तरीकअ इजरा नहीं हुआ था और न खान्दान के लड़कों पर ऐसी ताकीद और तम्बीहही बुज़ुर्ग खान्दान की जानिब से की जाती थी और न तो उस ज़माने में कोई ऐसासर्कारी मदर्साही था जिसके मुतअल्लिक बोर्डिंगहाउस हो जहां लड़के अपने वालिदैन के नाजबर्दारी से दूर रह कर तालीम पाते हैं। उनकी तालीम ऐसी जगह नहीं की जाती थी जहां उनको और ज़हीन लड़कों की सुहबत नसीब हो ख्वाह उनके बराबर होने की उनके दिलों में लाग हो ख्वाह उन पर खुद मुख्तार उस्तादों की सख्त तम्बीह हो, बरअक्स इन बातों के वे अपने खान्दान ही में खिदमतगारों

की गोद में, ऐशोआराम के साथ खुशामदियों की सुहबत में परवरिश पाते थे। नाज़बर्दारी तो उनकी हर तरह से की जाती ही थी लेकिन उनकी बुराइयों की इसलाह हातोही नहीं थी। ऐसी सूरत में उनकी रूहानी ताकत के बेदार होने की क्या उम्मेद की जा सकती है। उनको न तो किसी खूबी के हासिल करने का हौसिला ही है और न अपने आइन्दे की बेहतरी का कुछ ख्यालही है लेकिन वे अपने दौलतमन्द हमसायों की बराबरी फजूल खर्ची में करने को मरे जाते हैं और काहिली में अपनी जिन्दगी के बेशकीमत वक्त को जाया करते हैं। इसी बेकरीने की तालीम या अदम तालीम ने सेसरखां की ऐसी खराब हालत कर दी। हमारे कमनसीब मुल्क में इलाकेदारों के लड़कों का शुमार जो अकसर अपनी तमाम उम्र काहिलीही में बसर करते हैं और मुल्कों के बनिसबत बहुत ज्यादः है। जो लड़के खुदराय और जिद्दी होते हैं उनका आलम शबाब आवार्गीही में बसर होता है, खुशामद पसन्द भी व ऐसे होते हैं कि हमेशः उनके कान खुशामद की बातें सुनने को खुलेही रहते हैं। ऐसी गफलत की हालत में अव्वल तो वे तालीम से बिलकुल महरूम रहते हैं नसीहत उनको ज़हर सी लगती है दोयमश यहां की कमज़ोर करनेवाली आबोहवा उनके दिल और

दिमाग़ को और भी कमज़ोर कर देती है । अब आप बआसानी तमाम समझ सकते हैं कि हमारे मुल्क के अमीरज़ादे ज्यों ज्यों उम्र में बढ़ते जाते हैं त्यों २ ऐयाशी और काहिली में ग़र्क होते जाते हैं । मैं इस बात को तसलीम करता हूं कि हर मुल्क में अमीरों के लड़कों की तालीम बड़ीही मुशकिल से होती है यहां तक कि फ़े-रिंगिस्तान याने विलायत में भी बड़ा लड़का अपने छोटे भाइयो से जो अपनी गुज़र-औक़ात की दूरअन्देशी कर के मेहनत करने की आदत लड़कपन ही से हासिल कर लेते हैं लियाक़त इल्मी में कमतर ही रहता है । जब कि वि-लायत की यह कैफ़ियत है जहां का तरीक़अ तालीम ऐसा उम्दा और क़ाबिल तारीफ़ है, जहां लड़के मकान के लोगों की नाज़्वर्दारी से अलेहद: और नीज़ मकान से दूर सर्कारी मदर्सों में तालीम पाने के लिये भेजे जाते हैं और जहां ज़हीन लड़कों की उनके ज़ेहन और मेहनत की क़द्रदानी भी उम्द: तौर से की जाती है जिसमे उनकी हिम्मत बुलन्द रहती है और दीगर ज़हीन और मेहनती लड़कों को आली मर्तब: हासिल करने को कामयाबी की देख उनके हौसले भी बढ़े रहते हैं, इन फ़वायद के होते भी विलायत में इलाक़ेदारों के वारिसान अधूरेही रहते हैं तो फिर हमारे मुल्कवालों की कौन बेहतरी की उम्मेद की जा सकती है जहां ये फ़वायद हैंही नहीं ।

मैंने जो यह बयान आमतौर पर किया है इसमें चन्द मुस्तसनायें भी हैं। चन्द लड़के ऐसे हैं जिनके वालिदैन दौलतमन्द हैं जो बड़ी मुस्तैदी से तहसील इल्म करते हैं और चन्द वालिदैन ऐसे हैं जो अपने लड़कों को ज़खीरः इल्म और दौलत दोनों छोड़ जाने की फिक्र करते हैं। ऐसे वालिदैन का शुमार अब ज्यादः होता जाता है क्योंकि अब उनसे और अंगरेज साहबान से राहोरस्म का सिलसिला रफते २ क़ायम होता जाता है।

सत्ताइसवां पर्व्व।

एक हलीम हिन्दू बनाम एक मुसल्मान आली खान्दान।

खास कर उन मोकद्दमात में जो काबिल दस्तअन्दाजी पुलिस नहीं होते हैं और जो तहक़ीक़ात के लिये साहब मजिस्ट्रेट के इजलास से भेजे जाते हैं, मुलाजिमान पुलिस के हाथ खूब गर्म होते हैं। मै एक मोकद्दमे के हालात जो सूरतहाय मुन्दर्जः ज़ैल में वाकअ हुआ था बयान करता हूं—

एक आली खानदान मुसलमान जो सेसरखां के मानिन्द (जिसका बयान छब्बीसवें पर्व्व में किया गया है)

पुश्तैनी मुफलिस था। जिस महल्ले में वह रहता था वहां एक मशहूर शिवाला था जिसमें हिन्दुओं के मुखतलिफ फ़िर्के खास कर गोसाईं कसरत से परिस्तिश के लिये जाते थे। शिवाले के नज़दीक चन्द मकानात हिन्दू मुसाफ़िरों और ज्यारत करनेवालों के ठहरने के लिये बने थे। नज़दीक के ज़िले से उस मुसलमान की बीबी के रिश्तेदारान उससे मुलाकात करने आये उनके खिदमतगारों और घोड़ोंके ठहरने के लिये मकान की जरूरत दर्पेश आई इस लियेउसने उस शिवाले के पुजारीको हकूमत के साथ तलब किया मगर उस वक्त वह पुजारी पूजा करने में मशगूल था उसने बड़े अखलाक़ से जवाब में कहला भेजा कि मैं आधे घंटे में हाज़िर होता हूं। इस जवाब को उस मग़रूर मुसलमान ने गुस्ताखी ख्याल किया और अपने तीन खिदमतगारों को हुक्म दिया कि उस पुजारी को शिवाले से घसीट कर अभी हाज़िर करो। खिदमतगार अपने मालिक से ज्यादः अक़्लमन्द थे शिवाले के करीब जाकर पुजारी के पूजा खतम करने की इन्तज़ारी करने लगे लेकिन वह मुसलमान देर होने से सब्र न कर सका खुद शिवाले की तरफ रवाना हुआ ताकि वहां पहुंच कर अपने हुक्म की तामील करावे। वहां पहुँच कर उसने अपने खिदमतगारों को शिवाले के अन्दर हमराह चलने के लिये

हुक्म दिया वे जूता पहिनेही अन्दर शिवाले के घुस गये और उस मुसलमान ने पुजारी की डाढ़ी पकड़ उसके मुँह पर थूक दिया । खुशकिसमती से उस वक्त शिवाले में पूजा करनेवाले हिन्दू मौजूद न थे वरन उस मुसलमान आली खानदान और उसके नौकरों के लिये बड़ा खराब नतीजा इस बेजा हरकत का ज़हूर में आता वे इस बात को जानते थे कि शिवाले का फर्श पत्थर का था जिस किसी का सिर उस पर गिरता वह बग़ैर फूटे न रहता असपतालही में जाकर चंगा होता । चूंकि उस मुसलमान को पुजारीकी मेहरबानी की ख्वास्तगारी करनी थी उसको लाज़िम था कि उसको रजामंदी के खिलाफ कोई कार्रवाई अमल में न लाता मगर वह जो कार्रवाई अमलमे लाया वह इस किस्म की थी कि जिससे फकीर कामिल को भी गुस्सा आजाता। आखरश नतीजा यह हुआ कि उस पुजारी ने उस मुसलमान के आदमियों और घोड़ों को अंदर अहाता शिवाल: के ठहरने की इजाजत देने से एक कलम इनकार किया । उस मग़रूर मुसलमान को अपनी बीबी के रिश्तेदारों को यह दिखाना था कि वह उस महल्ले का नवाब है वरन वह ऐसी कार्रवाई हाकिमाना हरगिज़ अमलमें न लाता नीज़ उसको यह भी जाहिर करना था कि तमाम मोहल्लेवाले उसी की रअयत है उन पर वह जो चाहै हकूमत करने का

अख़्तियार रखता है। वह अकसर कहा करता था कि उसके बुजुर्गवार हिन्दुस्तान के बादशाह थे जब वे हिन्दुस्तान में दाखिल हुए तो एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में क़ोरान लेकर आये और उन्होंने अपना दौर दौरा हिन्दुओं की बड़ीही मुतबर्रिक बातों को तोड़ते और रद करते हुए आग़ाज़ किया। मैं खयाल करता हूं कि उसने अपने बुजुर्गों के ढर्रे पर चलना अपना फ़र्ज़ मनसबी समझ रक्खा था मगर वह नहीं समझता था कि अब फिरंगी की अमलदारी में सब बातें बदल गई हैं। इस सिलसिले में मैं बयान करता हूं कि जिस वक्त सर्कार बहादुर ने हिन्दुस्तान में अपना इन्तज़ाम मुल्की शुरू कया उस वक्त यहां के मुखतलिफ अकवाम को मजहबी ख्वामिलात में बिलकुल आज़ादी दे दी और यह इकरार किया कि हम किसी के मजहब में दखल न देवेंगे इस इकरार को सर्कार बहादुर बखूबी पूरा कर रही है जिसके लिये हिन्दू और मुसलमान दोनों अकवाम को शुक्रगुजार होना चाहिये। यह आजादी उनको न तो जमानः गुजश्तः में हासिल थी और न आइन्दः किसी गैर मजहबवाले बादशाह के वक्तमें हासिल होने की उम्मेद की जा सकती है। अगर किसी २ मौके में सर्कार बहादुर ने हिन्दुस्तानियों के मज़हबी ख्यालात के बरअक्स कोई कार्रवाई

अमलदरामद की भी तो वह सिर्फ बलेहाज़ सुलहोअम्न अ-वाम के की लेकिन यह जरूरही तसलीम कर लेना होगा कि मुसलमानों और खास कर हिन्दुओं के मजहबी रसूमात के अदा करने के बारे में सर्कार बहादुर ने जैसी दस्तअन्दाजी से दस्तकशी की है वैसा तवारीख में किसी बादशाह ने किसी जमाने में नहीं की थी । मैं उम्मेद करता हूं कि मेरे नाजरीन इस तजाउज को माफ करेंगे । लिहाजा इस बयान के सिलसिल को उस मोकाम से शुरू करता हूं जहां से तजाउज अमल में लाया गया है । उस हिन्दू पुजारी ने थाने में रपोर्ट की और थानेदार को १५/ और दिवान जी को १०/ इस शर्त पर देने का यकरार किया कि उसकी रपोर्ट लफ्ज़ बलफ्ज़ मुन्दर्ज रोजनामचः की जावे।

कुछ देर ज़ाहिरः पसोपेश करने के बाद गोया थानेदार की नौकरी पर ज़वाल आयाही चाहता था उस होशियार थानेदार ने पुजारी से कहा कि अगर ऐसी रपोर्ट किसी दूसरे आदमी ने लिखाई होतो तो इस तरह लफ्ज़ बलफ्ज़ हरगिज न लिखी जाती क्योंकि ऐसा करने से पुलिस की तरफदारी ज़ाहिर होगी लेकिन तुम्हारी खातिर मुझको दिल से मंजूर है। इस पर पुजारी ने जवाब दिया कि "मैं आप की मेहर्बानी ताज़ीस्त नहीं भूलूंगा थानेदार

साहब आप इस बात से बखूबी इतमिनान रखें।" पुजारी के रपोर्ट का इन्दराज रोजनामचे में इस तरह पर किया गया—

"बड़ाझूठ गोसाईं ने थाने में आकर रपोर्ट की कि मिर्ज़ा ताकत बेग अपने बहुत से हममजहबवालों को साथ लेकर 'बहुत पूजा" नामी शिवाले में आया और अपने चन्द आदमियों और उसके घोड़ों के ठहरने के लिये जगह तलब की। गोसाईं मजकूर ने उज्र किया कि मुसलमानों को अन्दर अहातः शिवालः के आने देना हिन्दुओं के शास्त्र के बिलकुल खिलाफ है लिहाज़ा मैं आपके हुक्म की तामील करने से मजबूर हूं। इस पर मिर्जा साहब ने बग़ैर किसी छेड़छाड़ के अपने हमराहियों को उस पाक मोकाम को नजिस करने और गुसाईं को पीटने का हुक्म दिया और खुद उसकी नलियों पर कई लात मारे और उसने उसके मुंह पर थूक दिया। गोसांई मज़कूर ने यह भी बयान किया कि अगर वह तरह न देता तो अग़लब था कि वह जान से मार डाला जाता। उसने पुलिस की हिफाज़त के लिये दर्ख्वास्त भी की है क्योंकि उसको जान खतरे में है।"

इस रपोर्ट पर थानेदार ने कफियत ज़ैल तहरीर की—

"चूंकि फिदवी की राय में हंगामा होने का ज़्यादातर यहतमाल हुआ इस वजह से वह एक हेड कांस्टे

और ६ कांस्टब्लों को हमराह लेकर फौरन् शिवाले को र-वाना हुआ ताकि खूंरेज़ो को बाज रखे और फसाद करने-वालों को वहां से हटा देवे। हालात मोकद्दम: के इत्तिला-देही में वह हर्गिज़ तवक्कुफ को राह न देगा।"

वहां न तो खूंरेजो का खौफ था और न कोई हंगामा करनेवाली जमाअतही थी जिसके हटाने की ज़रूरत थी। चूंकि थानेदार को जायमाजरे पर पहुंचना ज़रूरी था इस वजह से उन्होंने अपनी कैफियत में यह हिकमत अमली की। जाय माजरे पर पहुंच कर उन्होंने मिर्ज़ा ताक़त बेग को तलब किया जिसने उन जुर्मों से जो उन पर लगाये गये थे बिलकुल इन्कार किया। इस पर पुजारी ने दो चश्मदीद गवाहों को पेश किया जिनका इजहार मुद्दई के बयान के मुताबिक़ हुआ। उधर मुलज़िम के गवाहों ने पुजारी के गवाहों को सख़्त झूठा बनाया।

इस सिलसिले में मैं बयान करता हूं कि अगर गवाहों की चाल चलन को और उन हालतो को जिनमें उनकी शहादत ली जाती है दोनों जांच की तराजू में रख कर तौली जावें तो यह बात ज़रूरही तसलीम कर लेनी पड़ेगी कि अब इनसान बुराइयां करते २ बड़ाही ज़लीलोख्वार होगया है उसकी ऐसी खराब हालत तवारीखों में कहीं नहीं देखने में आती। जब कि दरोग़हलफी की यह

कैफियत है तो फिर अंगरेज मजिस्ट्रेट साहबान मोकद्दमात की रूयदादों को किस तरह फ़ैसल कर सकते हैं। ऐसी सूरत में बिचारे बेगुनाहों की हलाकी में तो कोई शकही नहीं है । यह खराब हालत सिर्फ़ हमलोगों के तरीक़ फासिद का इङ्गलिस्तान के अदल के उन असूल से मिल जाने से है जो अंगरेज़ साहबान के बेमिसाल खुशो-खुर्रम हालत के बाइस हैं । वे असूल ये हैं कि शहादत का लिहाज़ माकूल तौर से किया जावे और जबतक शहादतों से किसी शख्स पर जुर्म साफ तौर से साबित न हो जावे हरगिज उसको सज़ा न की जावे । इन्हीं असूल की पाबन्दी से अवाम के जान और माल नीज़ आज़ादी की हिफाजत मुमकिन है लेकिन यह बात वहीं हो सकती है जहां सचाई का लिहाज वाजिब तौर से किया जाता है मगर जहां की हालत ऐसी खराब हो जिसका बयान सतूरबाला में किया गया है वहां शहादत के मुताबिक़ किस तरह इन्साफ किया जा सकता है वहां तो कातिल की तलवार से तेज़ अदालत ही है ।

दोनों फरीकों का इज़हार सुन कर थानेदार ने पुजारी को इत्तिला दी कि अब हम जुर्म साबित न होने की रपोर्ट कर देंगे ।

मैं यह नहीं कह सक्ता कि थानेदार और पुजेरी में कौन सा मामिलः तै पा गया, लेकिन मेरे हिस्से के दो रुपये मुझे मिल गये । जहाँ तक मैं ख़याल करता हूं पचीस रुपये थानेदार और जमादार को "एक खास कार्रवाई" के लिये दिये गये थे, जो कार्रवाई किसी आनेवाले दिन के लिये नहीं उठा रक्खी गई थी। मौका पाकर रोजनामचे की लिखी रिपट की नकल मैंने उतार ली—जिसकी नकल मैं नज़र नाज़रीन करता हूं—

"हुजूर के गुलाम ने इस मामिले की तहकीकात की और अगरचे यह तो नहीं साबित हुआ कि मिरजा ताकत बेग और उनके साथियों ने सरकशी के लिये कोई खास जमावड़ा जमा किया था, लेकिन यह ज़रूर साबित हुआ कि वे लोग शिवाले में घुस गये और हिन्दू पुजेरी के मज़हब और उसके मज़हबी खयालात पर एक खास हमला उन लोगों ने किया, यहां तक कि मिरज़ासाहब ने उसके ऊपर थूक दिया और साथही उसके दूसरे दो साथी पुजेरी को घसीट कर शिवाले के बाहर निकाल लाये। ख़ैरियत हुई कि वहां दूसरे हिन्दू मौजूद न थे नहीं तो मामिला सचमुचही खौफनाक होजाता । हुजूर का गुलाम तीनों मुजरिमों को बमौजिब दफात ताज़ीरात हिन्द ४४१ और ४४२ के गिरफ़ार कर लाता क्योंकि यह मामिला पूरे २

तौर से क़ाबिल दस्तन्दाज़ीए पुलिस के था, लेकिन चूंकि खुद हुज़ूर का गुलाम एक हिन्दू था इस वास्ते उसने इस काम में हाथ न डाला—क्योंकि बजाय इस कि हुज़ूर उसकी निस्बत यह ख़याल करें कि वह हिन्दू का तरफ़-दार होगया वह मौतको लाख दरजे तरजीह देता है। अगर ऐसा अंजाम होता तो हुज़ूर के गुलाम की जिन्दगी हमेशा के लिये तल्ख होजाती।" इसमें कोई शक नहीं कि पुजेरी ने जो एक दौलतमन्द आदमी था ऐसीही रिपट के लिखे जाने के लिये एक पूरी तायदाद रुपये की दी थी, साथही उसने अदालत के इनसाफ़ और उसके अंजाम पर बिलकुल ख़याल न किया था। यह रिपट साहब मेजिस्ट्रेट बहादुर के इजलास में पेश हुई जिस पर उन्होंने एक अंगरेज इन्सपेक्टर को दोबारा मामले की तहकीकात के लिये मुकर्रर किया, क्योंकि दोनों फरीक़ हिन्दू और मुसलमान थे। इन्सपेक्टर साहब शिवाले की तहकीकात पर तैयार हुये और थाने में पहुंच के उन्होंने एक ऐसे कांस्टेबिल के साथ लेने की ख्वाहिश ज़ाहिर की जो वहां के हालात से वाक़िफ़ हो, साहब के साथ के लिये मैं ही चुना गया, और जिस वक्त मैं साहब के साथ जाने को लैस हुआ उसी वक्त थानेदार ने पहुंच के मुझे बहुत सी हिदायतें कीं जिनका खुलासा यही था कि जहां तक मुमकिन हो सा-

हब पर बरहमनही को बेकसूरी साबित कराने की कोशिश करना क्योंकि मुसलमान ने हमलोगों को एक फूटी कौड़ी से भी याद न किया और बरहमन ने तो एक ख़ासी रकम से हमारी मुट्ठी गर्म की थी। लेकिन जिस वक़्त हमलोग मौक़ए वारदात पर पहुंचे उस वक़्त साहब ने मुझे तो अपने पास ठहरने की ताकीद की और फिर उन्होंने एक अपने साथ के कांसटबल को दोनों फरीक़ को उनके गवाहों समेत बुला लाने का हुकुम दिया।

इन्सपेक्टर साहब की तहकीकात में मिरज़ा ताक़तबेग पुजारी के मुंह पर थूकने के इल्ज़ाम से बरी किये गये, लेकिन हां यह इलज़ाम उन पर क़ायमही रहा कि उन्होंने अपने दो नौकरों से पुजारी को मन्दिर के बाहर खींच मँगाया। उधर पुजेरी को इस खौफ से आपही रूह फना हुई जाती थी कि अब जो मिरजा ने हतकइज्जत का कहीं दावा कर दिया तो लेने के देने पड़ जांयगे। बस इस खयाल से उसने अपने मुख़्तार को आपस में मुलह कर लेने और अदालत में सुलहनामा दाखिल कर देने की सलाह दी और जिस वक़्त तरफ़ैन से राज़ीनामा दाखिल अदालत होगया, तो फिर यह मुकद्दमा भी दाखिल दफ़्तर कर दिया गया।

अट्ठाईसवाँ पर्ब्ब ।

शरिस्तेदार की बेटी ।

गये बीते खुश वक्त पुराने ज़माने में, जो अब फिर काहे को कभी लौटनेवाला है—एक मुसलमान रहते थे, यह हज़रत किसी आज़ाद रियासत में के एक एजेण्ट साहब के सरिश्तेदार थे। एजेण्ट साहब राज में मिनजानिब गवर्मेण्ट इंग्लिशियः के मुकर्रर थे। सरिश्तेदार को यह नौकरी चन्द बरसों से लगी थी और आवाम में ऐसा मशहूर था कि यह सरिश्तेदार एजेण्ट साहब बहादुर के दाहिना हाथ हैं यह अफवाह बहुतही दुरुस्त थी। और हमारे नाज़रीन को भी अभी मालूम हुआ जाता है कि वह शख्स सिर्फ इसी नौकरी से कितना मालामाल हो रहा था। अपने आखिरी वक्त में सरिश्तेदार ने अज़रूय वसीयतनामे के अपनी कुल दौलत को अपने दो लड़कों और दो लड़कियों पर इस तरह तकसीम कर दिया कि हर एक के हिस्से एक एक लाख रुपया पड़ा—इसके अलावा उन्होंने अपनी कुल जायदाद गैरमनकूलः उन दोनों लड़कों के नाम लिख दिया। मिस्ल अपने हमसरों के सरिश्तेदार साहब मुन्शी सैयद दौलत शाहजहां खां ने बहुत से हरम भी रख छोड़े थे, जिनके खाने पहनने के लिये भी उन्होंने

एक लाख रुपया दाखिल वसीयतनामा कर दिया था—और इसतरह गोया यह कुल उमूरात खानादारी बड़े लड़के के भरोसे पर छोड़ दिया गया। मरहूम सरिश्तेदार साहब के जो कुछ गुनाह और कसूर रहे हों वह अब गोया कुल उन्हीं के साथ २ कबर में उतार दिये गये—लेकिन कबर में उतारे जाने पर भी वे छिप गये या नहीं—इसके बारे में शुबहा है, क्योंकि अबतक शायद अवाम को जबानों पर वही उनके गुनाह थे, और अगरचे उनके रोकने की भी कोशिशें की जाती थीं लेकिन भला खलकुल्लाद की जबान और नदी का बहाव किसी आदमी के रोके रुका है?।सरिश्तेदार मरहूम के लड़कों का नाम सैयद फजूल खर्च और सैयद कमजोर दिल था और लड़कियां बेपरवाहुन्निसा बेगम और घरगिरस्तुन्निसा बेगम के नाम से मशहूर थीं। सैयद कमज़ोर दिल साहब अपने बाप की वफात के दोही तीन बरसों के बाद इस जहान फानी से कूच कर गये, उनकी दोनों बेटियों की शादी उनकी ज़िन्दगीही में हो चुकी थी—जिनमें से छोटी अपने ससुराल ही में जो एक गैर ज़िले में थी रहा करती थी। यकायक एक रोज़ बेपरवाहुन्निसा बेगम का खत उसके भाई को मिला जिसमें उसने अपने शौहर के मरने पर अपने भाईही को अपना वली वारिस बनाना चाहा था—खत में लिखा था "फजूल

खर्च, तुम मेरे एकही भाई हो और चूंकि मैं शशमाही में कलक्टर साहब के कचहरी मे अपन सूद का रुपया लेने के लिये नहीं जा सक्ती जो कि सालाना ४८००) मिलता है इसलिये मेरी ख्वाहिश है कि मैं तुम्हें इसपर मुकर्रर कर दूं और इससे ज्यादा मुझे इतमीनान का बाइस और क्या होगा कि मैं उन असल नोटों को जिन पर कि सूद मिलता है तुम्हारे नाम करा दूं।"

"पांच या छः बरस तक बराबर सूद आता रहा, और बजाय शशमाही के ऐसा सिलसिला कायम किया गया कि जिससे बेगम बेपरवाहुन्निसा को ४००) माहवारे सूद का मिलने लगा था। इस अरसे के गुज़र जाने के बाद बेगम साहिबा ने किसी शरीफ सौदागर के जवान बेटे से शादी का ठीकठाक किया, लेकिन चूंकि शरीफ खानदान के मुसलमानों में दोबारा शादी का होना एक गैरमुमकिनात में शुमार किया जाता है इसलिये शादी न हो सकी लेकिन फिर भी बेगम बेपरवाहुन्निसा ने मिरजा खुशदिलबेग सौदागर के खूबसूरत जवान बेटे को इतमीनान दिला दिया—कि इससे तुम्हारी तरफ से हमारे दिल में किसी किस्म का मैल नहीं आया, क्योंकि तुम्हारी मुहब्बत ने हमारे दिल पर इतनाही असर नहीं किया है कि जो वह इस छोटी ठेस लगने से मिट जाय।

कुछ चुगलखोरों ने यह बात बेगम के भाई से जा जड़ी, जिसे सुनतेही वह मारे गुस्से के लालभभूका होगया जल के बोला "यह तो उसका चालीस बरस का सिन और यह बेगैरती की चालें।" असल में वह एक बड़ाही बेरहम आदमी था, लेकिन आखिरश तजरबे ने उस पर अंगरेज मुसन्निफ के इस कौल को अच्छी तरह साबित कर दिया, कि मुहब्बत किसी उम्र किसी आबोहवा, और किसी खास वक्त के लिये मौकूफ नहीं है, आशिक ख़ाहनखाह खूबसूरत या जवान हो हो मज़हबे इश्क में कोई ऐसा कैद नहीं है. देखिये जैसे हवा जो कि लोगों को निगाहों से छिपी हुई है—लेकिन वह लगती सभी के जिस्ममें है और मालूम उसे सभी करता है, इसी तरह मुहब्बत का बीज हर एक फर्द बशर के दिल में मौजूद है लेकिन उसका अंकुर ठीक उसी वक्त निकलता है जब वह अपने दिल लायक बादल का पानी अपने ऊपर बरसता पाता है। बेचारे खुशदिल बेग को कभी ख़्वाब में भी ख़याल न आया था कि बेगम के साथ जो बरताव वह करता है वह बड़ाही नाकिस है। बड़ीही फराखदिली से जानबैन की मुलाकातों की पेंगें बढ़ती गईं। खत किताबत का सिलसिला जोर पकड़ता गया और अब गोया उस इश्क ने नईही सूरत पकड़ी, ख़ाम से पक्का होगया। उसका आ-

शक उसके नरम कलेजे में की धीरे २ सुलगती हुई इश्क की आग को देख रहा था, उस पोशीदा इश्क के साये पर निगाह डाल रहा था जो अब धीरे २ बढ़ता जाता था, जो कि हकीकत में सच था और जिस आग के एक बेर भड़कने से फिर उसका बुझाना मुश्किल था। उसका आशक इन सब बातों को कुछ अफसोस भरी निगाहों से देख रहा था या जैसे कोई आलिम उस जानवर के मरने और तड़पने पर निगाह डाल रहा हो जिसके मरने के बाद उसी के जिस्म को देख २ के उसे भारी तजरबा वह हासिल करता हो।

कोई चीज़ इस जहान में ऐसी नहीं है कि जो हमेशः के लिये छिपी रह सके। जहां चाहे वहां देखो, भेदों का ज़ाहिर होजाना भी कुदरती कानून में से एक कानून है, और वह भेद जो अब तक दुनियां के परदे पर ज़ाहिर न हुए सिर्फ मोजिज़ा (करामात) कहे जा सकते हैं। जो कुछ बेगम के घर में हुआ करता था यह उसके भाई को खत के ज़रिये से मालूम होजाता था जिस पर वह अपनी बहिन को लिखा करता था कि चूंकि इन्तज़ाम खानादारी में उसी का दखल है इसलिये वह मुनासिब समझता है कि उसका माहवारी खर्च एकक़लम बन्द कर दे। हकीक़त हाल यों था कि बेगम के भाई सैयद फज़ूल खर्च

साहब ने अपनी बीबी को आतिशे फिराक़ में जलता छोड़ कर एक तवायफ को घर डाल लिया था जिस्का नाम दिलपसन्दजान था। फजूलखर्च की निकाही औरत खूबसूरतुन्निसा बेगम हकीकत में एक बड़ीही हसीन औरत थी उसके रूय ताबां की झलक से खुरशेद अनवर शरमिन्दा होता था लेकिन ऐसी महजबीं का हुस्न सैयद फजूल खर्च के दिल पर किसी किस्म का असर न कर सकता था। वह एक पज़मुरदः दिल आदमी था। कुदरत के बख़्शे हुये कुल जोश और कुल वलवलों को वह उसी तवायफ पर निसार किया करता था जो उसके दिल को अपने हाथ में करने पर कामयाब हो चुकी थी और जिसका नाम वही दिलपसन्दजान था।

खुफियः तौर से इसी तवायफ के नाम कुल प्रोमेसरी नोट वगैरह लिख दिये गये थे और ताज्जुब तो इस बात का है कि बेगम बेपरवाहुन्निसा ने भी उन अपने मीरास के नोटों के फेरने के लिये अपने भाई पर किसी किस्म का जोर न दिया गालिबन वह यही ख्याल करती थी कि इस बारे में पूछने पाछने पर कहीं ऐसा न हो कि हमारा भाई भी अपने उस फर्ज पर आमादः होजाय जो भाई की तरफ से बेवा बहिन के लिये किया जाता है। इसके बाद अरसा छः माह का और गुज़र गया और इस अरसे में

फज़ूलखर्च खां उस सफर में लगचुके थे जिधर जाके कभी कोई मुसाफिर नहीं लौटा । बहुतेरे ऐसे हैं कि जिन्होंने अपने गुनाहों की किसी किस्म की तलाफी नहीं की और जिन्हें हमेशा का उठालेजानेवाला सीलाब अपने जबरदस्त थपेड़ों से बहाही लेगया । भाई की मौत के बाद बेगम बेपरवाहुन्निसा की नींद टूटी उसने चौंक के अब अपनी सच्ची हालत पर जो निगाह की तो अपने को मुफलिस पाया । वह जानती थी कि हमारे कुल प्रामिसरी नोट तवायफ दिलपसन्दजान के नाम भाई साहब लिख गये हैं और अब उसके पास सिवा उस लौंडी के और कोई न था जो उसके पैरों के पास बैठी हुई थी और जिस पर कानूनन उसका कब्ज़ा था । मायूसी ने अपना डेरावनी सूरत दिखाई— बीम और और यास की घनघोर घटा छाती जाती देख के बेगम ने अपने बाप के चन्द दोस्तों को जमा किया और उनसे वह सलाह लेने लगी कि क्या उसे उस तवायफ दिलपसन्द जान से किसी किस्म की रहम या इनसाफ की ख्वाहिश करनी चाहिये ।

इस पर उन लोगों ने खुल्लम खुल्ला कह दिया कि इत्तफाकात ऐसे आ पड़े हैं कि जिनसे उसके किसी किस्म के अर्ज़ मारूज़ करने पर किसी किसिम का जवाब न दिया जायगा फिर भी बातों २ में उन लोगों ने कहा कि

इसके कहने की कोई ज़रूरत नहीं है कि किस तरह उस तवायफ बच्ची की नाज़बर्दारी के साथ अपनी अर्ज सुनानी होगी । आखिरश उन लोगों ने यही तज़्वीज़ की कि बिलकुल नाउम्मेदी से कुछ भी उम्मेद का होना बेहतर है, मामले की मौजूद: हालत पर गौर करके यही कहते बनता है कि एक बार इस बारे में ज़रूर कोशिश होनी चाहिये, जैसा कि उनमें से एक ने कहा हो—

"बेगम साहब अगर आपको इसमें कुछ न मिलेगा तो आपका कुछ जाता भी तो नहीं ।"

ख़ैर। कोशिश की गई—और दिलपसन्दजान तवायफ ने यही जवाब दिया कि मीर साहब (याने फज़ूल खर्च) ने अपनी किसी बहिन के बारे में मुझ से कोई ज़िक्र अज़्कार नहीं किया, लेकिन हां, यह इकरार उन्होंने मुझ से ज़रूरही करा लिया है कि खूबसूरतुन्निसा बेगम को उसकी जिन्दगी तक १००) माहवारी बराबर दिया करूं और जो कौल उनका बड़ीही मज़बूती और बड़ीही मुस्तैदी के साथ पूरा किया जाता है।

इस जवाब के मिलने पर बेगम बेपरवाइन्निसा ने फिर अपने वालिद के दोस्तों को जमा किया, जिन्होंने उसे यही सलाह दी कि इस बारेमें अब अदालत में चाराजोईही करना लाज़िम है। मरदों का ख्याल है जिस्तरह वे जिस बात

को सोचते हैं और इसके बाद उसे ख़ातिरख़ाह कर भी गुज़रते हैं उसी तरह औरतें भी हरएक अपने काम को ख़ातिरख़ाह कर गुज़रा करती हैं; लेकिन नहीं औरतें इससे कहीं दूर हैं वे हरएक काम को किसी खास तहरीक से किया करती हैं और दस में नौ ऐसी हैं कि जो अपने किये पर आखिरश अफसोस न किया करती हों।

आखिरश बेगम ने यही तजवीज़ किया कि एक मुलाकात दिलपसन्दजान से करना ज़रूर है और इसमें उसने तसफ़िय: कर लिया था कि इस मुलाकात में या तो वह न होगी और या मैंही न होऊंगी। इस तरह उसने अलफाजों की एक फौज दिल में तैयार की और अपने को उसकी अफसरी पर ताइनात कर हमला करने के लिये आगे बढ़ी। अगरचे उसके दोस्तों ने उसे इस नाकिस इरादे से बाज़ रखने की बहुतेरी कोशिशें कीं लेकिन फायदा एक से भी न हुआ। मुझे बड़ाही ताज्जुब उस शख्स की हालत पर होता है जिसने गदहे को बेवकूफों का सिरताज कहा है। क़रीने से जान पड़ता है कि उस कहनेवाले को फिरकमेनिसा (औरतों के फिरके) का ज़रा भी इल्म न था।"

बेगम अपनी दो लौंडियों के साथ दिलपसन्दजान के मकान पर जा पहुंची - जातेही यह अपने दुश्मन पर बेतहाशा टूट पड़ीं और यक़ीनन उसके सिर के बाल यह जड़

से उखाड़ लेती अगर इत्तफाकन् लोग उसकी मदद के लिये वहां न आ पहुंचते । बेगम को छुड़ाने की उन लोगों ने सख़ कोशिश की, लेकिन वह बला की तरह दिलपसन्द-जान से चमटी हुई थी और जिस वक्त वे उसके छुड़ाने की फिक्र में लग रहे थे बेगम ने दिलपसन्दजान के बालों को पकड़ के अपनी कुल ताक़त से खींचना शुरू किया, इसी अरसे में एक शख़्स ने एक आहनी दस्तपनाह से बेगम की कलाई पर वह कड़ी चोट पहुंचाई कि जिससे लाचार हो बेगम को दिलपसन्द के बालों को छोड़ देना पड़ा।

इस सख़ चोट की ताब न लाके बेगम बेहोश होके ज़मीन पर गिर पड़ी, यह देखतेही बेगम की लौंडियों में से एक लपकती हुई थाने में पहुंची और वहां जाके यह खबर पहुंचाई कि "बेगम बड़ीही बेरहमी से मारी गई।" इस इत्तला ने मुआमले को अब पुलिस के हाथ में कर दिया।

चन्द अलफाज़ मिरज़ा खुशदिल बेग के बारेमें कह के तब हम अपने नाज़रीन को पुलिस की कार्रवाई का मज़ा दिखाते हैं। अगर किसी की दौलत चली जाय तो मुज़ायका नदारद, तन्दुरुस्ती में फर्क़ आ जाय तो चन्दां हर्ज़ नहीं है, दोस्त गुम होजाय तो सीने पर सब्र की सिल रक्खी जा सक्ती है,—लेकिन यह सदमा इन कुल दुनियावी

सदमों से गैर बर्दाश्त है कि अगर कोई यह जान पाये कि जिस शख्स को मैं इतनी मुहब्बत करता था उसने आखिरश मेरे साथ दग़ा की । उस वक़्त उसके दिल की हालत का अन्दाज़ सिर्फ परवरदिगारही कर सक्ता है, जब उसपर यह ज़ाहिर होता है कि उसके आशक की शुरू से आखीर तक जो राजोनेयाज़ की बातें थीं जो जोशें-उल्फत था, वह महेज़ मामूली और ज़ाहिरा दिखलावाही था । ठीक उसी वक़्त जब कि खुशदिल बेग की अशद ज़रूरत थी। जब उसे अपनी शान में यह कहलाना लाज़िम था कि—

* "ईं कार अज़ तो आयद मरदाँ चुनीं कुनन्द।"

उसी वक़्त बेगम को मालूम हुआ कि उसका आशक अब नहीं आ सक्ता, क्योंकि इसी वक़्त उसको उसके बाप ने किसी तिजारती कारबार की सख़्त ज़रूरत से बम्बई से बुला भेजा है। आह! बेगम पर कोहे अलम टूट पड़ा—बेगम उसी आशक के नाम से शाद होती थी, बेगम उसी को अपना मुहसिन और उसी को अपना सरताज समझे बैठी थी। बड़े अफसोस की बात है कि मुफलिसी की हालत में बेगम को यह सच्ची बात मालूम हुई कि मेरे रुपयों के साथ २ खुशदिलबेग का इश्क भी खैरबाद कह गया।

* यानी तुमसे वही काम हुये जिनसे कि मरदों की ज़ीनत है।

बेचारी बेगम पर इस वक़्त आफतों का हजूम था—उसकी अकेली जान, और यह आफतों का अज़ीमुश्शान तूफान ! या हफीज़ अल् अमान !

खुशदिल बेग अमीर था, और वह गरीब—हां गरीब भी कौन, बिलकुल फकीर, मुफलिस, जिसके टका कफन को पास नहीं, दाने २ को मोहताज,—फिर भला ऐसी मुफलिस अपनी ख़ाहिशें तमन्नाओं को क्योंकर पूरा कर सकती थी।

उसे आसपास कोई यार मददगार न दिखाई देता था और जब उसने यह सुना कि खुशदिल बेग बम्बई जाता है तो और भी उसकी हिम्मतों पर ओस पड़ गई और उस दिलशिकस्त: बेगम ने अदालत लड़ने के क़स्द को फिस्क़ कर दिया।

अब फिर हमारे किस्से का सिलसिला पुलिस की ओर रूजू होता है। जिस वक़्त इस वाक: की ख़बर थाने में पहुंची तो थानेदार लाला झुनझुनप्रसाद जमादार मुतकल्ला खां और चार कांसटेब्लों को साथ लिये दिलपसन्द-जान के मकान पर आ पहुंचे। थानेदार ने मकान में पहुंचतेही वहां ठीक उसी तरह तशखीस आमेज़ निगाहें दौड़ानी शुरू कीं जैसे कोई डाक्टर अपने मरीज़ को बड़ीही जाँफिशानी के साथ मोआइना कर रहा हो।

बेगम अब तक उसी बेहोशी की हालत में पड़ी हुई थीं। उस तवायफ ने कुल हालात का इज़हार दे दिया। जिसे थानेदारसाहब बगैर किसी मख़ल अन्दाजों के बड़ेही गौ़र और संजीदगी से सुनते रहे और जब उसका इज़हार एखतताम को पहुंचा तो इन्होंने उसे लालचभरी निगाहों से देख के और दिलही दिल यह मनसूबा गांठ के कि ऐसे मौके हमेशा नहीं आया करते, उससे धीरे २ लेकिन ज़ोर देके कहना शुरू किया कि अगर यह चोट कहीं मोहलक करार पाई तो उसका नतीजा उस तवायफ के हक़ में बड़ाही बुरा होगा क्योंकि यह वाक़: ख़ास उसी के मकान में का है। इसके बाद उसकी हालत पर एक किस्म का अफसोस ज़ाहिर करते हुये थानेदार ने अपनी तहक़ीक़ात शुरू की। दिलपसन्दजान ने थानेदार से क़रार कर लिया कि अगर वह उसे बाल २ बचा दे तो वह २००) उसे देने को तैयार है। इस पर थानेदार ने उससे कोई ख़ास कौ-लोकरार उस वक्त तक के लिये न किया जब तक कि यह न साबित हो जाय कि बेगम को ज़ख्म कैसा पहुंचा है ताहम् थानेदार ने उससे दबी ज़बान से कह दिया "मैं तुम्हारा बहुत ज्यादा ख़याल रक्खंगा" इसके बाद थानेदार साहब ने मुझे एक जर्राह के बुला लाने की इजाज़त दी। साथही चलते वक्त मुझे यह भी हिदायत कर दी गई कि

जर्राह को मैं समझा दूं कि बेगम का ज़खम खाह कैसाही क्यों न हो लेकिन वह उसे महलक ही बताये । मैं जाके तिनकौड़ी मियां नामी एक मशहूर जर्राह को बुला लाया जिसका कौल था कि इस फन् को मैंने यूनान में सीखा था और जब उसने आके चोट का मोआइना किया तो कहने लगा ।

"ज़खम हकीकत में बहुत गहरा है—अगर खास २ बातें जल्दी में न की जातीं तो इसमें कोई शक नहीं कि हमेशा के लिये बेगम अपने दाहिने हाथ से हाथ धो बैठतीं"

अब थानेदार ने यह बहाना किया कि मैं बेगमसाहब को डाक्टर के मोआइना को ले जाऊंगा और उसी के बन्दोबस्त के लिये बाहर जाता हूं—यह बहाना कर हज़रत उस मकान से बरामद हुय और जर्राह से, बेगम के ज़ख्म की असली कैफियत पूछने लगे । जर्राह ने साफ २ कह दिया कि न तो बेगम की हड्डी टूटी है और न सरकी है बल्कि बेगम ने यह अपनी बेहोशी भी बनौआ बना रक्खी है ।

यह सुनके थानेदारसाहब ने ज़रा आज़ादी से साँसें लीं और फिर मकान में आके उन्होंने दिलपसन्दजान से कहा कि अपने मकान को किसी अपने रिश्तेदार या पड़ोसी के सुपुर्द करो तुम्हारी उन आदमियों के साथ चालान होगी

जो कि जाये-वार्दात पर मौजूद थे। उसी वक्त उन्होंने बेगम की दोनों लौंड़ियों से कहा कि तुम मुस्तैद होजाओ और तैयारी करके बेगम को उनके ख़ास रहने के मकान में ले जाओ बन पड़ेगा तो मैं उनके लिये एक डाक्टर मुकर्रर कर दूंगा।

थानेदार ने कहा—"चूंकि बेगम एक पर्दानशीन औरत है इसलिये मैं उन्हें पुलिस-असपताल में किसी तरह नहीं भेज सक्ता। बेगम अभी तक उसी तरह दम साधे पड़ी थीं—उधर थानेदार ने दिलपसन्दजान से कहा कि जब से दीगर मुजरिमों के साथ तीन कानिष्टबिलों की हिफाज़त में थाने की तरफ तुम रवाना होगी तब से मैं बेगम को उनके मकान पहुंचाने जाता हूं। लेकिन थानेदार की यह आख़िरी बात महज़ झूठी और चालाकी थी। बेगम के मकान पर पहुंच के उसने नौकरों को हुकुम दिया कि तुम लोगों को तब तक माल व असबाब से खबरदार रहना पड़ेगा जबतक कि तुम्हारी बेगम पुलिस-असपताल से लौट के न आ जाँय।

जैसेही बेगम ने ये अलफाज़, यानी "पुलिस-असपताल" का नाम सुना वैसेही गोया उन पर किसी तिलिस्मी ताक़त ने अपना असर किया और वह फौरन् उठ के खड़ी होगई और थानेदार से कहन लगीं कि कोई मुझे मजबूर करके पुलिस-असपताल में नहीं ले जा सक्ता है।

यह सुन के थानेदारसाहब सीधे तवायफ के मकान पर लौट आये और उससे कहने लगे कि अगरचे तुम्हारा मुकद्दमा सख्त है लेकिन मैंने तुम्हें बचाने का इरादा मुसम्मम कर लिया है और मैं अपने रिपट में साफ २ लिखूंगा जो कि हुक्काम के पास जायगी कि बेगम की जानिब से किसी किस्म की खास बुलाहट नहीं की गई थी।

२००) चेहराशाही लेके थानेदारसाहब थाने को लौटे जिसमें हमलोगों के हाथ भी हिस्से की खासी जमा पहुंची उनका रोजनामचा खास इस तरह इस खबर से स्याह किया गया—

"चूंकि मुसम्मात झूठी, लौंडी मुसम्मात बेपरवाहुन्निसा बेगम ने यह रपट लिखाई कि उसकी बेगम बड़ी ही बेरहमी से मारी गई है, तो फिदवी बग़ैर किसी किस्म की रुकावट के मऔन जाय वारदात पर जा पहुंचा। पहली निगाह जिस वक्त मेरी मजरूहः पर पड़ी तो मुझे यही गुमान हुआ कि उसे ज़र्ब शदीद आई है, और यह देख कर मैंने फिर फौरन् एक शख्स को जर्राह के बुलाने के लिये रवाना किया लेकिन जर्राह के आने पर और उसकी ज़बानी यह बात सुनने पर हमें सख्त ताज्जुब हुआ कि बेगमसाहब मक्र किये पड़ी हैं—और जिसकी बात फिलवाकः बहुत दुरुस्त थी—जिस वक्त बेगम के बारे में

यह कहा गया कि इन्हें जनाब डाक्टर साहब के मुलाहज़े के लिये रवाना करना चाहिये तो यह सुनतेही वह चौंक पड़ीं और फ़ौरन् हालत असली पर आ उठ बैठीं। यह देख के फ़िदवी ने इस मुकदमे को ज़ब्ब ख़फीफ में दाखिल किया और मुहाले: को यह हिदायत कर मैं खुद थाने में लौट आया कि उसे अदालत फ़ौजदारी में इस बारे में चार:जोई करनी लाज़िम है।"

मिरज़ा खुशदिलबेगसाहब फिर बम्बई से कभी न लौटे, बेगम बेपरवाहुन्निसा के बारे में जो आख़िरी बातें मैंने सुनीं वह यह थीं कि आखिरश उन्होंने दिलपसन्दजान पर अदालत दीवानी में नालिश दायर कर दी। अफ़वाहन् ऐसा भी सुना गया था कि पहले उन्होंने एक बड़े नामी अमीर वकील को अपने मुक़दमे की पैरवी के लिये खड़ा किया।

लेकिन चूंकि वह अपनी आबरू का ख़याल रखती थीं इसलिये उन्होंने वकील के सामने होके उससे बात चीत करनी मुनासिब न समझा। उधर वकील साहब ने भी यह कहा कि फिर मैं क्या ख़ाक मुकद्दमा अपने हाथ ले सकूंगा, क्योंकि मुमकिन है कि कोई धोखेबाज़, औरत की शकल बन के मुझ को धोखे में डाला चाहता हो इसलिये मैं मुकद्दमा अपने हाथ नहीं लूंगा।

जैसा अंजाम उनके वालिद मरहूम सैयद दौलत शाह-

जहां खां का हुआ—वैसाही अंजाम उनके लड़के सैयद फ़ज़ूल खर्च का हुआ—ग़रज़ यह कि वालिद ने एक ऐसा बेहूदा रास्ता खोल दिया कि जिस पर उनके खानदान-वाले भी उन्हीं को देखादेखी चल पड़े । क्या कभी मुमकिन है कि अगर एक खानदान के बुजुर्गवार कोई बदचलनी एख़्तियार करें तो उनके लड़के उनसे भी कहीं ज़्यादा बदचलन न होंगे ? ज़रूर होंगे—ख़ाह वह ऐख़्लाक़ी तौर से हो ख़ाह जिस्मानी । हालही के कहे हुए एक अंग्रेज़ी आलिम का क़ौल इस बात की शहादत के लिये काफी है कि बुरे लोग की नस्लें जिस्मानी और ऐखलाकी दोनों हालात में हमेश: नीचेही को गिरती जाती हैं ।

उन्नीसवां पर्व्व ।

एक पुराने तहसीलदार के यहां की नक़बज़नी ।

पुराने ज़माने के तहसीलदारों की चालढ़ाल आजकल के ज़माने के तहसीलदारों की चाल से कहीं अलग थी । उन हज़रात की शान और शौकत ठीक नौव्वाबों की सी होती थी और उस ज़माने के तहसीलदार लोगों के नौकरों की तनखाहें जोड़ के इतनी हो जाती थीं कि जो खुद

उनकी माहवारी तनख़ाह से कहीं बढ़ चढ़ जाती थी। ख़ैर! इन चन्द ज़रूरी अज़कार का तज़किर: करके अब हम एक मुकद्दमे की तरफ झुकते हैं जो दरअसल चोरी और नक़बज़नी का था और जिसकी इत्तला एक तहसीलदार साहब की तरफ से थाने में कराई गई थी। रोज़नामचे के रपट की नक़ल हस्ब ज़ेल है।

"मीर उलटा पालता एक्स-तहसीलदार ज़िला ऐशपुर के इस बात की इत्तला देते हैं कि गुज़श्त: रात को नक़बज़नों ने उनके मकान में नक़ब से दाख़िल होके एक ख़ासी कारगुज़ारी की, यानी ४०००) की रक़म साफ उड़ा ले गये, अगर्चे पूरे तौर से उनका शुबहा किसी भी ख़ास शख़्स पर नहीं है पर तो भी उनको ख़ाहिश है कि पुलिस इस बारे में तहक़ीक़ात शुरू करे"—

रिपट के साथही साथ एक फ़िहरिस्त चोरी गये माल की भी थी—जिनमें अँगूठियां, दोशाले, शाल और दीगर सोने चाँदी की बेशक़ीमत चीज़ें थीं। इस पर थानेदार मिरज़ा ज़बरदस्त बेग ने जमादार मुचलकाप्रसाद को इस तहक़ीक़ात की निगरानी के लिये मुझे और दो दूसरे कानिष्टबिलों को तायनात करने का हुकुम दिया। साथही थानेदार साहब ने यह भी ज़ोर देके कहा कि जमादार साहब हमलोगों को इसका यक़ीन दिला दें कि "जो

शख्स इस भेद को खोलेगा या असल मुजरिम का पता लगा सकेगा उसे वे ५०) नकद बतौर इनाम अपने जेब ख़ास (?) से इनायत फरमायेंगे।" इसमें का हरएक शक्स अपनी २ राह लगा और जिस वक्त मैंने जमादार मुचलका-प्रसाद से यह कहा कि मैं एक हफ़्ते में लौट आऊँगा तो वह मेरी इस पेशीनगोई को सुन चौंक पड़ा। मैं वहां से सीधा एक गांव में पहुंचा जिसमें कि एक पासी रहता था। यह शख्स इसके पहले एक नामी चोर मशहूर हो चुका था इसलिये मेरी निगाह पहले इसी पर पड़ी। वहां पहुंचने पर मैंने देखा कि उसका पैर किसी बीमारी से वेकाम हो-गया था जिससे वह घसीटता हुआ चलता है और यह देख के मालूम हुआ कि मौजूद: वारदात में इसने कोई पार्ट नहीं लिया था, मैंने कुल मामला उससे मुफस्सिलन कह सुनाया, और चोरी गई हुई चीजों या माल मसरूक: का हुलिय: और फिहरिस्त बताई बयान के आखीर में मैं उससे कहने लगा कि "भई मैं तुमसे करार करता हूं कि अगर यह चोरी तुमने बरामद को तो मैं उस इनाम में से आधा तुम्हें ज़रूर दूंगा जो थानेदार साहब ने मुझे देने के लिये कहा है।"

इस पर उसने मुझ से कहा कि बस आप दो दिन के लिये इसी गांव में ठहर जाइये तो फिर उसके बाद मैं आप

को मदद देने लायक होके मदद देने लगूंगा । अलग़रज़ तीसरे रोज़ वह मेरे साथ चलने पर तैयार हुआ. और कहने लगा कि हमलोगों के काम पूरा करने का मनसूबा बड़ाही सहल है, यानी यह कि तुम गांवों में पूरब पश्चिम का दौरा करो और मैं उनमें उत्तर दक्खिन का दौरा करता हूं, साथही उसने एक सलाह यह भी दी कि मैं बग़ैर वरदी के गांव में दाखिल हूं और चलते चलाते वह यह भी कहने लगा कि हमारी इस बात का भी ख़याल रखियेगा --

"जितनी नीच क़ौमें हिन्दुओं में है मसलन् पासी, भर चमार, डोम, धरकार, दुसाध, वग़ैर: वग़ैर: उमूमन् चोरी की यही मुर्तकिब होतीहैं और चोरी होने के बाद १५ रोज़ तक वे एक इन्तज़ार में रहते हैं और जब वे देखते हैं कि हमारी चोरी का कोई भेद अबतक नहीं खुला तो वे समझते हैं कि अब गोया हम इसमें पूरे २ तौर से कामयाब हुये। इसके बाद वे एक सूअर की कुरबानी अपने देवता के सामने करते हैं जिसके कि हिफ़ाज़त में हरएक चोर अपने को समझता है, या यों कहिये कि चोर लोग उस देवता को अपना मुहाफिज़ समझते हैं। इसी कुरबानी वाले दिन में उन लोगों में भारी शराब कबाब चलता है और यही वह दिन है जिसमें कुल चोरी का माल आपस के हिस्सों में तक़सीम किया जाता है।"

जुदा होते वक्त हमलोगों ने फिर रात को बाहम मिलने का मुक़ाम भी तजवीज़ कर लिया था, क़रीब २ सत्तर या अस्सी गांवों के थे जिनमें हमलोगों को दाख़िल होना था, और बक़ौल पासी वह रस्म उन लोगों को पन्द्रह रोज़ के बाद होनेवाली थी। मेरी कुल उम्मेदों पर पानी फिरता जाता था और वह तारीख़ जिसमें कि मैंने जमादार से थाने में लौट आने का क़रार किया था नज़दीक होती जाती थी, इस वास्ते मैंने यह पक्का इरादा कर लिया कि अगर उस रोज़ तक (जो बारहवां रोज़ था) मैं कामयाब न हुआ तो ज़रूर बिल ज़रूर मैं थाने में लौट जाऊंगा।

लेकिन खुशक़िस्मती ने एक खासी खुशखबरी सुनवाई, पूछने पाछने पर आखिरश मुझे मालूम हुआ कि मौजे बदमाशगञ्ज के कुछ पासी एक शराब कबाब की दावत की तैयारी में मशगूल हैं, इसलिये फौरन्ही मैंने इसकी इत्तिला अपने थानेदार को दिलवाई और एक मोतमिद चौकीदार को छोटादास पासी के पास रवाना किया। पासी ने मुझे क़रीब आध दर्जन के ऐसे चौकीदारों का नाम बता रक्खा था, जिन पर कि मैं, बक़ौल इस पुरानी मसल के एतबार कर सक्ता था कि "चोरों की बात में ईमानदारी है।" थानेदार मिर्ज़ाज़बर्दस्तबेग़ साहब, अपने टट्टू पर सवार

साथ में तीन कांष्टेबल और गोड़ैंतोंका एक बड़ा झुण्ड लिये वहां आन मौजूद हुये। पासियों का मकान घेर लिया गया और थानेदार साहब ने तीन बनियों को तलाशी की गवाही के लिये बुला लिया। मैंने थानेदार साहब से मुलाक़ात को जुरअत की, जिन्हें कि हम सब उनकी खुशमिज़ाजी के लिये मिर्ज़ासाहब के नाम से पुकारते थे—और साथही मुझसे यह कहे बग़ैर भी नहीं रहा जाता कि उनको ग़ुस्सा पहले तो आताही न था, अगर वह आ भी जाता तो ज्यादा देर तक क़ायम न रहता था – उनके चेहरे के ख़तोख़ाल से इन्तहा दर्जे की रहमदिली ज़ाहिर होती थी जैसा कि हक़ीक़त में उनका दिल था भी; लेकिन ग़ुस्सा एक ऐसी चीज़ है कि जो हसीन से हसीन चेहरे को भी बदनुमा कर देता है; और यही एक वजह थी कि हमारे मिर्ज़ासाहब का चेहरा भी उस वक़्त ख़राब हो जाता था जब कि ग़ुस्से की जलती बलती आग का इनपर ग़लबः हो जाता था। आख़िरश मकान में घुसने के बाद मिर्ज़ासाहब ने देखा कि काटा हुआ सूअर जो अभी साफ़ न किया गया था अपने दोनों पैरों पर वहीं लटक रहा था। उसकी गर्दन से क़तरात ख़ून टपक रहे थे; बस यह देखतेही मिर्ज़ा सिर से पैर तक जल भुन उठे, और उनके ग़ुस्से का कहीं थलबेड़ाही न लगता था। उन्होंने अपने

गुस्से से लबालब भरे प्याले को पासी क़ौम पर उँडेलना शुरू किया। यानी हाथ की लम्बी चाबुक से एक सिरे से उनकी बे बेतरह ख़बर लेने लगे। मैं ख़्याल करताहूं कि बहुतों से उस वक़्त अपनी हँसी न ज़ब्त हो सकी होगी जब मिर्ज़ासाहब कमाल ग़ज़ब की हालत में कह रहे थे "ये नालायक भी जरूर इन मकरूह जानवरों यानी सूवरों की औलाद में से हैं।" बेचारे ग़रीब पासी, मकान के एक गोशे में खड़े लरजाँ और तरसाँ अपनी हालत ज़ार पर आँसू बहा रहे थे—और हमारे थानेदार साहब गुस्से में भरे सैकड़ों सलवातें उन्हें सुना रहे थे। हक़ीक़त में मिर्ज़ासाहब एक मुसल्मान होने की वजह से, एक सूवर के गोश्त की दावत होते देख के अपने आपे से बाहर हो रहे थे।

खड़े २ आख़िरश गवाहों में से एक ने थानेदारसाहब से यह कहने की जुरअत की कि मेहर्बानी फ़र्मा के अब तलाशी शुरू कीजिये, क्योंकि हमें बहुत कुछ काम करना है। थानेदारसाहब यह सुन के उस नफ़रत अंगेज़ मुकाम से दूर जा खड़े हुये और उन्होंने गोड़ैतों को हुक्म दिया कि मुजरिमों के मकानों की हरएक चीज़ निकाल के मेरे सामने लाओ। हकीकत में चोरों का वही "मुकर्रर: दिन" था। अलग २ हिस्सा देने के लिये चोरी के माल की चार गठरियां बाँध के वहीं रक्खी गई थीं। जब वह खोली गईं तो उनमें से

दोशाले, सोना, चाँदी, जवाहिर, और दीगर अनवाय एक-साम के बेशकोमत माल बरामद हुये। पासियों की औरतें भी खूबसूरत और बेशकोमत जड़ाऊ जेवरों से गुँदनी की तरह लदो हुईं थीं जिनके जेवरों को भी थानेदार साहब ने उतार लेने का हुक्म दिया, और इस तरह गोया क़रीब तीन हज़ार की जमा उनलोगों के मकानों से बरामद हुई।

इसकी ख़बर फ़ौरन्‌ही एक्स-तहसीलदार को दी गई जिसपर उन्होंने अपने एक पुराने और मोतबिर नौकर को माल मसरूक़: की शिनाख़ के लिये रवाना किया। लेकिन बदकिस्मती से उस कुल माल में से सिर्फ एकही चीज़ तह-सीलदारसाहब की पाई गई, और बाक़ी के लिये उस आदमी ने कहा कि बेहतर होता अगर यह चीजें तहसीलदार साहब से शिनाख़ करा ली जातीं। कुल माल तहसीलदार को दिखलाया गया, लेकिन उन्होंने भी अपने नौकर के मा-निन्द, उनमें से सिर्फ एकही और उसी पहले की पहचानी हुई चीज़ को अपना बताया। अगर हमलोग जाँच करनेमें जाँफिशानी करते तो इसमें कोई शक न था कि उन चीज़ों का मालिक निकल आता जो कि बेतरह उन बदमाश पा-सियों के हाथ से लूटागया होगा, लेकिन हमलोगों ने उनकी तलाश करने में एक मामूली और महदूद कोशिश की, ज़िसका नतीजा ख़ाक भी न निकला। थानेदार साहब ने

पहले तो मुलायम अलफ़ाज़ों से फिर घुड़की धमकी और मार से उन पासियों की ज़बानी माल के मालिकों का पता लगाना चाहा, लेकिन इस बारे में एक लफ़्ज भी उन लोगों ने अपनी ज़बान से न निकाला—बल्कि जो कुछ उन्होंने कहा उसका मुख़्तसर मतलब यही था कि किसी देसी रजवाड़े से वह कुल माल असबाब उनलोगों ने ख़रीदा था। थानेदार साहब ने इस पर जलभुन के पूछा कि आ-ख़िरश वह रुपये तुमलोग कहां से लाये थे जिनसे कि यह अशिया ख़रीदी या बनवाई जा सकीं। इस पर उनलोगों ने कहा, कि हमलोग किसी बड़े साहब की साईसी करते थे जिनका नाम इस वक्त हमें मालूम नहीं। थानेदारसाहब ने यह सुनतेही ज़ोर से कहा "क्या खूब ! सालहा-साल मुझे सर्कार बहादुर की नौकरी करते गुज़रे लेकिन ऐसा दिन कभी नसीब न हुआ कि किसी दुशाले से अपनी पीठ तो मैं ढाँकता—लेकिन तुमलोगों ने मामूली साईसगिरी में यह मर्तबः हासिल किया; ज़रा तुम सब, अपने दिमाग़ ठीक करके, उन बड़े साहब का ख्याल तो करो। उनको जानतेही बन्दः एककलम् थानेदारी को इस्तीफ़ा देता है और जाके साईसी में मशगूल होता है—क्योंकि साईसी में वह फायदा है कि जिस्का कोई हिस्सा भी थानेदारी में नहीं पाया जाता।" मिर्जासाहब को इस बात का उनलोगों से

कोई साफ़ जवाब देते न बन पड़ा—आँय बाँय शाँय कहके उनलोगों ने अपनी जान छुड़ानी चाही, लेकिन भला यह कब मुम्किन था—मिर्ज़ासाहब ने दफ़ात लगाकर उन सबों की चालान अदालत में कर दी। माल मालिक का पता न लगने से हस्बे मामूल वह कुल माल शारे आम में नीलाम किया गया, और उस्का रुपया दाख़िल ख़ज़ाना सर्कार बहादुर हुआ; चार पासियों में से हरएक को दो २ साल की सख़्त क़ैद का हुक्म हुआ, और उनकी औरतों को इस जुर्म पर, कि उनके पास से चोरी का माल बरामद हुआ था—उनके शौहरों से आधी उन्हें सज़ायें दी गईं। "अच्छी तरह सुराग़रसानी" के लिये मुझे पच्चीस रुपये इनाम मिले—और थानेदार की मुस्तैदी और कारगुज़ारी ने उन्हें भी पैंतीस रुपये का फ़ायदा कराया जो कि गवर्नमिण्ट से उन्हीं उनकी सिफ़तों की वजह इनाम में उन्हें मिले थे। मेरे नाज़रीन ने देखा होगा, कि किस तरह मैंने इस पेचीली राह को सुलझा के अपने काम लायक़ बना लिया; इसी तरह छोटे २ टुकड़े जिन्हें देखने से मालूम होता है कि ये बेकाम हैं अगर तरतीबवार एक जगह किये जायँ तो आप उन्हें सिलसिलेवार पढ़ के अपना मतलब निकाल सकेंगे।

इन्साफ़न् मैं थानेदार साहब की कमाल तारीफ़ कर सक्ता हूं. उनकी यह एक बात मुझे हमेशा याद रहेगी कि

एक पाजी ज़िमींदार ने थानेदार साहब या मिर्ज़ा साहब से मिल के कहा, कि अगर आप मुझे उन पासियों के मकान में की बरामद की हुई जमा का मालिक क़रार दे के या मुद्दई गर्दान के कुल माल मेरे हवाले करें, तो मैं आपको उसकी कीमत का आधा रुपया दे देने को तैयार हूं, इस पर थानेदार साहब ने अपने जवाब में एक अंग्रेजी मुसन्निफ के क़ौल को मिलाते हुये यों जवाब दिया—"वह शख्स जो कि झूठ बोलता है, यह नहीं ख्याल करता कि मैं कितनी बड़ी मुशकिल में अपने को डालता हूं, क्योंकि वह उस एक झूठ के क़ायम रखने के लिये बीस झूठ के बोलने पर मजबूर होगा।" इसके बाद थानेदार साहब ने बड़े जोश खरोश से हस्ब जैल सलाह ठाकुर साहब को देनी शुरू की:—

"फरेबसिंह, मैं ख्याल करता था कि तुम एक आम फ़हेम के आदमी हो, लेकिन अब मैं तुम्हें ख़ासा बेवकूफ़ समझता हूं, जो कुछ कि तुमने अपना इरादा किया है उसके किसी पहलू पर शायद तुमने नज़रे गौर नहीं डाली; अगर मैं भी तुम्हारी इस ख़ामख्य़ाली के मुताबिक़ या पागलपने के ऊपर काम शुरू कर दूं—तो इसमें कोई शक नहीं कि एक हफ़्ते के अन्दरही अन्दर हम दोनोंही, ज़िला जेल की हवा खा रहे होंगे। तुमपर तो दग़ाबाज़ी का जुर्म

आयेद होगा—और मैं अपने शरीफ वालिद के नाम को बदनाम करता हुआ तुम्हारे जुर्म का शिरकतदार समझा जाऊँगा। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि चन्द ख़ास २ रजिष्टर थाने में रक्खे जाते हैं? अगर हुक्काम मुझे रोज़नाम्चः आम लाने की इजाज़त फ़र्मायें, जिसमें कि कुल माजरे मुन्दर्ज रहते हैं, या उन रजिष्टरों के लाने का हुक्म दें जिनमें कि माल मसरूक़: और माल बरामदशुद: की तफसील रहती है तो कितनी किताबों या रजिष्टरों को मैं झूठा बनाऊँगा? अगर कहो कि अपने थाने के रजिष्टरों को मैं बदल दूं, तो भई। इसके बराबर दूसरी और बेवकूफीही न होगी, क्योंकि फर्ज़ करदम कि उन्हें मैंने बदल भी दिया, तो उन रोज़नाम्चों या रजिष्टरों का क्या इलाज होगा, जो थाने के रोज़नाम्चों की नकल हैं और जो पुलिस दफ़्तर (सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब के आफिस) में रक्खे हुये हैं? नहीं फ़रेबसिंह! मैं एक ईमानदार आदमी हूं। मेरी पैदाइश एक अच्छे खानदान से हुई है; मैं अपनी शान में यह नहीं कहलाया चाहता कि मैं बेईमान हूं, या यह कि मुझसे ऐसा कमीना क़सूर ज़हूर में आया। ख्याल रक्खो, भले आदमी से कभी बुरे ख्यालात न पैदा होंगे, और अगर तुम्हारा ख्याल इसके खिलाफ़ है, तो हो, लेकिन याद रक्खो मिज़ाज़बर्दस्तबेग़ से ऐसी बातें हर्गिज़ ज़हूर में न आयेंगी।" इसपर कुल कांष्टेबल बोल उठे "जनाब ने बहुत खूब फ़र्माया।"

इस गुफ़गू के बाद फरेबसिंह अपने मौजे को तरफ र-वाना हुआ, लेकिन बाज़ार में मुझसे मिलने पर वह ठहर गया, और थानेदार से अपनी की हुई कुल बातों के सुनाने के बाद कहने लगा कि अब तो हज़रत यकायक बड़े पर-हेज़दार बन बैठे हैं और अगर मैं बजाय गुफ़गू के रुपयों की थैलियां ले के उनके पास हाज़िर हुआ होता तो देखता कि उनकी नेकी कितनी है और कहां तक वे लालच को अपने दिल में नहीं राह देते। उसने कहा "अगर मैं १५००) नकद, जो कि उस जमा का निस्फ़ है ले के उनके पास आया होता तो हज़रत के मुंह से राल टपक पड़ती— और फिर इस तरह वे अगर इन्कार कर देते तो मालूम होता।"

थानेदार ने मुझे पांच रुपये दिये थे जिनमें उतनेही और मिला के मैंने उन्हें छोटादास पासी को नज़र कर दिये, ताकि उसकी हिम्मत आइन्दः के लिये ऐसे मामलात में बढ़ी रहे।

तीसवाँ पर्व्व।

किरानी साहब।

जब कि हमलोगों को फज़्लेइलाही से खातिरख्वाह इतमीनान हासिल हो जाता था—तो ढूंढ़ढाँढ़ कर कोई

ख़ास वसीला दिलबस्तगी व नीज़ सूई से भाला या पनाले का नाला बनाने का हम हासिल कर लेते थे। उसी ज़िले में जिसमें कि मैं ताइनात था एक अंग्रेज़ी बड़े किरानी भी रहते थे, जो कलेक्टरसाहब बहादुर के दफ़्तर के बड़े मुहर्रिर थे। अपने मातहतों से यह किरानी हमेश: बढ़ाचढ़ा रहता, खुददारी वनीज़ दीगर तजल्ली और शान की चीजों से वह हमेश: अपने को आरास्ता करने की कोशिश करता रहता। बाज़ २ मौके पर तो अपनी शानोशौकत के दर्जे को वह यहां तक बढ़ा चढ़ा देता था कि जिस्से मालूम होता कि कलेक्टर साहब ख़ास यही हैं, और जब अकसर रास्ते में कलेक्टर से किरानी साहब की मुलाक़ात हो जाती तो हज़रत किरानीसाहब ज़रा भी उनका अदब न करते, यहां तक कि ताज़ीमन् अपने सर मुबारक से अपनी टोपी को उतारते भी उन्हें नागवार गुज़रता। पहले कलेक्टर साहब ने अपने इस मातहत की इस गुस्ताख़ी पर चन्दा लिहाज़ न किया यहां तक कि एक शाम को कलेक्टरसाहब अपनी मेमसाहिबा के साथ आ रहे थे, और रास्ते में उनकी और किरानी की मुठभेड़ हो गई, हस्बे मामूल किरानी ने आज भी वही गुस्ताख़ाना जुरअत कलेक्टर साहब से की यानी एक मामूली अजनबी की तरह बिना सिर से टोपी उतारे उसने उनको देखा और फिर अपनी राह ली। इत्त-

फ़ाक़ से कलेक्टर साहब उसकी इस बेअदबी से वाकिफ़ हो गये, क्योंकि दूसरेही दिन उन्होंने किरानी को बुलवाया और उसे सलाह दी कि जब तुम किसी अपने से बड़े अ-फसर से मिलो—फौरन्ही उस्को ताजीम बजा लाओ। इस पर किरानी ने बयान किया कि टोपी को सिर से न उतारने से मेरी ग़र्ज़ कुछ हाकिम की बेइज्ज़त करने की न थी बल्कि वह एक बगैर जानी हुई ग़लती थी जो इत्तफाकन् ज़ुहूर में आ गई थी, इसी के साथही किरानी ने यह भी कहा "लेकिन साहब, अब जो कोई हुक्काम मुझ पर नि-गाह डालेगा, तो मुझे वह बगैर टोपीही के पायेगा।" इसके बाद कलेक्टर साहब ने इस मामिले पर कुछ ज्यादा ख्याल न किया। एक हफ़्ता इसके बाद गुज़र गया, किरानी के पास एक टमटम भी थी जिसके लिये उसने दो बड़ेही जानदार जानवर खरीदे थे। घोड़ों की तेज रफ़्तारी की वजह उसने उनका नाम "आँधी" रक्खा था। जैसा कि हक़ीक़त में वे थे भी; और चूंकि वह बहुत कम उन्हें बाहर निकालता था इसलिये लोग ख्याल करते थे कि शायद वह जोड़ी अभी तक अच्छी तरह से काम देने लायक़ नहीं है। एक दिन शाम को, जब वह अपने टमटम पर सवार जा रहा था, तो उसने दूर से देखा कि कमिश्नर साहब अपनी मेम के साथ गाड़ी पर सवार सामने से चले आते हैं—

इत्तफाक़ से ठीक उसी वक़्त कलेक्टर की भी निगाह इसकी टमटम पर जा पड़ी। यह देखतेही उसने अपनी "आँधी" को तेज़ किया, जो हक़ीक़त में मिस्ल बिजली के तड़पते हुये जाने लगी—और इसके साथही साथ उसने अपने पीछे के खड़े साईस को यह हिदायत कर दी कि जब साहब बहादुर की गाड़ी क़रीब आये तो वह उसके सिर से टोपी उतार दे और इसके बाद फिर उस पर उसे रख दे। अपने आक़ा के हुक्म के मुताबिक़ही साईस ने अमल किया, और उस वक़्त किरानी साहब दोनों हाथों में मज़बूती से लगाम खींचते हुये फर्राटे भरते चले जाते थे। ऐसी बेअदबाना हरकत पर कमिश्नर साहब ने एक ख़ास निगाह डाली, और जिसे जाकर उन्होंने कलेक्टर साहब से कहा, और साथही ताकीद कर दी कि यह बात बाला २ न जाने पाये बल्कि सख़्त तौर से इस पर उसको ताकीद की जावे। दूसरे रोज़ कलेक्टर साहब बहादुर एक ग़ज़बनाक सूरत बनाये हुये आफिस में तशरीफ लाये—

आतेही उन्होंने अपने मातहत को बुलाया, और उससे उसकी कल शाम की की हुई गुस्ताख़ी का जवाब सख़्त तौर से तलब किया। किरानी अपनी इस बेहूदी और अजीब बेअदबी को इस पर्दे में छिपाने की कोशिश करने लगा, कि चूंकि उसका घोड़ा उस वक़्त बड़ीही शोख़ी कर रहा था

इस्से वह खुद उस ताज़ीम के बजा लाने से लाचार था, और जिसे कि इसी के हुक्म बमाजिब उस्का साईस बजा लाया था; और अलाव बरीं क्या कलेक्टरसाहब से वह इस बात का क़रार न कर चुका था कि " आयन्दा जब किसी हाकिम की नज़र उस पर पड़ेगी तो वह उसे बग़ैर टोपी ही के पावेगा । " बाज़ अशख़ास की यह ख़ासियत होती है कि वे आम तौर से, हर एक शख्स से मारे शेखी के तने रहा करते हैं, और ऐसीही ख़ासियत इस किरानी की भी थी, अपने मातहतों व अफसरों से बजाय इत्तफाक़ और ऐका के साथ बरताव करने के उस्की बेहद: चाल अपने अफसरों को ख़फा करने और मातहतों से बिगड़ के रहने का थी । गोया उस्का यह इरादा रहा करता था कि वह अपने आपे से बाहर हो जाया करे, और उस्की चालचलन से ज़ाहिर था कि बजाय किसी की गुस्से की आग को रोकने के वहउस्में ईंधन लगाया करता था । कलेक्टर साहबने अपने मातहत का क़सूर मुआफ़ कर दिया और उसे फहमायेश कर दी कि आयन्द: से फिर ऐसा क़सूर उस्से सरज़द न हो ।

इस्के बाद जो क़सूर इन हज़रत से सरज़द हुआ उस्से वह अनक़रीब अपनी जगह खो बैठने को थे । बात यह हुई कि कमिश्नर साहब ने मुक़द्दम: बन्दोबस्त के चन्द काग़ज़ात वास्ते मोआइन: के तलब किये इस्के लिये उन्हीं ने कलेक्टर

साहब को लिखा कि वह अपने हेडक्लार्क को उन्हीं की चंद बातों को समझाने के लिये उनके पास भेज दें। किरानी को हुकुम हुआ कि वह कमिश्नर साहब के पास हाज़िर रहे और वहां पहुंचने पर वह उस बड़े हाकिम की खिद-मत में हाज़िर किया गया। कमिश्नर साहब से बैठने का हुकुम न पाने पर क़रीब पाव घण्टे के वह वहीं खड़ा रहा, इसके बाद बिना पूछे गांछे उसने कुरसी सरकाई और बादजाँ यह कहता हुआ वह उसी पर बैठ गया, 'जनाब-आली, आपको मालूम होगा कि एक फरासीसी बावरची बनिस्बत किसी अंग्रेज़ी लार्ड के कहीं ज़्यादा बातमीज़ होगा' अगर किरानी ने बग़ैर इस शरारत-आमेज़ गुफ़्तगू के कुरसी ली होती और उसपर वह बैठा होता तो यक़ी-नन् साहब कमिश्नर बहादुर उसकी बेहूदगी पर हरगिज़ ख़याल न करते, लेकिन इसकी इस खुल्लमखुल्ला शरारत को देख के साहब बहादुर बहुतही बिगड़े, उनका गुस्सा लामहदूद हो गया, और उन्होंने उसी वक्त कलेक्टर साहब को इस मज़मून का एक ख़त लिखा कि वे फ़ौरन किरानी को अपने पास बुलाएँ और उससे उसकी उस बेहूदगी का जवाब तलब करें। चूंकि कलेक्टर साहब एक बड़ेही रहमदिल हाकिम थे इसलिये उन्होंने किरानी को साहब कमिश्नर से मुआफ़ी मांगने की हिदायत की, जैसा कि

उसने किया भी, और उसी वक्त उन्होंने एक ख़त कमिश्नर साहब को इस मज़मून का लिखा कि चूंकि किरानी एक तुनक-मिज़ाज आदमी है इसलिये वे उसकी हरकत पर ख़याल न फरमाकर उसे मुआफ कर दें और यह मेहर्बानी अगर वे किरानी पर करेंगे तो गोया ख़ास उन्हीं पर होगी। साहब कमिश्नर ने इस बात को क़बूल कर लिया, उन्होंने अनवाय ऐक़साम की लम्बी चौड़ी नसीहतों के बाद किरानी का क़सूर मुआफ कर दिया।

किरानी की दूसरी नाशाएस्तः हरकत, एक अंग्रेज़ी क़बरिस्तान में वाक़ः हुई। कमिश्नर साहब के किसी मातहत का कोई अज़ीज़ जाता रहा था,—और चूंकि वह मातहत, साहब बहादुर का बड़ाही प्यारा व नीज़ उनसे बड़ाही मिला जुला था इसलिये उसके अज़ीज़ के कबर में उतारे जाने के वक्त वे खुद क़बरिस्तान में तशरीफ लेगये थे। जिस वक्त कुल रसूमात अदा हो गईं यानी मुर्दा क़बर में उतार दिया गया और ऊपर से उस पर मिट्टी पड़ गई तो साहब बहादुर ने चन्द नसीहताना और इस्तेक़लाल दिख लानेवाले अलफ़ाज़ अपने मातहत से कहे और फिर उससे हाथ मिला के वे अपनी गाड़ी में सवार हुए। लेकिन चूंकि कलेक्टर साहब का किरानी भी गाड़ी के नज़दीकही खड़ा था इसलिये उन्होंने अपना हाथ उससे मिलाने (Good

bye) के लिये बढ़ा दिया । लेकिन उस बेहूदे शख़्स ने उनसे हाथ मिलाने से इन्कार किया, और कहने लगा, "मैं यों हाथ नहीं मिलाता, आज तो ऐसे मुक़ाम पर आप मुझ से हाथ मिलाते हैं और कल जब किसी इज़्ज़त के मुक़ाम पर आपकी मेरी मुलाक़ात होगी तो शायद बात तक न पूछियेगा ।" इस बेहूदी बात और नाशायस्त: हरकत के बाद जब वह कमिश्नर साहब की तरफ से मुंह फेरने लगा, तो उसने अपनी टोपी अपने सिर से उतार ली जिससे ज़ाहिर हुआ कि उसके बेशरम मिज़ाज और उसकी कमीन: तबीयत में किसी क़दर इन्सानियत भी थी जिसे उसको उस लम्बी ज़िन्दगी ने जहां तक बन पड़ा था सिखा दिया था । चूंकि यह कोई सरकारी तौर की बेइ-ज़्ज़ती न थी इसलिये कमिश्नर साहब ने इसको इत्तला क-लेक्टर साहब से की या नहीं इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता; जो हो, इसके बाद किरानी से इस बारे में कोई बाज़पुर्स भी नहीं की गई ।

लेकिन इसके बाद उसकी बेहूदगियों ने ज़ोर बांधा उसका पाजीपना हद से भी ज्यादा बढ़ गया, उसकी शरा-रत का झण्डा ज्यादा तर ऊँचाई पर लहराने लगा, और अब गोया उसने अपनीही बर्बादीके काम अपने हाथों करने शुरू किये ।

ऐसा हुआ, कि जज साहब बहादुर जो तीन महीने की छुट्टी पर विलायत गये थे अपनी मेम साहिबा व नीज़ अपनी दो लड़कियो के साथ विलायत से तशरीफ़ लाये। आया. दोनों लड़कियों में से बड़ी को माबेल बाबा और छोटी को बेला बाबा के नाम से पुकारा करती थी। किरानी, अकसर उन दोनों लड़कियों को कम्पनी बाग में जहां अंग्रेजी बाजा बजा करता था देखा करता था। न जाने क्योंकर उसके दिल में यह ख्याल बैठ गया था कि बेला बाबा उसे इश्क आमेज़ निगाहों से देखा करती है, और हालांकि उस जवान लड़की ने कभी न तो उसे अच्छा न बुरा और न बीच की हालत के लिये कोई लफ्ज़ कहा था। एक दिन किरानी साहब को बैठे बिठाये जो वहशत सवार हुई तो आपने उस लड़की के बाप, यानी जज साहब के नाम इस मज़मून का एक ख़त लिख मारा कि वे मिहरबानी करके किरानी को अपनी बेटी से इश्कबाज़ी करने दें और नीज़ उससे वे उसे मुहब्बत आमेज़ खतों का सिलसिला जारी करने दें। ख़त देखतेही जज साहब ने फौरनही एक २ ख़त कलेक्टर साहब व डाक्टर साहब के नाम रवाना किये। ख़त पातेही वे लोग जज साहब के यहां आ पहुंचे, और उन लोगों ने एक कोठरी में बैठ के लगभग एक घंटे तक सलाहें कीं—जिसके बाद वह मजमः

बरख़ास्त हुआ और हर दो साहबान अपने २ बंगले की तरफ़ रवान: हुये। क़रीब दो बजे दिनके कलेक्टरसाहब ने किरानी को बुलवाया, और उसके आने पर उन्होंने उसके हाथ में एक खत देकर ताकीद कर दी कि यह ख़त किसी चपरासी के हाथ न भेजा जाय बल्कि वह खुद उसे लेके डाक्टरसाहब के पास जाय। बिला किसी किस्मके शुबहे के किरानीने वह ख़त लिया और डाक्टरसाहबके पास पहुंचा। डाक्टरसाहब बंगलेही पर थे नाम सुनतेही वे बाहर निकल आये और फ़ौरनही किरानी से मुलाक़ात की, इसके बाद डाक्टर साहब के साथही साथ वे अस्पताल की तरफ़ चले जो उनके बंगले के बहुतही क़रीब था। वहां पहुंचने पर डाक्टर साहब ने अपने मातहत को कुछ इशारा किया— जिसके ऊपर अमल करने को उसे पहिलेही समझा दिया गया था, और जिस इशारे को पातही उसने किरानी के ऊपर एक सेली * डाल दी, उसके बाद डाक्टर साहब ने किरानी के सिर के कुल बाल मूंड़ डाले और उस पर एक क़िस्म का मरहम लगा के ऊपर से रूई चपका दी, फिर उन्होंने उसकी कनपटियों में जोंकें लगाईं, उसकी गरदन में किसी दवा से तर बतर एक पट्टी चढ़ाई, और फिर

* सेली—यानी वह लम्बा ढीला ढाला कपड़ा जो अकसर फ़क़ीर इस्तेमाल में लाते हैं।

ज़बरदस्ती थोड़ा सा रेंडी का तेल उसे कै कराने के लिये उन्होंने उसके मुंह में उँड़ेल दिया, मुख़्तसरन यह कि जोर दवायें किसी पागल का दिमाग़ ठीक करने के लिये काम में लाई जाती हैं, वह सब उन्होंने उसके लिये कीं। बेचारे बद किस्मत आदमी ने गिड़गिड़ा के डाक्टर साहब से रहम् की इलतिजा की जिसपर उन्होंने उससे पूछा कि क्या अब जज साहब की लड़की का इश्क़-उसके दिल से काफूर हो गया है? इस पर उसने जवाब दिया कि वह एक दस्तावेज़ लिख देने को तैयार है कि जब तक वह इस जहानफ़ानी में और इस जामयेख़ाकी में रहेगा, तबतक वह कभी जज साहब की लड़की पर निगाह न डालेगा, साथही उसने यह भी कह दिया कि जितना इलाज उसका किया गया वह उसके लिये काफी था, हक़ीक़त में उसके पागलपने का ऐसा मौज़ूं इलाज शायदही कभी हुआ होगा, और उस ज़िले के हुक्काम जो बहुत दिनों तक वहीं मुक़ीम रहे—किरानी और उसके पागलपने को याद कर २ के बारहा देर तक हँसा करते थे। उसकी अजीज़ बातें उन लोगों के दिलों पर बहुत दिनों तक क़ायम रहीं। आखिरश किरानी. इस वाक़: के बहुत दिनों बाद इस जहानफानी से कूच कर गया। अपने क़िस्से को खतम करते २ इतना मैं और कहा चाहता हूं कि

कलेक्टर साहब ने, जो कि एक बड़ेही रहीम हाकिम थे, किरानी की तीन महीने की छुट्टी क़बूल कर ली, और इस तीन महीने के बीच में किरानी की तबीयत कुछ बदल गई, और जब वह फिर अपने काम पर लौट के आया तो उसने सिर्फ़ अपनी बुराइयांही नहीं छोड़ दीं बल्कि अब वह बड़ाही नेक हो गया।

उसके दुश्मन उसके बारे में कहा करते थे कि वह ज़रूर उस बूढ़े आदमी की तरह होगा जिसका ज़िक्र इस शैर में किया गया है कि—

निशाती ऐश के अयाम् में वह एक शैतां था।

मगर जब वक़्त फिरते ज़ाहिदे कामिल वह बन जाता॥

यानी खुशी के वक़्त में वह एक शैतान था और रंज के अयाम में एक परहेज़गार और दीनदार आदमी। लेकिन नहीं—तजरबे ने ऐसे ख्यालवालों पर आखिरश साबित कर दिया कि उनका यह ख्याल उसके निस्बत बिलकुल ग़लत था।

हमलोगों में अकसर इसका तज़किरा हुआ करता कि किरानी का मिज़ाज दूसरे साहबों के तरफ़ से कैसा एकबारगी बदल गया है। वह हमेशा अपने को एक पक्का अंगरेज़ ज़ाहिर करता, उसका क़ौल था कि उसकी उम्र जब सिर्फ़ ४ बरस की थी तो वह हिन्दुस्तान में अपने मा बाप

के साथ आया था, अपनी इब्तदाई तालीम के बारे में वह लोगों से ज़िक्र करता कि उसने सरकारी ज़िला स्कूल में पाई है, हक़ीक़त में सिवा उस स्कूल के क़रीब तीन चार सौ मील के भीतर और दूसरा कोई स्कूलही न था। मज़हबी बारे में उसने बहुतही कम तालीम पाई थी और जिसे वह भी अच्छी तरह जानता था,—इसकी वजह सिर्फ यही थी कि उसके स्कूल में कोई मज़हबी किताबही न पढ़ाई जाती थी। ऐसी तालीम का नतीजा यह हुआ था कि किरानी ने बहुत से बदकिस्मतों की चालचलन से अपने को भी आरास्ता कर लिया था, उसकी इब्तदाई तालीम या पढ़ाई लिखाई ने मज़हबी बातों मे उसे बिलकुल बेखबर बना रक्खा जिसे पढ़ के इनसान सलीम और बुर्दबार हो जाता है और जिसका असर किसी मज़हबवाले पर हो, ख़ाह वह हिन्दू—ख़ाह मुसलमान, ख़ाह ईसाई हो—एकसां पड़ता है—और नतीजा उसका यही होता है कि उसके आगे की ज़िन्दगी बड़ीही खुद को आरामदेह और दूसरों को भी राहत पहुँचानेवाली हो जाती है।

हक़ीक़त में यह क़ौल किसी हकीम ने कितना सच कहा है कि वह इन्सान जिसने मज़हबी तालीम नहीं पाई, उस जानवरों के मानिन्द है जो कि घर में रहता है। और

एक दूसरा हकीम कहता है, "सच्चे मज़हब का निचोड़ यही है कि दो और मुआफ़ करो, बरदाश्त करो और दर गुज़रो।"

सरकार बहादुर को ख्याल पर ख्याल करना लाज़िम है कि अगरचे इस मुल्क के लोग अमूमन् ग़ैर तालीम याफ़्ता हैं और पत्थरों की मूरत को पूजते हैं और सदहा किस्म की लग़ोयात पर (बक़ौल कहनेवालों के) उनका एतबार है—लेकिन मैं कहता हूं कि वे लोग कालिज के तालीम पाते हुए या पाये हुए नौजवानों से कहीं अच्छे हैं, कालिज या स्कूलों के तालिब इल्म एक नयेही मज़हब के चलानेवाले बन जाते हैं. अपने बाप दादों की चलाई हुई राहों या अपने मज़हब की लिखी हुई बातों पर वह अपनी अक़्लमन्दानः (?) समझ से काट छांट कर अपनी तबीयत के मुताबिक़ उसे बना लेते हैं, लेकिन चूंकि यह नया मज़हब एक बिचली हालत का बनाया जाता है यानी कुछ उसमें उनको जुज़ रहता और कुछ पुराने मज़हब का, तो उसका अंजाम यही होता है कि आधा तो वह रोशनी में रहता है और आधे पर तारीकी रहती है। हम यहां पर यह भी ज़ाहिर किया चाहते हैं कि हमारे मुल्क के चन्द रवियतयाफ़: नौजवानों का ऐसा ख्याल है कि नयें तालीम पाते हुए नौजवानों का यह बीच का मज़हब या

नया मज़हब अंगरेजी पादड़ी साहब के ज़रिये से मिट जायगा—यानी वे सब एक कलम इसाईही हो जांयगी।

ग़ौर करने की बात है कि जब अंग्रेजी कालिज की तालीम का असर एक इसाई के ख्यालात पर ऐसा पड़ा तो इस मुल्क के खास बाशिन्दों पर उसका असर कैसा और कहां तक पड़ेगा। मैं ख्याल करता हूं कि बाज़ नाज़रीन ज़रूर अपने दिल में यह सवाल करते होंगे कि आखिर मैं क्योंकर किरानी के हालात से वाकिफ हो गया? लेकिन इसका जानना महज मामूली तौर से हुआ किरानी की कुछ बेहूदगियां तो उस वक्त वाक: हुई थीं जब फौजदारी अदालत में मैं ताइनात था, और चूंकि हम सिपाही प्यादों में उन दिनों उसी के बारे में बात चीत हुआ करती थी, इसलिये यह कोई ताज्जुब की बात न थी कि मैं भी उनकी गुफ़्तगू में शरीक हुआ और बात की तह पा ली। उसकी आखिरी नाशायस्त: हरकत मुझे यों मालूम हुई कि डाक्टर साहब बहादुर ने एक आदमी पर दो कानिष्टबिल तायनात करने के लिये अदालत से माँगी, उसकी वजह यह थी कि वह शख्स खुदकशी करने पर तैयार हो गया था, और उस हालत में वह ज़ेर मोआलिजः डाक्टर साहब बहादुर के था, पस मैं और मेरा एक दूसरा साथी उस मरीज़ पर तायनात किया गया।

उन्हीं दिनों में इत्तफ़ाक़ से किरानी साहब भी एक हफ़्ते के लिये अस्पताल में आये थे—चूंकि उनकी हर बातों से मैं बखूबी वाकिफ़ था, इसलिये मैंने ख्याल किया कि इसको चन्दरोज़ा तकलीफ में जो कुछ मदद मुझ से देते बन पड़े देकर मैं उसे खुश करूं। तभी मुझे किरानी की आखिरी हरकत भी मालूम हुई थी, जो हो, लेकिन मैं किरानी की अज़हद तारीफ करूंगा वह मेरे साथ कमाल खुश एख़लाकी और मुरौवत से पेश आया, क्योंकि जिस वक्त उसने मर्ज़ से शफा पाई और अस्पताल से जाने लगा तो उसने मुझे बुला के चार रुपये मेरे हवाले किये और उसे देके कहने लगा कि इसे मैं तुम्हारे बाल बच्चों के लिये देता हूं—इसके ज़रिये तुम उन्हें जाड़े के कपड़े बनवा देना।

इकतीसवाँ पर्व्व।

फिरङ्गी की लड़की।

अगर हम गेहूं बोयेंगे तो यक़ीनन खेत से गेहूंही निकलेगा जिसे काट के हम उसे बहुत कुछ फायदा उठा सक्ते हैं—और अगर हम बबूल बोयें तो लारीब बबूलही पैदा होगा जिसके कांटे कम से कम या ज्यादे से ज्यादा किसी दरजे तक हमें ज़रूर नुकसान पहुंचायेंगे और जि-

सका पहुंचाया हुआ नुकसान ज़रूरही हमें बरदाश्त भी करना पड़ेगा। जैसा कि अभी हमने ऊपर बयान किया वह एक आम तौर का कुदरती क़ानून है, जो किसी तरह से बदल नहीं सक्ता है और न उनके फायदे नुकसानही से कोई पनाह पा सक्ता है।

कुछ बरसों की बात है कि एक साहब बहादुर अपनी जोरू लड़कों के साथ उसी थाने के हलक़े में रहते थे जिस में कि एक हक़ीर कांष्टेबल के ओहदे पर मैं ताइनात था। साहब बहादुर सर्कारी दफ़्तर मे नौकर थे और तनख़्वाह की आमदनी पर उनका दारोमदार था। कुछही दिनों में साहब की बीबी ने इन्तक़ाल किया और अब गोया उन्हें अपनी लड़कियों की आयन्दा ज़िन्दगी के ठीक करने की फिक्र पड़ी। अपनी नौकरी के ज़माने में साहब बहादुर अपनी तनख़्वाह में की एक माकूल रक़म के हिस्से को अ-पनी लड़कियों के गाना बजाना सिखलानेमें सर्फ करते थे। उन्होंने अपनी लड़कियों को हमारे मुल्कके गाने बजाने की तालीम दिलाई, यानी ढोल, तबला, सितार पर उन्हें खूब मश्क़ कराया; इतनाही नहीं बल्कि किसी तवायफ़ से उन्हों ने उनको नाच की भी तालीम दिलवाई। अपनी ज़ियाफ़त और दावतों में साहब बहादुर, तहसीलदारों, सरिश्तेदारों, थानेदारों, पेशकारों, नाज़िरों, मोहर्रिर व नीज़ ग़ैरे गैरे

पंच कल्यानों को भी मदद किया करते थे; और इसमें उनकी लड़कियों को आम तौर से इजाज़त थी कि वे उन लोगों से अपने को खुश कर सकी थीं। ऐसी तरबियत और तालीम पर जिसे कि ख़ास उन्हीं के बाप ने अपनी बेटियों को दिलवाई थी क्या यह कोई ताज्जुब की बात थी कि अगर उन लड़कियों में से एक अपने बदकार बाप की बदकारी का निशाना या उसकी हरमज़दगी की एक यादगार बन जाए ?। दोनों लड़कियां सारा बाबा और अताई बाबा के नाम से पुकारी जाती थीं। छोटी लड़की अताई बाबा की शादी उसी के चचेरे भाई के साथ हो गई जो उसे लिये किसी ग़ैर ज़िला में चला गया; और बड़ी लड़की, सारा बाबा की शादी एक रेलवे के मुलाज़िम के साथ हो गई। इसके दस बारह बरस बाद तक कोई बात ज़हूर में न आई, अगर्चे बड़ी लड़की की पाकदामनी इस क़ाबिल न थी कि उसे साफ़ निगाहोंसे देखा जाये, या यह कि उसकी इफ़्फ़त अस्मत का ख्याल दिल में आतेही शर्म न आती हो। लेकिन एक बड़ा भारी तबादला यकायक उस पर वाक़ः हुआ।

क़ायदे की बात है कि लालच हरएक बनी इन्सान पर ज़रूरही हमला किया करती है। यह एक अच्छी बात है कि फिसलनेवाले रास्तों में चन्द मुक़ामात ऐसे भी पाते जाते

हैं कि जहां मुसीबतज़द: रूहें कुछ देर के लिये आराम ले सक्ती हैं, वे अपने चारोंओर देखती और सोचती हैं, और फिर दोआ भी माँगती हैं कि जिसमें वे मदद देके फिर बचा ली जायें। ऐसा ज़ाहिर होता है कि सारा बाबा के ख़ाविन्द, हूबक साहब ने, अपने फायदे पर ख्य़ाल करके, जिसमें कि उन्हें कुछ रुपये माहवारी की बचत होती थी, अपनी बीबी को हिन्दी ज़बान पढ़ाने का इरादा किया।

इसी मुकाम पर चन्द बातें मैं अपने बयान के सिलसिले से अलग कहा चाहता हूं, और वह यह कि यह साहब बहादुर रेलवे के ठीकेदार थे; और इसलिये उन्हें मजबूरन एक ऐसे मुंशी को रखना पड़ा था जो कि रोज़ के मज़दूरों की हाज़िरी व उनका हिसाब किताब रखता था; अगर्चे यह हाज़िरी और हिसाब उनकी बीबी के ज़रिये अंग्रेज़ी में लिखा जा सक्ता था, लेकिन साहब बहादुर की ऐसी राय थी कि यह एक ऐसी ज़बान में होना चाहिये कि जिसमें रोज़मर्र: के कारबारियों के देखने में भी आसानी पड़े। वह मुंशी जो सारा बाबा के हिन्दी पढ़ाने पर मुक़र्रर किया गया एक नौजवान मुसल्मान था। यह आदमी, जिसका नाम शेखनटखट था, एक पूरा बदमाश था, और वही गोया सारा बाबा की ज़लालत का एक ख़ास बायस हुआ, और उसी वक्त यान: गो लोगों की ज़बान पर

इसका चर्चा रहा करता था कि मुंशीजी मिम साहिबा पर अपना बड़ा रोब रक्खा करते हैं। चूंकि मैं महज़ सच्चे वाक़आत का बयान करनेवाला हूं इससे मैं मजबूर हूं कि किसी बात को भी मिनहां कर सकूं—सारा बाबा उन दिनों खुल्लमखुल्ला लोगों से कहा करती थीं कि मुंशी से वह इसलिये ज्यादा हिलीमिली रहती है कि जिसमें उस के शौहर को इससे जलन हो, क्योंकि वह जानती थीं कि, "उसका शौहर छिप २ कुछ के किया करता है।" चाहे असल में यह ऐसाही क्यों न हों, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि असल में उसके शौहर को उसके फ़रायेज़ की तरफ झुकाने का यह एक निहायतही नाक़िस तरीक़: था; एक बहुतही पर्हेज़गारी के लमहे में, या किसी एक वक़्त में उसने आखिरश यह इरादा कर लिया कि अब वह न तो अपनी हिन्दी तालीम ज़ारी रक्खेगी और न अब मुंशीही से किसी किस्म की राहोरस्म रक्खेगी।

नाज़रीन, मैं इस काम से एक नसीहत नहीं दिया चाहता हूं। मैं भी, और आप भी, जो इस किताब को पढ़ रहे हैं खूब वाकिफ़ होंगे कि बड़े २ नेकमिजाज़ों के नेक इरादे किस तरह मटियामेट हो जाते हैं, और यहां तो जिसका ज़िक्र मैं आपसे कर रहा हूं वह किसी तरह मज़बूत दिल या अपने इरादों में मज़बूत रहनेवालों में थी ही

नहीं। बहुत से ऐसे हैं कि जो सदहा आफ़ात—सैकड़ोंही मुश्किले झेल के तब उस सीधी राह पर आये हैं कि जिस पर वाजिब तौर से उन्हें अपनी ज़िन्दगी के दिन सर्फ़ करना चाहिये था; और बहुत से ऐसे हैं कि जिनके पैर सीधे राह से फिसल के कहीं के कहीं जा पड़े हैं, लेकिन फिर वह अपने उसी असली रास्ते पर आ गये हैं कि जो उनकी ज़िन्दगी की एक सीधी और अच्छी राह थी। खुश हैं वे अशख़ास कि जिन्हें कभी ऐसे इत्तफ़ाक़ों से सामनाही नहीं करना पड़ा; मैं कहता हूं कि बड़े खुश हैं वे अशख़ास जिन की ज़िन्दगी ऐसे ख़तरों से खाली है—बल्कि सच तो यों है कि ऐसे २ हज़रात हसद की निगाहों से देखे जाने के क़ाबिल हैं। लेकिन सवाल अब यहां एक यह होता है कि क्या वाक़ई ऐसा कोई शख़्स है? हां—लेकिन सच्ची बात तो यह है, कि सारा बाबा उनलोगों में से न थी, और इसलिये वह अपने रास्ते से गुमराह हो गई।

इन्हीं दिनों में हूबक साहब के मकान में एक बुढ़िया रहने के लिये आई जो लोगों से कहा करती थी कि वह साहब की दाई है। इस औरत पर साहब का भी कामिल भरोसा रहा करता था। यह बात हमेशः से चली आती है कि औरतों के काम कभी भी पूरे तौर से जाने नहीं जा सकते, अगर ऐसाही है, तो इस बुढ़ी औरत के भेद के

जानने की कोशिश करना बिलकुल बेफायदा था। जिस घड़ी से उसने उस मकान में पैर रक्खा था उसी घड़ी से सारा बाबा की तरफ से उसके दिल में एक नफ़रत हो गई थी, और अगर उससे इसकी वजह पूछी जाती थी तो वह साफ तौर से किसी ख़ास सबब का हवाला नहीं दे सक्ती थी। आख़िरश उसने एक अपना चलता हुआ वार सारा बाबा पर करही दिया यानी हीलासाज़ी के साथ २ उसने अपने पाले हुये बेटे से कह दिया कि मुंशी नटखट और तुम्हारी मनकूह: (स्त्री) के तौर तरीके अच्छे नहीं जान पड़ते। अब तक डूबक साहब और उनकी औरत भी खूब घुल २ के कटा करती थी। कोई शख्स इश्क़ की आग में जलभुन कर जैसा कि उसके क़ौल से साबित है कहता है—कि लोग बहुत से तकलीफ़ों के बारे में बातचीत किया करते हैं—जुदाई की तकलीफ़ फिराक़ की तकलीफ़, मुहब्बत की तकलीफ़, इसकी तकलीफ़, उसकी तकलीफ़, लेकिन वह पूछता है कि कोई इन्सानी दिमाग़ी तकलीफ़ ऐसी भी है कि जो इस इश्क़ के बराबर हो? जो कि जिस घड़ी से इन्सान के पीछे पड़ती है उसी घड़ी से उसका कलेजा कुतरने लगती है और आख़िरश उसे आख़िरी, कभी न टूटनेवाली नींद से सुलाही के तो दम लेती है।—सोचिये तो उसवक्त कैसा सदमा कलेजे को पहुंचता होगा

कि जब उसी पर शुबहा करने का मौक़ा आ खड़ा होता होगा जिसके लिये कि आशककी ज़िन्दगी थी। दूसरे रञ्ज दूसरी तकलीफ़ों को आग हमदर्दी के पानी से क़रीब २ बुझाई जा सक्ती है, लेकिन इस इश्क़ की आग के लिए किसी किस्म का पानी मुफ़ीद नहीं होता बल्कि वहां तो यह हाल है कि—

(दवायें लाख हो लेकिन मरज़ बढ़ताही जाता!) इस्की ख़ासियत है कि इनसान तनहाई में ग़म खाया करता है आपही आप अपने पज़मुरद: दिलके हरएक पहलू में चुभ जानेवाले, और एक हसरतनाक ख्याल के साथ छोड़ दिया जाता है। जो शख्स इश्क महाराज का शिकार बन जाता है उसे किसी का सवाल करना या उस बारे में किसी क़िस्म का मुफस्सिल हाल पूछना सख़ नागवार गुज़रता है।

कुछ हफ़्तों के बाद साहब ने अपनी बीबी से कहा कि अब उसने उससे जुदाई की ठान ली है. और उसने उसे हुकुम दिया कि दो घण्टों में वह अपना सामान सफर लैस करले और "उसके मकान" से बाहर निकल जाय। यह कुछ दिनों के बाद मालूम हुआ था कि उस बूढ़ी शैतान की ख़ाला ने मुंशी नटखट को इस बात के लिये कुछ घूस दिया था कि वह एक मुहब्बत आमेज़ ख़त डाक से

ज़रिये सारा बाबा को भेजे, और जिसे लेके उसने अपने पालट बेटे को दिखा दिया था, उसी वक़्त से मुंशी ने भी साहब को नौकरी छोड़ दी और आयन्दः फिर उस बद-माश का कभी कोई पता निशान न चला। इस चिट्ठी को हूबक साहब ने अपनी औरत के सामने डाल दिया और कहने लगे कहो इसके जवाब में क्या कहती हो? पहले मौक़ों पर, जिस वक़्त वह किसी ख़ासके जोशमें बात किया करती थी उस वक़्त उसका ख़ामोश करना मुश्किल हो जाया करता था, लेकिन जिस वक़्त वह ख़त उसके सामने रक्खा गया, उसके होंठ बन्द हो गये और उसकी ख़ामोशी ने उसे गुनहगार साबित कर दिया। उसके पड़ोसी कहते थे कि उसके शौहर ने उसके साथ बड़ाही बुरा बरताव किया वह तो खुद इरादा किये बैठी थी कि अपने शौहर के मकान को ख़ैर बाद कहे जिसमें उसे उसकी बुराइयों के पूरा करने का पूरा २ मौक़ा मिले। हक़ीक़त में सारा बाबा दो घंटे में उस मकान से बाहर हो गई और उसने अपना क़याम एक क़रीबही के रेलवे ष्टेशन के क़रीब किया, उसके साथ उस वक़्त कोई नौकर न था—लेकिन हां इतने रुपये उसके पास ज़रूर थे कि जिनसे वह तमाशा पूर में पहुंच सके, जो असल में उसके बुजुर्गों के रहने का मुक़ाम था। अपने क़यामगाह पर

पहुंचने पर उसने लोगों से अपना मनमाना एक क़िस्सा कहना शुरू किया, और जिस तरफ़ वह गई—लोग उससे एख़लाक़ और खुन्दः पेशानी से मिले। उसके फ़िक्र से भरे हुए पीले ख़ूबसूरत चहरे ने उसके दोस्तों के दिल में उसकी ओर से ख़ासी हमदर्दी डाल दी।

किसी ने बदसूरती की ख़ूबियों और बुराइयों पर ख़्याल कर के कहा है कि यह बहुत मुश्किल है कि यूनानी तराश का चेहरा या स्याह बालों की लटें ऐसा उम्दा ज़रिया जान पहचान का हों, लेकिन बदक़िस्मती से इनसानी ख़ास्सा कमज़ोर है और जबकि ऐयाश लोग सिर्फ़ ख़ूबसूरती को देखतेही अज़ख़ुद रफ़्ता हो जाते हैं ग़ाफ़िल लोग उसकी ख़ूबियों की क़दर करते हैं।

जिस वक़्त वह तमाशापुर में पहुंची, तो उसके वालिद के दोस्तों ने उसके पास जमा होके उसे यह सलाहें दीं कि वहीं ठहरे और वे लोग उसके शौहर के पास जाके या बज़रियः ख़त उसे समझावेंगे कि सिर्फ़ एक शौक़िया ख़त से उसे अपनी बीबी को गुनहगार समझना मुनासिब नहीं, लेकिन अफ़सोस उसके ख़्यालख़ाम उसे बहका डाला रहे थे। उसकी क़िस्मत ने उसके साथ दूसरेही तरह फ़ैसला कर दिया था, बजाय इसके कि वह अपने वालिद के दोस्तों के कहने के मुताबिक़ वहां ठहर के अपने शौहर

के जवाब का इन्तज़ार करे उसने अपने शौहर के बिलकुल खिलाफ बात पर कमर बांधी. उसने वालिद के एक पुराने नौकर को बुलवाया और उसको शहर में इस बात के लिये रवाना किया कि वहां जाके वह यह देखे कि क्या कोई मुसलमान उसके साथ शादी करने पर राज़ी है। उसी वक्त से उसने अपना कुल अंगरेजों का पहिनावा उतार डाला था और बजाय उसके मुसलमानी आला दर्जे को पोशाकों से उसने अपने को आरास्ता पेरास्ता किया, और उसी के साथही साथ उसने अपने नाक और कान भी छिदवा लिए थे । एक वक्त में जब मुझे उसकी एक झलक देख पाने का इत्तफ़ाक हुआ था तो वह अपने रेशमी जोड़ों मे मिस्ल पादशाहज़ादी के मालूम होती थी। एक शरीफ़ मुसलमान ने, जो नौवाब के नाम से पुकारा जाता था सारा बाबा से कहला भेजा कि वह उससे शादी करने पर राज़ी है। बशरते कि वह उसका मज़हब कबूल करे, इसे उसने बड़ीही खाहिश से कबूल कर लिया और फिर सारा बाबा से वह शरउन्निसा बेगम हो गई। बेचारी सारा बाबा! उसने, शौहर, बच्चे, मज़हब, मकान, शोहरत जिन २ को कि औरत अपनी ज़िन्दगी में कदर कर सक्ती है सब को कुरबान कर दिया, लेकिन जिस वक्त कि वह कदम—जो पत्थर की लकीर हो गया था कि जो

अब मिटाये न मिट सक्ती थी—जिस वक्त उसने उस दायरे को अपने पीछे छोड़ दिया जिसमें कि फिर अब पलट के जाना मोहाल था तो उस वक्त उसके दिल में तोब: का ख़याल पैदा हुआ—लेकिन हां इसका भी एतबार आप उस वक्त कर सकते हैं कि जब आप यह देख लें कि आया उसकी हालत ऐतबार करने के क़ाबिल है या नहीं। अगर अपने बिदा होने के पहिलेही दिन से और अपनी ऐयाशी के नापायदार भेदों में-यहां तक को उस लम्हे से जिसमें वह बिदा हुई थी वह होती तो अपने आपे से गुज़र जाती, उसके दिल में हज़ारों बिच्छुओं का डंक लगता मालूम होता, क्योंकि वह जान जाती कि उसे अपनी आयन्दा ज़िन्दगी को एक बड़ेही तारीक और हद दरजे के मकसूद रास्तों से गुज़ारनी पड़ेगी।

वह अपने मुसलमान शौहर से मिलजुल के बहुत दिनों तक न रहसकी इसलिये उसे उसनेबहुत जल्दी छोड़दिया जिस वक्त कि मैंने उसे आखिरी बार देखा था, तो नज़र औवलही में मैं ताड़ गया था कि पछतावे कि न बुझनेवाली आग ने उसके जिगर में अपना डेरा जमा दिया है, और यह आग वह आग है कि जबतक वह ज़िन्द: रहेगी तबतक उसके कलेजे को बराबर जलायाही करेगी। उसकी पज़मुरदा रूह धीरे २ लेकिन बड़ीही सचाई से उसे

वह कह रही थी कि हरएक क़िस्म की तकलीफें अब उस को दुनियां देगी हरएक क़िस्म के हलकेपने में अब वह हिस्सा लेने में मजबूर होगी।

अब उसने नौवाब की दौलतसरा छोड़ी तो फिर अपने तमाशापुर वाले उसी मकान में आ रही जिसमें कि वह अपने शौहर के यहां से आने पर ठहरी थी, और मेरे एक कनिष्टबिल भाई ने मुझ से कहा था कि वह एक बड़ेही शर्मनाक तरीके से अपने ज़िन्दगी के दिन बसर करती है और बड़े ही बुरे तरीके से रहती है और अब गोया वह बात रास्त आई कि वह अपने वालिद के बुराइयों का शिकार बन गई व नीज़ वह उसके कमज़ोरी और बेहूदगी की यादगार बन गई। उस तरबियत और तालीम का नतीजा क्या हुआ? यही कि वह बुराई मुजस्सिम बन गई लोग उसके पास जाने में नफरत करने लगे।

एक बेचारे ग़रीब कांष्टेबिल में यह लियाक़त कुजा कि इस बारे में किसी क़िस्म की बातों पर निशान करके उस पर कुछ नसीहतान अलफाज कहै—लेकिन हां, एक अंग्रेजी मेम साहिबा की कही हुई नसीहतों को वह ज़रूर ही हस्बजेल दर्ज किये देता है।

"बीबियों, माओं, बहिनों, और बेटियों! अगर तुम्हारे दिलों में कभी भी अपने मकान के छोड़ जाने का ख़याल ख़ाम गुज़रे, तो तुम्हें इससे होशियार हो जाना लाज़िम है।

ख़्वाह तुम्हारी शादी की हुई जिन्दगी में कितनीही आफतें कितनीही दिक़्क़तों का सामना क्यों न करना पड़े, ख़्वाह ख़्वाहिशें तुम्हारे जले भुने दिल को कितनोही तारीफों से क्यों न उभाड़ें और वह उभाड़ औरतों के बर्दाश्त के बाहरही क्यों न हो, लेकिन इरादा कर लो कि तुम उसे ज़रूरही बर्दाश्त करोगी, परवर्दिगार के सामने अपने घुटने टेक दो और उससे दोआ मांगो कि वह तुम्हें बर्दाश्त की ताक़त दे, इल्तिजा करो कि वह तुम्हें सब्र मरहमत फरमाये, उस सख़्त ताक़त से तुम्हें बहर:वर करे कि जिससे तुम उस शैतान का मुक़ाबिला कर सको जो तुम्हें घर छोड़ के, काफूर हो जाने को तरगीब दिलाता है, मरना मंजूर करो — लेकिन हमेशा के लिये अपने नाम पर धब्बा लगाना अपने खानदान को बदनाम करना मंजूर मत करो, क्योंकि खूब ख्याल रक्खो कि वह खुशियां जिनपर भूल के तुम उनकी तरफ दौड़ोगी, आखिकार वही तुम्हें मौत से बदरजहा बदतर साबित होंगी।

मैं इस पर्व को एक अंग्रेजी मशहूर मुसन्निफ के कौल का हवाला देते हुए खतम करता हूं, वह यह कि, "कोई चीज़ असमत् और बेगुनाही का बदला नहीं चुका सक्ती है, जिसके बगैर खूबसूरती लतीफ नहीं मालूम होती— जिसके बगैर सिफतें हक़ीर मालूम होती हैं, याद रक्खो

वह शख्स जो कि अपने नफ्‌ल (काम क्रोध लोभ मोह) वग़ैर: पर ग़ालिब आता है, उसने गोया अपने सब से ज़बर्दस्त दुश्मन को ताबे किया।"

सारा बाबा का रोज़गार रोज़बरोज़ तरक्की पकड़ता गया, उसके बहुत से गाहक बन गये, और चूंकि वह शहर में रहने लगी थी, जहां कि खराबी और बरबादी का डंका बज रहा था, इसलिये पुलिस की ज़रूरत उसके मकान में कुदरती तौर से बार २ हुआ करती थी और नाके का कांसटेबिल चन्द बाशिन्दगान की आली हौसलगी की हिफाजत करने के लिये अपने मुकर्रर माहवारी से एक ऊपरी माहवारी की रक़म हथिया लेता था। यही वजह थी कि जिस्से मैं सारा बाबा के सवानह उम्री (जीवनी) से आगाह हुआ।

बत्तीसवाँ पर्व्व।

मेरा पहला जंगी मैदान।

जब तरफैन की फौजें हथियारों और आदमियों में बराबर हैं, और एक तरफ की फौज दीदा और दानिस्ता तोपों के मुंह में घुसती चली जाती है, तो लोग उसे उसकी बहादुरी कहते हैं, लेकिन जब तुम तो बन्दूक से मुस-

सह हो और तुम्हारा दुश्मन बग़ैर हथियार के है उस वक्त अगर तुमने उसे ज़ेर भी कर लिया तो उसकी गिनती बहादुरी में न की जायगी। वे लोग जो असल में बहादुर हैं, बग़ैर बराबर के दुश्मन से मुकाबला करने को बहादुरी के नाम पर बट्टा लगाना समझते हैं। जो हो, यह पिछली बात उन लोगों के ख्याल से हरगिज़ मुताबिक़त न रखती थी जिन्होंने कि ज़िला जेल की लड़ाई में हिस्सा लिया था, और जिसमें का झगड़ा हमलोगों की तरफ से नहीं उठाया गया था। तीन महीने के छोटे से ज़माने में, जिसमें मुझे जिला जेल में रहने का इत्तफाक हुआ था, इस जंग जदल का सामना आ पड़ा था। पहिली ख़तरनाक इत्तला जो दो पहर से कुछ पहिले हमलोगों को मिली वह यह थी कि कैदियों ने बड़ी दिलेरी से अपना खाना खाने से इन्कार किया है – उन लोगों ने आपस में मिल के एका कर लिया था जिसे वे लोग मसकूट के नाम से पुकारते थे और फिर वे इस बात पर बज़िद हुए कि अगर उनलोगों को अपने हाथ से खाना पका के खाने का हुकुम मिलेगा तब तो वे लोग खांयगे नहीं तो बग़ैर इसके खाने पर हाथ तक न लगायेंगे। दो पहर के वक्त कुछ क़ैदी बिगड़ उठे और ज़िला जेल का अफसर जो उन लोगों के पास गया उसे उन लोगों ने मार डालने को

धमकी दी—दूसरे लफ़्ज़ों में यह कि उन लोगों ने इरादा कर लिया कि जेल के अफ़सरों में से जो उनके पास जायेगा उसे मार वे डालेंगे उसी वक्त वह क़ाबिले याद आवाज़ें चारों तरफ़ गूंज गईं । "हथियार। हथियार लो ।" मेरे मेहरबान नाज़रीन, आपका यह फरमांबरदार ताबेदार मियां मिट्ठू खां उन बहुत से आदमियों में से जो मैदान जंग में खड़े होने के लिये चुने गये थे एक था । हमारे जमादार साहब को यह मनज़र (दृश्य) बड़ाही मरूकह मालूम होता था, जमादार देखने में तो शेर जान पड़ते थे लेकिन उनका दिल बकरी से भी ज्यादा कमज़ोर था—उन्होंने अपनी तलवार म्यान के बाहर निकाली जो वैसेही मूरचे से छिपी हुई थी जैसे कि खुद बदौलत थे वह हमलोगों से कहता था कि आखिरी मरतबे मैंने इस तलवार को उस वक्त निकाला था जब कम्पनी बहादुर की तरफ़ से मैंने बदमाश नाना साहब का पीछा किया था और तभी मैं पुलिस पल्टन (Military Police Battalion) में जमादार करके भरती कर दिया गया । अब मैं फिर अपने किस्से के सिलसिले पर आता हूं । दोनों फरीक़ उस वक्त लड़ाई की सफे बांधे खड़े थे । कैदी तो लोटों से मुसल्लह थे, और पुलिस बन्दूक गोली और बारूद से तैयार खड़ी

थी। अब लड़ाई की नोच खसोट शुरू हुई, और जिस पर हमारे जमादार साहब इतनी कोशिश कर रहे थे कि गोया इङ्गलिस्तान की आबरू उन्हीं के हाथ में थी। कैदी लोग, पहले हमारे कमानियर के सिर को ताक के एक लोटा खींच मारनेवाले थे जिसने एक कड़ी आवाज़ में उन लोगों को यह याद दिलाते हुए लौट जाने को कहा कि सरकूलर चिट्ठी में लिखा है कि कैदी पर जल्दी फायर मत करो।

कैदियों ने इस बात से गलती से ख्याल किया कि हमलोग कमज़ोर हैं और उसी वक्त एक लोटा एक ने हम पर फेंक मारा. इसके बाद एक ने उनमें से कहा,—"हमलोग पहलेही से जाने बैठे थे कि कांनिष्टबिलों के पास गोली बारूद नहीं है, और वह बन्दूकें जो सरकार बहादुर ने तुमलोगों को दे रक्खी हैं वह सिर्फ हमलोगों के डराने के लिये हैं।"

इसी वक्त सुपरिण्टेण्डेण्ट साहेब बहादुर भी वहां आ पहुंचे और उन्होंने नीचे लिखी अपनी नई उर्दू में "दुश्मनों को" समझाना शुरू किया,—उन्होंने कहा—

"तुम लोग गाद्दा का काम मत करो, अपना बारिक पकड़ो, सुनो, तुमलोग बन्दूक पकड़ो तब गोली लगाओ,

हाम नहीं जानता, तुम जानता, तूस बात मात करो" *

इस आख़री से मिली हुई तक़रीर ने ज़रूरही ख़ातिर-ख़्वाह असर किया होता, अगर दो तीन बदमाशों ने बहका के और क़ैदियों को इस पर ख़्याल न करने के लिय ज़ोर न दिया होता, इसके बादही उन लोगों ने वज़नी लोटों की एक चौड़ी बाढ़ हमलोगों पर चलाई, जिसके बादही हमलोगों ने भी एक बाढ़ भरी हुई बन्दूकों की उन लोगों पर सर की। इस बाढ़ ने एक माकूल असर दुश्मनों पर डाला और वे पसपा और मजबूर होके पीछे भागे। हमारे जमादारसाहबकी बड़ी ख़्वाहिश थी कि उनलोगोंका पीछा किया जाय लेकिन जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब बहादुर ने कहा कि अब आगे उन लोगों का ज़िक्र करना गोया सरकार बहादुर की ख़्वाहिश के ख़िलाफ होगा, और फिर बहुत कुछ इनसानियत और तहज़ीब का लिहाज़ कर के

---

* बेवकूफ मत बनो, मैं तुमसे मिन्नत करता हूं कि अपनी २ कोठरियों को बारिकों में लौट जाओ, अगर बन्दूकें चलीं तो गोलियां तुम्हें निशाना बनायेंगी. फिर हम पर इलज़ाम मत रखना क्योंकि तुम अपनी ख़्वाहिश से इस इल्ज़ाम को अपने माथे लेते हो, देखो बेवकूफी मत करो।

साहब बहादुर ने हमलोगों को हुकुम दिया, "कांष्टेबों अब अपने २ खेमों में जाओ।"

अब बदमाशों को सज़ा का वक्त आया और सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने इरादा कर लिया था कि इन पाजियों को इस तरह की सज़ा दी जाय कि जिस्का असर सिर्फ मौजूद: कैदियोंहो पर न पड़े, वल्कि उनलोगों को भी एक ख़ासा सबक़ मिले तो आनेवाले थे, अलग़रज़ उन्होंने तीन ख़ास२ बदमाशों को उन लोगों में से निकाल लिया, इन्हें उन्होंने जेल की टिकठी में कसवा के हुकुम दिया कि तीस २ बेंत हर एक को लगाई जाय, फिर इसके बाद उन्होंने उन बदमाशों के जिन्होंने मातहत की तरह काम किया था उन लोगों को उनके क़ुसूर के मुताबिक पांच से लेके बीस बेंत तक के मारने का हुकुम दिया । फिर अमन क़ायम हो गया, और इस तरह गोया मेरे जेल की लड़ाई के माजरे का शुरू और एख़तताम भी हो गया। जब हमलोग अपने २ क़यामगाह में पहुंचे तो जमादार साहब ने लड़ाई के हालात बयान करने शुरू किये, ख़ुसूसन वे बयानात उन्हीं की बहादुरी से भरे हुए थे, और वे यह दिखाते थे कि सरकार बहादुर के लिये, क्योंकर वे हर वक्त हर एक खतरे में जाने के लिये तैयार रहा करते थे उनका कौल था कि जिसका वे निमक खाते थे उसके लिये आग और

पानी में जाने के लिये तैयार थे। उनकी शेखियां सुनते २ तंग आकर आखिरश हमारे एक कांसटेबिल भाई ने जो कि उस चुनाव के बाहर था—यानी लड़ाई में शामिल नहीं हुआ था कहने लगा।

"जमादार साहब वाक़ई आप बड़े बहादुर मालूम होते हैं आपने अपनी बहादुरी अपनी बातों से हमलोगों के नक़्शेदिल कर दी लेकिन मेरी अर्ज़ यह है कि मेहरबानी फ़रमा के यह तो बताइये कि हमारी फ़ौज ने (मतलब यहां कांसटिबिलों से है) क्या किया। आप कहते हैं कि आप एक सख़्त जंगी जद्दाल में मसरूफ़ थे और मैं कहता हूं कि अगर क़ैदी भी बन्दूक गोली और बारूद से लैस रहते और उस वक़्त आप उनसे लड़ के पाला अपने अपने हाथ रखते तो बहादुरी का काम कहलाता या मज़ा तब उस लड़ाई में आता—लेकिन यह फ़तह क्या और यह लड़ाई कैसी— यह माजरा तो मामूली कबूतरों के शिकार से भी बदतर था।" यह सुन के जमादार मारे गुस्से के जल भुन के कबाब हो गये और वहां से वे उठ के चले गये, और फिर उस दिन से जब से कि 'जेल की लड़ाई' हुई थी कई बरसों तक न तो उन्होंने कभी अपनी बहादुरी के बारे में कुछ कहा और न उन जीतों का कभी तज़किरा उठाया जिसमें कि उन्होंने कोई बहादुरी का हिस्सा लिया था।

मैं यह भी जताया चाहता हूं कि हमलोग "लायक़ नौकरी" करने की वजह इनाम पाने के लिये भेजे गये थे लेकिन जिला के मजिस्ट्रेट साहब बहादुर ने यह कह के इनाम देने से इनकार किया "बिना हथियार लिये हुए आदमियों से हथियार लेके लड़ने में कौनसी बहादुरी का काम है, इसलिये मैं इनसाफ़न कहता हूं कि पुलिस इनाम पाने की मुस्तहक़ नहीं है। लायक़ नौकरी किस तरह बजा लाई गई यह मुझे नहीं दिखाई देता । मेरी दानिस्त में उन लोगों का पूरा इनाम इस तरह से हो जायगा कि दो रुपये की मिठाई मंगा के उन लोगों में बांट दी जाय क्योंकि इन्हीं दंगा फ़िसाद में मशगूल रहने की वजह से वह अपना दो पहर का खाना खा न सके होंगे और दो पहर से तीन बजे तक भूखे परीशान होते रहे होंगे ।"

तैंतीसवाँ बयान ।

राजपूत की लड़की ।

एक हकीम का क़ौल है कि हम अपनी ख़ाहिशों को अगर ख़ास वजहों को देख के या समझ के अपने दिल में मुक़ाम दें, और ख्याल रक्खें कि अपनी उम्मेदों को मुमकिनात की हद्द से बाहर न दौड़ने दें तो यक़ीनन् हम

अपनी ख़ाहिशों और उम्मेदों में कामयाब होंगे, और हमारा दिल नाकामयाबी की ठेस से हरगिज़ न दुखेगा। यह तवारीख जो हम बयान करनेवाले हैं एक राजपूत फैलसूफसिंह नामी की है, जो कि बहुत सी जमीन और खेतों का मालिक था, और जिसने बिला सोचे समझे अपनी ख़ाहिश को एक बड़े हद तक दौड़ा दिया था, और जिसका नतीजा यह हुआ कि वह अपनी ख़ाहिश में नाकामयाब रहा, और इसके साथही कुदरती तौर से नाकामयाबी के बाएस उसके दिल पर सख़ ठेस लगी।

जिस वक्त फैलसूफसिंह को और हमारी पहिली मुलाक़ात हुई थी उस वक्त उसकी सालाना आमदनी १५०००) रुपये की थी लेकिन मेरी जान पहचान के कुछही दिनों के बाद मैंने उसे एक मर्ज़ में मुबतला पाया, और वह मर्ज़ मालीखूलिया का था। दो तीन मशहूर तबीबों से मर्ज़ की तशख़ीश कराने के लिये वह क़रीब के ज़िला में आया और वहां पहुंचने पर उसे हकीमों की ज़बानी मालूम हुआ कि अगर वह अपनी दवा कराया चाहता है तो उसे एक माकूल तायदाद रुपयों को खर्चने के लिये तैयार हो जाना लाज़िम है, नहीं तो कुछही दिनों में अगर वह इसी तरह बेइलाज रहा तो इसमें कोई शक नहीं कि वह एक ख़ासा सौदाई हो जायगा। फैलसूफसिंहने ज-

वाब दिया कि वह दिलोजान से उन लोगों की सलाह मानने पर मुस्तैद हैं और हक़ीक़त में उन हकीमों की बातें ऐसी उसके दिल में पैवस्त हो गईं कि रुपया खड़ा करने के लिये चार या पांच बरस के भीतरही भीतर उसने एक २ कर के अपनी कुल ज़मीन को रेहन रख दिया नाज़रीन, अगर तुमने अपने बेकाकी घाटी के सफ़र में पागलखाने जाने लायक़ ऐसे आदमियों से नहीं मुलाक़ात की तो गोया तुमने कुछ न किया आंख मूंद के अपने सफ़र को एखततात तक गोया पहुंचाते रहे।

अपने दोस्त हकीमों की सलाह के मुताबिक फैलसूफ़ सिंह ने दोस्तों के साथ २ नाच मुजरा देखने और सुनने व नीज़ तवायफ़ों से एखतलात बढ़ाने में रक़म कसीर सर्फ़ करना शुरू किया,—क्योंकि हकीमों की सलाह थी कि बस यही एक ज़रिय: उसकी इस बीमारी के रफ़ा होने का है—बाला आखिर उसका मकान इशरतकद: बन गया और हरएक रात को सदाय साज़ और तानों की उसके मकान से बुलन्द हुआ करती थीं—हर रोज़ परियों का जमाव और यारों का अखाड़ा उसके यहां जमाकरता था।

उन्हीं दिनों में उसने चन्द माशूकें रक्खीं जिनको कि वह १००) से लेकर ५००) माहवार तक दिया करता था, इन औरतों में से एक के यहां जिसका नाम कि चांदी

खींच जान था एक लड़की पैदा हुई. पैदाइश के छठे रोज़ बड़ी धूमधाम से लड़की की छट्ठी हुई—अगरचे फैलसूफ़ अपनी लड़की की कोई परवाह न करता था, ताहम सिर्फ़ अपनी माशूक़: की खातिर के लिये उसने इस तक़रीब पर बड़ी फैयाज़ी दिखाई। जिस वक्त चांदीखींचजान की लड़की मुसम्मात, उम्दा छः साल की हुई तो फैलसूफ़सिंह ने उसकी शादी की बातचीत अपने एक भाई राजपूत के घराने में लगाई। यह बात चांदीखींचजान को बिलकुल ही पसन्द न आई उसने फैलसूफ़सिंह से कहा कि, "जो कुछ इज्जत आपने मेरी की है उससे अच्छी तरह तसल्ली पाने का इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है कि मैं अपनी बेटी को तवायफ बना लूं।" कैसी खौफनाक बात है! वह आली खानदान का राजपूत जिसके बुजुर्ग बड़े मरतबे और जलाल के अशखास होते आये थे क्या इतनी बड़ी बेइज्जती और बेहुरमती को गवारा कर सक्ता था? उस गुस्सेवर आदमी ने इस पर अपनी माशूक़: से ताकीद की अगर उसने अपनी धमकी के मुताबिक काम भी किया तो वह उसी घड़ी फांसी लटक के मर जायगा। और फिर अपना मुंह अपने भाइयों के सामने कभी न दिखायेगा। लेकिन चांदीखींच फिरजन बेसामान की तरह किसी की परवाह न कर सक्ती थी. वह उसकी कमज़ो-

रियों से अच्छी तरह वाकिफ थी और उसी पर उसने चाल चलनी शुरू की। उसन उस एक ताने की राह से कहला भेजा कि मैं तुमारी लड़की की मां हो के तो सिर्फ़ १००) माहवारी पाती हूं और तुमारी दूसरी माशूकें जिनके कि एक अन्धी चूही भी नहीं पैदा हुई है हमारी तनख़ाह का दूना तिगुना बल्कि चौगुना हथिया लेती हैं।

वह उसकी बिलकुलही, बेदिल, बेरहम, और नाशुक्र के नामों से पुकारा करता था और कहता था कि मेरी बड़ी बदकिस्मती थी कि तुमारे लड़की हुई, क्योंकि उसके ज़रिये से बड़ीही कन्नादराज़ी है तुम मुझे बेजा धमका रही हो। इन बातों पर वह उसे जवाब दिया करती थी कि जिसे तुम अपनी बदकिस्मती कहतेहो वह ऐन तुमारी खुशकिस्मती है, और दोनोंही बड़ीही आज़ादी से अपनी अपनी रायें इस बारे में क़ायम किया करते थे। आख़िरश उसने बड़ेही ज़ोर के साथ उसे इत्तला दी कि 'फ़ैलसूफ़सिंह की लड़की कभी नाचने, गाने के पेशः पर न बैठेगी, और अगर वह ज़बर्दस्ती ऐसा करेगी तो उसे उसकी इस बेवकूफ़ी पर सख़ पछतावा करना पड़ेगा, जिस्का कि उस वक्त कोई इलाज न हो सकेगा।" उसने इस्के पहले फैलसूफसिंह को और कभी भी इतनी तेज़ी और सञ्जीदगी से बातें करते न पाया था, इससे वह सहम गई उसे यकीन

हो गया कि एक आली खानदान मग़रूर राजपूत की बातें कभी बाला २ नहीं जाया करतीं। रात के वक़्त उसने अपने और रिश्तेदारों से इस बारे में सलाहें लीं तो उनलोगों ने उससे यही कहा कि बेहतर होगा कि तुम फ़ैलसूफसिंह के यहां से निकल के अपने गाँव के ख़ास मकान में जा रहो, जो कि उस मुक़ाम से क़रीब ढाई कोस के फ़ासिले पर था; इसके साथही उसे इस बारे में भी सलाह दी गई कि वह अपने वहां से चले जाने की एक झूठी रपट नज़दीक के थाने में दर्ज करा दे। मोहर्रिर को कुछ दे दिला के उसने हस्ब-ज़ैल रपट पुलिस रोज़नाम्चे में दर्ज करवा दिया:—

"मुसम्मात चाँदी खींच तवायफ़ रपट लिखाती है कि वह कई बरसों से फ़ैलसूफसिंह ज़िमींदार के यहां रही है, और उसके एक लड़की भी है, जिसकी उम्र इस वक़्त अन-क़रीब छः बरस की होगी, और चूंकि वह उस लड़की की मां है इसलिये खूब जानती है कि लड़की का असली बाप कौन है, इसके अलावा वह किस तरह से इस बात का यक़ीन दिला सक्ती है कि फ़ैलसूफसिंह उसका बाप हर्गिज़ नहीं है। लेकिन फ़ैलसूफसिंह चूंकि एक राजपूत है, जिस्का खान-दान बराबर अपनी लड़कियों को मारता आया है, इस लिये यह ख्याल करके कि वह लड़की मेरीही है उसे मारा चाहता था; उसने उससे कहा कि अगर वह उसकी

अक़्लमन्दाना काम में उसका हाथ न रोकेगी तो उसके लिये वह उसे एक बड़ी जायदाद इनाम देगा, और इसके अलावा वह उसके ज़िन्दगी भर का ठिकाना भी कर देगा; लेकिन उसके जोश मादराना ने उसको इस खूंख़्वार बात के मानने से इन्कार करा दिया, जिसपर उसने उसे धमकी दी कि वह छिप के अब अपनी खौफ़नाक कार्रवाई पूरी किया चाहता है आखिरश यह सुनतेही वह अपने साबिक मकान वाक़: मौजे दग़ापुर में चली आई है । पुलिस को आगाही दे के वह इस बात को मुलतजी है कि पुलिस इस मामले की तहक़ीकात करे और फैलसूफ के साथ क़ानूनी बर्त्ताव करे। उसके गवाह हरामजादासिंह, कङ्गालसिंह, पापी सिंह, मज़बूतमिश्र, नामर्दी उपाध्या, नजिस अहीर, अहोदलोनिया, झगड़ू कुनबी, बागा कोइरी और चिड़ चिड़ा ग्वाला हैं ।"

इस पर थानेदार साहब ने हस्बजैल इबारत रोज़नामचे में दर्ज कराई और फिर तहक़ीक़ात के लिये तैयार हुये डायरी में लिखा था—

"फ़िदवी को बहुत ज़्यादा खौफ़ है कि फ़ैलसूफ़सिंह कहीं अपनी धमकी के मुताबिक़ही काम न कर बैठे— चूंकि पुलिस का फर्ज है कि वह ज़रायम के रोकने को

कोशिश करे - इसलिये फिदवी इस मामले की तहक़ीक़ात के लिये रवाना होता है।"

मैं अपने अफसर के साथही साथ था, लेकिन बावजूदे इतने तजरबे और चालों के देखते रहने के भी मैं इस बात को कबूल करता हूं कि आज तक भी मुझे यह बात न मालूम हुई कि थानेदार ने कौन सी चाल फैलसूफसिंह और चाँदीखींच तवायफ़ में सुलह करा देने को की; इतना ही कहना काफी होगा कि जिसने इन बिछुड़े हुओं को मिला दिया वह बड़ाही मसलहतवी और चालाक आदमी था। जो कुछ मैं जानता हूं वह सिर्फ इतनाही है कि फैल-सूफसिंह ने मुझे तीन रुपये दिये, लेकिन न तो मैं और न कोई, यह कह सक्ता है कि इस मामले में थानेदार साहब के हत्थे कितनी जमा चढ़ी। थाने में पहुंचने पर उन्होंने हस्बज़ेल रपट रोज़नाम्चे में दर्ज कराई:—

'फिदवी थाने में वापस आया और इस बात को खुशी से ज़ाहिर करता है कि उसका ख़ौफ बिलकुलही बे बुनियाद था। इस मुल्क की औरतें जैसा कि हुजूर पर रोशन है बड़ीही झूठी हैं, और हमेशा माजरे की असली वजह को छिपाया करती हैं; असल में इस मामले की बु-नियाद सिर्फ इतनी थी कि फैलसूफसिंह और उसकी ना-वफादार माशूक़: में कुछ झगड़ा पड़ गया था, और सर्कार

बहादुर के एक़बाल से जैसेही मैं गाँव में पहुंचा वैसेही तवायफ़ ने अर्ज को कि वह अपनी रपट को अब मन्सूख़ कराती है—इस मन्सूखी ने उस पर और फ़ैलसूफ़सिंह दोनों ही पर बहुत ज़्यादा असर किया; साथही फ़िदवी बड़ी ख़ुशी से इस बात की इत्तला देता है कि अब वे दोनों सुलह के साथ एकट्ठा रहते हैं, और जो कुछ आफ़तें उसने सहीं—या जितनी कुछ दिक़्क़तों से उसे सामना करना पड़ा वह सब सर्कार बहादुर के एक़बाल से दफ़ा हो गईं इससे उसे इन्तहा से ज़्यादा ख़ुशी है।"

वह शादी जिसे कि फ़ैलसूफ़सिंह ने ठीक की थी, आख़िरश हो गई, लेकिन मुश्किल से तीन साल अभी इस वाक़: को हुये होंगे कि उसकी सभी मिलकियत क़र्ज़दारों की डिगरियों से नीलाम हो गई, और आख़िरी मर्तब: मैंने उस आली ख़ानदान मग़रूर राजपूत को गाँजेवाले की दूकान में बैठे दम पर दम खींचते पाया था। लोग अब भी इज़्ज़त के ख़्याल से उसे बाबू साहब के नाम से पुकारते थे, लेकिन मुझ जैसे हक़ीर कांष्टेबल को जब वह हुज़ूर के ख़िताब से मुख़ातिब किया करता था तो उससे सरीहन् हवीदा था कि वह उनलोगों की सोहबत में मिलाजुला था जिनको आदत ऐसे कलमों के कहने की पड़ गई थी, और यही वजह थी कि जिससे वह भी उन्हीं

कलमों को इस्तेमाल करने लगा था। वक़्त की खूबी देखिये या यह कि बुरे कामों का नतीजा मुलाहिजा फर्माइये कि एक वह मोअज्जिज राजपूत ऐसे लोगों की सोहब्बत में मिला और रहने पर मजबूर था, जिन्हें कि वह कभी अपनी ड्योढ़ी पर भी बैठने की इजाजत न देता था।

वह नसीहत जो फैलसूफसिंह की हालत से मिलती है उससे बहुतसे नौजवान मुस्तफैद हो सकते हैं। भयानक गलती! अभी कठिनता से उन्होंने बीसवें साल पर पैर रक्खा है कि साथही यह ख्याल उनके दिमाग़ों में कस जाता है कि तवायफों के यहां आने जाने से एक गैरमामूली लुत्फ़ का अन्दाज़ा हासिल करना चाहिये। यह क्या है? मुख़्तसर में यह कि उन लोगों को इन खुशियों में पड़ने की सलाहें भी दी जाती हैं; उनलोगों को अपने नफस की हरएक ख़्वाहिशों के पूरी करने को तर्ग़ीबें दिलाई जाती हैं; जैसा कि फैलसूफ के सलाहकारों में से एक ने उससे कहा था कि, "देवता हम लोगों पर बड़े मेह्रबान हैं जिन्होंने कि हमलोगों में कुदरती ख़्वाहिश और हवश की रूहें फूंक दी हैं।" ऐश के ख़्वाहिशों का उभाड़ इसी तरह हरएक उन मुल्कों में भी होता है, जहां के लोग एक आलम में मोहज़्ज़ब कहलाते हैं, वे लोग नेकी और बदी की जतानेवाली अक़्ल को दबा देते हैं नातजरुबेकार नौजवानों को बहकाते हैं, फिर बेचारे हिन्दू

भी वैसा करते हैं तो इसमें ताज्जुब की क्या बात है । नौजवानों की बदख़सलतें उनके कान में फूंका करती हैं कि अपने नफ़स की आग को बुझाना कोई गुनाह का काम नहीं है; अगर ऐसा न होता, तो परवरदिगार जन्नत में हूरों को कभी न रखता ।

बात असल में यों है कि अमीर नौजवानों की तालीम हरएक चीज़ में इस क़दर कमज़ोर रहती है कि जिससे वे अपनी चालचलन को एक आलेदर्जे की ख़ूबी तक सुधारही नहीं सके। इससे ज्यादा बदकिस्मती की बात हक़ीक़त में और कोई नहीं है । अंग्रेजों की तरबियत उन*खास लड़ाईवाले

* "लड़ाईवाले दिनों" से यहां मुराद उस ज़माने से है जब इङ्गलिस्तान में तरबियत तालीम बिलकुलही महदूद थी । उस ज़माने का कुछ अजीब हाल था । मुल्क के हिस्से वहां के बेरनों (राजों) पर तक़सीम थे जो कि एक ज़बर्दस्त फ़ौज अपने २ पास इस गर्ज़ से रखते थे कि लड़ाई पड़ने पर शाह को उससे मदद दें । लेकिन आये दिन एक बेरन की फ़ौजें दूसरे बेरन की फ़ौजों से लड़ा करती थीं—उनकी फ़ौजें बादशाह और उसके हुक्म को अपने मालिक के हुक्म के सामने खाक न समझती थीं—इसलिये बाज़ बेरन खास बादशाह के बख़िलाफ़ हो के उसे सख़्त तकलीफें पहुंचाया

दिनों में जब कि तालीम सिर्फ़ पादड़ियों और उनके गठोरी तक महदूद थी इस कदर काबिल अफ़सोस न थी जितनी कि इस मुल्क के आजकल के नौजवानों व मालिक जायदादों की हालत हो रही है । इनको कोई तालीम देनेवाला नहीं है । किसी घराने में पादड़ियों की कमी नहीं हुआ करती, लेकिन उनके ख़ास फरायज क्या हैं—उन्हें अपने वक़्तों को किन ख़ास कामों में सर्फ़ करना चाहिये इसका वे कभी ख़्वाब में भी ख़्याल नहीं करते । पूजा पाठ के लिये वे हरदम तैयार रहते हैं. वे खाते हैं पहनते हैं खानदानी देवतों की पूजा कराते हैं—और तिथि व्यवहारों के दिन जिनमें उन्हें प्राप्ति की आशा रहती है जोड़जाड़ के पहलेही से बताया करते हैं, लेकिन सब से बड़ा काम अपना—यानी नौजवानों के दिलों को अपनी उम्दः मजहबी तालीम से पुर करके उन्हें नेक रास्ते का चलनेवाला नहीं बनाते फिर मजहब की किताबें ऐसे लाजवाब फिलसफाना मसाले येल और हलापेल से मढ़ी हुई हैं कि जिनको अच्छी तरह से दिलनशीन कराने से इन्सान भलाई मुजस्सम बन जाता है—सलह—सचाई—रहम उसके जौहर हो जाते हैं, ले-

करते थे । उन दिनों में वहां का वह बादशाह बड़ाही ज़बर्दस्त समझा जाता था जिससे कम से कम उसके मुल्क के छः वैरेनों से मेल हो ।

किन अफसोस इन नये बिगड़े और बिगड़ते हुये नौजवानों को अपने घरके रक्खे उस लाजवाब जवाहिर की खबर नहीं और न उनको कोई खबर देनेवालाही है क्योंकि पण्डितों और दीगर मोअज्जिज़ ब्राह्मणों ने अपना काम सिर्फ लेने का समझ रक्खा है—और अफसोस की बात है कि उन्होंने अपने उन पाक मनका और पाकीज: तनअन से ऋषियों और मुनियों के ख्याल बिलकुलही दिल से दूर कर दिये, जिनका कि पहला फर्ज मजहबी तालीम और तसकीन देनाही था। यह इतना बड़ा काम बड़ों के पर छोड़ दिया जाता है जो बगैर किसी सिफत के इस काम में लग जाते हैं. क्योंकि वह इसके सिवाय और दूसरे काम लायकही नहीं हैं। यही हालत ठीक फैलसूफसिह के तालीम की भी थी।

चौंतीसवाँ पर्व।

बच्चाकुशी का मुकद्दमा।

जिन दिनों में खूबभोलापूर नामी थाने में तैनात था उन्हीं दिनों रपट हस्बजैल रोज़नामचा आम में दर्ज की गई:—

"जङ्गलो दुसाध, मौजे गदहाकेबापपुरका गोड़ैत रपट

करता है कि मुसम्मात नापाकी, एक बेवा को दो कछुवे के बच्चे पैदा हुये, जिसने उन्हें इस खौफ़ से कि उसके पड़ोसी उसे मलामत करेंगे और शर्म दिलायेंगे, एक मुकाम पर खोद के दफ़न् कर दिया। मुम्किन है कि इस मुकद्दमे में कीनावर लोग महज़ कीना से ऐसी झूठी बातें उड़ा दें इसलिये गाँव के नम्बरदार ने मुझे भेजा है कि सर्कार बहादुर इस बारे में अपनी ख़ातिरख़्वाह जाँच करे।"

थानेदार इस बात को बख़ूबी जानते थे कि मुसम्मात नापाकी अगर्चे बेवः है, ताहम् उसे एक शख़्स बाबू धोंदूप्रसादसिंह नामी रक्खे हुये हैं। शख़्स मज़कूर एक मालदार आदमी था—और बाज़ बातों में वह एक दर्जे तक दूरन्देशी से भी काम लिया करता था जैसा कि अकसर दौलतमन्द लोग किया करते हैं। गर्ज़ यह कि थानेदार वैसे आदमियों में न थे कि ऐसे ख़ास मौके को गँवा के, बाबू धोंदूप्रसादसिंह को हाथ से निकल जाने देते, और खसूसन् उस हालत में जब कि गाँव के गोड़ैत ने एक तरह से मामले की रपट लिखा दी थी। आनन् फानन् अपने टट्टू पर काठी कसवा के थानेदार लाला बलग़मभिज़ाजदास दो कांष्टेब्लों के साथ जिनमें कि एक यह ख़ाकसार भी था मुसम्मात नापाकी की तलाश में चल खड़े हुये। घण्टे भर के भीतरही भीतर हमलोग जाँच के मुकाम पर जा पहुंचे,

और सब से पहले जिस शख्स से मुलाक़ात हुई वह हमारा दोस्त बाबू धोंदूप्रसादसिंह था। बाबू साहब मौसूफ़ उस वक़्त अपने बिजली नामी घोड़े पर, जो कि असल में इसी नाम का मुस्तहक़ था सवार होके परगने के तहसीलदार के यहां उनकी दी हुई दावत में जा रहे थे। कुछ देर तक थानेदार साहब की मिज़ाजपुर्सी करते रहने के बाद, बाबू साहब मौसूफ ने उनका हाथ पकड़ा और उन्हें लिये वह मकान के बगल में जा खड़े हुये जहां क़रीब एक घण्टे तक वे बातचीत में मशगूल थे। उन दोनों आला दर्जे के लोगों में क्या बातचीत हुई यह मुझ ग़रीब को बिलकुल न मालूम हुआ लेकिन बाबू के एक ख़ास नौकर को बहुत कुछ शीशे में उतारने पर उसने इतना कबूल दिया कि दो तीन टूटे फूटे जुमलों को वह सुन सका है, और वे यह थे:—

बाबू—"इतना नहीं।"

थानेदार—"इससे कम नहीं हो सक्ता।"

इसके बाद वह सुन न सका फिर आखिर में थानेदार की यह बात उसने सुन पाई थी, 'मेरे घर में भेज देना।"

एक घण्टे के बाद लाला बलगममिज़ाजदास हमलोगों के पास आये, और इस तरह का चेहरा बना के जिस्से कि साबित होता था कि कुछ हुआही नहीं कहने लगे "ग-

वाहों के ज़रिये से मालूम हुआ, (गवाह कौन थे, कब आये, यह थानेदार साहबही को मालूम था) कि बिला शुबह: उस औरत के, दो कछुवे के बच्चे पैदा हुये थे। इसके बाद जिस वक़्त हमलोग, थाने पर लौटने की तैयारी में मशगूल थे, उसी वक़्त बाबू साहब का भाई हमारे पास आया और पांच रुपया मेरे हाथ पर रख के वह कहने लगा, "दोनों जवान हिस्सा कर लेना।" यहां पर मैं यह भी कह देना मुनासिब समझता हूं कि हमारे मुल्क के लोग "जवान" का लफ्ज़ कांष्टेबों, चपरासो, या उन्हीं के क़रीब २ और दर्जेवालों के लिये इस्तेमाल करते हैं, नहीं तो बाबू साहब के भाई का कहा हुआ लफ्ज़ "जवान" हमलोगों की शान के लायक कभी न था, क्योंकि मेरे साथ का कांष्टेबु उम्र में मेरे दादा के बराबर रहा होगा।

यह तो एक ज़रूरी बात थी कि थानेदार साहब अपने गाँव जाने और वहां की कार्रवाइयों का हाल रोज़नाम्चे में दर्ज करेंगे—लेकिन मैं साफ़ २ कहूं, मुझे शौक़ और ताज्जुब दोनोही बेचैन किये हुये थे कि देखें वह अपने गाँव जाने के अन्जाम को रजिष्टर में क्योंकर दर्ज कराते हैं। यहीं पर एक अंग्रेजी शायर का कौल मुझे याद आगया कि "शौक का मर्ज औरतों में बबाय आम ख्याल किया जाता है, लेकिन मर्दों में उसका हज़ार हिस्सा ज्यादा मौजूद है।"

थाने में पहुंचने पर दो घण्टे गुज़र गये लेकिन अब भी किसी किस्म की रपट थानेदार ने दर्ज रोज़नाम्चा न की। मैं तो ताड़ गया कि हज़रत बाबू साहब के एक़रार की हुई रक़म का इन्तज़ार कर रहे हैं जिसके पाने पर वे सोच चुके होंगे कि रोजनाम्चा किस तरह से भरना होगा। शाम हो रही थी कि एक शख्स जो अपने को उल्लूसिंह के नाम का बताता था थाने में आया, और आतेही उसने थानेदार से मिलने की ख्वाहिश ज़ाहिर की, गोया वह कोई बहुत ज़रूरी और खुफियः काम उनसे कहा चाहता था। और जब उसने इन मामूली सवालों पर मसलन् वह कहां से आता था? उसका काम किस तरह का है? क्या वह अपने लिये रपट लिखाने आया है या किसी की तरफ़ से भेजा गया है? बहुत ज्यादा हिचकिचाहट ज़ाहिर की, तो मैं बखूबी समझ गया कि वह शख्स बाबू धोंदूप्रसादसिंह के पास से आया है। मेरा क़यास ग़लत न था, क्योंकि उस आदमी के जाने के आध घण्टे के बाद थानेदार ने मोहर्रिर के पास हस्बजेल मज़मून का एक पुर्ज़ा भेजा:—

'दीवानजीसाहब—आख़िरी रपट जो रोज़नाम्चे आम में लिखी गई है उसके एक घण्टे बाद का वक्त लिख के हस्बजेल लिखावट दाख़िल रोज़नाम्चा कीजिये:—

मौजे गदहा के बयपुर के गोड़ैत जङ्गली दुसाध के रपट लिखाने पर फिदवी जाय वार्दात पर इस बात की जाँच के लिये गया कि आया मुसम्मात नापाकी के कछुवे के बच्चे पैदा हुये हैं या नहीं। मेरे साथ मियाँमिट्ठू खाँ और शेख़सफेदारी दो कांष्टेबल थे। वहां पहुंच के फिदवी को मालूम हुआ कि वह औरत बीमारी कद्दूदाना में, जिसे बाज़ अशख़ास-इन्दानेशिकम के नाम से भी पुकारते हैं, बहुत दिनों से मुब्तिला थी, और जिस बीमारीही की वजह से उसके दो कछुवे के बच्चे पैदा हुये। इस बात की पूरी २ तौर से तहक़ीक़ात एक मशहूर हकीम मिर्ज़ाखिरदमन्दबेग से कराई गई जो उस औरत का इलाज मुआलिजा किया करते थे, और जो उस वक़्त भी मौजूद थे जब उस औरत के वे दोनों अजीब जानवर पैदा हुये थे, ऐसी हालत को देख के तावेदार ने आगे और किसी क़िस्म की कार्रवाई न की और वहां से सीधा थाने को लौट आया, लेकिन लौटने के क़ब्ल मैंने उन गड़े हुये कछुओं को निकलवा के बचश्म खुद देख लिया था कि असल में वे कछुवेही थे इन्सान के बच्चे नहीं।"

यह रपट सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब बहादुर के सामने पढ़ी गई, जिस पर उन्होंने उस मुक़द्दमे को मजिष्ट्रेट साहब बहादुर के पास एकखास राय लिख के भेज दी कि थानेदार

की रपट एक बड़ीही अजीब गरीब है जिसपर कि एतबार नहीं किया जा सक्ता और साथही उन्हें इलाका इन्स्पेक्टर की बात पर भी ताज्जुब होता है कि जिन्होंने थानेदार के कलाम की ताईद की है। जिस वक़्त कि रोजनामचा आम, और तहकीक़ात कि मिसिल मजिस्ट्रेट साहब के सामने रक्खी गई, जो एक बड़ेही लायक हाकिम थे, तो उन्हों ने हस्बजैल मजमून का एक हुक्मनामा इन्स्पेक्टर के नाम ज़ारी किया।

"मैंने इस मुकद्दमे और उसकी साथ के कागजात पर बखूबी गौर किया, और यह बात बड़ीही आसानी से सोची जा सक्ती है कि अगर सुराग़ लगाने की कार्रवाई का यही हाल रहा तो भारी गुनाहों के मुजरिम अपनी पूरी सजा से बच जायेंगे और इस तरह गोया उन मुजरिमों को और हिम्मत हो जायगी जो अपने दिलों में ऐसे गुनाहों के लिये उधार खाये बैठे हैं। क्या इलाका इन्स्पेक्टर यह समझता है कि थानेदार की राय के साथ अपनी राय भी मिला के भेज देने से एक मामूली अक्लवाला आदमी भी उस बात को तसलीम कर लेगा? हर्गिज़ नहीं—सिविल सर्जन की रिपोर्ट से ज़ाहिर होता है कि मुसम्मात नापाकी का हालही में वज़े;हमल हुआ है, और इसे देख के यह बात ठीक की जाती है कि मुसम्मात मौसूफ मुजरिम है

और थानेदार को चाहिये कि दो रोज़ के अन्दर वह पैदा शुद: बच्चे का पता लगाये; और अगर वह इसमें कामयाब न हुआ, तो उसे उम्मेद रखना चाहिये कि वह आयन्दा कुछ ऐसे अहकाम सुनेगा कि जो उसकी ख़राबी के बायस होंगे। उसको चाहिये कि वह खुद इस मुकद्दमे में जाँफिशानी करे—थाने में बैठ के, सिर्फ़ हुकूमत चलानेही से यह काम नहीं हो सक्ता है।"

इस हुक्मनामे के पहुंचतेही इन्सपेक्टर साहब उसी वक़्त उस गाँव में जा धमके; और कोशिश करने पर कुछही देर में उन्हें वह मुकाम मालूम हो गया, जहां कि वह हाल का पैदा हुआ बच्चा गड़ा हुआ था, और जो बच्चा तहक़ीक़ात में साबित हो गया कि मुसम्मात नापाकी का है; वह खोद के निकाला हुआ बच्चा डाक्टर साहब के पास इम्तिहान के लिये भेजा गया, और वह औरत इस जुर्म में माखूज हो के अदालत में रवाना की गई कि उसने पैदाइश को खुफिया इन्तिजामों के साथ छिपाया।" झूठी गवाही दिये जाने के जुर्म में माखूज हो के हकीम मिर्जा खिरदमन्द साहब भी रवाना कचहरी किये गये—लेकिन बाबू घोंटूप्रसादसिंह इन आफतों से बचे, क्योंकि पुलिस ने उन्हें बिलकुलही बेगुनाह समझ लिया था। औरत को क़ैद की सजा मिली और हकीम को सख़्त जुर्माना हुआ,

लेकिन हकीम साहब का यह जुर्माना अपील करने से मुआफ कर दिया गया।

अभी यह मुकद्दमा खतमही हुआ था कि थानेदार साहब एक चोरी की जाँच के लिये तलब किये गये जो कि कमिश्नर साहब बहादुर के कम्प में हुई थी। माल मसरूक:, कई घरानों की तस्वीरें थीं जो हालही में विलायत से कमिश्नर साहब बहादुर के पास आई थीं, इन तस्वीरों के चौखटे बड़ेही खूबसूरत थे व नीज़ उनके चारों तरफ के चमकीले फूलों को देख के टकटकी लग जाती थी— जिन पर ज़रूर उन कुलियों का ख्याल गया था जिन्होंने कि उन्हें साहब के टेबल पर चुनी हुई देखी थीं। हरएक शख्स मुजरिम के पकड़ने के लिये जान लड़ा रहा था लेकिन नतीजा खाक भी न निकलता था, आखिरश कलेक्टर साहब ने लाचार होकर एक आखिरी तदबीर की कि इस बात का ढँढ़ोरा दिया जाय कि तस्वीर लानेवाले को १०) इनाम के मिलेंगे। ढँढ़ोरा पीटनेवाले ने ढोल गले में लटकाया और कुल परगने में घूम आया, हरएक गाँव में जब वह पहुंचता था तो ढोल को ज़ोर से बजा के नीचे लिखी हाँक लगाता:—

"भाई रे! मुल्क विक्टोरिया महारानी का, रियाया कम्पनी बहादुर (East Indian Company) की, और हुक्म

बड़े साहब बहादुर का, कि जो शख़्स उन तस्वीरों को लायेगा जो कि कल रात साहब कमिश्नर के खेमे से चोरी गई है—उसे दस रुपये इनाम मिलेंगे, और तस्वीरों के वापस लानेवाले से न तो कोई सवाल किया जायगा और न वह रोकाही जायेगा।"

इसके बाद "कड़म धुम्! कड़म धुम्!" ढोल पर चोट लगा के ढँढोरिया दूसरे गाँव में चला जाता था, इत्तफाकन् चोर ने भी इस ढँढोरे को सुन लिया, और सुनतेही वह मै तस्वीरों के साहब बहादुर के पास पहुंचा जिन्हें उनके सामने रख के उसने एक उस गँवारी ज़बान में कहना शुरू किया जिसको लफ्ज़ बलफ्ज़ लिखने से शायद हमारे नाज़रीन समझ न सकेंगे पस उसका तर्जुमा सलीस उर्दू में यों किया गया है:—

"मैंने ख्याल किया था कि आप जैसे बड़े आदमी लोग कभी पीतल को हाथ भी नहीं लगाते होंगे; मैंने ख्याल किया था कि तस्वीरों पर के पीतल के फूल सोने के होंगे, और यही वजह थी कि मैंने उन पर हाथ लगा के अपने को गुनहगार बनाया. लेकिन जिस वक़्त कि उन्हें ले जाके मैंने दो चार सर्राफों से अँकवाया तो उन सबों ने एक ज़बान हो के यही जवाब दिया कि उसमें सोने का कम से कम भी कोई हिस्सा नहीं है। अपनी ज़िन्दगी में ऐसा सख़

दिलशिकस्त: और कभी मैं न हुआ था, इसलिये हुजूर की जमा जथा मैं फिर हुजूर के पास लौटा लाया हूं।"

चोर ने यह सीख के कि—"चमकती हैं जमाने में जो अशिया—हक़ीक़त में नहीं सब है वह सोना।" अपना इनाम लिया और बगैर किसी किस्म की मुज़ाहिमत के वह वहां से चल गया। बहुत से हमारे मुल्की भाई ख्याल करते थे कि कलेक्टर साहब अपना वादा तोड़ेंगे, और चोर को गिरफ़ार कर लेने का हुक्म देंगे; लेकिन जब उन्होंने देखा कि चोर ने इनाम अपनी जेब में रक्खा, और उसे फिर मकान लौट जाने का हुक्म दिया गया तो वे लोग आपस में कहने लगे कि ये फिरङ्गी अपनी बात के बड़े धनी होते हैं। हरएक शख्स की जबान से बे एख़्तियार वाह! वाह! निकलने लगा और वे सर्कार बहादुर को सैकड़ों दुआयें देते, अपने २ घर को गये कि ऐसे २ नेक हाकिमों को वह उनपर हुकूमत के लिये भेजती है—जिनमें से कि एक यह कमिश्नर साहब बहादुर थे।

पैंतीसवाँ पर्व्व ।

ख़ज़ाञ्ची का भेद ।

एक दर्जे तक कैसी नामुवाफिक वह बातें हो जाती हैं, जिसमें कि औरतों की चालचलन का भी मेल हमारे मुल्क के आदमियों में हो जाता है। ख़्वाह वह मुसल्मान या ख़्वाह हिन्दू हों, औरतों का रोब सिर्फ घरऊ नौकरों तक नहीं महदूद रहता है बल्कि अकसर वह अमूरात खानः-दारी में भी काम में लाया जाता है जैसा कि हमारे इस किस्से में के कहे हुये हाल से ज़ाहिर होता है। मेरे कहने का यह मतलब नहीं है, कि बाबू कौनानफ़रतदास महाजन की बीबी, अकसर उनके बगल में बैठ के उनके बङ्क का हिसाब किताब लिखने में उनका हाथ बचाती थी, या उसको इतना एख़्तियार दिया गया था कि जिससे वह अपने बङ्क के नाम की हुण्डी को खुद सकार के ले लेती थी या मकान को और औरतों के साथ जहां उसकी ख़्वाहिश होती थी वहां जा सक्ती थी, और इस तरह वह खुद आम नज़ारों को देख के खुश होती थी, और लोगों को अपनी हाज़िरी से खुश करती थी।

नहीं, बाबू कौनानफरतदास अपने हमवतन् भाइयों के मानिन्द इस क़दर आज़ादी को जायज नहीं रक्खा चा-

हते थे, या उन रास्तों को वे नहीं खोला चाहते थे कि जिनसे मोहज्ज़ब लोगों को नाशायेश्त: ज़िन्दगी एक उम्द: और हमवार रास्त पर रहती है; लेकिन उस पर भी जब मैं यह कहता हूं कि औरतों का ज़बर्दस्त रोब सिर्फ़ मकान के नौकर चाकरोंही तक नहीं रहता है, बल्कि दीगर अमूरात में भी यह शामिल रहता है, तो उससे मुराद मेरी यह थी कि बाबू कीनानफ़रतदास के घराने में चूंकि सिवाय उनके और कोई मर्द न था, इसलिये वे किसी काम के अन्ज़ाम देने में अपने मकान की औरतों से सलाह लिया करते थे, मसलन् रुपयों का उधार देना, सर्कारी नोटों को खरीदना, और दीगर अमूरात कुल औरतोंही के सलाह पर किये जाते थे जैसा कि हिन्दू घरानों में अब तक कहीं कहीं रायेज़ है।

इन ख़ास २ बातों का बयान करने के बाद अब हम फिर अपने क़िस्से का सिलसिला शुरू करते हैं। ख़ज़ाञ्ची बाबू कीनानफरतदास के यहां एक चोरी हो गई, जिसपर उन्होंने मकान की औरतों से सलाहें लीं; औरतों ने कुछ देर तक आपस में सलाहें करते रहने के बाद आख़िरश बाबू कीनानफ़रतदास को यों इत्तला दी कि वे बाहम मिल के, गदही कहारिन को इस जुर्म का मुजरिम समझती हैं। यह औरत ख़ज़ाञ्ची के मकान में गोया हरएक

काम करनेवाली औरतों में थी और उसके हरएक कामों की तफसील हस्बजैल है:—अलस्सबाह (प्रातःकाल) वह तीन बार दर्या तक आती और जाती थी जो उस मुकाम से एक चौथाई मील की दूरी पर था, और हरएक बार के जाने में वह पीने के पानी से भरे दो पीतल के गगरे सिर पर और दूसरा कमर पर रख के लाया करती थी; इसके बाद वह तीस से लेके चालीस गगरे तक घर के कुयें का पानी लोगों के नहाने धोने व दीगर अमूरात के लिये लाया करती थी; इसके बाद वह पोतनी मिट्टी व गोबर से मिले हुये पानी से रसोई घर लीपा करती थी और सुबह शाम खाने के बर्तन माँजा करती थी, इसके बाद औरतों के नहाने के वक्त जब आता था तो वह बेसन से उनका सिर मला करती थी। लड़कों को नहलाती और पोंछा करती थी; बाबू कीनानफरतदास जिस वक्त काम करते २ ऊँघने लगते थे उस वक्त उनके पैर वह दबाया करती थी; छोटे लड़के को स्कूल पहुंचाया करती थी; गायों को सानी दिया करती थी; मकान झाड़ा बटोरा करती थी; सुपारी काट काट के पान लगाया करती थी वगैरः, वगैरः वगैरः इसी तरह बेशुमार काम उसके जिम्मे थे। इतने कामों के करने पर भी, पानी भिश्ती, खिदमतगार, खवास, मशालची, चपरासी, अहीर और झाड़ू देनेवाले का काम अकेलेही

करने पर भी; तनख़्वाह जो पाती थी, वह दो वक़्त की खुराक थी और आठ आना माहवारी था: और दो आना त्यौहारी और उसके साथ दो धोतियां साल के दो बड़े त्यौहारों यानी दसहरा और होली पर मिला करती थी।

यही बेचारी गरीब औरत थी जो बीस बरस तक इतनी ईमानदारी और मिहनत से काम करते रहने के बाद जिस में कभी उसपर एक सूई तक के चुराने का शुबहा न किया गया था बाबू कीनानफरतदास की राँड़ बहिन के नाक की नथ जो कि बारह रुपये की होगी चुराने के जुर्म में माखूज की गई। उसकी छोटी गठरी, व नीज़ उस कोठरी का कोना २ तक तलाश किया गया जिसमें कि वह रहा करती थी, लेकिन इससे कोई फायदा न हुआ। इस चोरी के कबुलवाने के लिये, ख़ज़ाञ्ची साहब ने बेचारी औरत को खूबही लात घूंसों से खबर ली, और उन्हीं के साथही साथ बजाय इसके कि घर की औरतें उसे बचाये उन्होंने भी उसे खूबही जूतों से पीटा, और आखिरश उन्हीं में से एक की सलाह से, वह चार मञ्ज़िलों से सीढ़ियों पर से खिंचती हुई नीचे लाई गई और वहां रात भर के लिये एक गन्दी छोटी कोठरी में बन्द कर दी गई जो सिर्फ चार फीट मुरब्ब: (चौखूटी) थी। सबेरे औरतों में से एक ने, या तो रहम खा के, और या तमाशा के ख्याल से यह इरादा

किया कि देखें मुसम्मात गदही कहारिन की रात उस मुकाम पर कैसे कटी, लेकिन जब उसने उस कोठरी का दर्वाज़ा खोला तो उसे यह देख के बड़ाही ताज्जुब मालूम हुआ कि गदही मुर्दा थी ।

दर्वाजा खुलाही छोड़ के उसने जल्दी से मकान की बड़ी बूढ़ी को इस्की खबर पहुंचाई, जिसने वह सुनानी बाबू कीनानफरतदास से जा सुनाई । इस ख़ौफ़नाक मौके पर बाबू साहब की सट्टोपट्टी सब भूल गई, और आप ने लाश के छिपाने के बारे में औरतों से सलाहैं लीं, जिन्हों ने कि मुत्तफिक हो के उन्हें यही राय दी कि लाश को एक बोरे के भर के उस्का मुंह सी देना चाहिये और फिर उसे आधीरात को बाजार में फेंक देना चाहिये । बाबू साहब भी अपनी बातों से निरे बछिया के ताऊही मालूम होते थे, नहीं तो औरतें की इस बात को वह हर्गिज़ मान न लेते कि, "इससे लोगों को इस बात का एतबार हो जायगा कि उसने खुदकुशी की है" बेखुश! खुदकशी करने का कितना अच्छा सबूत यह था—उन बेवकूफों को इस्का ज़रा भी ख्याल न हुआ कि लाश और उस्की हालत देखते ही बिला शुबह: पुलिस को यही शुबहा होगा कि औरत मारी गई है क्योंकि अगर उसने खुदकुशी की होती तो यह कैसे मुम्किन था कि वह अपने हाथों बोरे के ऊपर

के हिस्से को सी सकती। औरतों के कहने के मुताबिकही अमल किया गया, लाश बोरे में कसी गई और जिस वक़्त उनलोगों ने देखा कि अब रात ज्यादा हो गई है, कोई आनेजानेवाला रास्ते में नहीं दिखाई देता तो फौरन्ही लाश से भरा बोरा बाज़ार में फेंक दिया गया, लेकिन बद-किस्मती का बुरा हो, कि नाके का कांष्टेबु जो सड़क के एक सिरे पर खड़ा था इस एकाएक के भारी धमाके को सुन कर जल्दी२ उसी मुकाम पर आया जहां रास्ते में बोरा पड़ा हुआ था; और उस वक़्त उसके ताज्जुब की इन्तहा न रही जब उसने देखा कि बोरे में लाश भरी हुई है। अब उसने जल्दी से दूसरे नाके के कांष्टेबु को बुलाया और उसे लाश पर खड़ा करके खुद थाने की तरफ कोतवाल साहब को इत्तला दिलाने के लिये बढ़ा। कोतवाल साहब खबर पातेही लैस होके जाय वार्दात पर आ पहुंचे और बड़े जोर शोर से तहकीकात जारी की। वह बोरा सिया हुआ था, लेकिन बड़ी मुश्किल तो लाश के पहचाने जाने में थी, क्योंकि लाश के चेहरे के कुल खतोखाल बिगड़े थे यहां तक कि चेहरे का कुल चमड़ाही छील सा दियागया था, और उस औरत का चेहरा अंगरेजों के चेहरे जैसा हो गया था, अगर बदकारों ने वैसाही काम उसके कुल बदन के साथ किया होता तो इसमें कोई शक न था कि मुसम्मात गदही

कहारिन को, कोई भी ऐसी औरत न ख्याल करता। अब तक बाबू कोनाफरतदास का हाल पोशीदा था और कोई भी यह ख़याल न कर सक्ता था कि एक इतने बड़े लख-पती ने अपने एक हमजिंस के खून से अपने हाथ नापाक किये हैं। अगर कोई गरीब क़ातिल क़रार दिया जाता तो लोग समझते कि उसने गुनाह की नीयत से यह फेल किया था—लेकिन खज़ानची पर अगर लोग शुबहा भी कर रहे थे तो सिर्फ इतनाही कि शायद इत्तफाक़िया यह बात जहूर में आई हो। हालां कि वह लाश ठीक लख-पती ख़ज़ांची के सामनेही पाई गई थी इस पर भी लोग मुश्किल से ख्याल करते थे कि वह ऐसे जुर्म का मुर्तकिब हुआ होगा, लेकिन नहीं अगर किसी ग़रीब या आवारः के मकान के सामने पाई गई होती तो लोग उस पर शु-बहा नहीं, बल्कि यक़ीन कर लेते कि क़ातिल वही है। लेकिन नाके का कानिष्ठबिल साधारनही एक ऐसा शख्स था कि जिसने यह ख्याल किया था कि खजाञ्ची इस जुर्म के बानी हैं—क्योंकि वह जानता था कि वह एक बड़ाही बेरहम शख्स है और वह अपने से नीचे दरजेवालों को इस दर्जे को कीना व हिक़ारत भरी निगाहों से देखा क-रता है। कानिष्ठबिल के शुबहा करने के खास २ मुक़ा-मात ये थे कि वह लाश ज़रूर किसी पूरी ऊंचाई से फेंकी

गई थी, और चूंकि खज़ानची के मकान में सब कोई थे और उनके सामने का मकान बिलकुल खाली, यानी बगैर किरायेदार का था इसलिये उसने अपने दिल में यह ठीक कर लिया था कि जहां तक बाबू साहब बताते हैं उससे कहीं ज्यादा वे ज़रूर जानते हैं। खजांची के सामनेवाले मकान को अच्छी तरह से बन्द पा के उसका शुबहा और भी मज़बूत होता जाता था इसके अलावः अपने शुबहों के मिटाने की ग़र्ज़ से उसने उस मकान का दरवाजा खोल के उसकी हरएक खिड़कियों को अच्छी तरह देखा लेकिन सभी में बहुत दिनों से बन्द पड़े रहने की इलामतें मौजूद थीं। अब वह लाश डाक्टर साहब बहादुर के मुलाहज़े के लिये रवाना की गई, जिन्होंने मुर्दे के अज़ों का इम्तिहान कर के रिपोर्ट दी कि यह औरत हामिला थी और फिर उसके बाद एक सख़्त बेरूनी तकलीफ के बायेस उसकी मौत वाक़: हुई। इस बात से पुलिस को कुछ सुराग सा चल गया, और कोतवाल ने करीब की कुल मज़दूरनियों की जांच करनी शुरू की। अब उन मज़दूरनियों से यह पूछा जाने लगा कि क्या वे जानती हैं कि उनके क़रीब की कोई मज़दूरनी हामिला थी? तो उन सब ने यही जवाब दिया कि नहीं, लेकिन उनमें से सिर्फ एक औरत ने, जिसका नाम मुसम्मात बाजिब कहारिन

था बयान किया कि मुसम्मात गदही कहारिन क़रीब पन्द्रह रोज़ के हुए कि मुझ से मिली थी और उसने मुझ से कहा था कि मैं हामिला हूं और वह हमल भी किसी मामूली आदमी का नहीं बल्कि एक बहुत बड़े आदमी का है। खजांची को इस गवाह का हाल मालूम न था नहीं तो वह बहुत कुछ ले देके जैसे बनपड़ता इस बात को दबा देता, क्योंकि सिर्फ वही एक औरत थी जो यह जानती थी कि गदही कहारिन उसके यहां मुलाज़िम थी। ताहम ख़ज़ानची को इस बात का कामिल यक़ीन था कि अगर उसको सफाई के हलफी गवाहों की ज़रूरत पड़ेगी तो वे उसे उसी आसानी से मिल जांयगी जैसे कि उसको दूसरी लेनदेन की चीजें मिल जाया करती थीं। सख़्त रुकावटें अकसर यहां के बाशिन्दों की गवाही की वजह से मुनसिफों के रूबरू कायम हो जांयगी, क्योंकि हिन्दुओं के बड़ भारी क़ानून बनानेवाले मनुजी जिनके क़ानून को मौहज़्ज़ब दुनिया भी किसी दर्जे तक मानती है और जिनके इल्म की शोहरत योरोप तक है एक मुकाम पर लिखते हैं कि अगर किसी की जान झूठी गवाही से बचती हो तो उस हेतु वैसी गवाही मुनासिब है। अमूमन् यहां के ज़्यादा धर्म पर मुस्तक़िल रहनेवाले लोग बग़ैर उस आलिम का असली मन्शा समझेही मानने लगते हैं। मनु ने कैसे

आदमी की जान के लिये झूठी गवाही देने को लिखा है इसका वे बिलकुल ख्याल नहीं करते सिर्फ झूठी गवाही देनेही को उन्होंने अपना फ़र्ज़ समझ रक्खा है । लेकिन हां मैं उम्मेद करता हूं, जैसा कि इसके पहले भी मैं बयान कर चुका हूं कि जब तरक्की की रोशनी हमारे मुल्की भाइयों में भी फैलती जाती है और धीरे २ उन्हें मालूम हो जायगा कि जमाअत के लिये हमारा खास फ़र्ज़ क्या है, और फिर उस वक़्त उनकी गवाहियों से मुनसिफों को क़बाहतों के मुकाम बहुत से फायदे होंगे।

इसके बादही बाज़ार में ऐसा शोर मच गया था कि कोतवाल ने बाबू कीनानफरतदास को उनके खातिरख्वाह सुन लेने के लिये दो बातें उनके सामने पेश की थीं — यानी यह कि या तो वे ५ हजार रुपये कोतवाल की नज़र करें या नहीं तो चालान किये जाना पसन्द करें।

इसके बाद ऐसी खबर उड़ी कि ख़ज़ान्ची इस रक़म का आधा चुका देने पर तैयार थे उस हालत में, जब उनको पुलिस पर भरोस हो जाता। मैं नाज़रीन के ताज्जुब को मिटा नहीं सक्ता हूं सिर्फ इतनाही कहना काफ़ी है कि खचाञ्ची के घराने की दो औरतों का, इन्साफ के लिये कचहरी में चालान कर दिया गया, जहां से वे दौरे सुपुर्द हुईं, और दौरे से हरएक को दो साल की सख़्त क़ैद

का हुकुम हुआ, तब खज़ाञ्ची ने अपनी तरफ से हाइकोर्ट में अपील की, और अनकरीब तीस हजार रुपये खर्चने के बाद, जो बारिष्टर वगैर: में खर्च हुये थे, उसने औरतों की बाकी की सज़ा माफ़ कराई, लेकिन इस बीच में १८ महीने तक औरतें जेल की हवा खाती रहीं। खर्च की तरफ निगाह करने से कहा जा सक्ता है कि नतीज: कुछ भी फायदामन्द न हुआ, उस रुपये का सिर्फ सूद, अगर वाजिब तौर से किसी भले काम के लिये लिया जाता तो खजाञ्ची का नाम दुनियां में बहुत दिनों तक कायम रखता। खजाञ्ची की आफत पर लोग उसे उल्लू कहते थे और आपस में पूछते थे कि क्या यह अच्छा न होता कि कोतवाल का पांच हजार रुपया चुका दिया जाता, बजाय इतनी रक़म खर्चने के जो कोतवाल की मांगी हुई रक़म से छ: गुनी ज्यादा थी। और उसका कोई ऐसा नतीजा न निकला जो किसी एतबार से भी तसकीनदेह कहा जा सक्ता हो।

बस साहब! इतना अहवाल मैंने आपको उस तजरुबे का सुनाया जो मैंने जमाना कांष्टिबली में हासिल किया है इसके सिवाय और भी बहुत से वकूआत काबिल सुनने और जानने के हैं पर मैंने खास खास बातें आपको सुना दी हैं ताकि हमारे नये नातजरुबाकार हाकिमों के कान खुल जांय और वे जान जावें कि थाने में कैसी कैसी अ-

जीब व गरीब कार्रवाइयां हुआ करती हैं जिनकी उन्हें मुतलक खबर नहीं होती और बिचारी गरीब प्रजा पिस जाती है।

मेरे इस बयान को होशियार पिलपिली साहब बहादुर ने बड़े गौर से सुना और मैं उनका शुकरगुजार इस बात के लिये हूं कि उन्होंने इसे अंग्रेजी जबान में तर्जुमा कर सब हुक्कामों को इसकी खबर दी।

मियां मिट्ठू खां।

इति

काशी भारतजीवन कार्य्यालय का संक्षेप सूचीपत्र ।

उपन्यास ।

अघोरपन्थी (श्रीभ्रष्टानन्दसरस्वती का जीवनचरित्र) ≠)

अमलावृत्तान्तमाला (इसमें अमलाओं की बहार देखनेही योग्य है, बाबू रामकृष्णवर्म्मा लिखित) ॥)

अकबर उपन्यास प्रथम भाग (बाबू रामकृष्णवर्म्मा रचित इसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है) ॥)

अजीब अजनबी (एक नवीन उपन्यास) उर्दू अक्षरों मीठी बोलचाल में बड़ाही मनोरञ्जक उपन्यास हाल में तैयार हुआ है । अजीब अजनबी में एक बिचित्र बिदेशी की कार्यवाहियों का विवरण इस प्रकार किया गया है कि जिसको देखतेही किताब बिलकुलही समाप्त कर के छोड़ने की कामना नहीं होती है) ॥)

आर्य्यचरितामृत (एक उत्तम किस्सा है) /)

ईला उपन्यास (राजपूत स्त्रियों की बीरता) ॥≠)

ईश्वरीलीला (इस उपन्यास में प्रकृति की अच्छी छटा दिखलाई है) ≠)

उथेलो (यूनान देश का एक वृत्तान्त) ≡;

कमलिनी उपन्यास ।)

कपटी मित्र ≡)

कांष्टेबुलवृत्तान्तमाला (बाबू रामकृष्णवर्म्मा लिखित, इसमें एक कांष्टेबिल ने ऐसे ऐसे गुप्त वृत्तान्त दिखलाये हैं कि लोगों को पढ़ कर परम आश्चर्य्य होता है) ॥।)

कुलटा (नामही से समझ लो) ⥍)

कुसुमलता प्रथम भाग ॥)
कुसुमलता दूसरा भाग ॥)
कुसुमलता तीसरा भाग ॥)
कुसुमलता चौथा भाग ॥।)
(बहुतही उत्तम ऐयारी का उपन्यास, बाबू हरिकृष्ण जौहर द्वारा लिखित) २।)

कुसुमकुमारी (चारो भाग) १)

कठोराभर खून (इसकी अद्भुतता नामही से झलकती है) ॥⥍)

गंगागोविन्दसिंह (ईष्ट इण्डिया कम्पनी के समय में चन्द अधिकारियों के अत्याचार का निदर्शन) ॥।)

ग्वीसेप मेजिनी—की जीवनी (यह एक बड़ी सुन्दर पुस्तक अभी छपी है अभी तक हिन्दी में कितनी जीवनी छपी हैं उनमें इस जोड़ की कदाचही कोई होगी स्वदेश हितैषिया का उज्ज्वल दृष्टान्त है) ।⥍)

चन्द्रकला ।)

चित्तौरचातिकी (बाबू रामकृष्ण वर्म्मा लिखित, ऐतिहासिक उपन्यास) ॥)

चन्द्रकान्ता चारो भाग (ऐसा उपन्यास आज तक नहीं छपा, जो न देखेगा पछतायगा) २)

जया उपन्यास ॥)

ठगवृत्तान्तमाला चारो भाग (बाबू रामकृष्णवर्म्मा लिखित. जिसमें अमीरअली नामक प्रसिद्ध ठग का वृत्तान्त बड़ी उत्तमता से छापा गया है इस ठग का वृत्तान्त अंग्रेजी तवारीखों में भी पाया जाता है बहुत प्रशंसा करना व्यर्थ है एक बार मँगाकर देख तो लीजिये) २)

अंगरेजी जिल्ददार दाम ३॥)

दुर्गेशनन्दिनी दोनों भाग (उत्तम उपन्यास) ॥)

दीपनिर्व्वाण (दिल बहलाने का बहाना, सच्चे प्राचीन इतिहास का खजाना, आर्यबंसधारियों का शिथिल हो जाना और महाराज पृथ्वीराक के समय भारत पर मुसलमानों का दाँत लगाना तथा आर्यबंशियों के भाग्य के चिराग का बुझ जाना इस दीपनिर्व्वाण का बताना है मूल्य दोनों भाग का) ॥)

दीनानाथ अथवा गृहचरित्र ।)

दलितकुसुम (बहुतही अपूर्व उपन्यास) ।/)

नरपिशाच (अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक मिष्टर रेनाल्डस के फौष्ट नामक उपन्यास का भाषानुवाद) जिस लेखक की लेखनी से लिखे गये उपन्यास का अनुवाद आज हम सर्वसाधारण के सामने रखते हैं. उपन्यास लिखने की उसकी अद्वितीया शक्ति की धूम संसार में मची है ! लोग रेनाल्डस के लिखे उपन्यास

की समता जादू से करते हैं। लोगों का कथन है कि रेनाल्डस के उपन्यास हाथ लगने से, मनुष्य का खाना पीना, सोना आदि आवश्यक काम भूल जाता है। बात यथार्थ में बहुत ठीक है। हिन्दीवालों के सौभाग्यवश ग्रन्थ का अनुवाद हिन्दी में किया गया है— आश्चर्यमय, कौतूहलवर्धक. शिक्षाप्रद इस उपन्यास की छटा देख लोग बड़े ही विस्मित होंगे। उपन्यास प्रेमियों को इसके मगाने के लिये अग्रसर होना चाहिए प्रथम भाग का दाम ॥)

नये बाबू ॥) नीलमणि ॥

प्रणयिनीपरिणय ।)

प्रमीला (हिन्दी में अभीतक अनेक उत्तमोत्तम उपन्यास छपे तो हैं परन्तु यह उपन्यास अपने ढंग का अनूठा ही है। इसमें न ऐयारों की ऐयारी ही है और न जादूगरों का जादूही है पर जो है वह विचित्र और अद्भुत है.) ॥।)

पुष्पवती (देखने योग्य) ।।)

पुलिसवृत्तान्तमाला (बाबू रामकृष्णवर्म्मा लिखित इसमें पुलिस के वृत्तान्त झलकाये गये हैं) ॥)

परीक्षागुरु (लाला श्रीनिवासदासकृत) हमलोग प्रणपूर्वक कह सकते हैं कि आजतक ऐसा शिक्षामय और मनहरण तथा रोचक उपन्यास सरा नहीं बना) ॥)

मङ्गबिजेता १) बुद्धिवती ॥)

बेकसूर की फाँसी (जासूस) ।)

बड़ाभाई (एक सदाचारी मनुष्य अपनी स्त्री की कुमन्त्रणा से कैसा दुष्टाचार करता है और एक सज्जन अपने ऊपर अनेक अत्याचार सह के भी कितनी सहनशीलता दिखा सक्ता है और उनके परिणाम कैसे होते हैं) दाम भी केवल ॥=)

भयानकभ्रमण (बाबू हरिकृष्ण जौहर लिखित) ॥।)

भानुमती ॥) माधुरी ।) माधवीकङ्कण ॥।)

मधुमालती (उत्तम उपन्यास) ॥।)

मनोरमा (जादूगरनी) ॥) मायाविनी ।)

मरताक्यानकरता (बहुतही उत्तम किस्सा है) =)

राजहैरत दोनों भाग (उर्दू) बा० हरिकृष्णजौहरकृत १॥)

रसलेस उपन्यास ॥=)

लावण्यमयी =) लैलेमजनू =)

वेनिस का बांका ॥।)

सिरकटी लाश (जासूस) ।)

सन्दूक का मुर्दा (जासूस) ।)

सासपतोहू (इस उपन्यास में यह दिखलाया गया है कि सास बहू और ननद के परस्पर के बिगाड़ और ऐंठ से क्योंकर गृहस्थी में झगड़ा फैलता है और उसका कैसा खोटा परिणाम होता है) ॥)

नाटक।

कृष्णकुमारी ना[illegible] [illegible] रामकृष्ण [illegible] लिखित, यह अपूर्व [illegible] भी देखने ही योग्य है, [illegible] [illegible] मानो आदर्शरूप है [illegible] [illegible] पड़ेगा कि आर्य्यकुल को [illegible] समर्पण करके धर्मरक्षा क- [illegible] प्रत्येक [illegible] [illegible]

[illegible] बाबू [illegible] अत्यन्तही मनोहर नाटक के प्रत्येक अंगों से पूरित, देखनेही योग्य है) ।/)

कलिकौतुकरूपक (देखनेही लायक है, हँसी की हँसी और शिक्षा की शिक्षा) ≈)

क्या इसी को सभ्यता कहते हैं ? (यह नवीन शिक्षादायक नाटक है इसके पढ़ने से विदित होगा कि आजकल के कोई २ नवीन उभड़े हुए किसे सभ्यता कहते हैं और उनके कैसे निकृष्ट आचरण हैं) ≈)

मैनेजर भारतजीवन पुस्तकालय

बन[illegible] [illegible]सिटी।